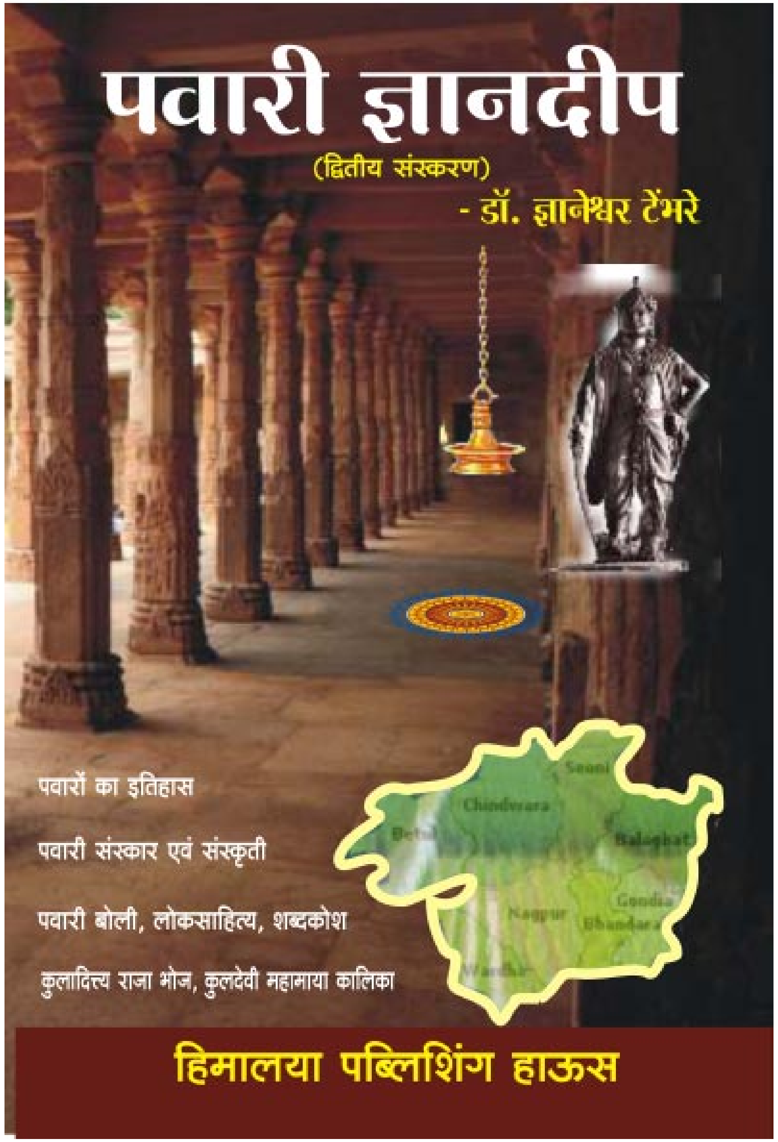


शिर्षक :	पवारी ज्ञानदीप
लेखक :	डॉ. ज्ञानेश्वर टेंभरे, नागपुर
संस्करण :	प्रथम, २०११
प्रकाशक :	हिमालया पब्लिशिंग हाऊस, मुंबई
ISBN :	978-93-5024-980-2
पृष्ठ :	२३२
मूल्यः	300

।। पवारी ज्ञानदीप ।।

(Preview)

About Book

महाराष्ट्र का विदर्भ एवम् मध्यप्रदेश का महाकौशल संभाग जो प्राचीन काल गोंडवाना या झाडी पट्टी कहलाता था, कई सदियों से पवारों का गढ़ रहा है। पवार समाज बैनगंगा तथा वर्धा नदियों के सुपीक प्रदेश में घनी आबादी में निवास कर रहा है। इस क्षेत्र के पवार समाज ने 'प्रगतिशील कृषक समाज' की अलौकिक प्रतिष्ठा पायी है। पवार समाज बीसवी सदी पूर्व प्रायः निरक्षर एवम् अशिक्षित था । वे केवल इतना जानते थे कि वे क्षत्रिय वर्ण के मालवा-धार के मूल निवासी हैं। अब वे इस क्षेत्र के ग्रामीण सामाजिक, सांस्कृतिक लोक-जीवन में पुरी तरह घुलमिल गये हैं।

इस परिपेक्ष्य में सम्पूर्ण पवार समाज क्षेत्रों का भ्रमण कर लेखक तथा सहयोगियों ने सघन सर्वेक्षण किया एवम् समाजजनों से पवार जाति की उत्पत्ति, कुलदेवता, परम्परायें, रीतिरिवाज, स्थानांतरण, विस्तार आदि विभिन्न क्षेत्रों में जानकारी संकलित की । पवार समाज के भाटों से पोथियाँ प्राप्त कर, उनका सखोल अध्ययन कर तथ्यों को उजागर किया गया ।

पवारों के संस्कार पीढ़ी-दर-पीढ़ी कालांतर से चलते आ रहे है। रीति-रिवाज, मान्यताएँ हमारी सांस्कृतिक धरोहर है। हमारी संस्कृति ही हमारी पहचान का विशुद्ध परिचय दिलाती है। सामाजिक गौरव-गरिमा का स्फटिक दर्शन कराती है। लेखक ने अथक प्रयास कर हमारे बुजुर्ग समाजजनों से हमारी जाति में शिशु जन्म, छटी, बारसा, दाढ़ी निकालना, गुरू दीक्षा, ब्याह, मृत्यु, त्यौहार आदि अनेक संस्कार तथा अन्य जाति रीति-रिवाजों की जानकारी हासिल कर इस रचना में अंकित की है। हमारे नेग-दस्तुर समयानुसार बदल रहे है। क्षेत्रीय प्रभावों से उनमें विविधता की अनुभूति होती है। पाश्चिमात्य संस्कृति का आगाज हो रहा है अतः आगे चलकर कहीं वे खोजने से भी नजर नही आयेंगे । इस अवधारना को मन में रख लेखक ने इन्हे इस रचना का अंग बनाकर भावी पीढ़ियोंके लिए सांस्कृतिक विरासत का संग्रह किताब रूपी संग्रहालय में किया हैं।

पवारों ने अपनी मातृभाषा के रूप में मालवा से इस क्षेत्र 'पवारी बोली' अपने साथ लाई । सदियों तक वह हमारे संवाद की सशक्त भाषा रही। हमारी अवक्षुण्ण पहचान, सुख-दुख की घनिष्ठ साथी रही ।

भारत सरकार, गृह मंत्रालय की वर्ष २००१ की जनगणना के आधार पर तैयार की गई सूची में हिंदी को ६वे तथा उपभाषा के रूप में पवारी बोली को ४२ वे स्थान पर रखा गया है। पवारी बोलनेवाले जनसमुदाय की जनसंख्या ४,२५,७४५ दी गई है। इसी जनगणना के आधार पर पवारों की कुल जनसंख्या ३८-४० लाख आंकी गई है। अतः मात्र दस प्रतिशत पवारजन ही पवारी बोलते हैं ।

इस रचना में पवारी बोली पर तीन अध्याय - भाषाविज्ञान (व्याकरण), लोकसाहित्य तथा शब्दकोश दिये गये है ताकि हमारी इस सामाजिक सांस्कृतिक, ऐतिहासिक धरोहर का दक्षतापूर्ण जतन (संरक्षण) किया जा सके जो भावी पीढ़ियों के लिये दर्पण की भूमिका निभाएगा ।

इस रचना के अंत में दो अध्याय - १. पवार कुलादित्य राजा भोज, २. पवार कुलदेवी - महामाया, ३. पवार महयोगी - भर्तृहरि, ४. सोलह संस्कार एवं पवार समाज तथा ५. पवार समाज में प्रचलित कुछ शास्त्र-संगत मान्यताएँ प्रस्तुत किये गये है ताकि वाचक वृंद रचना की पूर्णता की अनुभूति कर सके ।

डॉ.ज्ञानेश्वर टेंभरे

dbtembhare@gmaibom
ISBN 978-935024-980-2



।। पवारी ज्ञानदीप ।।

(Preview)

About Author

लेखक परिचय

नाम	: डॉ.ज्ञानेश्वर बापुजी टेंभरे
जन्मस्थल	: ग्राम मेंढा, त. तिरोड़ा, जि.गोंदिया (म.रा.)
जन्मतिथि	: १६ अप्रैल, १९४४
शिक्षा	: एम.एस्सी., पीएच.डी.
सेवा क्षेत्र	
सेवाकाल	: १९७३ से २००४
पद	: प्राध्यापक - नागपुर विद्यापीठ, नागपुर
अन्य पद	: विभागप्रमुख - प्राणीशास्त्र विभाग अधिष्ठाता - विज्ञान संकाय सदस्य - विद्यापीठ व्यवस्थापन परिषद, विद्वत परिषद तथा विधि सभा
विदेश शिक्षा संशोधन -	जर्मनी -१९७६-७८, स्वीजरलैंड - १९८०, अमेरिका - १९९०, इंडोनेशिया - २००२.
प्रकाशन	: ७५ शोधपत्र : ०३ जीवविज्ञान पर ग्रंथ
पीएच.डी.मार्गदर्शन	: २१ शोध छात्र
सामाजिक क्षेत्र	
प्रबंधक / अध्यक्ष	: पवार युवक संगठन, नागपुर (१९८२-१९९६)
अध्यक्ष	: अखिल भारतीय पवार क्षत्रिय महासभा, (१९९९-२००६)
संस्थापक-संपादक	: पवार संदेश, वार्षिक पत्रिका, (१९८४ से) : पवार समाजदर्शन, न्यूजलेटर
संपादक/लेखक	: पवार राजाभोज (पुस्तिका)
सामाजिक लेख	: ४० (विभिन्न पत्रिकाओं में)
संपर्क	: **४४, विजयनगर, दक्षिण अंबाझरी मार्ग, नागपुर-२२** : ईमेल : dbtembhare@gmail.com

A

पवारी ज्ञानदीप

(Pawari Gyandeep)

डॉ.ज्ञानेश्वर टेंभरे M.Sc., Ph.D
DAAD Fellow (Germany), SIO Fellow (Netherlands)
MNYASc (USA), MNASc (INDIA)

HPH
हिमालया पब्लिशिंग हाउस
मुम्बई . दिल्ली . नागपुर . बैंगलोर . हैदराबाद

B

पवारी ज्ञानदीप
(PAWARI GYANDEEP)
ISBN 978-93-5024-980-2
प्रथम संस्करण : २०११, प्रतियाँ : १०००.

प्रकाशक: सौ. मीना पाण्डेय, हिमालया पब्लिशिंग हाऊस, 'रामदूत' डॉ. भालेराव मार्ग, गिरगांव, मुम्बई-४०० ००४, दूरभाष :२३१६३७६३ / २३८६०१७०, फैक्स :०२२-२३८७७१७८
Email : himpub@vsnl.com * Website : www.himpub.com

शाखा -

दिल्ली : 'पूजा अपार्टमेंट',४बी, मुरारी लालस्ट्रीट, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ दूरभाष : २३२७०३१२ फैक्स : ०११-२३२५६२८६

नागपुर : कुंदनलाल चांडक इण्डस्ट्रीयल स्टेट, घाट रोड, नागपुर-४४००१८, दूरभाष : २७२१२१६, फैक्स : ०७१२-२७२१२१५

बैंगलोर : नं. १६/१, जूना १२/१ पहला मंजिला हॉटल हायलैंड जवल, माधवनगर रेसकोर्स रोड, बैंगलोर -५६०००१ दूरभाष : २२८१५४१ /३२८५४६१, फैक्स :०८०-२२२८१५४१

हैदराबाद : नं. २-२-१ १६७/२ एच. फर्स्ट फ्लोर, रेलवे ब्रिज के पास, तिलक नगर, मेन रोड, हैदराबाद-५०००४४ दूरभाष : ५५५०१७४५, फैक्स : ०४०-२७५६००४१

मुद्रक : श्री गजानन एन्टरप्राईजेस, २१, सुरेन्द्रनगर, नागपूर-१५ दूरध्वनी - ०७१२-२२३४१०४

मूल्य : रू.२००/-

मुखपृष्ठ : भोजशाला, भोज, मंगलदीप एवम् बैनगंगा-वर्धा मूल पवारी क्षेत्र.

सामाजिक उत्थान
में आजीवन सर्वस्व
न्यौंछावर करनेवाले
समाज सेवियों को
सादर समर्पित ।

।।समर्पण ।।



वाग्देवी (सरस्वती)

।। प्राक्कथन ।।

महाराष्ट्र का विदर्भ एवम् मध्यप्रदेश का महाकौशल संभाग जो प्राचीन काल गोंडवाना या झाडी पट्टी कहलाता था, कई सदियों से पवारों का गढ़ रहा है । पवार समाज बैनगंगा तथा वर्धा नदियों के सुपीक प्रदेश में घनी आबादी में निवास कर रहा है । इस क्षेत्र के पवार समाज ने 'प्रगतिशील कृषक समाज' की अलौकिक प्रतिष्ठा पायी है । पवार समाज बीसवी सदी पूर्व प्रायः निरक्षर एवम् अशिक्षित था । वे केवल इतना जानते थे कि वे क्षत्रिय वर्ण के मालवा-धार के मूल निवासी हैं। वे इस क्षेत्र के ग्रामीण सामाजिक, सांस्कृतिक लोक-जीवन में पुरी तरह घुलमिल गये हैं।

ब्रिटिश काल में भारतीय जातियों के ऐतिहासिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश का विस्तृत सर्वेक्षण किया गया । कृक, रसेल, हीरालाल आदि विद्वानों ने प्राप्त जानकारी की सखोल समीक्षा कर जिला राजपत्रों (डिस्ट्रिक्ट गजेटिअर्स) तथा 'भारतीय जाति-जनजाति' नामक आंग्लभाषी. विशेष ग्रंथों में दिया गया सविस्तर विवरण एक अनोखा चिरस्मरणीय संकलन बन गया हैं । इन साहित्य-सामग्री से हमें हमारी जाति की उत्पत्ति, संस्कृति, सामाजिक वैभव, स्थानांतर आदि का बोध हुआ । हमारे जाति के कुलदेवी-देवता, कुलनाम (Surname), जातिविशेष परम्पराएँ, जातिरीति, शादी-विवाह के रस्म रिवाज आदि सभी पर इन रचनाओं ने विहंगम दृष्टि से प्रकाश डाला हैं । तत्कालीन हमारे पुरखों ने शासकीय अधिकारियों को जो जानकारी दी और उस समय पवारों के इतिहास पर प्राचीन ग्रंथों से जो विवरण हासिल हो सका उसे राजपत्रों एवम् इन ग्रंथों में प्रस्तुत किया गया है । हमारी जाति पर दिया गया अधिकतर तत्कालीन विवरण परमार या मराठा पवारों का इतिहास दोहराता है । किन्तु परमार तथा मराठा पवार समाजों से हमारे समाज को जोड़नेवाली कड़ियाँ प्रायः नदारत है । इस कारण इन विवरणों की विश्वसनियता प्रमाणित करना बहुत कठिन कार्य है। अतः सत्य तथ्यों की खोज़ ही सही इतिहास को उजागर कर सकती हैं ।

हमारे दो दिवंगत कर्मठ समाजसेवि, श्री दामोदर टेंभरे, अधिवक्ता, बालाघाट और श्री पन्नालाल बिसेन, अधिवक्ता, पीपरझरी/बालाघाट ने क्रमशः 'पवार जाति का इतिहास' १९६७ ई. तथा 'भोज पत्र' १९८४ ई. में प्रकाशित किया । तत्कालीन उपलब्ध साहित्य-सामग्री के आधार पर पवार जाति का इतिहास की रचना की गई जो अधिकांश मालवाधीश परमारों के

इतिहास की पुनरावृत्ति ही जान पड़ती हैं । इन रचनाओं में इस क्षेत्र के पवार समाज से जुड़ी हुई, सामाजिक जनजागरण, प्रगति, शिक्षा, जन-प्रतिनिधि, सामाजिक संस्थाओं पर आधारित विवरण जोड़ा गया है । दोनों किताबे पवारों के बीसवी सदी की सामाजिक प्रतिभा का दर्शन अवश्य कराती है किन्तु इसके पूर्व का पवारों का जीवनकाल अंधकार में ही छोड़ दिया गया हैं ।

इस परिपेक्ष्य में सम्पूर्ण पवार समाज क्षेत्रों का भ्रमण कर लेखक तथा सहयोगियों ने सघन सर्वेक्षण किया एवम् समाजजनों से पवार जाति की उत्पत्ति, कुलदेवता, परम्परायें, रीतिरिवाज, स्थानांतरण, विस्तार आदि विभिन्न क्षेत्रों में जानकारी संकलित की । पवार समाज के भाटों से पोथियाँ प्राप्त कर, उनका सखोल अध्ययन कर तथ्यों को उजागर किया गया । इस कार्य में इंजि. श्री. भोजराज राणा (सांवगी-चंदनपुर/बेंगलोर) एवम् इंजि. अशोक बोपचे, नागपुर का अमूल्य सहयोग प्राप्त हुआ।

पवारों के संस्कार पीढ़ी-दर-पीढ़ी कालांतर से चलते आ रहे है । रीति-रिवाज, मान्यताएँ हमारी सांस्कृतिक धरोहर है । हमारी संस्कृति ही हमारी पहचान का विशुद्ध परिचय दिलाती है । सामाजिक गौरव-गरिमा का स्फटिक दर्शन कराती है । लेखक ने अथक प्रयास कर हमारे बुजुर्ग समाजजनों से हमारी जाति में शिशु जन्म, छटी, बारसा, दाढ़ी निकालना, गुरू दीक्षा, ब्याह, मृत्यु, त्यौहार आदि अनेक संस्कार तथा अन्य जाति रीति-रिवाजों की जानकारी हासिल कर इस रचना में अंगिकृत की है । हमारे नेंग-दस्तुर समयानुसार बदल रहे है । क्षेत्रीय प्रभावों से उनमें विविधता की अनुभूति होती है । पाश्चिमात्य संस्कृति का आगाज हो रहा है अतः आगे चलकर कहीं वे खोजने से भी नजर नही आयेंगे । इस अवधारना को मन में रख लेखक ने इन्हे इस रचना का अंग बनाकर भावी पीढियों के लिए सांस्कृतिक विरासत का संग्रह किताब रूपी संग्रहालय में किया हैं ।

पवारों ने अपनी मातृभाषा के रूप में मालवा से इस क्षेत्र 'पवारी बोली' अपने साथ लाई । सदियों तक वह हमारे संवाद की सशक्त भाषा रही। हमारी अक्क्षुन्न पहचान, सुख-दुख की घनिष्ठ साथी रही । उसे महान आंग्ल भाषाविद् सर जार्ज अब्राहम गिरसन, रसेल आदि ने सराहा, प्रा. डॉ. सु. बा. कुलकर्णी (१९७४ई.) ने पीएच.डी. प्रबन्ध (नागपुर विद्यापीठ) हेतु अध्ययन कर भाषा विज्ञान की दृष्टि से उसमें अनेक अलंकार, श्रृंगार,

विशाल शब्द-भंडार की खोज एवं समीक्षा की तथा डॉ. मंजु अवस्थी, बालाघाट (१९९९ई.) ने इसे अपने डी.लिट्. प्रबन्ध (रायपुर विश्वविद्यालय) का विषय बनाकर पवारी लोकगीतों का मौलिक सृजन किया । किन्तु अफ़सोस! हमारा समाज अपनी मातृभाषा को तेज रफ्तार से परित्याग कर रहा हैं । कहते है 'भाषा समाज का आईना होता है, संस्कृति की चलती फिरती झांकी होती है,' शिशु के जबान को शब्दांकित कर हृदय की भावनाओं का मंचन प्रस्तुत करती है । वह समाज का दर्पण हम तोड़ रहे है, वाणी मरोड़ रहे है तथा शनैः शनैः हमारी सामाजिक जीवन-ज्योति प्रायः बुझने की राह पर है । आज वह ग्रामीण पवार परिवारों की पुरानी पीढ़ी की मात्र 'घर के चौखट की बोली' बनकर रह गई है । हमने शिक्षा ली, बोली छोड़ी; खेती छोड़ी, बोली छोड़ी; गांव छोड़ा, बोली छोड़ी तथा आधुनिकता की धूंद में अपनी वेशभूषा छोड़ी तो पवारी भी छोड़ दी ।

जिस तरह खड़ी बोली में 'कामायनी' प्रसाद ने लिखी, ब्रजभाषा में 'सूरसागर' संत सूरसागर ने साकार की तथा अवधी बोली में 'रामचरित मानस' की तुलसीदास ने रचना की, काश! कोई प्रगल्भ साहित्यकार पवारों में हुआ होता तो हमारी मातृभाषा पवारी भी अमर हो गई होती !

भारत सरकार, गृह मंत्रालय की वर्ष २००१ की जनगणना के आधारपर तैयार की गई सूची में हिंदी को ६वे तथा उपभाषा के रूप में पवारी बोली को ४२ वे स्थान पर रखा गया है । पवारी बोलनेवाले जनसमुदाय की जनसंख्या ४,२५,७४५ दी गई है । इसी जनगणना के आधार पर पवारों की कुल जनसंख्या ३८-४० लाख आंकी गई है । अतः मात्र दस प्रतिशत पवारजन ही पवारी बोलते हैं !

इस रचना में पवारी बोली पर तीन अध्याय - भाषाविज्ञान (व्याकरण), लोकसाहित्य तथा शब्दकोश दिये गये है ताकि हमारी इस सामाजिक सांस्कृतिक, ऐतिहासिक धरोहर का दक्षतापूर्ण जतन (संरक्षण) किया जा सके जो भावी पीढ़ियों के लिये दर्पण की भूमिका निभाएगा । इन अध्यायों की रचना में श्री. रामकिशोर टेंभरे, अभियंता, गोंदिया, प्रा. बालाराम शरणागत,नागपुर तथा श्री हीरालाल बिसेन, नागपुर का सक्रिय सहयोग प्राप्त हुआ । लेखक आप सभी महानुभावों का मनःपूर्वक आभारी है । इसी तरह श्रीमती सयनबाई जियालाल टेंभरे (मेंढा,तिरोडा), श्रीमती द्रौपदीबाई निलाराम रहांगडाले (बटाना/गोंदिया), श्रीमती भगवतीबाई तुलाराम टेंभरे,

(मेंढा/तिरोडा), सौ.जया ज्ञानेश्वर टेंभरे (नागपुर), कु. डॉ. मंगला कडवे (सिराठा/पांढुर्णा), सौ. शोभा मोहन रहांगडाले (नागपुर), सर्वश्री तुलाराम टेंभरे (मेंढा/तिरोडा), मधुकर ठाकुर (नागपुर), प्रा. ओ.सी.पटले (आमगांव), सुरेश महादेवराव देशमुख (बोरी/कारंजा), श्रावण नामदेव फरकाडे (धर्ती/कारंजा), शंकरराव पवार, चिकाने (मालेगांव कारंजा), कन्हैयालाल बोवाड़े (बैतुल), गोपीनाथ कालभोर (खंडवा) आदि महानुभावों का साहित्य संकलन एवम् प्रस्तुति में योगदान हेतु हार्दिक धन्यवाद !

इस रचना के अंत में दो अध्याय - १. पवार कुलादित्य राजा भोज तथा २. पवार कुलदेवी - महामाया प्रस्तुत किये गये है ताकि वाचक वृंद रचना की पूर्णता की अनुभूति कर सके ।

लेखक भाषाविद्, साहित्याकर, इतिहासकार नही और न ही सांस्कृतिक, धार्मिक, सामाजिक रीति-रिवाज, नेंग-दस्तूर का ज्ञाता है । जो भी सार-साहित्य विभिन्न स्रोतों से प्राप्त हुआ उसे यथायोग्य अपनी कल्पक बुद्धि से कलमबद्ध किया है । अतः त्रुटियाँ, खामियाँ, व्याकरण अशुद्धियाँ आदि के लिये मनःपूर्वक क्षमत्व ! आपके सुझाव, समीक्षा, टिका टिप्पणी आदि भावी संस्करण को परिपूर्ण बनायेगी ।

श्री. सुभाष पटले, नागपुर का 'मुखपृष्ठ' संरचना में सहयोग हेतु हार्दिक धन्यवाद ! हमारे समर्पित समाजसेवियों ने इस रचना के प्रकाशन हेतु आगे बढकर आर्थिक सहयोग मुक्त हस्त से दिया अतः रचना का प्रकाशन संभव हो सका । लेखक आप सभी महानुभावों का तहे दिले से आभारी है।

इस रचना का कम्प्यूटर पर बार-बार शब्दांकन, पुनःलेखन, भाषा शुद्धिकरण आदि में गत एक वर्ष की लम्बी कालावधी से मे. श्री गजानन इंटरप्रायजेस कर्मियों का अथक परिश्रम रहा है । लेखक आप सभी का प्रदीर्घ एवम् पूर्ण सहयोग हेतु सहृदय आभारी है । अंत में प्रकाशक श्री जी.एन.पाण्डेय, हिमालया पब्लिशिंग हाऊस के समय समय पर दिये गये मूल्यवान सुझाव तथा प्रकाशन में अभिरूची हेतू मै उनका हृदय से आभारी हूँ ।

श्रीराम नवमी

दि. १२ अप्रैल, २०११

डॉ.ज्ञानेश्वर टेंभरे
४४, विजयनगर, दक्षिण अम्बाझरी मार्ग,
नागपुर - ४४० ०२२ (महाराष्ट्र)
फोन ०७१२-२२३५६७१
Email : dbtembhare@gmail.com

अंतरंग

पवारी लोकगीत

क्षत्रिय पवार गौरव गीत

।।सवैया ।।

श्री गणेश को प्रथम नमाऊँ, हात जोड़कर करू प्रणाम ।
विघ्न हरो विघ्नेश्वर मेरे, हर लो प्रभू मेरे विघ्न तमाम ।।
दूजे नमाऊँ सरस्वती को, स्व में. शक्ति करे प्रदान ।
सदैव बुद्धि देनेवाली, ऐसा दे माँ तू वरदान ।।
करू प्रारंभ तेरी कृपा से, क्षत्रिय पवारों का गौरवगान ।
चलो गाथा उनकी गुणगुणाएँ, ये है इतिहास की शान ।।

।। वीर छंद ।।

अर्बुदगिरी - सतपुड़ा की धरती, नर्मदा-बैनगंगा की धार ।
युगों-युगों से है वो गाती, पवार शौर्य गाथा का सार ।।धृ।।

महर्षि परशुराम ने किया, क्रोध में क्षत्रियों का संहार ।
तब यह धरती हुई निक्षत्रि, मच गया सर्वत्र हाहाकार ।।
भारत भू पर रहा न कोई, उठा सके रक्षा का भार ।
यज्ञ आबू पर कर मुनियों ने, किया प्रगट 'क्षत्रिय पवार' ।।१।।

अग्निकुंड से प्रगट हुए तब, की युद्ध गर्जना 'मार-मार' ।
अग्निकुल के क्षत्रिय कहलाएं, कुल का नाम रखे परमार ।।
एक हाथ से गदा चलाएं, दूजे हात चली तलवार ।
दुष्टजनों का विनाश कर, जन-जीवन है दिया सँवार ।।२।।

कुलदैवत शिव, जगनारायण, माँ अम्बे महामाया नाम ।
शक्ति युक्ति उस माँ से मिल गई, भारत भू पर चमका नाम ।।
देवी सरस्वति प्रसन्न उन पे, साहित्य में दी प्रगति कराय ।
पवार तो सही क्षत्रिय थे ही, अब वो ब्रह्म-क्षत्रिय कहलाय ।।३।।

इसा पूर्व पांच सौ में हुए, महाप्रतापी 'आदित्य पवार' ।
विक्रमादित्य भरतरी से हुई, उज्जैनी नगरी विख्यात ।।
आठवीं सदी में कृष्णराज ने, उज्जैनी का सम्हाला राज ।
दसवीं सदी में बैरिसिंह ने, बसाई सुंदर नगरी धार ।।४।।

मुंज- भोज ने बाहुबल से, दिया मालवा को साम्राज्य बनाय ।
ज्ञानप्रसार के लिए धार में, भोज ने दी भोजशाला बनवाय ।।
राज - वैभव, साहित्य कलाएँ, बन गई मालवा की पहचान ।
स्वर्णयुग भारत में लाया, धन्य धारा नगरी के पवार ।।५।।

सदियों से किए राज विदर्भ पर, मालवाधीश पवार सरदार ।
धार से आएं ज्ञानी जगदेव, चालुक्य राजा के दरबार ।।
विक्रमादित्य षष्टम ने बनाया, बन गए नगरधन के सरताज ।
शौर्य, वफादारी से बने फिर, जगदेव चांदा के महाराज ।।६।।

मुगलों के जब हुए आक्रमण, हो गए मालवा के बेहाल ।
चारो दिशा आक्रांत हो गई, बिखर गए मालवा के पवार ।।
मित्रसेन तब आया धार से, नगरधन दल-बल ले के साथ ।
बसे पवार बैनगंगा किनारे, भूमिहर बन गये यहाँ किसान ।।७।।

जब किया मुहम्मद गोरी ने, दुराचार और अत्याचार ।
पवार पड़ गए उलझन में सब, मालवा छोड़ने किया विचार ।।
पवारों ने छोड़ा धार को, आये नर्मदा के इस पार ।
कोई बसे बैनगंगा किनारे, कोई बसे वर्धा के ही पठार ।।८।।

सतरा सौ में फिर से आये, अश्वदल लेकर अपने साथ ।
औरंगजेब जब हुआ पराजित, हात से छिना विदर्भ का राज ।।
गोंड राजा बख्त को दिलाया, सारा विदर्भ का राजपाट ।
बख्त बुलंद ने दिल से किया, पवारों पर ही सच्चा नाज ।।९।।

पवारों ने तोड़ के जंगल, ताल तलाव दिए बनवाय ।
किए कृषि विस्तार यहाँ पर, खेती कर के अन्न उपजाय ।।
प्रसन्न होकर बख्त शाह ने, दे दिए पवारों को गांव ।
किसी को मिल गई ग्राम पटेली, जमींदारी बड़द महागाव ।।१०।।

मराठा सतरा सौ इक्कावन में, गए कटक सेना के साथ ।
लड़ी लड़ाई पवारों ने, अपनी टिका रखी है साख ।।
नागपुर का रघुजी भोंसला, मन में फुला नहीं समाय ।
जब नवाजा मालगुजारी, तब पवार गए हर्षाय ।।११।।

अंग्रेज ने रखी मालगुजारी, बढ़ गया पवारों का सम्मान ।
आजादी का चला संघर्ष, हुए पवार शहिद कुर्बान ।।
बीसवीं सदी में हुआ परिवर्तन, अपना भारत हुआ निहाल ।
पवार समाज सचेत हुआ है, शिक्षा पाकर किया कमाल ।।१२।।

नए युग की अब धुन में आकर, प्रगति में है किया प्रवेश ।
किसान की किसानी उजड़ी, पड़ी नौकरी पर नजर विशेष ।।
अब तो नौकरी प्रधान हो गई, फिर व्यापार हुआ है हितेश ।
पवारों के बने इरादे, चमक रहें है देश विदेश ।।१३।।

।। सवैया ।।

कुलदैवत अम्बे महामाया, ऐसा दे माँ तू वरदान ।
शिव जगनारायण की कृपा, समाज को मिले सही सम्मान ।।
मातृभूमि भारत पे निष्ठा, होवे संस्कृति का गुणगान ।
होवे कृपा सदा तुम्हारी, क्षत्रिय पवारों का उत्थान ।।
गौरवगाथा यह पवारों की, देता हूँ इसे मै यहाँ विराम ।
करू अर्पण मै शब्द सुमन से, माता तुझ को करू प्रणाम ।।

- ज्ञानेश्वर

कुलीन पवार

शांत चित्त, शुद्ध आचरण
नम्र व्यवहार, सात्त्विक जीवन
कुलीन पवार को जीवन दर्पण ।।१।।

सुजान ज्ञानी, मुक्तहस्त दानी
निर्मल मन, साधो जीवन ।
कुलीन पवार को जीवन दर्पण ।।२।।

सोच-बिचारी, दक्ष प्रभारी
दीन दयालू, बैरागी जीवन
कुलीन पवार को जीवन दर्पण ।।३।।

अफाट शक्ति, ईश्वर भक्ति,
कुशाग्र बुद्धि, कर्मठ जीवन
कुलीन पवार को जीवन दर्पण ।।४।।

- ज्ञानेश्वर

१ पवारों का इतिहास

१. बैनगंगा-वर्धा घाटी के पवार : ब्रिटिश काल से आजतक के शासकीय जनगणना उपक्रमों ने पवार जाति की महाराष्ट्र के नागपुर, वर्धा, भंडारा, गोंदिया और मध्यप्रदेश के निकटवर्ति बालाघाट, सिवनी, छिंदवाडा, बैतुल जिलों में बहुसंख्या में बसापत दर्शायी है। यह समाज ग्रामों में बसा है तथा उनका प्रमुख व्यवसाय क्षेत्र कृषि रहा है। वर्ष २००१ जनगणना के विविध स्रोत्रों से जानकारी प्राप्त होती है कि बैनगंगा घाटी के पंवारों की जनसंख्या २२,१३,८७४ तथा वर्धा घाटी के पंवारों की जनसंख्या १६,४०,२५० एवम् दोनों का जोड़ मिलाकर कुल ३८,५४,१२४ (अडतीस लाख, चौपन हजार, एकसौ चौबीस) हैं।

भंडारा जिला गजेटिअर (प्रथम संस्करण,१९०८) पृष्ठ २०१-२०२ पर विशेष रूप से उल्लेख किया गया है कि " They are a handsome race with intelligent faces, usually fair, with high forehead, grey eyes. They are not, as a rule above middle height but they are active and hardworking and by no means deficient in courage and animal spirit or sense or humour." रसेल ने भी पाया कि "Original Rajput strain is still perfectly apparent in their fair complexions, high foreheads and in many cases, grey eyes." उन्होंने आगे लिखा है कि "Thought they have lived for centuries among a marathi speaking people, the Panwar's retain a dialect of their own, the basis of which is Bagheli or eastern Hindi. When the Marathas established themselves at Nagpur in the eighteenth century some of the Panwars took military service under them and accompanied a general of the Bhonsla ruling family on an expedition to Cuttack. In return for this they were rewarded with grants of the waste and forest lands in the valley of the Wainganga river and here they developed great skill in the construction of tanks and the irrigation of rice land, and are the best agricultural caste in this part of the country. Their customs have many points of interest, and, as in natural, they have abandoned many of the caste observances of the Rajputs (castes and Tribes of the Central Provinces of India, 1916, pp.339-340). "

उपरोक्त अंग्रेजी परिच्छेदों का भावार्थ यही है कि मूलतया पवार खुबसुरत होशियार, गोरे, उँचा माथा, घारी आँखे, मध्यम उँचाई के सक्रिय, मेहनती और साहसी तथा आक्रमक प्रवृत्ति के लोग होते है। आज भी मूलभूत राजपूत गुण उनका गोरा रंग, उँचा माथा तथा घारी आँखे स्पष्ट दर्शाते हैं। यद्यपि वे मराठा बाहुल क्षेत्र में सदियों से बस चुके है, पवारों ने अपनी बोली (पवारी बोली) जतन की है जो बघेली या पूर्व हिंदी भाषा से बनी हैं। जब मराठों ने नागपुर क्षेत्र में अठारवी सदी में अपने-आप को प्रस्थापित किया तब कुछ पवार उनकी सेना में भरती हुये और कट्टक की लड़ाई लड़ी। फलस्वरुप, उन्हे बैनगंगा घाटी में निकामी तथा वन्यभूमि दान में मिली जिसे उन्होंने भारी परिश्रम से विकसित किया, तालाब बांधे और सिंचित धान की खेती योग्य जमीन तैयार की। उन्होंने इस क्षेत्र के सर्वोत्तम किसान के रूप में अपने आप को प्रस्थापित किया। उनके जाति रीति रिवाजों में अनेक श्रेष्ठ एवम् आकर्षित करनेवाले मूल्य दृष्टिगत होते हैं हालांकि बहुत से राजपूत रीतिरिवाज (स्थानांतरण एवम् समयानुसार) ओझल हो चुके हैं। वे बड़ी-बड़ी मुँछे रखने व शिकार करने को क्षत्रिय धर्म का प्रतिक मानते हैं।

वर्धा जिला गजेटिअर में पवारों के विषय में लिखा गया है कि "They are of light colours and have good features and are strong and hardy" अर्थात वे गौर्ण वर्ण के, अच्छे नाक-नक्श एवम् हृष्ठ-पुष्ठ परिश्रमी लोग है। Russel ने भी उल्लेखित किया है कि बैतुल के भोयर लोग कहते हैं कि उन के पुर्वज धार के पवार थे तथा बालाघाट के पवार भी यही तथ्य मानते है जो दोनों समुहों में 'पवार खूण' होना दर्शाता है (Castes and Tribes of the C.P. of India, 1916, pp. 340). दोनों क्षेत्रों के पवार अब एक ही 'पवार' जनसमूदाय मानते है और रोटी-बेटी का आपसी व्यवहार की चलन दिन-ब-दिन तेज हो रही है।

रसेल ने "कास्टस् एन्ड ट्राइब्स ऑफ दी सेंट्रल प्राव्हिंसेस ऑफ इंडिया (१९१६, पृष्ठ ३३५) में वर्णन किया है कि शहाबुद्दिन एवम् मोहम्मद गोरी के आक्रमण एवम् तबाही से तंग होकर पवार धार व मालवा के अन्य क्षेत्रों से उत्तर व दक्षिण भारतीय प्रदेशों में पलायन कर गये। इतिहासकारों के अनुसार वे पंजाब-हरियाणा तथा पश्चिम महाराष्ट्र प्रदेशों में जा बसे।

लेखक एवम् सहयोगिओं द्वारा कुछ ही दिनों पहले इतिहास, धार्मिक व अन्य प्राचीन ग्रंथ तथा भाटों की पोथियों का अध्ययन किया गया और करीब १२ कुलोंकी वंशावलियों के विश्लेषण से बहुत ही महत्वपूर्ण तथ्य उजागर हुआ कि पवार औरंगजेब की दमनकारी नीतियों के कारण गोंडवाना (देवगढ़) के राजा बख्त बुलंदशाह के सहयोग से इ.स. १६७०-१७०० काल में मालवा (राजस्थान) से गोंडवाना राज्य में स्थानांतरित हुये । जो पवारजन मालवा के पश्चिम क्षेत्र से आये वे नगरधन किला (नागपुर-रामटेक समीप) और जो पवार जन मालवा के पूर्व सीमावर्ति क्षेत्र से आये वे भोह्यरगढ (बैतुल समीप) किले में ठहराये गये । बाद में नगरधन किला निवासी बैनगंगा घाटी तथा भोह्यरगड किला निवासी पवार जन समुदाय क्रमशः बैतुल, छिंदवाडा, वर्धा, नागपुर तथा भंडारा, गोंदिया, बालाघाट, सिवनी जिलों के ग्रामीण अंचलों में विस्तारित हुये (पवार संदेश, वार्षिक पत्रिका, २०११, अंक २६).

पवारों के कूर : जाति भास्कर के अनुसार भोज-मुंज काल में पवार जाति की कुल छत्तीस शाखाऐं (कूर) थी यह शाखाएं निम्न प्रकार से थी -

१. मोरी २. सोडा ३. सांकला ४. खैर ५. उमरा ६. सुमरा ७. वेहिल ८. बिहिल ९. मेपावत १०. बुल्हर ११. काबा १२. ऊमट १३. रेहवर १४. तुण्डा १५. सोरटिया १६. हरेलके १७. चोंदा १८. खेजूर १९. सुगडा २०. बरकोटा २१. पूनी २२. सम्पल २३. भीवा २४. कालपुसर २५. कलमोह २६. कोहीला २७. पूसया २८. कहोरिया २९. धुंदा ३०. देवा ३१. बरहर ३२. जीप्रा ३३. पौसरा ३४. धुंत्ता ३५. टिकुंबा ३६. टीका. इनमें मोरी के चंद्रगुप्त मौर्य, बिहिल (बागड) के उपेन्द्र, मुंज, भोज, आदि जगविख्यात राजा हुये । बैनगंगा घाटी के पंवारों के कुलदेवताओं में एक सांकलदेव है तथा विद्वानोंका यह मानना है की पवारों के इस जनसमूह की सांकलदेव नाम के शाखा के किसी पुरखे (आद्यपुरुष) से उत्त्पत्ति हुई होगी ।

वैनगंगा प्रदेश में रहने वाले पवार भी छत्तीस शाखाओं (कूर) में विभक्त है तथा उनमें भी एक शाखा के पुरुष-स्त्रीयों में 'शादी-ब्याह' वर्जित है । इनकी कूल शाखाएं (कूर) निम्न प्रकार से है ।

१. अम्बुले २. कटरे ३. कोल्हे ४. गौतम ५. चौहान ६. चौधरी ७. जेयत्तवार/जैतवार ८. ठाकुर/ठाकरे ९. टेंभरे १०. डाला ११. तुरकर १२. पटले १३. परिहार १४. पारधी १५. पुन्ड १६. फरीद १७. बघेले १८. बिसेन १९. बोपचे २०. भगत २१. भैरम २२. भोयर २३. एड़े २४. रंजहास २५.

रंदिवा २६. रहमत २७. राना २८. राउत २९. राहांगडाले ३०. रिनाईत ३१. शरनागत ३२. सहारे ३३. सोनवाने ३४. हनवत ३५. हरिणखेड़े ३६. क्षीरसागर.

वर्धा घाटी पवारों के विभिन्न कूरों को निचे दर्शाया गया हैं -

१. गिरारे/गिन्हारे २. पन्ह्याड/पराडकर/परिहार ३. चोपडे ४. बडनगरे/बन्नगरे ५. घागरे ६. छेरके/शेरके ७. कडवे ८. बिरगडे ९. पाठे/पाठेकर १०. डोंगरदिये/डोंगरे ११. धारपडे/धारपुरे १२. चौधरी १३. माटे १४. फरकाडे १५. गागडया/गाडगे १६. देशमुख १७. खौसी/खवसे/कौशिक १८. दिगरसे/डिगरसे १९. भादे २०. बारंगे २१. राउत २२. काटोले/गदडे २३. डोबले/ढोबाळे/ढवळे २४. किंकर/किनकर/किनेकर २५. रबडे, २६. कोरडे/कोडले २७. मानमोडे २८. सवाई २९. गोरे/दुखी/दुर्वे/गोन्हे, ३०. डाला ३१. उकार/ओंकार, ३२. उकडे/उकंडे ३३. उघडे ३४. कडवे ३५. करदाते/दाते ३६. करंजकर/केसाई/कसलीकर ३७. कामडी ३८. कालभोर/कालभुत, ३९. कुडिके/कुईके/कुईले ४०. खपरे/खपरिया ४१. खसारे ४२. खुसखुसे/खसारे ४३. गाडरे ४४. गाकरे ४५. गोहिते ४६. चिकाने ४७. टोपले ४८. ठवरे/ठुसी ४९. ढोले ५०. डहारे ५१. डंढारे/दंढारे ५२. देवासे ५३. धोटे ५४. धोंडी ५५. नाडीतोड ५६. पठारे/पेंधे /पिंजारे ५७. बरखडे/बरखेडे ५८. बार बोहरे ५९. बौंगने/बैगने ६०. बोबडे/बोबाट ६१. बोवाडे, ६२. भुसारी ६३. मुने ६४. रमधम ६५. राखडे ६६. रोडल्या ६७. लबाड/लाडके/लाडक्या ६८. सरोध्या/सरोदे ६९. हजारे ७०. हिंगवे ७१. बिसेन, ७२. बागवान/भोयर, इत्यादि ।

काल परिवर्तन अनुरूप पवारों में भी सामाजिक चेतना बीसवीं सदी के शुभारंभ से जाग उठी । शिक्षा ग्रहन कर नौकरी तथा कृषि के अलावा उद्योग, व्यवसाय, व्यापार, ठेकेदारी आदि क्षेत्रों की ओर आगे बढे । शनैः शनैः ग्रामीण पवार समाज समीपस्थ शहरों में स्थानांतरित होने लगा । वर्तमान में पवार बाहुल क्षेत्रों के विभिन्न छोटे शहर, जिला स्थल जैसे - बैतुल, छिंदवाडा, सिवनी, बालाघाट, गोंदिया, भंडारा, वर्धा, चंद्रपूर, गडचिरोली, अमरावती, यवतमाल, राजनांदगांव, दुर्ग, भिलाई तथा महानगर - दिल्ली, मुंबई, नागपुर, भोपाल, रायपुर, जबलपुर, इंदौर, पुना, हैद्राबाद, आदि में भारी तादाद में बस गये । कुछ परिवार जन विदेशी नागरिक भी बन चुके है ।

पवार जाति को पिछ़ड़ा वर्ग (इतर मागासवर्गीय / अदर बॅकवर्ड क्लासेस/ओ.बी.सी.) में क्रमांक १८९- महाराष्ट्र, क्रमांक १३-मध्यप्रदेश तथा छत्तीसगढ एवम् क्रमांक १६५ पर केन्द्रीय शासन की आरक्षण सूची में समावेश किया गया हैं ।

२. उत्पत्ति : अग्निपुराण, पद्मगुप्त रचित 'नवसहिसांक चरित', चंद्रबरदायी रचित ''पृथ्वीराज रासो'', टॉड कृत 'एन्दि्टिज एण्ड एनल्स ऑफ राजस्थान', रसेलकृत 'कास्ट्स एण्ड ट्राइब्स ऑफ सी.पी.ऑफ इंडिया', परमारकालीन शिलालेख तथा प्रशस्तियां पवारों की उत्पत्ति अग्निकुंड से बताती हैं । उत्पत्ति की घटना के साथ भगवान परशुराम द्वारा धरती से क्षत्रियों का संहार या विश्वामित्र द्वारा वशिष्ठ की आश्रम से नंदिनी (कामधेनु) गौ-हरण आदि अनेक पौराणिक कहाँनिया जोड़ दी गई है ।

अग्निपुराण -

''एकस्मिननेव कालेतु कान्यकुब्जों द्विजोत्तमः
अर्बुदं शिखरं प्राप्य ब्रहम्होम मथा करोत ।।४५।।
वेदमंत्र प्रभावाश्चत्वारी क्षत्रियाः ।
प्रमरः सामवेदीच चपहानिर्यजुर्विदः ।।४६।।
त्रिवेदीच तथा शुक्लोर्क्ष्वास परिहारकः ।
एरावत कुले जातान्गजाना रुहत्ये पृथक ।।४७।।''

जगदेवकालीन जैनड अभिलेख जि. आदिलाबाद (आंध्रप्रदेश) में निम्नाकित श्लोक प्रमार वंश दर्शाता है -

आसीदाशीर्व्वचोभिः स्कलमुनिजनैर्म्मानितो मेदिनींद्रै
राजा मुद्रां वहदभिः शिरसि वबहुनिधैब्बो धितश्चाटुवादैः
विश्वामित्रप्रताप व्यपनयनिपुणः प्राप्तजन्मावसिष्ठ
ध्यानाद्धूमजाच्च त्रिभुवनविदितः सत्वसार प्रमारः ।।४।।

अर्थात - विश्वामित्र को वसिष्ठ द्वारा पराजित करने मुनियोंने अग्नि के प्रताप से बलशाली प्रमार वीर की उत्पत्ति की जो त्रिभुवन में विख्यात हुआ।

अबुल फजल कृत *आइने अकबरी* में बौद्ध धर्म प्रचार से राजाओं में निष्क्रियता बढती देख संत महाबाह द्वारा ''धनजी'' परमार की अग्निकुंड से उत्पत्ति बताई गई है । जाने-माने इतिहासकार जगदीश नारायण सिंह कृत 'इतिहास का लोटा' में उल्लेख मिलता है कि चंद्रवंशी राजा ''आगिपाल'' जो आबु समीप चंद्रावती राजधानी से राज्य करता था उसे ऋषि मुनियों ने

अग्निकुंड में अग्नि प्रज्वलित कर मंत्रोपचार, यज्ञविधिविधान कर उसकी क्षत्रिय शक्तियों को जागृत किया, देवताओं के आशिर्वाद व देवी महामाया के पुण्यप्रताप से उसने असुरों का नाश किया और उससे अग्निवंश उद्गम् होकर आगे प्रवाहित हुआ ।

कुछ इतिहासकार (भांडारकर, गांगुली, भाटिया) मानते है कि विदेशी शूर जातियों के नवजवानों को (जैसे हून, यवन आदि) अग्निकुंड हवन, मंत्रोपचार से क्षत्रिय धर्म की दीक्षा दिलायी गई और पवार वंश का उदय हुआ । राजा मुन्ज कालीन हलायुध नामक महाकवि ने ''पिंगल सूत्रवृत्ति'' में पवारों को 'ब्रह्मक्षत्र' वंश कहा है । कुछ विद्वान उसका अर्थ ब्राह्मणों का क्षत्रिय वर्णांतरण फलस्वरूप पवार वंश की उत्पत्ति मानते हैं । कुछ प्रशास्तियां 'पवार' वंश की उत्पत्ति सूर्यवंशी राजा से अग्निवंशी बनने पर बताते है तो एक प्रशस्ति दूर दराज के सुजन देश से भारत आनेवाली जाति से बताते है । अर्थात बाद में पवारों की अग्निकुंड से उत्पत्ति के साथ चव्हान, परिहार, सोलंकी वंश भी जोड़ दिये गये । ''

आधुनिक इतिहासकारों के अनुसार सामाजिक परिवर्तन समय की मांग थी । प्राचीन आर्य नृपतिगणों का साम्राज्य बिखर गया था । चंद्र व सूर्यवंशों की राजधानियॉ - अयोध्या और हस्तिनापुर, विकृत रूप में भारत के भूपृष्ठ पर टिमटिमा रही थी । अन्य बर्बर जातियों की एक के बाद एक चढ़ाइयों.ने आर्य संस्कृति एवम् जीवन को हलाकान कर छोड़ा था । जिधर-उधर अफरातफरी, लूट-पाट और बर्बरता मची हुई थी । कहीं आभीर और कहीं ब्राह्मण राजा बन बैठे थे । इसका प्रमुख कारण आर्यभूमि पर आंधी की तरह बौद्ध धर्म का विस्तार एवम् क्षत्रिय धर्म का घोर पतन । राजसूय और अश्वमेध आदि शक्ति बढ़ानेवाली क्रियाओंका विप्लव तथा ''अहिंसा ही धर्म है'' का प्रचार । परिणाम यह हुआ कि एक ओर भारत की उत्तरी सीमा से लगी विदेशी जातियों को भारत में आकर उपनिवेश स्थापित करने का उत्साह बढ़ने लगा एवम् दुसरी ओर क्षत्रियगण राजदंड को बहुत भारी तथा अस्त्र-शस्त्रों को हिंसक समझकर उनकी जगह जप-चक्र हाथ में रखने लगे। वैदिक धर्म जर्जर हो गया । धर्म की रक्षा करने में उत्साही ब्राह्मणों को अर्बुदागिरि पर एक यज्ञ करना पड़ा ताकि जो क्षत्रिय वंश अपने कुल की कर्म व मर्यादा भूल चुके क्षात्रधर्म की उन्हे दीक्षा, शस्त्र, विद्या, आचरण, शासन, साहित्य, संस्कृति की शिक्षा एवम् देशभक्ति का पाठ शिखा कर सशक्त राष्ट्र

नेतृत्व निर्माण करना । अतः इन क्षत्रियों को अग्नि को साक्षी रख मंत्र, तप, जप से सुसंस्कृत बनाकर चार शाखाओं के राजपुतो का उदय हुआ । कुल का नाम अग्निकुल और परमार, परिहार, सोलंकी, चौहान आदि नये राजपूत प्रगट हुये । यह धर्मक्रांति भारत में तब हुई जब जैन तीर्थकर पार्श्वनाथ हुए । जिनका समय ईसा से आठ सौ वर्ष पहले माना जाता है ।

गोंडवाना क्षेत्र के पंवार लोग कई पीढ़ियों तक शिक्षा से दूर रहे । उनके भाटों ने जो बताया वही प्रमाण मानते थे । कुछ ऐतिहासिक लोकोक्तियां एक पीढ़ी से दुसरी पीढ़ी में चलते रहती थी । सामाजिक सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ कि जब आबू-अचलगढ़ पर आयोजित यज्ञ के लिये ऋषिमुनियों द्वारा तीन टाकों में घी संकलित किया गया था तब मौका पाकर असुरों ने भैसा का रूप धारण किया और तीनो टाकों का घी पीकर टाके खाली कर दिये। ऋषि-मुनियों ने तत्कालिन चंद्रावती के राजा को विनंती की कि इन भैसों को मार भगाव । जब युद्ध कर राजा हताश हुआ तब उसने काली मां के सामने अपना सिर काट रक्त चढाया तब देवी प्रसन्न होकर सिर से पवार, धड से धाकड, बाहों से चौहान और रक्तबुंदो से बुंदेलों को जन्म दिया । पौराणिक अग्निकुंड आबु-अचलगढ पर आज भी मौजुद है और एक वीर की मूर्ति भी है । टाकों के अवशेष भी मौजुद है ।

इन पौराणिक कथाओं के मद्देनजर हम केवल इतना ही कह सकते हैं कि पवार अग्निकुलीन क्षत्रिय है । परमार या मराठा पवार अपना गोत्र वशिष्ठ मानते हैं । जबकि हमारे पुरखे पवारों का गोत्र कश्यप बताते हैं ।

३. कुलदेवता : इसी तरह सर्वेक्षण से पता चला कि हमारा पवार समाज तीन कुलदेवता - १. दुल्हादेव, २. नारायण देव और ३. साकर देव (सांकलदेव) है । इनकी चर्चा रसेल ने भी की है । वे देवघर में पोटली में बांध कर रखे जाते है और पूजन हेतु वर्ष में दो समय-हरेली अमावस (जिवती) तथा माघ शुक्ल पूर्णिमा या मंगलवार/शनिवार को उतारे जाते है । उन्हे सुकुडे-अठई-खीर इ. का नैवेद्य चढाया जाता है । उनकी महापूजा ज्येष्ठपूत्र के जन्म/विवाह की खुशी में बकरे की बली चढाकर की जाती है जिसे 'बधई' कहते हैं । पवार लोग अपनी कुलदेवी काली मां (महामाया कालिका) को मानते हैं । देवघर में कालीदेवी की मूर्ति न होकर मात्र दीया जलाया जाता है । नवरात्रियों में पवार परिवारों में घट स्थापना व देवी जश

गाना, उपवास करना, संभोग से दूर रहना आदि पथ्य कठोरता से पाला जाता है । पंवार महिलाओं को घर में या मंदिरों में कालभैरव, हनुमान, काली मां मूर्तिपूजन या दर्शन वर्जित है तथा घर में भी इन देवी-देवताओं की मूर्ति स्थापना नही की जाती । इस ऐवज में पिंड़ी (शिवलिंग) राम-सीता-हनुमान, दुर्गा या गायत्री प्रतिमाओं की पूजा करते हैं ।

हर पवार परिवार में देवघर स्थापित करने की परम्परा चली आ रही है । इस देवघर में चवरी और दीया और एक पाट रहता है । मान्यता है कि चवरी पर पूर्वज, दीया ज्योत में काली देवी और पाट पर देवगण निवास करते है । पवारों में देवघर में अक्सर वरिष्ठ महिला नियमित पूजा करती है और अन्य परिवार जन बेल-फुल, अक्षता से पैर पड़ते है । आंगन में तुलसी वृंदावन तथा जो शिवरात्री महादेव यात्रा में नंदी के साथ जाते हैं महादेव बोवला (चबुतरा) की आंगन में स्थापना करते हैं । हर त्यौहार को घर के देवी-देवता की पूजा, नैवेद्य अर्पन किया जाता है । महिलायें चतुर्थी, एकादशी तथा इसी तरह की कुछ तिथियों पर उपवास करती है । सुबह, शाम, देवघर में दीया लगाती है । पवार पुरुष वर्ग मात्र धर्म विधि विधान में खास रुचि नही लेता । पवारों में मंत्रोपचार, पितांबर धारण, जप-तप आदि धार्मिक अनुष्ठानों की प्रथा नही है ।

इस के अलावा तुरकर परिवारों में ''दावर-पीर'' की देवघर में चवरी बनाकर प्रस्थापना की जाती है । वे बाबा फरीद के मजार, गिरड जि. वर्धा में उर्स ले जाते हैं । वे हलाल कर मुर्गा/बकरा काटते हैं और प्रथम मांस-गोस्त दावर पीर को चढाया जाता हैं ।

बिसेन परिवारों में ''सीमला देवी'' की मान्यता है । शादी के अवसर पर बिसेन वरपक्ष वधूपक्ष से पीढ़ा छुपाकर अपने घर बारात वापसी के साथ लाते है । जिसकी बाद में पूजा की जाती हैं । दुल्हा, दुल्हन पाट के अक्षता कुंकु से पांव पडते है और आशिर्वाद लेते है ।

४. राजवैभव : आबु शिलालेख की ३३ वी पंक्ति स्पष्ट करती हैं कि -

''श्री धूमराजः प्रथम बभूम भूवासवस्तत्र नरेश वंशे''

अर्थात परमार वंश का ''धुमराज'' प्रथम राजा हुआ ।

अबुल फजल ने आइने अकबरी (English translation by H.S. Jaret, Revised by J. N. Sarkar) में आगे लिखा है की धनजी की पांचवी

पीढ़ी का वारिश महाराजा पुटराज बिना संतान को जन्म दिये स्वर्ग सिधार गये तथा मंत्रियों ने पवार (Puar) जाति के 'आदित्य पवार्' नामक शूरवीर को उत्तराधिकारी चुनकर गद्दी पर बिठाला एवम् पवार वंश आगे बढा । आदित्य पवार से सम्राट विक्रमादित्य तक अनेक राजा हुये ।

आदित्य पवार की वंशावली : (ईसापूर्व ४०० से ईसवी सन ५८३ तक) १. आदित्यपवार, २. बृहमराज, ३. अतिब्रह्मा, ४. सघोस्ना, ५. हेमर्थ, ६. गन्धर्व, ७. विक्रमादित्य, ८. चंद्रसेन, ९. खरगसेन, १०. चितारकोट, ११. कनकसेन, १२. चन्द्रपाल, १३. महेंद्रपाल, १४. करमचंद, १५. विजयचंद, १६. मुन्जपाल, १७. भोजपाल, १८. जयचंद, १९. जितपाल, आदि ।

हिन्दी जगत के विख्यात साहित्यकार जयशंकर प्रसाद (१९३१) ने अपनी रचना 'चंद्रगुप्त' नाटक के प्रारंभ में 'मौर्यवंश' अर्तगत पृष्ठ १० पर लिखा है कि - 'टाड ने अपने राजस्थान में लिखा है कि जिस चंद्रगुप्त की महान प्रतिष्ठा का वर्णन भारत के इतिहास में स्वर्णांक्षरों से लिखा है, उस चंद्रगुप्त का जन्म पंवार कुल की मौर्य शाखा में हुआ है । संभव है कि विक्रम के सौ या कुछ वर्ष पहले जब मौर्य नृपति की राजधानी पाटलीपूत्र से उठी तब इन लोगों ने उज्जैयिनी को प्रधानता दी और यहीं पर एक प्रादेशिक शासक की जगह राजा की तरह रहने लगे ।' (राजकमल पेपरबॅक संस्करण, २०१०).

मालवा राज्य-पवाँर राजाओं का राज्यकाल

१) कृष्णराज उर्फ उपेन्द्र - सन ८०० से ८२५

२) वैरिसिंहदेव प्रथम (शिवराज) ८१८-८४३

३) सीयकदेव प्रथम (अमोधवर्षदेव) सन ८४३-८६८

४) वाक्पतिराजदेव प्रथम (बपैपराज) सन ८६८-९१९

५) वैरिसिंहदेव द्वितीय (वज्रटस्वामी) सन ९१९-९४५

६) सीयकदेव द्वितीय (हर्षदेव) सन ९४५-९७४

७) वाक्पति द्वितीय या मुँजदेव - सन ९७४ से ९९३

८) सिन्धुलराजदेव या नवशंशाक - सन ९९३ से १०००

९) राजा भोजदेव प्रथम - सन १००० से १०५५

१०) जयसिंहदेव - सन १०५५ से १०७०

११) उदयादित्यदेव - सन १०७० ते १०८४

१२) नरवर्मनदेव - सन १०९४ से ११३३

१३) यशोवर्मनदेव - सन ११३३ से ११४२

१४) जयवर्मनदेव - सन ११४२ से ११६०

१५) विंध्यवर्मनदेव - सन ११६० से ११९३

१६) सुभातवर्मनदेव - सन ११९३ से १२१०

१७) अर्जुनवर्मनदेव-सन १२१० सें १२१६

१८) देवपालदेव - सन १२१६ से १२४०

१९) जयतुर्गादेव - सन १२४० सें १२५६

२०) जयवर्मनदेव द्वितीय - सन १२५६ से १२६१

२१) जयसिंहदेव तृतीय - सन १२६१ से १२७०

२२) अर्जुनवर्मनदेव द्वितीय - सन १२७० से १२८०

२३) भोजदेव द्वितीय - सन १२८० से १३००

२४) महलक देव - सन १३००-१३०९

२५) जयसिंह चतुर्थ - सन १३०९ - १३१०

आगे इस वंश में उपेन्द्रराज से महालकदेव तक अनेक राजा हुये - १) कृष्णराज उर्फ उपेन्द्र, २) वैरिसिंहदेव प्रथम (शिवराज), ३) सीयकदेव प्रथम (अमोधवर्षदेव), ४) वाक्पतिराजदेव प्रथम (बपैपराज), ५) वैरिसिंहदेव द्वितीय (वज्रटस्वामी), ६) सीयकदेव द्वितीय (हर्षदेव), ७) वाक्पति द्वितीय या मुँजदेव, ८) सिन्धुलराजदेव या नवशंशाक, ९) राजा भोजदेव प्रथम,१०) जयसिंहदेव,११) उदयादित्यदेव,१२) नरवर्मनदेव,१३) यशोवर्मनदेव,१४) जयवर्मनदेव,१५) विंध्यवर्मनदेव,१६) सुभातवर्मनदेव,१७) अर्जुनवर्मनदेव,१८) देवपालदेव, १९) जयतुर्गादेव, २०) जयवर्मनदेव द्वितीय, २१) जयसिंहदेव

तृतीय,२२) अर्जुनवर्मनदेव द्वितीय २३) भोजदेव द्वितीय - २४) महलक देव।

उदयपूर प्रशस्ति में हम पाते है कि "When Bhoja's son Jayachand (Jayasimha)'s reign was ended, none of the Powar caste found worth to succeed. Then Jitpal of landlord family of the Powar caste was elected to the throne." (भीलसा- उदयपुर प्रशस्ति एपिग्राफिआ इंडिया, खंड-१, पृष्ठ -२३६)

R. V. Russel and Hiralal ने अपनी विख्यात रचना Caste and Tribes of the C.P. India (Part -II, Vol. IV, 1916) pp 330-351. में बैनगंगा घाटी के पवारों के विषय में वर्णन में मालवा में पवारों का शासन स्पष्ट किया हैं -

"The Kings of Malwa or Ujjain who reigned at Dhar and flourished from the ninth to the twelfth centuries were of the Panwar clan. The seventh and ninth kings of this dynasty rendered it famous. "Raja Munja, the seventh king (974-995), renowned for his learning and eloquence, was not only a patron of poets, but was himself a poet of no small reputation, the anthologies including various works from his pen. He penetrated in a career of conquest as far as the Godavari, but was finally defeated and executed there by the Chalukya king. His nephew, the famous Bhoja, ascended the throne of Dhara about A.D. 1018 and reigned gloriously for more than forty years. Like his uncle he cultivated with equal assiduity the arts of peace and war.Though his fights with neighbouring powers, including one of the Muhammadan armies of Mahmud of Ghazni, are now forgotten, his fame as an enlightened patron of learning and a 'skilled author remains undimmed, and his name has become proverbial as that of the model king according to the Hindu standard. Works on astronomy, architecture, the art of poetry and other subjects are attributed to him. About A.D. 1060 Bhoja was attacked and defeated by the confederate kings of Gujarat and Chedi, and the Panwar Kingdom was reduced to a petty local dynasty until the thirteenth century".

पवारों के भाट राजस्थान से बैनगंगा वर्धा क्षेत्र में जब भी आकर घरों में प्रवेश करते है तब पहाडी आवाज में निम्नांकित गीत गाते हैं -

करि बन्दन सुख के सदन, गौरीनन्द गनेस ।
कथूँ सुजस पुँव्वार कुल, बर दे बुद्धि बिसेस ।।१।।

मालव धरनी मांह, धार नगर रजधानी ।
बीर तखत पुँवार, कीरत जगदेव कहानी ।।२।।

विक्रमसा नरबीर, नगर उज्जेणि में नामी ।
मुन्ज अरू नृप भोज, चतुर्दस-विद्या ज्ञानी ।।३।।

जन्म लियो भरतरी जशा, देस भयों चहुँ दण्ड ।
गुरू गोरख सिर कर धऱ्यो, अमर नाम अखंड ।।४।।

पृथ्वी ठावी उज्जेणिपुर, धरा ठावि गढ़ धार ।
कुल वर्णु पूरू राय को, पुहमी बड़ा पुँवार ।।५।।

अतः पवारों के दिलों में पीढ़ी-दर-पीढ़ी यह धारना दृढ हुई है कि वे मालवाधिश पंवार सेनाधिपतियों के वंशज है ।

५. स्थानांतरण एवम् विस्तार : भंडारा - बालाघाट जिला गजेटिअर में यह अंदाज दिया गया हैं कि, जब मालवा के पवार नृपतिओं का इस क्षेत्र पर एकाधिकार था तब बारवी शताब्दी में शायद पवार जनसमुदाय मालवा से इस प्रदेश में आया हो । इन गजेटिअरोंने आगे अंकित किया है कि पवार लोग अपने नेता ''मित्रसेन'' के नेतृत्व में उज्जैन पर शहाबुद्दिन गोरी के आक्रमण एवम् लूटपाट के परिणाम स्वरूप ई.स. ११९० में इस प्रदेश में आये हो । रसेल मानते है कि पवारों का पहला स्थानांतरण जब उनके मालवा के राजाओं के समय (भोज प्रथम से भोज द्वितीय) ग्यारवी-बारवी सदी में हुआ होगा और दुसरा स्थानांतरण मालवा पर पवारों का साम्राज्य के पतन (ई.स. १३०५) के बाद हुआ हो । कृक (''ट्राईब्स एन्ड कास्ट्स ऑफ दी नॉर्थ-वेस्टर्न प्राव्हिंसेस एन्ड औंध (इ.१८९६)'') मानते है कि पवार राजपूत, जब औरंगजेब ने मालवा पर आक्रमण किया और उसके सरदारों ने धार व उज्जैन में लूटपाट मचाई, तब पवार वहांसे इस प्रदेश में आये हो (बैतुल जिला गजेटिअर, १९०८) । इसी श्रृंखला में आगे बढ़ते हुये भंडारा जिला गजेटिअर (इ.१९७९, पृष्ठ ७१४) पर हम यह विवरण पाते हैं कि एक पवार राजपूत सरदार मालवा से गोंडराजा बख्त बुलंद के आश्रय में इ.स. १७०० में आया और उसने उसे २०० अश्व फौज का नायक बनाया । इसी गजेटिअर में देवगड के राजा द्वारा साकोली समीप महागांव तथा आमगांव समीप बड़द की जमींदारी पवारों को बहाल करने का उल्लेख है (पृ. ७३०).

अतः हमारे सामने अनिश्चितता की स्थिति है, मूल प्रश्न अनिर्णित है कि पवार मालवा से इस प्रदेश में स्थानांतरित कब हुये होंगे?

आधुनिक इतिहासकारों के अनुसार मालवा पर पवार राजाओं ने इ.स. ८१२ से १३०५ के लम्बे काल तक शासन किया। इसके पश्चात करीब ५०० वर्षोंतक मुगल शासकों ने राज्य किया। गोरी और खिलजी सुल्तानों के बाद दिल्ली के मुगल सम्राट अकबर से लेकर औरंगजेब की मालवा पर राजसत्ता रही और इ.स. १७२७-१७३२ में फिर मराठा पवारों ने मालवा का सिंहासन काबिज किया।

औरंगजेब ने करीब ५० वर्ष (ई.स.१६५८ - १७०७) राज्य किया। वह कट्टर इस्लाम - परस्त था। उसने समर्पित, मांडलिक हिंदू राजा, सुबेदार, सेनाधिकारी, मालगुजार, जमींदार, जागीरदार तथा सामान्य जनता पर अपने जुल्मों का कहर ढ़ा दिया। डॉ. दीनानाथ वर्मा ने अपनी रचना ''मध्यकालीन भारत'' में औरंगजेब के अत्याचारों का बड़ा ही सटीक विवरण दिया है। उनके अनुसार औरंगजेब ने हिंदूओं को इस्लाम धर्म अपनाने हेतू मजबूर ही नही, हलाकान कर दिया था। उसने (१) इस्लाम के प्रचार प्रसार के लिये हिंदूओं पर जजिया कर लगाया; (२) इस्लाम स्वीकार न करने पर हिंदूओं को सेना और प्रशासनिक ओहदों से हटाया और धर्म परिवर्तित लोगों को दिया; (३) इस्लाम स्वीकार न करने पर हिंदूओं की मालगुजारी, जमींदारी सनदे छिनी और हिंदू से मुसलमान बने लोगों की पुरस्कृत की; (४) धर्मांतर की आग में राजपूत बहादुरों का बेरहम कत्ल किया; (५) हिंदू बस्तिओं की लूट-पाट आमबात थी; (६) हिंदूओं को मुसलमानों की अपेक्षा अधिक चुंगी कर देना होता था; (७) दिवाली पर रोशनी, नवरात्री में जलसे और होली पर रंग खेलने पर बंदी डाली थी तथा उल्लंघन करनेवालों पर हाथियों से उन्हे सरे आम कुचल दिया जाता था; (८) उसने सिखों के गुरूद्वारे तथा हिंदूओं के मंदिरों को ध्वस्त कर दिये थे; (९) इतनाही नही तो सिख धर्मगुरु, तेज बहादुर और जाटों के मुखिया राजाराम की हत्या करवा दी गयी थी तथा (१०) कई राजपूत सरदारों को दीवारों में चुनवा (दबा) कर मार डाला गया था।

मालवा में पवार जाति का बाहुल्य था। गांव के गांव पवारों से भरे हुये थे। उनकी उस काल के अनुरुप सामाजिक व्यवस्था, आचार संहिता

व सुरक्षा एकसाथ रहकर ही फलीभूत हो सकती थी। जब कभी एक क्षेत्र में रहना मुश्किल हो जाय तो पूरी जाति या गांव के गांव दुसरे क्षेत्र में पलायन कर जाते थे। औरंगजेब की दमनकारी नीतियों से तंग आकर कई क्षत्रिय जातियों ने मालवा से अन्य क्षेत्रों में पलायन किया था (धार जिला गजेटिअर) उन में पवार भी थे।

पवारों का एक समुह धार या दक्षिण मालवा से दख्खन के मराठा राज्य के छत्रपति शिवाजी के आश्रय में (ई.स. १६६४-१६८०) सरदार साबुसिंह के नेतृत्व में प्रथम अहमदनगर जिले के सुपे ग्राम की गढ़ी में. आकर बसा। बाद में उनके वंशज मराठा शासन के स्तंभ बन गये। मराठों ने मालवा मुगलों से जीतने पर ३-१२-१७२२ तथा बाद में इ.स. १७२७ में उदोजीराव पवार को मालवा का सुबेदार नियुक्त किया। तद्पश्चात २७ जुलाई १७३२ में आनंदराव पवार को धार और तुकोजीराव पवार को देवास की राज-गद्दी सौंप दी गई (कवचाळे कृत ''पवार विजय'')। उसी तरह कोई पंजाब, हरियाणा, हिमाचल, उत्तरप्रदेश, उत्तरांचल तो कोई बंगाल, बिहार, गुजरात या मध्यप्रदेश के अन्य प्रदेशों में चले गये।

पवारों.का एक बड़ा दल मालवा से तत्कालीन गोंडवाना खासकर देवगढ़ गोंडी राज्य जो बैतुल, छिंदवाडा, वर्धा, नागपुर, भंडारा, बालाघाट सिवनी वर्तमान जिलों के क्षेत्र में था, वहा आ पहुँचा। यह कैसे हुआ इसका अनुमान निम्नांकित तत्कालीन घटनाक्रम से लगाया जा सकता है।

औरंगजेब के काल में देवगढ़ (गोंडवाना) के राजा बख्त बुलंदशाह थे। उन्होंने औरंगजेब से संधि की और मजबूरन मुस्लीम धर्म धारन कर इ.स. १६८६ से १७०६ तक इस प्रदेश पर राज किया। किन्तु इस राज्य की दयनीय आर्थिक स्थिति होने के कारण वह निर्धारित राजस्व का भुगतान दिल्ली सरकार को निर्धारित समयपर करने में असमर्थ रहता था। पहलेही उसके हाथी, घोडे और खजाना औरंगजेब के सुल्तानों ने जप्त कर लिया था। औरंगजेब ने बख्त के इस्लाम धर्म धारन करने पर शंका की और उसे देवगढ़ की राजगद्दी से ई.स. १६९१ में पदच्युत किया। उसके स्थान पर इस्लाम धारन करनेवाले चांदा के गोंड नरेश दिनकर और बाद में उसे भी हटाकर कानसिंह को देवगढ़ के सिंहासनपर विराजमान किया।

बख्त को यह कदापि सहन न हुआ। वह लुकते-छुपते मालवा पहुँचा और अपदस्थ पवार और अन्य राजपूत सरदारों से मिला। सरदारों के ग्रामों में विश्राम ले रहे सैनिकों को साथ लेकर गोंडवाना आने, औरंगजेब के चंगुल से देवगढ़ राज्य स्वतंत्र करने और धनदौलत के साथ ऐशों-आराम की सुरक्षित जिंदगी जीने की शर्त रखी। आपस में संधि कर वह ३७०० सैनिकों की हाथी, घोडे और पैदल सेनादलों के कुटुंब कबिलों के साथ मालवा से गोंडवाना आया और मार्च १७०१ में देवगढ़ से औरंगजेब के मांडलिक राजा को भगाकर अपना राज्य पुनर्स्थापित किया (भंडारा जिला गजेटिअर, १९०८)। आहिस्ते-आहिस्ते औरंगजेब का राज्य पतन की ओर जा रहा था। बख्त ने मौका पाकर खेडला, चांदा और सिवनी की मुस्लीम सल्तनते भी बहादुर सेना के दमपर अपने राज्य में मिला दी।

जिला गजेटिअर, कृक तथा रसेल आदि के ग्रंथ बताते है कि पवारों का एक दल बैतुल समीप ''भोह्यरगढ़'' तथा दुसरा दल नागपुर-रामटेक समीप नगरधन के किलों में रूकवाया गया था। इसका प्रमाण हमारे भाटों द्वारा संग्रहित वंशावलि युक्त पोथियाँ भी देती हैं। बाद में उन्हे विभिन्न स्थलों के किलो में स्थानांतरित किया गया। इन पोथियों से दुसरा महत्वपूर्ण तथ्य यह उजागर होता हैं कि जो पवार दल पश्चिम मालवा - गुजरात-राजस्थान सीमावर्ती उमरकोट, टोक, उज्जैन, कानवार, से आया उसे नगरधन तथा जो पूर्व मालवा क्षेत्र, साजापूर, सुजालपूर, आदि से आया उसे भोह्यरगड़ किलों में ठहराया गया था।

औरंगजेब राज्यकाल का अंतिम दौर और देवगढ़ के बख्तबुलंद का सत्ता संघर्ष इ.स.१६८०-१७०० के आसपास का काल है और जितनी भी वंशावलिओं का हमने अध्ययन किया उनके अनुसार उस काल से वर्तमान तक १६-१७ पीढ़ीयां होती है, जो नियमानुसार १६ X २० = ३२० या १७ X २० =३४० ऐसे ३२०-३४० वर्ष पूर्व (ईसवी सन १६७०-१७००) पवार मालवा से नगरधन तथा भोरगढ़ आये इस नतीजे पर पहुँचते हैं। ''क्षत्रिय पवार इतिहास एवम् संस्कृति (२००६) बैतुल'' की सामाजिक पत्रिका के अनुसार बोवाडे तथा अन्य पवार परिवार इ.स.१६७७ में शुजालपुर से बैतुल जिलें में स्थानांतरित हुये ऐसा वर्णन किया गया हैं जो हमारे अनुमान का

समर्थन करता हैं। बैतुल जिला गजेटियर कि प्रथम संस्करण में भी पवारों द्वारा मालवा से बैतुल जिले में स्थानांतरण औरंगजेब के काल में बताया गया है। जैसे डुबते को तिनके का सहारा मिला तो वह तर जाता है वैसेही पवार बख्त बुलंद का सहारा लेकर मालवा से यहां खुशहाल जिंदगी की चाह में आये। ३२०-३३० वर्ष पूर्व दोनों किले देवगढ़ के राजा के आधिन थे इसका ठोस प्रमाण मिलता है। ब्रिटिशकालीन साहित्य में भी हम पाते है कि हमारे पुरखों ने प्रथम नगरधन (बैनगंगा तटीय पवार) और भोरगढ़ (वर्धा तटीय पवार) किलों में आश्रय लेने की बात मुखरित की है, चाहे वे जिला गजेटिअर हो या कृक या रसेल के ग्रंथ।

प्रारम्भ में ये लोग एक किले से अन्य किले में जाते रहे। भाटों की पोथियों के अनुसार नगरधन से सानगढ़ी, सौंदड़, अम्बागढ, नागपुर, भंडारा, लालगढ़ी, प्रतापगढ़, चांदागढ़, राजगढ़, जामगढ़, देवगढ़, भौरगढ़ (रामपायली) आदि गोंड़ राज्य के विभिन्न किलों में स्थानांतरित होते रहे।

इन पोथियों से पता चलता है कि पवार परिवार जो मालवा से गोंडवाना आये वे वहां प्रस्थापित गढ़ी के राजवंश या ग्रामों के प्रमुख थे, जागीरदार थे और सेनानायक थे। उदाहरण के तौर पर - दिगपालसिंह बिसेन, उज्जैन के बिसग गढ़ी, मोतीप्रसादसिंह ठाकूर, ठाकरगढ़ (उमरकोट), (वर्तमान सिंध पाकीस्तान) सुमेरसिंह बघेले, अचलगढ़ (माऊंट आबू समीप) तोमरसिंह टेंभरे, टोक की कानगढ़ी (वर्तमान कानवारा गुजरात), कंगनसिंह पटले, पाटनगढ़ी (गुजरात), विजयसेन तुरकर, उमरकोटगढ़ी, के सुबेदार थे। इसी तरह शिवनाथ पटले/वडकर, ग्वालियर में सुबेदार थे। उस समय ग्वालियर मालवा राज्य के अंतर्गत था।

बख्त बुलंद शहा तथा चाँद सुल्तान के आश्रय में आने के बाद जनोजी पटले देवगढ़, शिवराम पारधी नगरधन, धीरसिंह बिसेन सौंदड़, भूपसिंह रहांगडाले भंडारा तथा मोतीप्रसादसिंह ठाकूर अम्बागढ़, के किलेदार थे। इसी तरह गणाजी पटले, सुमेरसिंह बघेले, जनोजी पटले तथा मोतीप्रसादसिंह ठाकूर आदि का सेनानायक का होना इन पोथियों से पता चलता है। हमने केवल दस-बारा ही वंशवृक्षों का अध्ययन किया है। और भी हमारे पुरखे सेनानायक तथा फौज में उँचे ओहदों पर रहे होंगे। कई

पवार परिवारों ने आज भी अपनी पुश्तैनी शस्त्रों - तलवार, ढाल, भाले आदि सदियों से सम्भाले हुये हैं । हमारे प्रत्यक्ष अवलोकन के अनुसार श्री. यशवंतराव देशमुख (तुमसर) के पास की तलवार पर तीन सुवर्ण बिंदियाँ (स्टार) जड़ी हुई है तथा श्री गजानन ठाकूर (मलपूरी, तिरोड़ा) के पास की तलवार पर एक सुवर्ण बिंदी मध्य में तथा पांच पांच रौप्य बिंदियाँ दोनों ओर जड़ी हुई हैं जो विशेषज्ञों के अनुसार युद्धों के विजयों की निशानी है । भाटों की पोथियों से यह स्पष्ट होता है कि हर परिवार में युद्ध में पारंगत वीरपुरुष थे ।

पोथियोँ से एक बहुत ही महत्वपूर्ण तथ्य सामने आया कि वर्तमान कूर (उपनाम/ सरनेम) पवार धार से ही आये । उनमें काल परिवर्तन अनुरुप बदल निश्चित तौर पर हुआ है, जैसे - ठाकर, ठक्कर, ठाकूर, ठाकरे, और तोमर, तंवर, टेंभरिया, टेंभऱ्या, टेंभरे । राहांगडाले रांगगढ़ - राठोड़ा (आबू चंद्रावती समीप) किले के होने के कारण उन्हें प्रथम रांगगढवाले तथा बाद में रांगगढ़े, रांगगड़े, राहंगड़ाले कहने लगे । किन्तु रसेल का सिद्धांत कि ''पवार मालवा से यहां बिना स्त्रियॉ लिये आये और इस प्रदेश की विधवा महिलाओं से विवाह कर उनके कूर अपनाये और उन्हे गोत्र जैसे मानकर शादियाँ जोडी और परिणाम स्वरूप एक नई जाति का उदय हुआ ।'' यह निराधार तथा बेजवाबदार एवम् तथ्यहिन वक्तव्य है । मराठों की सेना जब पानीपत युद्ध करने गयी थी तब सैनिकों ने अपने साथ अपने अपने परिवार लिये थे ऐसा स्पष्ट उल्लेख मराठा इतिहास में मिलता है । अतः पवारों ने भी मालवा से गोंडवाना स्थानांतरण के समय साथ में अपने परिवार लाये होंगे । हिंदू धर्म प्रणाली के अनुसार सभी जातियों में पुत्र पैतृक पक्ष का कूर अपनाता है न कि मातृपक्ष का! पोथियों से प्राप्त आधारों पर हम कह सकते है कि ''Mixed blood'' यह मात्र उनकी खोखली अवधारना है और पोथियों ने उन्हे पुरी तरह खारिज किया है । पवारों ने मालवा से ही अपने कूर लाये और समयानुसार वे स्थानीय भाषा अनुरूप बदलते गये । एक प्रमार (पवार) जाति जो त्रेतायुग से चली आ रही है, अन्य जातियों के समान उसका अनेक शाखाओं में विभाजन होना जैसी समाजशास्त्रियों की दृष्टि में मात्र सर्वसामान्य मानव समाज संस्कृति की प्रक्रिया हैं । इस तरह की विभिन्नता मराठा पवारों में भी मिलती है । वे मराठों के ९६ कुलो में से एक

होने के बावजूद उनमें पचास-अठ्ठावन कूर (सरनेम) है।

बाबुलाल भाट की पोथियों के अनुसार बैनगंगा तटीय पवारों के ३६ कूरों में से केवल ३२ ही इस प्रदेश में मालवा से आये । रंजहाड, रनदीवा, फरीद और रहमत इन कुलों की वंशावलियाँ पोथियों में नही पायी जाती । उसी तरह भाट श्री मदनसिंह उर्फ उदयसिंह बड़वाजी के अनुसार वर्धा तटीय पवारों के केवल ७२ कुल ही इस क्षेत्र में स्थानांतरित हुये हैं।

पवार मालवा में भी उत्तम सैनिक के साथोसाथ निपून कृषक होने की बख्त बुलंद को अच्छी जानकारी रही होगी । उसने औरंगजेब राज्य के अस्त के साथ शांति का वातावरण देख अपने राज्य की आर्थिक स्थिति सुधारने हेतु इन पवार फौजियों को एक और बैनगंगा किनारा तो दुसरी ओर वर्धा नदी किनारे का भूभाग खेती करने दिया । उन्हे खेती के लिये जमीन, जंगल, ग्राम बसाने की छूट और ग्रामों का प्रशासन सम्हालने का हक्क और राजस्व (मालकानी) जमाकर निर्धारित हिस्सा राज्य सरकार को भुगतान करने के अधिकार दिये गये । (भंडारा जिला गजेटिअर) । बख्त बुलंद की मृत्यु पश्चात उसका लडका चांद सुल्तान ने इ.स. १७०६ से १७३९, करीब ३३वर्ष इस क्षेत्र पर राज्य किया। उसने भी पवारों को अपने पिता द्वारा बहाल की गई सभी रियायते जारी रखी । उसने अपनी राजधानी देवगढ़ से नागपुर लाई । नागपुर शहर की स्थापना एवं किले का निर्माण बख्त बुलंद ने पहले ही कर रखा था।

बख्त बुलंद द्वारा पवारों को माहगांव तथा बड़द की जमींदारी पुरस्कृत करने संबंधी विवरण प्रारम्भ में ही दिया गया है (भंडारा जिला गजेटिअर) । इन जमींदारी पुरस्कृत पवारों का वर्तमान में पता लगाना कठिन कार्य है । वर्तमानकाल की तीनों जमींदारियाँ - तिरखेड़ी, फुक्कीमेटा तथा मोहबर्रा वर्ष १८१५- १८२० में नागपुर के राजे भोसला द्वारा सनद सौंपने के प्रमाण प्राप्त है ।

पवारों द्वारा गोंडी शासन काल में अनेक ग्राम बसाने के हमे कुछ उदाहरण मिले हैं, जैसे - धारसेन कटरे ने भंडारा समीप धारगांव, मेघराज राहांगडाले ने पांचगाव (भंडारा समीप), नारूजी राहांगडाले ने मसेरा (चांदपुर), गांगलसिंह टेंभरे ने गांगला (तहसिल तिरोड़ा), अर्जूनसिंह टेंभरे ने अर्जूनी (खैरीघाट नजीक, त. तिरोड़ा) और मोखासिंह टेंभरे ने मोखे (त. साकोली) ग्रामों को बसाया। उसी तरह कोलबा ठाकूर ने कवलेवाडा (त.गोरेगाव) और कोलारी ठाकूर ने कोयलारी (तह. तिरोड़ा) ग्राम बसाये।

"कुछ पवार वंशावलियाँ"

अ.क्र. ग्राम	**बिसेन** उगली (बालाघाट)	**राहांगडाले** बळद (आमगांव)	**कटरे** तिरखेडी (आमगांव)	**पटले** पालडोंगरी (तिरोडा)	**तुरकर** दासगांव (गोंदिया)	**टेंभरे** मेंढा (तिरोडा)
१६७० से १७००	**उज्जैन** ▯ **नगरधन**	**रांगगढ़** ▯ **नगरधन**	**मालवा** ▯ **नगरधन**	**पाटन** ▯ **नगरधन**	**उमरकोट** ▯ **नगरधन**	**कानगढ़** ▯ **नगरधन**
१.	दिगपालसिंह	राजसिंह	--	डूंगरसिंह	बिजयसेन	-
२.	श्रीराज	भूपसिंह	कुंजराज	खेमराज	विरेंद्रसेन	-
३.	लक्ष्मणदेव	मेघराज	धर्मराज	सुमेरसिंह	धीरसेन	तोमरसिंह
४.	धीरसिंह	नारू	गिरधरसिंह	रामराज	श्रीराज	तंवरसिंह
५.	कमलदेव	जगना	शामराज	नामदेव	मनाजी	तेजसिंह
६.	दीपसिंह	पिला	सिंधूराज	नारो	चिरवलु	गांगलसिंह
७.	जोधराज	कडू	दादूराम	नांगो	ढ़ोंडा	सदोबा
८.	पागा	नेऊ	हिरबा	टूना	नारो	मुंकूद
९.	शिवराम	गोमा	राघो	फैदा	काशी	लखा
१०.	उंदरू	चेपा	दौना	पैका	बूचा	गोमा
११.	नारू/नाना	येशा	पांडू	रामा	बाना	नान्हू
१२.	गोविंदा	लाडकू	कनू-काशी	बापू	जीवन	नरू
१३.	नामाजी	भागवतबापू	दौलत	हरी	रुकन	आनंदराव
१४.	व्यंकटराव	धर्माजी	तुलसीराम	कोलू	दयाराम	माधो
१५.	झुम्मकलाल	पुरनलाल	झुम्मकलाल	टिकाराम	हेमराज	बापुजी
१६.	चंद्रशेखर	छत्रपाल	दिवाकर	भोजराज	वासुदेव	ज्ञानेश्वर
१७.	गौरव	प्रवीण	पंकज	यादव	मोहीत	--

"कुछ पवार वंशावलियाँ"

राणा चंदनपुर (वारासिवनी)	**ठाकुर** मलपुरी (तिरोडा)	**पारधी** ठानेगांव (तिरोडा)	**बघेले** पींडकेपार (तिरोडा)	**वडकर-पटले** जाम तुकुंब (चंद्रपुर)	**बोआड़े** चंदोरा मुलताई (बैतुल)
मालवा ▯ **नगरधन**	**ठाकरगढ़** ▯ **नगरधन**	**पारखगढ़** ▯ **नगरधन**	**अचलगढ** ▯ **नगरधन**	**गायगढ़** ▯ **देवगढ़**	**साजापूर** ▯ **भोरगढ़**
-	-	-	-	शिवनाथसिंह	केलनदेव
-	-	-	-	अंताजी	चाचकदेव
-	-	-	सहदेव	शंकरू	तेजराव
-	मोतीप्रसादसिंह	किशोरसिंह	सुमेरसिंह	नागो	जैतसिंह
-	सुमेरसेन	शिवराम	भीकूराज	पांडूरंग	रत्नसिंह
-	भोला	साबा	भीमराज	राघो	धरसिंह
-	कोलबा	साऊ	यशराज	पांडुरंग	केहरसिंह
खामू	ताना	नाना	फैदा	गणा	लखमन
शंभू	संता	नरू	गोंदा	धुंधा	जानू
देऊ	गना	नेवर	लखा	गंगा	भावजी
नेऊ	रामा	लालू	सावा	हरबा	नान्हू
बकाराम	नारू	गोंडू	फकीर	केशोराव	कारू
मुंशी	लिंगा	दाजी	अंबर	भोजराज	भद्दू
लाला	किसनलाल	तुलसीराम	नकटू	येशोराव	मल्लू
चित्रसेन	दुलीचंद	इठोबा	गंगाराम	शंकरराव	कुसना
भोजसिंह	गजानन	डोमाजी	देऊभाऊ	भालचंद्र	कन्हैयालाल
शार्दुल	रामकिशोर	प्रेमसिंग	सदानंद	हिमांशु	चंद्रशेखर

२ पवारी संस्कार एवम् संस्कृति

१. शिशु जन्म - ग्रामीण अंचल में पवार परिवारों में गांव की पेशावर दायी एवम् वयोवृद्ध महिलाओं की निगरानी में प्रसुति घर में ही कराई जाती थी। जहां सुविधायें उपलब्ध है, प्रसुतिगृह में जचकी कराई जाती हैं ।

शिशु जन्म के तुरंत बाद प्रसुति कक्ष, शिशु व माता की साफसफाई व खेत से टेंभरून की लकडी काट कर लाकर फाटक के सामने आड़ी रखी जाती हैं ताकि भूत-पिशाच आदि का गृह-प्रवेश अवरुद्ध हो जाय । आगामी पांच दिनों तक परिवार जन अशुद्ध (सुतुक) स्थिति में रहते है, अतः आगन्तुक इस कालावधि में गृह-प्रवेश कर अशुद्ध न होने का संकेत एवम् यह एक प्रकार से जीव-जंतु संक्रमण प्रतिकार की भी व्यवस्था मान सकते है ।

किसी व्यक्ति को जंगल भेज कर काकई पेड़ की साल या बारीक लकड़िया मंगाई जाती है । उन्हे कुटकर चुर्ण बनाया जाता है । अन्य व्यक्ति द्वारा कुम्हार के घर से नई कोरी मटकी (हांडी) बुलाई जाती है । उसमें तैयार किया हुआ काकई चुर्ण व प्रमाण से जल डाला जाता है । उपर मटकी को पारो (झकणी) से झांक कर लाल कपड़े से बांधा जाता है । उसे कुंकू, हल्दी, चावल के पांच टीके लगाकर पांव पड़ते है और तेज आगी वाले चुल्हे पर चढ़ा देते है । कुछ समय की उबाली से काढ़ा बन जाता है । अच्छा काढ़ा बनने पर उसमें महुये की राब (मीठ़ी जेली) छोड़ते है और आगी को चुल्हे के बाहर कर देते है । काढ़ा ठन्ड़ा होने पर उसे साफ बर्तन या बाटली में जमा कर देते है । कुछ महिलायें तिल्ली कुटकर गुड़ मिलाकर तिल्ली के लड्डू बनाती है और प्रसुति (बारतिनबाई) महिला को दोनो समय पांच दिनों तक काढ़ा और तिल्ली के गरम लड्डू दिये जाते है ताकि शरीर में ताकत आयें ।

सुतक काल में परिवार जनों को पूजा-पाठ वर्जित रहती है ।

मेहमानी नवाजी भी वर्जित रहती है । यह काल तभी समाप्त होता है जब ब्रो का नार झड़ जाता है और उसे बाहर जमीन में गाड़ दिया जाता है । शिशु के पिता को छटीतक दाढी-कटिंग करना वर्जित होता हैं । परिवार जन देवघर, वृंदावन आदि पवित्र स्थल स्पर्श नही कर सकते ।

२. छटी का दस्तुर - नवजात शिशु का नार झड़ने के बाद, खासकर छटवे दिन फाटकपर रखी टेंभरून की लकडी जला दी जाती है । बाद में सम्पूर्ण घर की साफ-सफाई,सड़ा-सारवण तथा बिस्तरों के चादर, खोर आदि बदले जाते है । माता और ब्रो को नहला धुलाकर, कमरे की साफ-सफाई की जाती है । चौके की साफ-सफाई, सड़ा सारवन कर चुल्हों को पोता जाता है । पुराने मिट्टी के पकाने के बर्तन तोड़ कर नये बर्तनों में भोजन बनता है । देवघर में चवरी की पूजा व दीप प्रज्वलन किया जाता है । तुलसी वृंदावन को जल चढाया जाता है ।

बालक को माता की गोदी में बिठाया जाता है । अन्य महिलायें दीया प्रज्वलित कर आरती लेकर आती है । दीया को कपडे से झांककर रखा जाता हैं ताकि जावर पुरीतरह उतारते तक शिशु की दीये पर नजर न पड़े । नाई शिशु के सिर के बाल निकालता है (जावर) और उन बालों को बुआ या बहने अपने पल्लु में जमा करती है । बाल झेलनेवाली महिलाओं को नये वस्त्र व दान-दक्षिणा से पुरस्कृत किया जाता है । दादी/बुआ या ननंदे शिशु यदि बालक है तो करदोरा (कमरदोरा) बांधती है या यदि बालिका है तो उसके पांव कुकू से रेखांकित करती है ।

इस दिन बुआ, बहने, ससुराल के रिस्तेदार व अपने कुलीन लोगों को आमंत्रित किया जाता है । वे एक एक कर शिशु को टीका लगाकर उपहार भेंट करते हैं । भोजन दिया जाता है । किन्तु मामा के लिये यह समारोह वर्जित होता हैं । इस दिन के बाद परिवार जन बाहरी व्यावसायिक कार्य करना प्रारम्भ करते है ।

३. बारसा समारोह - बालक सवा महिने की आयु का होने पर बारसा समारोह आयोजित किया जाता है । झुला सजा-धजा कर नरम आसन पर बालक को सुलाया जाता है । एक हाथ से झुले को हिलाया जाता है और

दुसरे से मीठी गेहूं की मिसर (घुगरी) छोड़ी जाती है, जिन्हे ब्च्चो बड़े चाँव से चुन-चुन कर खाते हैं। बाद में बालक का नामकरण विधि सम्पन्न होता है । ब्च्चो को मेहमान नये-नये कपड़े और खिलौनों का उपहार देते है ।

ब्च्चो की माँ नये वस्त्र परिधान कर सामने के आंगन में आकर खड़ी होती हैं । घर की बुजुर्ग महिला उस के सिर पर जल से भरा लोटा रखती है । महिलायें उसके माथे पर टीका लगाकर पांव पड़ती है । उसे पान के बीड़े खिलाये जाते है और कंधे पर हसियाँ रखती है । बाद में माता लोटे के पानी से आंगन सिंचती है, हसियाँ से मिट्टी खोदती है । यह रस्म जचकी के बाद वर्जित गृह कार्य - जैसे पानी भरना, खेतों में काम करना आदि आज से प्रारम्भ करने की ओर संकेत करती हैं ।

बाद में पलाश के १-२ पत्ते पानी से साफ धोकर उन में ताजा पकाया खाना-पकवान-खीर नैवेद्य के रुप में परोसा जाता है । एक परोसा मिट्टी खोदे हुये स्थल पर रखा जाता है जो संकेत करता है कि माता अब नियमित रूप से खाना बना सकती है । बाकी ११ परोसे दाई अपने पल्लों में झाँककर ले जाती है । इस अवसर पर दायी को नई साड़ी - चोली पहनाई जाती है । ग्रामिणों को भोजन कराया जाता है ।

४. शिशु खीर चटाई कार्यक्रम - प्रथम दीपावली के अवसर पर - लक्ष्मीपूजन के दिन लक्ष्मीदेवी पूजन समाप्ति पश्चात माता द्वारा नवशिशु को अपनी गोद में पकड़कर चावल की खीर देवघर में या आंगन में बृंदावन के सामने चटाने की प्रथा है । बालक/बालिका को नये वस्त्र पहनाये जाते हैं ।

५. दाढ़ी निकालने की प्रथा - लड़के की दाढ़ी फुटते ही युवा या किशोर अवस्था में पहुंचा समझा जाता है । प्रथम दाढ़ी निकालने हेतु समारोह आयोजन की पवारों में प्रथा चली आ रही है । बहने, बुआ, भाभियाँ आदि महिलायें लड़के को हल्दी लगाती है । उसे नये वस्त्रों का अहेर किया जाता है । युवक चौक पर आसन ग्रहन करता है और नाई उसकी दाढ़ी उतारता है । बुआ या बहने बालों को अपने पल्लु में झेलती है । बाद में नाई युवक को नहलाता है । पहनने हेतु नया पोशाक उसे बुआ या बहन भेंट करती हैं। फिर युवक पाट के पांव पड़ कर आसन ग्रहन करता है । उसे माथे पर

तिलक-कुमकूम लगाकर, पांव पड़कर बुआ या बहन उसके ओंजुर में पान, नारियल और सुपारी रखती हैं । महिलाएं पैसे देकर पांव पड़ती हैं ।

इसके बाद चने की दाल, गेहूं की घुघरी और शक्कर मिलाकर उसकी प्रसाद सभी उपस्थित जनसमुदाय को वितरित की जाती है । इस अवसर पर बाल झेलने वाली महिलाओं को वस्त्रों का उपहार और मेहमान, घरजन आदि को भोजन कराया जाता है ।

६. गुरू दीक्षा - पवारों में यह परम्परा पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आ रही है। इलाहाबाद या काशी से पंडित आने पर नवयुवकों को विधिवत दीक्षा दी जाती हैं । पंडित न आनेपर यह विधि स्थानीय ब्राह्मण, गोसाई, बैरागी या भगत द्वारा सम्पन्न कराई जाती है । शुभ तिथि देखकर यह कार्यक्रम किया जाता है ।

घर की साफसफाई, सड़ा-सारवन कर घर में एक स्थान पर चौक डालकर पीढ़ा या पाट रखा जाता है । युवक/युवती नहा-धोकर आसन ग्रहन करते हैं । प्रथम गुरु के चरण स्पर्श कर उसके सिर पर कोरी धोती या दुपट्टा रखा जाता है, उन्हे तिलक लगाकर पांव पड़े जाते हैं । गुरु प्रथम युवक/युवती पर जल छिडककर पवित्रीकरण, जल चेले/चेली के हथेली में भरकर पीने का निर्देश कर आचमन तथा शिखा (चोटि) को जल से गीला कर क्गी गांठ बांधने कहता है और मंत्रोपचार करता है। इसे शिखा वंदन कहते है । इस समय तीन मंत्र उच्चारित किये जाते हैं -

अ) पवित्रीकरण - ओम् अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।

ब) आचमन - ओम् अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा ।

क) शिखा वंदन - ओम् चिद्रूपिणि महामाये दिव्य तेजः समन्विते ।

तिष्ठ देवि शिखा मध्ये तेजोवृद्धि कुरुष्व मे ॥

बाद में गुरु अपने शिष्य के कान में एक मंत्र फुकता है -''धीमहि धि'' या ''ओम् भूर्भूवःस्वः तस्यवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात या ओम् नमो शिवायः या ओम् नमो वासुदेवाय आदि ।'' अंत में गुरू शिष्यों से कोई भी एक मनपंसद वस्तू या आदत त्याग करने का वचन लेता है ।

७. विवाह संस्कार - पवार परिवारों में बडी धूमधाम से मनाये जाते है। प्राचीन काल में शादियाँ सप्ताह भर चलती थी अब दो या एक दिन में ही सम्पन्न की जाती हैं । पवारों में दहेज या हुंडा प्रथा नही हैं । विवाह संस्कार में ब्राह्मण आवश्यक नही होता । लगुन ''राम नवरदेव - सीता नवरी सावधान'' के साथ पुराने जमाने में लगाई जाती थी । अब ५ या ७ मंगलाष्टक बोले जाते हैं । लगुन के बाद सप्तपदी (भँवर) ''धीमहि धिः'' कह कर सम्पन्न होती है । शादी में केवल मंगलसूत्र प्रमुख्यतया आवश्यक गहना होता है । अन्य गहने ऐच्छिक उपहार हुआ करते हैं । शादी में वधू का पिता खान-पान के बर्तन, गाय-भैस, सोना-चांदी अपनी इच्छा से स्त्रीधन रूप में देता है । विवाह सम्बधित करीबन २५-३० नेंग दस्तुर होते है । पवार महिलाओं में विवाह समारोह का श्रीगणेशाय होते ही मेहंदी लगाना मुख्य आकर्षण होता हैं ।

यहां वैवाहिक रीति रिवाजों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है वैसे क्षेत्रीय प्रभाव हर नेंग दस्तुर में नजर आता है ।

पवारों में शादी समारोह की तिथि निर्धारित होने के पश्चात ब्याह की रस्मे प्रारम्भ हो जाती है ।

काज (कुलदेव) पूजा - विवाह पूर्व दोनो पक्ष अपने अपने कुल देवताओं की पूजा करते है । परिवार के ज्येष्ठ सदस्य के घर जाकर या अपने घर कुलदेव लाकर पूजा की जाती है । कुलदेवता दुल्हा देव (शिव) नारायण देव (विष्णू) तथा सांकलदेव (पवार आद्य पुरुष) देवघर में पोतली में रखे रहते हैं, उन्हे विधिवत उतारा जाता है, पूजा की जाती है एवम् स्वकुल जनों को भोजन कराकर फिर इन देवताओं को पोतली में वापस विश्राम दिया जाता है । पवारी परम्परा अनुसार इस अवसर पर दूल्हा देव के नैवेद्य हेतु पशु-बली (काला बकरा) की थी और इस मौके पर स्वकुलीन लोग घर के अंदर भोजन कर हड्डीयां एवं उर्वरित अन्न घर में ही एक गड्ढा बनाकर उसमें डालते थे । हाथ भी वहीं धोते थे और अंत में उस गड्ढे को मिट्टी भरकर बंद कर दिया जाता था । इसे 'बधई' कहते है । यह प्रथा अब धीरे-धीरे विलोपित हो रही है । आजकल लोग केवल अठई-सुकुड़े का नैवेद्य चढ़ाते हैं ।

सगाई - पहले भावी वधू के पैर पड़े जाते है । वर पक्ष के लोग अपने रिस्तेदार सम्बन्धित मित्रों, गांव के प्रतिष्ठित लोगों की बारात वधु पक्ष के घर ले जाते है । उसे पुराने जमाने में 'गुरो की बारात' कहते थे तथा सगाई को 'गुरी सुवारी को जेवन' या 'गुड़भात्या' कहते थे । पवारी प्रथा अनुसार मेहमानों के पांव धोकर उन्हे चांवल-कुंमकूम का टीका लगाया जाता हैं। पहले के जमाने में गुड़-पोहा (भेली-पोहा) बाद में गिला आलु-पोहा-हलवा और आजकल विविध व्यंजनों का नास्ता कराया जाता है । नास्ते के बाद पूर्व मुखी दिशा में चौक डालकर उस पर पाट रखा जाता है । उस पर कन्या आसन ग्रहन करती है और वर पिता, दादा या ज्येष्ठ भ्राता द्वारा कन्या को टीका लगाकर साड़ी आदि वस्त्र दिये जाते है । कन्या पोशाक परिधान कर आसन ग्रहन करती है । फिर वर पक्ष का बुजुर्ग या पिता कन्या के हाथों में पान, नारियल, ५ प्रकार के फल, गहने, श्रृंगार, कपड़े, मिठाई देकर बायें हाथ की उंगली (अनामिका) में अंगुठी (मुंदी) पहनाई जाती है । पश्चात भूतकाल में सव्वा रुपया या पांच रुपये तथा कुंकू से कन्या को टीका लगाकर चांवल/अक्षता से पांव पड़ने की प्रथा थी । अब ड्राय-फ्रुट, सुटकेस और बड़ी कॅश से पांव पड़ने की प्रथा बन गई है । सभी बाराती कन्या को टीका, द्रव्यदान कर पांव पड़ते है । उसे महाराष्ट्र-वऱ्हाड में साल-मुंदी कहते है, झाड़ी पट्टी के पवार पायलगनी या फलदान कहते है । इस अवसर पर वधू पक्ष का दामाद वर पक्ष से सभी सामग्री गहन करता है । आंजुर भरने के बाद बहनों द्वारा आगदा (ओट-अंजुरी में पान-पैसा रखकर पूजा करना) भरा जाता है जिस में पहले कलश और बाद में वधू के आगदे भरे जाते हैं। इस में चावल के दाने पांच बार कन्या के पैर से सिर की ओर से ले जाकर सिर पर छोड़े जाते है । फिर आगदा वाली बाई पानदान से एक पान का बीड़ा और रूमाल उठाती है । नाई द्वारा दुल्हन के कुमकुम से पांव लिखे जाते है । बाद में भोजन (रोटी) कार्यक्रम संपन्न होता है ।

इसी तरह 'वर' की भी सगाई सम्पन्न की जाती है । पवारों के इस कार्यक्रम में मातृपक्ष का बहुत महत्व रहता है तथा पुरोहित या मंत्र-पूजा पाठ या कोई वैदिक विधि बंधनकारक नही होती ।

मंडपाच्छादन एवम् मातृका पूजन - पवारों में १२ डेरी के विवाह मंडप की प्रथा प्राचीन काल से चली आ रही है । आठ डेरियॉ आठ दिशाओं

का प्रतिनिधित्व करती है । इनमें अष्ट देवता निवास करते है । अन्य तीन डेरियों पर ब्रह्मा विष्णू महेश का निवास होता है तथा अंतिम (१२वी) डेरी पर कुलदेवता निवास करते है, जिसे लगूनडेर मानकर पूजा की जाती है । लगूनडेर मोहई एवं अन्य ग्यारा सालई की, ४ लटके (बल्लियाँ) एवम् २४ हरे बांस तथा मंडप आच्छादन हेतू जामुन की डगाले (फांदिया) लाई जाती है ।

इस मौके पर बुआ कुम्हारिन की भूमिका अपनाती है । वह अपने पास ढकनों में जीरा और धनिया भरकर धागे से बांध देती है उन पर पारे रखे जाते है । सम्मुख बैठी हुई महिलाएँ बुआ से ढकने खरीदती है । उन्हे डेरी पूजन पूर्व डेरी के पास रखा जाता है ।

डेरी पूजन हेतू महिलाएँ दुल्हा/दुल्हन को मंडप ले जाती है । नया ब्लाऊज या आंगी (चोली) या कोरा कपडा नागर के फार को लपेटा जाता है । उसे हाथ से स्पर्श कर दुल्हा/दुल्हन तथा परिवारजन एक के बाद एक पुरखों का नाम लेकर स्मरण करते है और उन्हे इस मांगलिक कार्य में उपस्थित होने आमंत्रित करते है । डेरियों को नैवेद्य चढाया जाता है । हल्दी कुमकुम का टीका लगाया जाता है, व्यंजन चढ़ाये जाते है, और पांव पड़े जाते है ।

मंडप सुताई कार्यक्रम हेतू मंडप में सड़ा-सारवन, रंगोली आदि होने के बाद दामाद या भांजे लोग क्Qो धागे से मंडप पांच से ग्यारह फेरे की सूताई करते है । इस मौके पर कोतवाल आमपत्रों की तोरण मंडप के चौफेर बांधता है । इस तरह मंडप सुताई का कार्यक्रम सम्पन्न होता है ।

खन माती दस्तुर के लिए महिलाएं नजदिक पास की जमीन की मिट्टी (धरती माय) खोदती है और यह खन माती नई टोकनी में डालकर सिरपर कोरा कपड़ा लेकर रखती है एवम् घर वापस आती है । मंडप में मिट्टी को गीला कर लगून डेर के आसपास लिपा जाता है । लकड़ी के छोटे से पाट पर एक बेठ बनाई जाती है । कहीं कहीं चुल्हा भी साथ में बनाने की प्रथा है । बाद में इस पाट को बेठ के साथ देवघर ले जाया जाता है ।

नांदड प्रज्वलन - जो विवाहित परिवारजन उपवास रखता है वह अपने सिर शिखा से पांव के अंगुठे तक धागे के पांच सरे लेता है, उसे कपास की कांडी पर लपेटता है, फिर नांदड (मिट्टी का बर्तन) देवघर में

लाकर उसे तेल से पूरा भर दिया जाता है । धागे की लट डुबो दी जाती है और एक सिरा बाहर रख उसे प्रज्वलित किया जाता है । इस नांदड के दोनों बाजू में सात-सात मिट्टी के दिये प्रज्वलित किये जाते हैं । नजदिक ही दामादों या भाँजों द्वारा प्राप्त बड़ के पत्तों के ७ या १४ जोडी द्रोण रखकर उनमें सोजी रखी जाती है और देवघर मे चौरी (पुरखों) की पूजा की जाती है । यह महाकाली का दीप विवाह समारंभ संपन्न होते तक प्रज्वलित रखा जाता है।

माहे दसाई हेतू परिवार की एक दम्पत्ति जोड़-गाठ बांधकर पाट-बेठ टोकना में रखते है एवम् पड्डा से झाँक देते है । पुरुष उसे अपने सिर पर रखकर तथा पत्नी केटली से अखंड जल धारा छोड़ते हुये दोनों मंडप की ओर आगे बढते है । पाट-बेठ को लगन डेरी के पास प्रस्थापित किया जाता है । इन्हें श्रीगणेश गौरी का प्रतिरूप माना गया है ।

काकन बंधाई का दस्तुर महत्वपूर्ण होता है, दुल्हे/दुल्हन को बीच में बिठाकर पांच-सात महिलाएं बाहर से घेरा बनाती है एवम् एक दुसरे से अपने सिर टिकाती है उनके सिर के बाहर से धागे के पांच घेरे लिए जाते है । बुआ अपनी हथेली से धान पीसकर चांवल निचोड़ती है और चांवल के पांच दाने धनिया जीरा पांच (खाने के) पानों के ऊपर रखती है । पानों को चारो तरफ से मोडकर पांच सरी धागे में तांबे की अंगुठी डालकर उन्हे दो बार घेरा मारकर दो गाठें बांध देती है । इस तरह काकन बनकर तैयार हो जाता है । बुआ वर/वधू का दाहिना हाथ लेकर मजबूती से पांच या नौ गाठे लगाकर मनगट पर काकन बांध देती है । काकन बांधने के बाद वर/वधूने घर के बाहर जाना या खाट/पलंग पर बैठना वर्जित होता है ।

बिजोरा (वर/वधू चढ़ावा) : प्रथम वर पक्ष की ओर से वधू पक्ष के घर बाजे गाजे से सगे-सम्बन्धि के साथ बारात ले जाते है । लडकी का पिता या ज्येष्ठ सदस्य सभी बारातियों के पांव पीतल के कटोरे में धोकर अंगोछे से पोंछता है । कुमकुम चांवल से टीका लगाकर आदरपूर्वक राम-रमाई लेता है । वधू को कुल तीन चढाव चढाये जाते हैं।

पहला चढाव - मंडप में चौक पर पीढ़े पर वधू को बिठाल कर वर का पिता या बुजुर्ग हाथ में पहनने साड़ी तथा ब्लाऊज सौंपा जाता है । *दुसरा चढाव* - वधू द्वारा नये वस्त्र परिधान करने के बाद कार्यक्रम देवघर में होता

है । इस वक्त जेवर, आभूषण चढ़ाये जाते हैं । *तीसरा चढाव* - सामने की छप्पर पर या मंडप में चार सुमी चारपाई (खटिया) पर सम्पन्न होता है । खटिया के चार पांव पर चार बाराती बैठते है और बीच में वर का बड़ा भाई बैठता है । ऊपर से शालू का छत ताना जाता है । वर का बड़ा भाई दुल्हन को गोद में बिठाता है और वर के पिता या ज्येष्ठ समकुलीन व्यक्ति द्वारा तीन या अधिक साड़िया (शालु, तीरगोनी आदि) ब्लाऊज, संलग्न पोशाक (अंडरगारमेंट्स्) स्वर्णाभूषण, श्रृंगारपेटी, सुटकेस, पादत्राण आदि सामग्री भेट की जाती है । जिसे वधू पक्ष का दामाद वधू के पीछे खड़ा रहकर ग्रहन करता हैं । एक साड़ी दीपावली के अवसर पर पहनने के लिए भी दी जाती है, इसे चरळ की साड़ी कहते है । फिर बिजोरा का मान-पान का भोजन (सिमंत भोजन) सम्पन्न कराया जाता है ।

बाद में *डेरपूंजी* का कार्यक्रम होता है । बाराती मंडप में आते है । महिलाओं द्वारा आरती मंडप में लाई जाती है । लगुन डेर को कोरे कपडे में ९ हल्दी, ९ सुपारी और ९ पैसे, ९ खाने बनाकर अलग अलग ९ स्थानोंपर रखते है । दोनों पक्षों के सम्बन्धी (बिह्याई) पाटों पर आमने सामने बैठते है । देवी-देवताओं का, खासकर गणेश तथा गौरी का स्मरण कर अन्य देवताओं के भी नाम पुकारते है । प्रत्येक भगवान के नाम के बाद एक पान का बीड़ा एक दुसरे को खिलाते है । इस श्रृंखला में यदि सभी देवताओं का स्मरण करें तो ३६० पान बीड़े लग सकते है । इसे *पान जिताई / पान खिचाई* कहा जाता है । इस वक्त खुब मजा आता है । बाद में कपड़े में रखी सामग्री को ९ खानों की दो गांठे बनाते है, एक में पांच और दुसरी में चार खाने की गांठे होती है । इन गाठों को दोनों पक्ष के मामाओं को सौंपा जाता है जिनका काम लग्न घटिका पर आता है । इन्हे *लगुन गांठे* कहते है ।

पांच बाराती एवं वधू लगुन डेर के कुमकुम, हल्दी, चांवल से पांव पडते है और उसे गड्ढे में डालकर मिट्टी से गड्ढा भरा जाता है । इसे डेर पूंजी कहते है । फिर पांच बाराती जानोसा स्थल जाते है । जानोसा घरमालक को चांवल, हल्दी, सुपारी आदि देते है ताकि वह गणेश (गनोबा) की पूजा करे व परिसर मंगलमय बनें ।

इसी तरह वधू पक्ष के लोग वर पक्ष के घर बिजोरे की बारात ले जाते है । पहले बारातियों का पांव धोना, नास्ता पानी होता है और चढाव

की रस्म अदा की जाती है । दुल्हे को केवल दो चढाव चढाये जाते है । *पहला चढाव* मंडप में चौक-पाट पर बिठा कर टीका लगाते है और पहनने के लिए पोशाक भेट की जाती है । *दुसरा चढाव* घर में होता है जिसमें पगडी, साफा, कोट/शेरवानी, अन्य कपडे, श्रृंगार सामग्री, पेटी या सुटकेस में भरकर भेट की जाती है । साथ में सोने की अंगुठी, घड़ी, चेन आदि चढाई जाती है । एक जोडी पादत्राण, मोजा भी दिया जाता है । सभी बाराती दुल्हे को तिलक लगाकर पांव पडते है । पांच बाराती व दुल्हा, सुवासिनी डेर पूंजी का कार्यक्रम करते है । बाद में भोजन (बिजोरा जेवन) का आयोजन किया जाता है ।

हल्दी-अहेर - महिलाएं बाजे-गाजे के साथ मिट्टी के कटोरे में हल्दी का गीला लेपन लेकर घर से निकलती है । साथ में भांजे, दामाद भी होते है । सर्वप्रथम हल्दी मातामाय/देवी गौरी को चढाई जाती है । बाद में मारुती (हनुमान) एवम् अन्य देवताओं को नारियल फोडकर विधिवत पूजा की जाती है । हर देवता को नया वस्त्र अहेर किया जाता है ।

पाट के पांव पड़कर दुल्हा/ दुल्हन को मंडप में बिठाया जाता है, उसे खासकर उत्तरमुखी और पितृकुल के पुरुष महिलाएं पूर्वमुखी बैठती है । पांच महिलाएं दुल्हा/दुल्हन को हल्दी लगाती है, बाद में महिला-रिस्तेदार सभी को हल्दी लगाती है । टीका लगाती है । हल्दी तिलक माथेपर लगाकर उपस्थित वर/वधू पक्ष को अहेर किया जाता है । सर्वप्रथम वर/वधू की मामी, बुआ, मौसी, समदन आदि अहेर करती है । फिर अन्य महिलाएं अहेर करती है । दुल्हा-दुल्हन को कार्यक्रम समाप्ति बाद मंडप में नहलाया जाता है । अंत में हल्दी अहेर का भोजन दिया जाता है ।

लगुनबारात / दुल्हासार - पुराने जमाने में दुल्हा की सवारी के लिए खाचर व बैल खुब सजाये जाते थे, उसे 'गुडुर' कहा जाता था । दुल्हे की माँ दुल्हे को सजा-धजा कर उंगली पकड़कर मंडप ले आती है । दुल्हा पाट के चांवल से पांव पड़कर उस पर खड़ा होता है, उसकी मां द्वारा आरती उतारी जाती है इसे 'पछाड़ना' कहते है । इस विधि को आगे बढाते हुये नांदड, रई (दही घुसरने की), मुसल, सूपा आदि एक-एक कर नये वस्त्रों में लपेटकर दुल्हे के पैसे से सिर तक दायें-बायें पांच स्थानों पर स्पर्श कर सिर के उपर से घुमाये जाते है । इस के बाद दुल्हे के पांव पडते हैं ।

दुल्हे को चंदोडे की ओळ (छत) के नीचे, बीच में तुतारी से उठाकर चार लोग मंडप से फाटक से बाहर निकालते है । बाल विवाह में जीजा या मामा दुल्हे को कंधा या कमर पर बिठालकर बाजे-गाजे के साथ निकलते थे । इस वक्त दुल्हे को मारूती मंदिर ले-जाकर पूजा कराई जाती है । एक या पांच नारियल फोड़े जाते है । दुल्हा चारो दिशाओं में चांवल वर्षाव कर देवताओं की प्रार्थना करता है और वाहन (गुडुर) में बैठता है । दुल्हे को माँ दूध पिलाती है और बतासे या गुड़ खिलाती है ।

इस वक्त बुआ, बहने, भाभी, माँ, चाची, आदि वाहन पर आरती रखती है । टीका लगाकर गुड़ खिलाती है । आरती में दुल्हे से ईनाम वसुल करती है और बारात बाजे-गाजे के साथ सार की जाती है । इस रस्म को *दुल्हा सार* कहा जाता है । पहले दुल्हे के साथ ३,४ महिलाएं (सुवासिनी/करोलिनी) दुल्हा की सहायक के रूप में बारात में भेजी जाती थी क्योकि दुल्हा बालक अवस्था में हुआ करता था । आजकल शादी लगाने के उद्देश्य से भारी संख्या में महिलाएं बारात में सम्मिलित होती है, यहां तक की दुल्हे की माँ भी ।

बारात के साथ कावड़ ले जाई जाती है । कावड़ में नमक, चांवल, धोत, धोती तथा सुम (घास) भर कर वधू पक्ष द्वारा दिये जनवासा (विश्रामगृह) ले जाई जाती है । सुम से रस्सी बुनी जाती है ।

कावड़ से वापसी में दहेज (आंदन) में मिली भेट वस्तुयें वधू से वर पक्ष के घर ले जाई जाती हैं । खासकर गुंड, गंज, थाली, कटोरे, लोटा, गिलास ले जाते है । यह रिवाज अब समाप्त सी हो चुकी है ।

बारात अगवानी - बारात वधुपक्ष के गांव की सीमा पार करते ही कोतवाल वधू पक्ष को इसकी सूचना देता है । वधू पक्ष से दामाद लोग बारातियों से मिलने गांव सीमा पर पंहुचते है । इसे *बारात झेलना* कहते है। पानी एवं पान-सुपारी से बारातियों का स्वागत किया जाता है । वे बारात को मारूती मंदिर या आखर की ओर बढने की प्रार्थना करते हैं ।

दुल्हा उतारना - बारात मारूती मंदिर पहुंचते ही दुल्हन पक्ष की महिलाएं तथा पुरुष बाजे गाजे के साथ आरती, पानी, शरबत लेकर घर से बारात की ओर चल पड़ते हैं । समधी (बिह्याई) भेट होती है । गुलाल, शालु,

तिलक से स्वागत होता है । राम-रमाई होती है । इसे *समधी भेट* कहते है। महिलाएं आरती दुल्हे की गाड़ी सम्मुख रखती है । वर पक्ष से इनाम पाकर वहां से हटती है । फिर दुल्हे को नीचे उतारा जाता है, करोलिन भी उतरती है । उन्हे पानी व शरबत पिलाई जाती है ।

दुल्हा मारूती मंदिर जाकर पूजा करता है । चारो दिशाओं में चांवल अर्पण कर देवी-देवता की वंदना करता है ।फिर घोडे, कार पर या पैदल आगे बढता है । जब पैदल चलता है तो उपर चंदोड़ा की छत दुल्हे के सिर पर चार लोग पकड़े रहते है और एक बीच में तुतारी से उसे उठाये रहता है । बाजा, आतिशबाजी, रोशनाई, नाच-गाने हर्षोउल्हास की समा बांधते है ।

मंडप प्रवेश (मंडा मारना) - घोड़े या अन्य वाहन से उतरकर वधू-पिता निवास या मंगल भवन सम्मुख दुल्हा नीचे उतारा जाता है । महिलाएं आरती उतारती है । इत्र पुष्प आदि बरसाये जाते है । दुल्हा प्रवेश द्वार पर खड़ी महिलाओं के गुंड के पानी में हाथ डुबोकर उसे झलकाता है और कुछ चिल्लर राशि छोड़ता है । उस पर चार बराती छत लिये होते है और जैसे ही दुल्हा मंडप समीप पहुचता है वह मंडप के शगून बास को हाथ से स्पर्श करता है । मंडप पर से जीजा (दुल्हन का) दुल्हे के उपर की छत पर रंग के कुछ छिटें छोड़ता है । फिर दुल्हा सुवासिन तथा मेहमानों के साथ जनवासा वापस जाता है । इसे मांडो मारना कहते है ।

जनवासा - नवरदेव तथा मेहमानों के अल्प विश्राम के लिए जनवासे की व्यवस्था होती है । आजकल बारात सीधे जनवासा ले जाते है और बाद में लगीन मंडप में । यहाँ सभी का नहाना, धोना, नास्ता-पानी होता है । वधू पक्ष से कुछ महिलाए उपहार के रुप में खीर ले आती है उसे 'बनवत' कहते है । *तेल-गौडा, नोन-गोडा* की बाराते शुरु होती है, नमक, चांवल आदि सभी जनवासे से भेजा जाता है । फिर लगुन नथ, ब्लाऊज, पोत, बासिंग आदि सामग्री भेजी जाती है । दुल्हन पक्ष की ओर से भी पांच बाराती जनवासा आकर पाँव धोते है, टीका लगाते है और चढावा स्वीकार करते हैं।

लगुन के लिए प्रस्थान - दुल्हन पक्ष के वस्त्र, आभूषणों से सज-धज बाजे नाच-गाने, आतिशबाजी के साथ प्रस्थान करता है । पवारों में लगुन अक्सर गोधुली बेला पर होती है ।

पाणिग्रहण विधि - जो दो लगुन गाँठे वधू के बिजोरा से दोनों पक्ष के मामा लाते है उसे एक दुसरे को फेर दिया जाता है । पुराने जमाने में दुल्हा-दुल्हन को दो बाँस के टोकनों में देवघर में दुल्हादेव एवम् चौरी दीपक के सामने बैठाया जाता था । बीच में एक अंतरपाट (कोरी धोती) जो कावड के साथ आती है उसे दोनों पक्ष के मामा पकड़ते थे । सूरज डुबते ही घर के उपर आड़े पर चढ़ा हुआ आदमी (भगत) थाली बजाता था । देवघर के अंदर 'धिम हि धिः' कहकर पुष्प बरसाये जाते थे । दुल्हा दुल्हन के शालू को गांठ बांधकर फिर मंडप लाया जाता था और उपस्थित समुदाय उनपर अक्षता वर्षाव कर विवाह लगाते थे । हिंदू विवाह संस्कार में कुलदेवी-देवताओं को साक्षी मानकर चांवल, ज्वारी को हल्दी लेपन कर विवाह अक्षता गणेश गौरी विवाह का अभिन्न अंग है । वैदिक विवाह प्रणालि में बिना अक्षता शादी का कोई महत्व नही होता ।

आजकल मंडप मंच पर दुल्हा-दुल्हन बैठते या खड़े रहते है । दोनों. पक्ष के मामा अंतर पाट पकडते है । पंडित या कोई भी उपस्थित या कॅसेट ५-७ श्लोक ध्वनी गूंजती है, ''राम सीता लगन लागे सावधान'' के जयघोष के साथ अक्षता का वर्षाव करते है । आजकल दुल्हा दुल्हन एक दुसरे को पुष्पमाला पहनाकर लगन बंधन (परिणय) की रस्म निभाई जाती है । बाजे बजते है, फटाके फुटते है, आतिशबाजी होती है और वर पक्ष के लोग मंडप में नाचते है।

पवारों में गोधूली बेला पर लगन का बहुत महत्त्व है । सूर्यास्त के इर्दगिर्द लगन लगने से दुल्हा-दुल्हन का दाम्पत्य जीवन अटूट व मंगलमय माना गया है । यह योग कुंडली दोष का विच्छेद कर वर-वधू दोनों के लिए ज्योतिष्यमाला अनुसार अत्यंत शुभदायी माना गया है ।

लगुन के बाद नवरदेव-नवरी को दुल्हन की माँ या दादी/चाची/ माहाल्पी (ताई) पान बीड़ा खिलाती है । दोनों की शालु से गांठ बांधकर माँ दुल्हा दुल्हन को लेकर देवघर जाते है । वहां दुल्हा-दुल्हन को पहेलियां बुझाकर एक दुसरे का नाम बताना होता है । हंसी-मजाक के बीच दुल्हन-दुल्हा एक दुसरे को लड्डू खिलाते है और नास्ता करते हैं ।

भाँवर (सप्तपदी) - पुरानी परम्परा अनुसार पांच बाराती पारडे (पल्लो) में धोत रख कर, चंडोला की ओल के पीछे से दुल्हा-दुल्हन के सिर पर से सात फेरे लगाते थे और 'धिम हिः धिः' (सक्षिप्त गायत्री मंत्र) का जयघोष करते थे ।

आजकल पंडितजी से सप्तपदी विधि कराई जाती है । अग्नि कुंड में यज्ञ कर सात फेरे लेते है । दुल्हा दुल्हन एक दुसरे से वचन लेते है, पंडित इस पुरी विधि में मंत्रोपचार करते रहते हैं ।

आंदन (दहेज) - पुराने जमाने में दुल्हा-दुल्हन को गुडूर की जुआडी लाकर मंडप में उसपर बिठाला जाता था । सुम की रस्सी धागे के साथ लेकर सात फेरे दुल्हा-दुल्हन के गर्दन के बाहर से लिये जाते थे । पांच सरी सुम रस्सी व धागे को बीच में कनिक के लड्डू से चिपकाया जाता था और इसे *गोत-गुँथना* कहते थे अब यह प्रथा प्रायः समाप्ति की ओर है । यह सूम के रस्सी व धागा की गोत दुल्हन का भाई दुल्हा-दुल्हन के गले में डालता था । वधू पक्ष जन भेट वस्तुएं रसोई के बर्तन, उपकरण, राशि, आदि नवदम्पत्ति को भेट करते हैं । दहेज के अंत में दुल्हन का भाई गोत छुड़ाता था । उसे गाय, भैस, अनाज आदि देने का वचन देना होता था ।

पाव परवारना - दुल्हन के माँ-बाप दुल्हा-दुल्हन दोनों की सेलू से गांठ बांधकर उनके पांव दूध व दुभारी से धोते थे । इस दस्तुर को पांव परवारना कहा जाता है । यह गौरी गणेश का अभिषेक और चरण पूजन की रस्म है जो वैदिक काल से चली आ रही है ।

बाल खेलना - दुल्ह-दुल्हन को पाट पर बिठाकर बाल (सेमी के दाने) खिलाये जाते है । इसे *सारी-फासा* या हार-जीत खेल भी कहा जाता है, इस खेल में पाँच बार दुल्हा अपने मुठ में बाल के दाने छूपाता है और ऐसा दुल्हन भी करती है । एक दुसरे को बताना होता है कि मुंठ में दाने सम संख्या में है या विषम संख्या में । इसे 'उना का पुरा' याने विसम या सम ऐसा कहकर बताया जाता है । यह खेल केवल दुल्हा-दुल्हन की जोड़ी ही नही तो वर तथा वधू पक्ष की दो-दो अन्य सम वयस्क जोड़ियां भी खेलती है । बाद में हँसी मजाक से दुल्हा-दुल्हन मिट्टी की करई के पानी से नहाते हैं ।

कुसुम्बा : बारात प्रस्थान होने पूर्व पानी भरनेवाली महिलाएं, कहार नाई आदि आरती लेकर आते है । गुलाल, रंग, इत्र गुलाबजल से बारातियों का स्वागत व पानदान पेश कर इनाम मांगते है, जब दुल्हा मंडप मारता है तब दुल्हन के जीजा रंग छिडकते है उन्हे भी इनाम नवाजा जाता है ।

दुल्हा-दुल्हन बारात बिदाई - इसे पवारी में *'सपटनी'* कहते है । दुल्हा-दुल्हन बिदाई के लिए देवघर में तैयार होनेपर नाई दोनों के पांवों को लाल रंग लगाता हैं । दुल्हे का जीजा या भांजा फनोली के फुल को रंग में डुबाकर चेहरे की सजावट करता है । फिर दुल्हा-दुल्हन मंडप पधारते है। सभी दुल्हन पक्ष के मेहमान अक्षता व राशि से दुल्हा-दुल्हन के पांव पड़ते है। इसके बाद नांदड को गंगार के पानी में रख कर दुल्हा-दुल्हन प्रदक्षिणा लेते है और उसे बुझा दिया जाता है । बारात के साथ नमक व चांवल जो वर पक्ष से कावड़ से आता है उसे सवाई गुना बढाकर दुल्हे के घर वापस भेजा जाता है ।

कन्यादान - दुल्हन के पिता, चाचा या भाई उसी तरह दुल्हे का पिता, चाचा या भाई आमने सामने बिछायत पर (दरीपर) बैठते हैं । वर पक्ष की गोद में वधु तथा वधू पक्ष की गोद में वर बैठता है । दोनों समधी एक दुसरे को मिठाई या गुड़ खिलाते हैं । फिर वर पक्ष की गोद (कोरा) में वर एवं वधू पक्ष की गोद में वधू बैठती है । इसे *कन्यादान या लडकी सौंपने* की रस्म कहा जाता है ।

नवदम्पत्ति का स्वागत - बारात मारूती मंदिर समीप आकर रुकती है, वर के घर से महिला, पुरुष आरती लेकर अगवानी करने आते है । आरती गुडूर या वाहन सम्मुख रखी जाती है । इनाम मिलने के बाद पहले दुल्हन फिर सवासिनी, दुल्हा, सवासिनी नीचे उतारे जाते है । उन्हे पानी, शरबत पिलाकर उनका स्वागत किया जाता है । हनुमान की पूजा कर दुल्हा-दुल्हन आगे, बाराती पिछे चलते है और बाजा-गाजे, नाच-गाने के साथ घर पहुंचते है । फाटक पर पानी के गुंड लेकर दो महिलाएं खड़ी रहती है । दुल्हा-दुल्हन पाच बार कुल्ला कर पैसे गुंड में डालते हैं । फिर मंड़प में दुल्हा-दुल्हन को पाट पर खड़ा कर उनके पांव धुलायें जाते है । दुल्हन को दुल्हे की माँ या दादी आदि अंगुठी या कोई गहना भेट करती है या राशि

देती हैं । दुल्हन थाली में कुंमकूम के लाल रंग में पांव डुबाती है और देवघर दोनो प्रस्थान करते हैं । देवघर जाकर चौरी (पुरखों) की पूजा करते है और कावड़ में वापस आये चांवल अक्षता के रूप में अर्पित करते हैं ।

राखड़ी बड़ी का दस्तुर - मंडप में दामाद लोग बिछायत का इन्तजाम करते हैं । उस पर केवल वर पक्ष के स्वकुल (कुटुम्ब) की महिलाएं पंक्ति से दुल्हा-दुल्हन के दोनो ओर बैठती है । दामाद सभी महिलाएं के ओंजल में दुल्हन द्वारा मायके से लाई हुई उड़द दाल की बनाई हुई बड़ी दी जाती है । उन्हे वापस लेते वक्त बदले में मूल्य राशि की मांग की जाती है । इच्छानुसार पैसे पाकर दामाद बड़ी वापस लेते है । संकली (चांदी या फुलों का हार या धागों की एक गाँठ) दुल्हे के गले में पहनाई जाती हैं ।

ढेंडो - मंडप में चारपाई (चार सुमी खटिया) डालकर चंदोलो की ओल बिछाकर उस पर दुल्हा-दुल्हन को खड़ा किया जाता है । सभी उनके पांव पडते है । सर्वप्रथम दुल्हा - दुल्हन दोनो पंगत में बैठे लोगों के पाव पडते है । दुल्हन अपने मायके से लाई बड़ी की साँग बनाती है और परोसती है और फिर भोजन शुरु होता है । यह पौराणिक पद्धति का 'स्वागत समारोह' ही हैं।

समदुरा की बारात - दुल्हन पक्ष से बारात वर पक्ष के घर लायी जाती है। इस में महिलाएं भी आती हैं । यह बारात दुल्हन को वापस लेने आती है। स्वागत, नास्ता, भोजन पश्चात दुल्हन के साथ बारात वापस होती है । चौमास, गौना आदि आजकल ब़िदाई पूर्व सम्पन्न होते हैं ।

८. दाह संस्कार - पवारों में मृत देह पलंग/खटिया पर नही रखते । व्यक्ति के मृत्यु पश्चात उसे मांडी पर लेकर उसके मुंह में गंगाजल डाला जाता है और जमीन पर बिछौना पर सुलाया जाता है । रामायण पाठ की पुरानी परम्परा पवारों में पायी जाती हैं । मृत व्यक्ति को नहला-धुला कर नई पोशाक पहनाकर, वंदन कर प्रेतयात्रा निकाली जाती हैं । प्रेत को गोबरी, लकडी, घी, शक्कर व अलसी तेल से अग्नी दी जाती है । अस्थियां (फूल) जमा की जाती है, दाह संस्कार (मुखाग्नि) करनेवाले पुत्र का नाई मुंडन करता है और उसके बालों को जल में राख के साथ बहा दिया जाता है। घाट पर पोहा-गुड़ का नास्ता करने की प्राचीन प्रथा हैं ।

अस्थियां घर लाकर पीपल/आम पेड पर पोटली में बांधकर रखते हैं या वृंदावन नजिक गड्डा खोदकर एक छोटे मिट्टीके ढकने में रख ऊपर से मिट्टी से भर देते हैं। दस वे दिन अस्थियां बाहर निकाल कर पूजा व पांव पडाई होती है (दशक्रिया) और पिन्डदान हेतु तीर्थस्थल ले जाया जाता है। तेरावे दिन गंगापूजन कर मृत्यु भोज (तेरवी रोटी) दिया जाता है। कुछ क्षेत्रों में तीसरे दिन ही यह कार्यक्रम निपटा दिया जाता हैं। अधिकांश पवारों का पिन्डदान हेतु रामटेक तीर्थस्थल प्रमुख है। पुराने जमाने में पवारों में पहले दिन प्रेताग्नि देने के बाद मैली (अशुद्ध) तथा तेरावी न करते हूये तीसरे दिन ही शुद्धिकरन विधि कर चोखी (शुद्ध) रोटी सम्पन्न कराने की प्रथा थी।

९. श्राद्ध - पवार लोग पितृपक्ष (कुंवार) माह के पखवाडा या पितृमोक्ष अमावस्या पर मृतक की तिथि अनुसार श्राद्ध मनाते हैं। लड़का (परिवार मुखिया) कुशघास की दोरी की माला (जनेऊ) गले में एवम् दोनों हाथों की अंगुलियों में अंगुठियाँ धारन कर कुशघास धुले पानी से दामाद, भांजे व अन्य अतिथियों के पांव धोकर, उनके माथे पर चंदन और चांवल से टीका लगाता है। घर में पांच पत्रियां बिछाई जाती है, सभी प्रकार का थोडा थोडा भोजन परोसा जाता है जिसे श्राद्धकर्ता घर की छत पर फेंक देता है। उसकी पत्नी पानी फेंकती है और पिता का नाम जोरों से पुकारा जाता हैं। आंगन में चौक भर कर एक द्रोण में भोजन रख, चंदन, कुंकू, चावल, पुष्प आदि से पांव पड़ते है और काग (काक स्पर्श) (कौआ) की खाने की राह देखी जाती है। उसके भोजन ग्रहन करते ही गोमाता एवं ब्राह्मण वृंद को भोजन दिया जाता है और बाद में मेहमानों के साथ भोजन सम्पन्न होता हैं।

१०. पवारों के मुख्य त्यौहार - पवार जाति में - अखाड़ी (आषाढ पौर्णिमा), जिवती (श्रावण अमावस्या), नागपंचमी (श्रावण शु.५), नवई (श्रावण शु. नवमी), रक्षाबंधन (श्रावण पौर्णिमा), गोकुल अष्टमी (भाद्रपद कृ.८), पोला (भाद्रपद अमावस्या), काजल तीज (भाद्रपद शु.३) गणेशचतुर्थी (भाद्रपद शु.४), सर्वपितृ अमावस्या (श्राद्ध पक्ष : आश्विन अमावस्या). घटस्थापना (अश्विनी शु.१), दशहरा : विजयादशमी (अश्विनी शु.१०), आठवी : कालाष्टमी (अश्विनी कृ.८) दिवाली (आश्विन अमावस्या), पांड : दत्तजयंती (मार्गशिर्ष पौर्णिमा) मकरसक्रांति (पौष शु.१०), होली : फाग (फाल्गुन पौर्णिमा), अक्षयतृतीया : तीज (वैशाख शु.३) गुढ़ीपाडवा (चैत्र

शु.१), रामनवमी (चैत्र शु.९) आदि त्यौहार मनाने की परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है। (यहाँ हिंदी पंचांग अनुसार तिथियाँ दी गई है।)

अखाडी के अवसर पर गृहिणी उपवास रख देवी को दही, हल्दी, कुंकुम डालकर चढाती है। घी-गुड़ का हवन करने के बाद व्यंजनों का भोग चढाया जाता है। इस त्यौहार में कुसुम बुड्ढे, बुल्ले (बड़े गुलगुले) भजिये, कढ़ी विशेष रूप से बनाई जाती है।

जिवती के अवसर पर कुलदेवता देवघर चौरी पर उतारे जाते है एवम् उन्हे अठई सुकुड़े का नैवेद्य चढाया जाता है।

नागपंचमी के अवसर पर नागदेवता को पांच अनाज की लाई, कच्चा दूध, महुवा रस, चने की दाल, तथा दूध वाला नारियल एवम् अठई सुकुडे का नैवेद्य चढाया जाता है।

नवई यह पवार संस्कृति का विशेष त्यौहार है। इस पर्व को गृहिणी बाल-बच्चों के खुशहाली के लिये मनाती है। इस दिन उपवास रखकर नौ छोटी छोटी व एक बड़ी रोटी बनाई जाती है, अन्य महिला बडी रोटी के नौ तुकडे कर गृहिणी की ओटी भरती है। गृहिणी देवघर की दीवार पर हल्दी कुकुं के नौ टीके लगाती है तथा नौ रोटियों को खीर लगाकर उनपर चिपकाती है। गुड़, घी का हवन करती है। दो तरफ खिल्ले गाड़कर कपडा टांगा जाता है। गृहिणी वस्त्र को माथा टेक कर पाँव पड़ती है। फिर गृहिणी अपने बेटे-बेटियों के पाँव पडती है और छोटी रोटियों के बचे हुये तुकडों का प्रसाद देती है। बड़ी रोटी के तुकडों से ओटी भरी जाती है उन्हे पति ने खाना वर्जित है। यह एक प्रकार से नौ ग्रहों की पूजा है।

जन्माष्टमी के अवसर पर भगवान कृष्ण को लाई, पोहा, चना, फल, दही, दूध, मख्खन आदि, भोग चढाया जाता है।

पोला कृषक पवार समाज में धूमधाम से मनाया जाता है। बैलजोडियों को नहला धुला कर सुबह महुवा, गेहूँ आटा, मठ्ठा, नमक का मिश्रीत घोल पिलाया जाता है। दोपहर देवघर में मिट्टी की बैलजोड़ी बनाकर उसकी पूजा की जाती है। शाम को बैलजोड़ियों को श्रृंगारित कर गांव के आखर पर तोरण नीचे पूजा की जाती है। घर आने पर उनके पाव धुलाये जाते है। माथे पर टीका लगाया जाता है तथा करंजी, पापडी, पानबड़े, पुरणपोली, आदि का भोजन दिया जाता है।

काजल तीज के दिन पवार महिलाओं द्वारा निर्जल उपवास व गौरी पूजा की प्रथा प्राचीन काल से चली आ रही है । पति की लंबी आयु के लिए महिलायें कडक व्रत करती है ।

गणेशचतुर्थी के अवसर पर मोदक खास व्यंजन बनाया जाता है ।

सर्वपित्री अमावस्या या श्राद्ध के अवसर पर पुरी, लखोड़ी दाल या उड़द के तेल बड़े, कढ़ी, आदि व्यंजन बनाये जाते है ।

नवरात्रि में पुरुष वर्ग दाढ़ी नही करते व मांसाहार बंद रहता हैं । उपवास रखा जाता है । परिसर शुद्ध रखा जाता है । महिलाये डेढ़ पायली अलसी तेल घट पात्र में डालती है । तुराटी की लकडी पर ९ कपास के घेरे लेकर तेल में डुबोती है, एक शिरा बाहर रख ज्योत प्रज्वलित करती है जो नौ दिन अखंड जलती है । बेलपाती, दुर्वा, फूल, प्रत्येक ९ कपुरी पान, खारक, बादाम, सुपारी, हल्दी गाँठे, चांवल के आसन पर प्रस्थापित किया जाता है, नौ दिन निर्जल उपवास रखा जाता है तथा रात्रि पूजा, आरती पश्चात प्रसाद ग्रहन किया जाता है । रात्रि में जस गानें की पवार परिवारों में प्राचीन परंपरा हैं । पवारों में देवी की मूर्ति घर में प्रस्थापित करना वर्जित है ।

दशहरा - दशहरे के अवसर पर पवारों में महिरी (चावल-मठ्ठा) कोचई पान की बड़ी, प्रमुख व्यंजन होते है जिन्हे केवल परिवार जन देवघर में बैठकर सेवन करते हैं । शाम को शस्त्र पूजन, रावन दहन तथा सोना (समी/आपटा वृक्ष के पत्ते) लूटने (सिमोलंघन) व सोने से वरिष्ठ जनों के पांव पडने की प्रथा है ।

आठवी के अवसर पर सूर्योदय पूर्व से उपवास रखकर शाम को पति के पाँव पड़े जाते है, चौरी को अठई सुकुड़े का भोग चढाया जाता है । इस अवसर पर देवघर में एक मिट्टी का छोटा घड़ा (मटकी) रखकर कुछ चावल के दाने डाले जाते है । बाहर से कुंकू हल्दी अक्षता के टीके लगाते है एवम् अठई सुकुड़े का भोग चढ़ाते है । यह पर्व पत्नी अपने पति की लंबी आयु के लिए करती है ।

दिवाली पर पवारों में धनत्रयोदशी तथा नरक चतुर्दशी के दिन घर

की पूरी साफ-सफाई कर दरवाजों पर डोकरी व सामने गोवर्धन प्रस्थापित किये जाते है, उन्हे बेल, फूल, नैवेद्य का भोग चढ़ाकर उनकी पूजा की जाती है । लक्ष्मीपूजन की अपेक्षा पवार बलिप्रतिपदा खास तौर से मनाते है । इस दिन दोपहर में कोठे में प्रस्थापित महिषासुर की पूजा की जाती है एवम् नारियल चढाया जाता है । नारियल की प्रसाद महिलाओं को वर्जित होती है । गाय, भैसों तथा पालतू प्राणियों को नहलाकर तथा सजा-धजाकर उनका पट निकाला जाता है । घर आने पर उनकी पूजा पाठ के साथ गायकी, भैस्की को भी टीका लगाकर पाँव छुये जाते है । उन्हे वस्त्रों का उपहार तथा पंचप्ा नोंका भोजन कराया जाता है । इस दिन दूध की खीर एवम् सुरण की साँग खास व्यंजन होते है । शाम को घास का बलिराजा बनाकर उसे एक पलंग पर सुलाकर चारो ओर दीप प्रज्वलित किये जाते हैं । विवाह लगाकर उसकी विधिवत पूजा की जाती है एवम् घर की छत पर छोड़ा जाता है ।

पांड (दत्तजयंती) आंगन में चौक ड़ालकर एक पाट रखा जाता है पाट पर एक दीया तथा कलश स्थापित किया जाता है । लोटे में एक बैगन पत्ता डाल कर पानी डाला जाता है । उसे आटे की छोटी छोटी रोटियों का भोग चढ़ाकर छत पर फेकते है । इस अवसर पर पवारों में लेपसी (क्ाा आटा) के गुंजे खास नैवेद्य के व्यंजन होते है ।

मकर संक्राति के अवसर पर तिल्ली के लड्डू एवम् चिवडा, **होली** के अवसर पर करंजी पापडी, पुरणपोली तथा **अक्षय तृतीया** के अवसर पर आम का पन्हा, सेवई एवम् पुरी, बड़े खास व्यंजन होते है । **गुढ़ीपाडवा** के अवसर पर शिरा या पुरनपोली बनाने की प्रथा है । पवारों में गुढ़ी उभारने की प्रथा नही है ।

अक्षय तृतीया या तीज - यह त्यौहार पवार लोगों का विशेष अवसर हुआ करता है जब पितरों की वंदना एवं भोज, पिता के नाम से कलसा भरना और रात्रि में हल खेत ले जाकर बुआई का दस्तुर (मोहोतुर) किया जाता हैं । अगले दिन से नये हंगाम के कृषि के कार्यों की शुरूवात होती है । उसे सीता माँ (धरती माँ) की पूजा भी कहा जाता है ।

११. पवारों के कुछ खास रीतिरिवाज

१. पवार जनेऊ नही पहनते, कमर में करदोरा बांधते है ।

२. पवार विधवा के पूनर्विवाह (पाट) के पक्षधर है, किन्तु जिंदा आदमी रहते हुये विवाहित स्त्री के अन्य पुरुष से पूनर्विवाह के सक्त खिलाफ हैं।

३. पवार अपने कुलदेवता - शिव के परम भक्त है और कुलदेवी - महामाया कालिका के पूजक हैं।

४. वे शैव एवं वैष्णव दोनो हिंदू रीतिरिवाजों को समय समय पर अपनाते हैं।

५. प्राचीनकाल से पवार स्त्रियाँ नवई, काजल तीज, आठवी, महाशिवरात्री आषाढी, कार्तिकी, आषाढी पौर्णिमा, चतुर्थी आदी पर कडक उपवास रखती है किंतु करवाँ चौथ मनाने की पवार जाति में प्रथा नही हैं ।

६. पवार भुजलिया त्यौहार नही मनाते ।

७. अधिकतर धार्मिक रस्में गांव का भगत निपटा लेता है, ब्राह्मण बंधनकारक नही हैं ।

८. पवार महिलायें साड़ी का पल्लु लेते समय राजपूतों की परंपरा अपनाने की बजाय महाराष्ट्रीयन परंपरा अपनाती है।

९. पवार शाकाहारी के साथो साथ मांसाहारी भी है किंतु सुवर या गाय, बैल, भैस आदि का गोष्त सेवन नही करते।

१०. पवार जमीन पर खाना नही खाते । वे अक्सर पीड़ा-चौकी (पाट-चौरंग) पर बैठकर भोजन करते है ।

११. पवार जमीन-जायदाद तथा पशुधन के प्रति आंतरिक मन से जुड़े रहते है और वह एक उनकी जाति विशेषता बन गई हैं। उनके खून में बसी हुई हैं ।

१२. पवारों में मां-बाप द्वारा लड़कियों के पाँव पड़ने की प्रथा है । दामाद सास-ससुर के पांव पड़ते है । मामा-मामी भांजे भांजी के पांव पड़ते हैं ।

१३. भांजी या भांजे - बहू तथा कुछ रिस्तेदार जैसे - मामा, मामी, मामे-ससुर, मामे-सास आदि की झुठी थाली, गिलास नही उठाती ।

१४. छोटे भाई की पत्नी को अपने जेठ के पाँव पड़ना तथा नजर मिलाना वर्जित है ।

१५. पवार दूसरों की नौकरी करने की बजाय खुद की खेती या उद्योग करना ज्यादा पसंद करते हैं ।

❖ ❖ ❖

3 पवारी भाषाविज्ञान

पवारी भाषा में विद्वानों ने पाया कि यह प्रमुखतया राजस्थानी-मालवी का प्रतिरूप हैं जिस में कुछ-कुछ मात्रा में हिंदी, मराठी, गुजराती, बघेली, मरारी, बुंदेली का मिश्रण हैं । आजकल कुछ अंग्रेजी शब्दों ने भी पवारी में अपना स्थान बना लिया है, जैसे - स्टेशन, बस, मोटर, टीम, टॅक्स, पेन, पेन्सील, टेबल, बेंच, प्लाट, पँट, कोट आदि ।

पवारी भाषा यह ''कथित भाषा'' (बोली /dialect) की श्रेणी में आती हैं । पवारी की सदियों से प्रचलित निधि ''विवाह गीत'' है जिनकी दिलचस्प समीक्षा विद्वान आर. व्ही. रसेल ने अपनी रचना "Castes and Tribes of Central Provinces" में की है । पवारी में लोकगीत तो मिल जाते है किन्तु गद्य साहित्य का अभाव हैं । कुछ वर्ष पूर्व जयपालसिंह पटले, नागपुर ने पवार गाथा (२००६), ग्रामगीता-पवारी संस्करण (२००९) तथा पोवारी गीत-गंगा (२०१०) नामक रचनाएं मात्र पवारी बोली में प्रकाशित की है। उसी तरह मनराज पटेल, साकोली द्वारा पवारी लोकगीतों के कुछ संग्रह प्रकाशित किये गये है । आजकल विभिन्न स्थलों से प्रकाशित सामाजिक पत्रिकाओं में पवारी गीत और लेख प्रकाशित हो रहे हैं । अतः पवारी धिरे-धिरे लिखित भाषा का रूप धारण कर रही है ।

पवारी भाषा का व्याकरण पवारी की लिपि के रूप में देवनागरी या ब्राह्मी लिपि का पुरजोर समर्थन करता हैं और प्रस्थापित भाषा हिंदी के उपभाषाओं - खड़ी बोली, ब्रजभाषा, हरियाणवी, बुंदेली, कनौजी, बघेली, छत्तीसगढ़ी, अवधी, मारवाडी, मेवाती, जयपुरी, मालवी, पहाड़ी, मागधी, भोजपुरी, मगही तथा मैथिली में. से मालवी से समानत बहुतांश में करती हैं । अतः पवारी का विकास निम्नांकित क्रम से हुआ जान पड़ता हैं -

भाषा - हिंदी → उपभाषा - राजस्थानी → बोली - पवारी

पवारी भाषा पर क्षेत्रीय भाषाओं का प्रभाव गिरना स्वाभाविक है । महाराष्ट्र में मराठी तो मध्यप्रदेश में हिंदी भाषाओं ने पवारी को अपना शब्द-संग्रह प्रदान कर समृद्धशाली किया हैं । हाल के एक भाषा-अध्ययन

अनुसार - भंडारा-बालाघाट की पवारी एवं छिंदवाड़ा बैतुल की भोयरी-पवारी में ६०-८७%, पवारी और कोष्टी, कुंभारी बोली में ८०-८३%, पवारी और बघेली में ५०-६५% तथा पवारी और बुंदेली में ४६-६४% समानता पाई गई हैं । अतः ''कोस कोस पै बदलै बानी, चार कोस पै पानी '' यह कहावत चरितार्थ होती हैं ।

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, जनगणना प्राधिकरण राजपत्र के अनुसार पवारी बोली का वर्गीकरण "Indo-Aryan of Central Zone of India" ऐसा किया गया हैं ।

ध्वनि, स्वर, व्यंजन, शब्द व्यवस्था, आदि, पवारी तथा हिंदी में प्रायः एकसी है । पवारी तथा हिंदी में संज्ञा, सर्वनाम, लिंग, वचन, क्रिया आदि एकही भाषाविज्ञान को प्रदर्शित करती हैं । इसलिये हिंदी के व्याकरण को सामने रख कर पवारी भाषा की रुपरेखा को साकार करने का प्रयास किया गया है । दुसरे शब्दों में हिंदी के आईने में पवारी की आकृति उजागर करने का यह प्रयत्न हैं । विज्ञान क्षेत्र का कोई व्यक्ति यदि भाषाशास्त्र का परिमार्जन करें तो गलतियाँ होना, त्रुटियाँ रहना, कुछ बिंदु तर्कसंगत न होना, स्वाभाविक हैं । आशा है, भावी भाषा-चिकित्सक उनका निराकरण करेंगे!

१. वर्ण (Alphabets/Letters) : ''भाषा'' शब्द ''भाष'' धातुसे निर्मित हैं जिसका शाब्दिक अर्थ है - बोलना या वाणी। मुख से निकली ध्वनियाँ वर्णो को प्रकट करती है जो ध्वनि की सबसे छोटी इकाई होती है । वर्ण अर्थपूर्ण होता हैं और उन्हे और विभक्त किया नही जा सकता। हिंदी जैसे ही पवारी में ४८ वर्ण हैं। वर्णो के क्रमबद्ध समूह को वर्णमाला कहते हैं।

वर्णमाला के वर्णो को दो प्रकारों में बांटा गया हैं - स्वर (Vowels) तथा व्यंजन (Consonants) । स्वर स्वतंत्र होते हैं, उन्हे उच्चारण के लिये किसी ध्वनि की आवश्यकता नही होती । व्यंजनों का उच्चारण स्वतंत्र नही होता । उन्हे स्वरों की सहायता लेनी पड़ती हैं ।

स्वर तीन प्रकार के है -

न्हस्व स्वर - अ, इ, उ, ऋ ।

दीर्घ स्वर - आ, ई, ऊ ।

संयुक्त दीर्घ स्वर - ए, ऐ, ओ, औ ।

इस प्रकार पवारी तथा हिंदी में वर्ण स्वरों की संख्या ग्यारह हैं ।

स्वरों को मात्राओं से निर्देशित कर व्यंजनों से जोड़ा जाता है -

स्वर

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ अं अः

मात्राएं

- ा ि ी ु ू ृ े ै ो ौ ं ः

शब्द

पढ़ नाम तिल खीर गुरू भूल तृण मेल है मोर मौत अंबा अहः

''अ'' वर्ण (स्वर) की कोई मात्रा नही होती ।

व्यंजन -वर्णों के स्पष्ट उच्चारण में स्वरों की सहायता लेनी पड़ती हैं । जैसे क्, च्, ट्, त्, प्, ल् । उच्चारण क्रिया अनुसार वर्णोंके अनेक भेद होते हैं।

वर्णो का उच्चारण एवम् भेद

वर्ण	उच्चारण स्थान	भेद
अ,आ; ह, विसर्ग	क - वर्ग कंठ	कंठ्य्
इ,ई;	च - वर्ग, श तालु	तालव्य
ऋ;	ट - वर्ग, र, ष	मुर्द्धा मुर्द्धन्य
	त - वर्ग, ल, स्	दंत दंत्य
उ, ऊ;	प - वर्ग	ओष्ठ ओठ्य्
ङ् ज् ; ण, न, म्	मुख और नासिका	अनुनासिक
ए, ऐ ;	कंठ + तालु	कंठ - तालव्य
ओ, औ;	कंठ + ओष्ठ	कंठौष्ठ्य
च्	दंत + ओष्ठ	दंतौष्ठ्य्

पवारी, हिंदी तथा मराठी में वर्णो का उच्चारण स्थल तथा भेद एक सा होता है ।

व्यंजन संख्या में.पैंतीस हैं । इनमें २५ व्यंजन ओठों के स्पर्श से, मुँह से निकलते हैं । वे पांच वर्गो में बांटे गये हैं और हर वर्ग में पांच व्यंजन होते

हैं -

स्पर्श व्यंजन :	क वर्ग	-	क्	ख	ग	घ	ङ
(क्दिठथ)	च वर्ग	-	च	छ	ज	झ	ञ
	ट वर्ग	-	ट	ठ	ड	ढ	ण
	त वर्ग	-	त	थ	द	ध	न
	प वर्ग	-	प	फ	ब	भ	म्

अन्तस्थ व्यंजन (Semi-Vowels)- व्यंजनों में चार व्यंजन ऐसे है जिन्हे कंठ से (मुख के अंदर से) बोले जाते हैं और उन्हें अंतस्थ व्यंजन कहा जाता है । जैसे - य र ल व ।

उष्म व्यंजन (Sibiliants) - चार व्यंजन ऐसे है जिन के उच्चारण में उष्मा मुख के बाहर निकलती हैं किन्तु मुख का कोई भाग आपस में स्पर्श नही करता ।

जैसे -श ष स ह ।

उत्क्षिप्त व्यंजन (द्विगुण व्यंजन) - दो व्यंजन ऐसे है जिनका उच्चारण जीभ झटके से होता हैं - जैसे - ड़ ढ़ ।

नासिक्य व्यंजन - ङ, ञ, ण, न, म।

लुंठित व्यंजन - र ।

पार्श्विक व्यंजन - ल ।

संयुक्त व्यंजन (conjuncts) - इन मुल चार प्रकार के व्यंजनों के अलावा चार संयुक्त व्यंजन उपयोग में लाये जाते है । संयुक्त व्यंजन (conjuncts) व्यंजनों के संयोग से बनते हैं । जैसे -

क्ष = क् + ष् + अ उदा. क्षेत्र, क्षत्रिय, क्षमा

त्र = त् + र् + अ उदा. त्रिलोक, त्रुटि, चित्र

ज्ञ = ज् + ञ् + अ उदा. ज्ञान, ज्ञाता, ज्ञानेश्वर

श्र = श् + र् + अ उदा. श्रवण, श्रृति, श्रम

द्वित्व व्यंजन - जब एक जैसे दो व्यंजन मिलते हैं तब ऐसे व्यंजनों को द्वित्व व्यंजन कहते हैं, जैसे -

त्त = त् + त उदा. कुत्ता, बत्ती, हत्ती

ु ा = च् + च उदा. बु्ाा, कु्ाा

नये वर्ण - क़, ख़, ग़, ज़, फ़ । (कबूल, खातीर, गलत, कागज, जमाना, फौरन)

पवारी में ष तथा श का उ्ञारण प्रायः 'स' जैसा होता है । ल तथा ळ (ङ) का उच्चारण **'र'** होता है । क का **'ख'** जैसा उच्चारण करते है । 'न्ह' मे 'ह' लुप्त रहता है या ह का व जैसा उ्ञारण होता है । क्ष,त्र,ऋ,ऋ,ज्ञ, आदि प्रचलन में नही है ।

हिंदी में उपान्त 'अ' का उच्चारण नही होता जैसे - शर्म, सर्दी, अंग्रेजी, गर्मी, उल्टा, हल्का । किंतु पवारी में उपान्त्य 'अ' का उ्ञारण होता है, जैसे शरम, सरदी, अंगरेजी, गरमी, उलटा, हलका, आदि । पवारी में 'न' और 'ण' के उच्चारण अधिकतर 'न' जैसा ही होता है ।

वर्ण संयोग (Joining of Letters)

स्वर संयोग - पवारी बोली में स्वर संयोग निचे दिये गये हैं - कोष्टक में हिंदी स्वरसंयोग दिये गये हैं ।

ए + इ = देइस (दिया)	आ + आ = दाआजी (पिताजी)
अ + इ = चइत् (चैत)	आ + उ = चाऊर (चावल)
अ + उ = खऊट् (खउट)	भा + ओ = भाओजी (जेठ)
आ + इ = दवाई (दवा)	अ + आ = धर (पकड़ना)
ओ + आ = मोर (मयुर)	आ + अ = धार (तलवार पाती की धार)

व्यंजन संयोग - पवारी में शब्द के प्रथम, मध्यम एवम् अन्त्य इन तिनो खंडों पर व्यंजन संयोग मिलता हैं । द्वि व्यंजन संयोग अधिकतर मिलता है तथा चार व्यंजनों तक भी व्यंजन संयोग मिलता हैं ।

(अ) प्रथम व्यंजन संयोग ः उदाहरण -

ख + य = ख्याल ध + या = ध्यान ब + य = ब्याज, प् + य = प्यार
ब्य + या = ब्याटरी स् + ल = स्लोक, न् + य = न्याय प् + य = प्याला
ज + य = ज्या प् + य = प्याला स + या = स्याई

(ब) मध्य व्यंजन संयोग ः उदाहरण -

क + ख = बक्खर = बक्खर (बखर) क + द् = येकदानि (एकदानी)
त + रि = पतरिका = पत्रिका क + वा = लकवा

क + ट = डाक्टर = डाक्टर स + त = मास्तर

(क) अन्त्यव्यंजन संयोग ः उदाहरण -

न + ज = रन्ज	ट + ठा = गट्ठा,
न + ग = तन्ग,	त + था = जत्था
न + ग = दन्ग,	त + रा = जत्रा
न + ग = रन्ग	वा + ब = खान्द
न + ज = गन्ज	न+ ग = जन्ग
ग+ ब=जाम्ब,	ट + ट = लट्टू
प + प = चुप्पी	त + र = चित्र

(ड) त्रिव्यंजन संयोग ः उदाहरण -

क् + त् + य् = मुक्त्यार	त् + न् + य् = पुतन्या
न + ड + या = दन्ड्यार	न्ड + ग् + ड = लनगडा/पांगड़ा
न् + ड्+ द् = हेंदड़ा	न् + ग् + ल् = चान्गलो
न् + द् + र् = सुंदर	म् + ब् + ड् = सेम्बडा

(ई) चतुव्यंजनात्मक संयोग

न + ड् + ग् + य् = लांडग्या
ङ + ग् + न् + य् = ओंग़न्या

पवारी में प्रथम जोड शब्द का विग्रह कर बोलने की प्रथा है - जैसे श्रीपत-सिरपत, प्रताप-परताप, धृपद - धूरपद आदि.

न्हस्व-दीर्घ स्वर मात्राओं के कुछ पवारी उदाहरण ः

आ -ा	कारा, मामा, भाला, प्रभा ।
इ - ि	दिन, गति, मंदिर, निमित, लिंग, विधि, सिंह, मानसिक, परिणाम, मति, हरि, रूचि ।
ई - ी	भीख, रीति, वीर, बोली, जीव, सीता, ठीक, पूजनीय, हीरा, नवीन, गरीब, रोटी, टोपी, गोली, हवेली, बरठी, भाली, गठरी, पटरी.
उ - ु	खुश, साबुन, दयालु, गोकुल, निपुण, उर, उचित, गुण, तुलना, पुण्य, कुली, सुहाग ।
ऊ - ू	भूख, जूता, सूरत, मुहूर्त, कबूतर, कबूल, हिंदू, दादू ।

ए - ` केरा, मेल, देख, फेक ।
ऐ - ॆॆ बैर, मैल, चैत ।
ओ - ो कोश, दोष, डोली, मीठो, खारो ।
औ - ौ मौसी, लौकी, चौकी, गौरी ।
अं ं अंग, जंग, तंग, द्वंद्व, अंबार ।
अः ः आहः, चहाः, प्रातः, दुःख ।

२. शब्द (Word) : एक अथवा अनेक वर्णो से बनी स्वतंत्र एवम् सार्थक ध्वनिको **शब्द** (Word) कहा गया हैं । शब्दों का वर्गीकरण विकारी तथा अविकारी भेदों में किया गया है -

- शब्द
  - विकारी
    - संज्ञा
    - सर्वनाम
    - विशेषण
    - क्रिया
  - अविकारी
    - क्रिया विशेषण अव्यय
    - संबंध सूचक अव्यय
    - सम्मुच्चय बोधक अव्यय
    - विस्मयादि बोधक अव्यय

पवारी में ऱ्हस्व तथा दीर्घ स्वरों में भिन्नता बहुतांश में महसूस नही होती। प्रायः ऱ्हस्व स्वरों में बोला जाता है । कभी-कभी आसानी से ऱ्हस्व का दीर्घ और दीर्घ का ऱ्हस्व परिवर्तन बोलने में हो जाता है ।

पिन - पीन, पानि - पानी, भिक - भीक

पवारी में एकाक्षरी शब्दों में शिखरस्थ स्वर दीर्घ साधारणतया पाये जाते हैं तथा प्रत्येक शब्द में एक ऱ्हस्व तो दुसरा दीर्घ उपवर्ण नजर आते हैं

उदाहरण -

पाठ्रू (बछड़ा)	इठोबा (विठोबा)	कपार् (माथा)
हुचकि (उचकी)	राखड (राख)	चुटि (चोटी)
अज् (आज)	खोखला (खाँसी)	नख् (नाखुन)
ईट् (ईट)	आंजुर् (हथेली)	बासिंग (बासींग)

तिरथ (तीर्थ)	नाक् (नाक)	माय (माँ)
जमिन (जमीन)	बरफ (बर्फ)	ऊस (गन्ना)
ओतरो (उतना)	मांडि (मांडी)	दुफार (दोपहर)
डोसकि (सिर)	गरो (गला)	नाडि (नाड़ी)
गायकि(गायकी)	बोट (उंगली)	होट् (ओंठ)
बेनि (बेनी)	मेंढि (मेंढी)	कढ़ि (कढी)
सिर (शीर)	जाय् (जा)	तहान (प्यास)
डोरा (आँख)	चित् (पराजित)	दव् (थंड)

शब्द भेद :

१. **वाचक शब्द -** बोलचाल में प्रचलित शब्द, जैसे - गाय, जमीन, खेती आदि ।

२. **लाक्षणिक शब्द -**(बोधसूचक अर्थी शब्द, जैसे - जयचंद, रावण, कंस आदि ।

३. **व्यंजन शब्द** - गुढ अर्थ का बोध करानेवाले शब्द, जैसे - (व्यंगार्थ) दिवस बुड गया (शाम), खाली पेट (भूख), बारा बज गया (बंठ्याधार) आदि ।

४. **एकार्थी शब्द** - केवल एक अर्थी शब्द, जैसे -गाना, रामायण, मा (माय) आदि ।

५. **अनेकार्थी शब्द** (Homonyms) अधिक अर्थी शब्द जैसे - सोना (Gold and Sleep) अकाल मृत्यु - कम उम्र में मृत्यु या असमय मृत्यु ।

६. **पर्यायवाची शब्द** (Synonyms) एक अर्थ का बोध देनेवाले अनेक शब्द, जैसे जल-पानी-नीर, धूप -तपीस- तपन-आग- अंगार आदि।

७. **विपरितार्थक शब्द** (Antonyms) परस्पर एक दुसरे के विरोधी शब्द - जैसे सुख-दुख, अमीर-गरीब, भला-बुरा, बड़ा - छोटा आदि।

८. **समरूप भिन्नार्थक शब्द** - भिन्न अर्थी शब्द जैसे - कर्म - कार्य,करम - किस्मत, परदेश - विदेश, प्रदेश - क्षेत्र/प्रांत ।

९. **वाक्यांश अर्थी शब्द** - लम्बे वाक्य का संक्षिप्त शब्दरूप, जैसे - प्रजातंत्र - प्रजा द्वारा कार्यरत राज्य, विद्यापीठ - उ्रा शिक्षा प्रदान करनेवाली संस्था ।

१०. **ध्वनिबोधक शब्द** - ध्वनि उ्रारण कर अपनी बात कहना, जैसे, दांत किटकिटाना, बड़बड़ाना, गुनगुनाना आदि ।

११. **समूहवाचक शब्द** - समूह अर्थी शब्द जैसे, सेना, संघ, सभा,यात्री आदि ।

१२. **संज्ञा** - नाम का बोध करानेवाला शब्द, जैसे - पुस्तक, पेड, झाड, घर आदि ।

१३. **सर्वनाम** - पुरुषवाचक शब्द, जैसे - मि (मै), तु (तू), वय,वा,उ (वे) आदि ।

१४. **विशेषण** - नाम या सर्वनामकी विशेषता बतानेवाले शब्द - जैसे (बेस खराब) अच्छा, बुरा, (उच-नीच) ऊंचा, नीचा ।

१५. **क्रिया** - वस्तुओं के सम्बन्ध में विधान करनेवाले शब्द, जैसे - आयव, गयव, खायव, पियव (आया, गया, खाया, पिया) आदि ।

१६. **क्रियाविशेषण** - क्रिया की विशेषता बोधक शब्द - जैसे - आबअ, कबअ, (अब, तब) आदि ,

१७. **सम्बन्ध सूचक शब्द** - क्रिया से नामार्थक शब्दों का संबध जोडनेवाले शब्द, जैसे - को, ला (के, आगे) आदि।

१८. **सम्मु्राय बोधकशब्द** - दो शब्द या वाक्योंको मिलानेवाले शब्द जैसे अना, या, पर (और, या, किन्तु) आदि । .

१९. **विस्मयादि बोधकशब्द** - अरे, अहो (मनोविकार सूचित करनेवाले)

२०. **युग्मशब्द** - जिनका उ्रारण मात्रा या वर्ण के हेरफेर से अर्थबदल जाता है, जैसे - अपेक्षा - इच्छा, उपेक्षा - निरादर ।

अवलम्ब - सहारा,	अविलम्ब - शीघ्र
अनिष्ठ - निष्ठाहिन,	अनिष्ट - हानि
अपत्य - संतान ,	अपथ्य - परहेच
अशक्त - शक्तिहीन,	असक्त - विरक्त
आदि - इत्यादि,	आदी - आदतवाला
आरति - दुःख,	आरती - धूप-दीपपात्र
अवधि - काल ,	अवधी - भाषा का नाम
पानी-जल	पाणि - हाथ
चिता - प्रेतशैय्या	चीता - जंगली प्राणि
चिर - पुराना,	चीर - कपडा
क्षत्र - क्षत्रिय,	छत्र - छाता
कास - खांसी,	काश - शायद
कांटा - नुकीला,	काटा- काटना
कहा - कहना,	कहां - ठिकान
कलि - कलियुग, संकट,	कली - अर्धखिला फूल
कृति- रचना,	कृती- निपुण,कर्म
कुल-वंश,	कूल- किनारा.

३. उपसर्ग (Prefix)

उपसर्ग वे शब्दांश है जो किसी शब्द के आरम्भ में जुड़कर उस शब्द की विशेषता पैदा कर देते हैं । पवारी में हिंदी जैसे ही उपसर्ग लगाने की प्रथा हैं ।

पवारी - हिंदी के उपसर्ग

उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
अ) संस्कृत उपसर्ग		
अति	अधिक, ऊपर	अत्याचार, अतिक्रमण, अतिशय
अधि	श्रेष्ठ, ऊपर	अधिकार, अध्यक्ष, अतिसार
अनु	क्रम, समानता	अनुरूप, अनुस्वार, अनुवाद
अप	लघुता, हीनता	अपमान, अपशब्द, अपयश,अपवाद
अभि	सामीप्य, आधिक्य	अभिमान, अभ्यास
अव	हीनता, अनादर	अवस्था, अवतार, अवनति
आ	सीमा, और	आजन्म, आचरण, आजीवन
उत्	ऊपर, उत्कर्ष	उत्पन्न, उन्नति, उत्साह, उधार
उप	निकटता, सहारा	उपकार, उपदेश
दुर	बुरा, कठिन, दुष्ट	दुर्दशा, दुर्जन, दुर्गुम, दुष्कर्म
नि	भीतर, नीचे	निदान, निषेध, निवारण
निर्	बाहर, निषेध	निरपराध, निर्दोष, निर्जिव, निरोगी
परा	उलटा, नाश, अनादर	पराजय, पराभूत, पराक्रम
परि	आसपास, चारो ओर	परिक्रमा, परिणाम, परिपूर्ण
प्र	अधिक, आगे	प्रकाश, प्रचार, प्रभू, प्रमाण, प्रताप,
प्रति	विरोध, बराबरी	प्रत्येक, प्रतिकूल, प्रत्यक्ष
वि	भिन्नता, हीनता	विज्ञान, विदेश, विधवा, विवाद
सम	पूर्णता, संयोग	संगम, संतोष, संन्यास, संयोग,संस्कार
सु	सुखी, अच्छा, सुंदर	स्वागत, सुवास, सुजन, सुयश,

(आ) हिंदी उपसर्ग		
अ / अन्	अभाव, निषेध	अमोल, अज्ञान, अनपढ़, अनजान,
अध	आधा	अधमरा, अधपका, अधजला
उन	एक क्रम	उनचास, उनहत्तर, उनअस्सी
औ	हीनता	औगुन, औसर, औतार
बिन	निषेध	बिनकामी, बिनदेखा, बिनजाना
भर	पुरा	भरपेट, भरसक, भरपूर, भरधूप
कु / क	बुराई	कपुत, कुरीति, कुसंगत
स	श्रेष्ठ	सपूत, सजग, सरस, सहित
(इ) अरबी उपसर्ग		
कम	हीन	कमअक्कल, कमजोर, कमकीमत
खुश	श्रेष्ठता	खुशकिस्मत, खुशखबर, खुशनसीब
गैर	निषेध	गैरहाजिर, गैरकानूनी, गैरसरकारी
दर	में	दरम्यान, दरकार
ना	अभाव	नाराज, नालायक, नाजायज,नापसंद
ब	अनुसार	बदौलत, बनाम
बद्	बुरा	बदनाम, बदसुरत, बदनसीब, बदत्तर,
बर	बाहर	बरखास्त, बरदास्त
बा	साथ	बाकायदा, बाइज्जत
बिल	साथ	बिलकुल
बे	बिना	बेईमान, बेवकूफ, बेइज्जत, बेकसूर
ला	बिना	लाचार, लापता, लापरवाही
सर	मुख्य	सरकार, सरपंच, सरदार,सरहद
हर	प्रत्येक	हररोज, हरचीज, हरदम, हरसाल.

४. प्रत्यय (Suffix) : कुछ शब्दांश शब्दों या धातुओं के अन्त में जुड़कर उनके अर्थ में परिवर्तन या विशेषता पैदा कर देते है, उन्हे प्रत्यय कहते है। उदाहरण -

वाला	- गाववाला, घरवाला	कर	- जाकर, खाकर
आऊ	- टिकाऊ, बिकाऊ	या	- पीया, खाया, सोया, रोया
अक	- चालक, गायक	ऊ	- खाऊ, उडाऊ, कमाऊ
इया	- बढ़िया,	आका	- धड़ाका, धमाका, फटाका
आलु	- झगडालु, दयालु	औना	- बिछौना, खिलौना
ना	- गाना, सोना, रोना, हसना	वान	- धनवान, पकवान
नी	- रांधनी, बांधनी, रोवनी,	दार	- इमानदार
अन	- झाडन, लिपन, पोतन,	बेलनची	- खजानची
ना	- बेलना, झूलना,	ई	- तेली, माली
ई	- भारी, रेती, फासी	आपा	- बुढ़ापा
आ	- झुला, चुला	आहट	- चिकनाहट, गरमाहट
अन	- चलन, मिलन, खावन	आस	- भडास, खटास
ई	- बोली, आंगी, सुनी, कहीसुनी	आई	- बुराई, भलाई
अंत	- गढंत, मनगढंत	आई	- कमाई, लड़ाई, पढ़ाई, लिखाई
आवा	- दिखावा, पछतावा	आवट	- मिलावट, लिखावट
आप	- संताप, मिलाप	आव	- उतराव, चढाव, बचाव,
ता	- सुंदरता	वा	- चढावा, बुलावा, दिखावा
पन	- बालपन, बचपन	ती	- बढती, उतरती, चलती,
		त	- संगत, रंगत, पंगत

५ संज्ञा (Noun) : संसार की निर्जीव, सजीव वस्तुओं, भौगोलिक स्थलों प्रदेशों, सौरमंडल, ध्वनी, भावों का उनके अस्तित्व तथा पहचान के लिये कोई न कोई नाम है और उस नाम को ही व्याकरण में संज्ञा कहा जाता है । साधारणतया संज्ञायें निम्न प्रकार की होती हैं ।

प्राणीवाचक(Animate)संज्ञायें - जो प्राणीयों की पहचान कराते हैं जैसे -

घोड़ा (घोड़ा)	सरप (सांप)	बईल (बैल)
इजगुर (चिपकली)	कुतरा (कुत्ता)	हत्ती (हाथी)
उंदीर (चुहा)	मानुस (आदमी)	टुरुपोटू (बाल-ब्च्चे)
आईमायी (महिलायें)	सेरी (बकरी)	बिलाई (बिल्ली)

अप्राणिवाचक (Inanimate) संज्ञायें - जो प्राणरहित वस्तुओं को संबोधित करते है जैसे -

तरा (तालाब)	बिहीर (कुँवा)	ओघर (नाला)
गोटा (पत्थर)	पाटन (धाबा)	नदी (नदी)
पाहाड़ (पहाड़)	बारी (बाड़ी)	दिवो (दिया)
सड़क (सड़क)	साबर (सब्बल)	चुल्हो (चुल्हा)

गणनीय (Countable) संज्ञाएँ - जिन्हे गिना जा सकता है । जैसे -

दुय टुरा (दो ब्च्चे)	दुय भसी (दो भैस)
च्यार कुलुप (चार ताले)	च्यार कुंजी (चार चाबियॉ)
सय रुप्या (छःरूपये)	सय तोरा सोनो (छःतोला सोना)
एक दरजन केरा (एक डजन केले)	अकरा बज्या (ग्यारह बजे)

अगणनीय (Non-Countable) संज्ञाएँ -जिन्हे गिना नहीं जा सकता। जैसे -

गोड़/मिठो (मिठा)	आंबट/खट्टो (खट्टा)
मोठोपणा (महानता)	खारो (नमकीन)
हवा-पानी (हवा-पानी)	अंधारो (अंधकार)
जप (नींद)	उजारो (उजाला)
हासी (हंसी)	रोवनो (रोना)

संज्ञा के भेद : व्याकरण के दृष्टिसे संज्ञा के भेद निम्न प्रकार हैं-

संज्ञा

व्यक्तिवाचक | जातिवाचक | भाववाचक | समूहवाचक | द्रव्यवाचक

१. व्यक्तिवाचक संज्ञा (Proper Noun) - यह संज्ञा विशेष व्यक्ति, स्थान या वस्तू का बोध कराती हैं, जैसे-

राम (राम)	पूंजाराम (पूजाराम)	किसन (कृष्ण)
नांगदेव (नागदेव)	ब्रिंदाबन (वृंदावन)	गोंद्या (गोंदिया)
तोर दार (तुवल दाल)	भोवानी (भवानी)	माय (माता)

२. जातिवाचक संज्ञा (Common Noun) यह संज्ञा एकही प्रकार के सभी प्राणियों, वस्तुओं आदि का संकेत कराती है अर्थात सम्पूर्ण जाति/समूह का बोध होता है जैसे -

खेती (खेती)	नगरी (नगर)	फूल (फूल)
लोक (लोग)	मानुस (आदमी)	चाऊर (चावल)

द्रव्यवाचक संज्ञा तथा समुदाय वाचक संज्ञा ऐसे दो प्रकार की जातिवाचक संज्ञाएँ होती हैं ।

२.१. द्रव्यवाचक संज्ञा (Material Noun) से किसी द्रव्य, धातु या पदार्थ का बोध होता हैं, उसे गिना नही जाता केवल नापा-तौला ही जा सकता है, जैसे-

घीव (घी)	सोनो (सोना)	लाखोरी (लखोरी)
मही (मठ्ठा)	तांबो (तांबा)	गहू (गेंहू)
नोणी (मक्खन)	खुरो (चांदी)	चून (बेसन)
तिर तेल (तिल्ली तेल)	पीतर (पीतल)	नोन (नमक)
एरंडीको तेल (एरंडी तेल)	कासो (कासा)	भेली (गुड़)
अरसीको तेल (अलसी तेल)	इसटील (स्टिल)	तिरखो (मिर्ची पावडर)

२.२ समुदायवाचक संज्ञा (Collective Noun) - किसी समुदाय /समूह को सूचित करती हैं, जैसे -

घरजन (परिजन)	गर्दी (भीड़)
पाहुना (मेहमान)	मांडो (मंडप)
बामण (ब्राह्मण)	बरात (बारात)
बजार (बाजार)	किड़ा (किटक)
किरसान (किसान)	

३. भाववाचक संज्ञा (Abstract Noun) - इस संज्ञा से पदार्थो की अवस्था, गुण-दोष, धर्म, व्यापार आदि का बोध होता हैं । ये संज्ञाये दो प्रकार की होती हैं -

३.१. मूलभाववाचक संज्ञा - मूल रूप से भाववाचक संज्ञा, उदा.

सुख-दुख (सुख,दुःख)	खरो-खोटो (सत्य-असत्य)
जनम-मरण(जन्म-मृत्यु)	हासी-खुशी (हँसी-खुशी)

३.२. पूनःनिर्मीत संज्ञा - पूनःनिर्मीत भाववाचक संज्ञा - उदा.

मानुस - मानुसपना (आदमी-आदमीपन)
हिरवो - हिवरान (हरा-हरियाली)
सुंदर - सुंदरता (सुंदर-सुंदरता)
बुड़गा - बुड़गोपन (बुढ़ा-बुढ़ापा)
भाऊ - भाऊचारो (भाई-भाइचारा)
नोन - खारा/खारो (नमक-नमकीन)
मानुस - मानुसकी (मनुष्य-मनुष्यता)
आपलो - आपलोपन (अपना-अपनापन)
मीठो - मिठास (मीठा-मिठास)
गरम - गरमी (गर्म-गर्मी)
लाल - लालसर (लाल-लालिमा)
हासनो - हासी (हंसना-हंसी)

६. लिंग (Gender) : वस्तु या प्राणि के नाम, पुरुष या स्त्री जाति वाचक होते है तथा उस भेद को व्याकरण की भाषा में लिंग कहते है । पवारी में हिंदी की तरह केवल दो प्रकार के लिंग होते है -

१. पुल्लिंग (Masculine Gender) तथा
२. स्त्रीलिंग (Feminine Gender)

मराठी तथा अग्रेजी का नपुंसक लिंग किसी संज्ञा को पवारी में नपुंसक भेद नही किया जाता है ।

पवारी में संज्ञाओं के लिंग पहचान ने के कुछ नियम :

अ) पुल्लिंग पहचान -

१. देश,पर्वत, समुद्र	- भारत,जापान, चीन, हिमालय, सतपुडा, हिंद महासागर, भूमध्यसागर
२. दिन,मास,कुछ ग्रह	- सोमवार,मंगलवार, चैत, वैशाख, मार्च, जून मंगल, बुध, राहु, केतु
३. पेड़, अनाज, द्रव्यपदार्थ	- आम, नीम,पीपल, चना, गहू, पानी, तेल
४. बड़ी वस्तुएँ	- नाला, पहाड, बंडल, पुंजना, रास, टाका
५. रत्न	- पन्ना, हिरा, पुखराज, मोती
६. भूमंडल वाचक	- अमेरिका, आफ्रिका, समुद्र, देश, आकाश
७. समुदाय वाचक	- समाज, परिवार, मंडल, दल, संघ, कुटुम्ब
८. शरीर के कुछ अंग	- दांत, बाल, सिर, हाथ, पाय, टोंगरा, पोट
९. सामाजिक शब्द	- महात्मा, महापुरूष, विद्यालय, सेनापति.
१०. अंत में 'अक' आनेपर	-चालक, गायक, लेखक, पालक,मालक
'आपा'	- बुढ़ापा, मोटापा
'आडा'	- हातोड़ा, पकोड़ा, मकोड़ा
'ना'	- सोना, लिखना, पढ़ना, सजना
'पन'	- पागलपन, बड़पन, बालपन, शहानपण
'आ'	- घड़ा, गुस्सा, हिस्सा, दंगा
'आवा'	- चढ़ावा, बुलावा, दिखावा
'अ'	- मन,धन, तन, खेल, बोल, ढ़ोल

'दान'	- खानदान, पायदान, गाड़दान,
'त्र'	- शास्त्र, चित्र, नक्षत्र, चरित्र, क्षेत्र
'आर'	- चमार, सोनार, लोहान, बिस्तार, निस्तार
'वाला'	- पानवाला, गाववाला, घरवाला, दुधवाला
'एरा'	- लुटेरा, चचेरा, फुफेरा

ब) स्त्रीलिंग पहचान :

१. नदियाँ, तिथियाँ, नक्षत्र	- गंगा, तापी, एकादशी, अमावस, रोहिणी, अश्विनी
२. बोली, लिपि, भाषा	- पवारी, मालवी, देवनागरी, गुरूमुखी, हिंदी, मराठी
३. स्त्रियों के नाम	- लक्ष्मी, सरस्वती, माया, गीता, सत्या, सावित्री
४. किराना व खाद्य आहार	- इलायची, लौंग, दाल, चीनी, खिचड़ी, सब्जी, खीर
५. कुछ सामाजिक शब्द	- धर्मशाला, पाठशाला, फुलमाला
६. शरीर के कुछ अंग	- छाती, पापणी, नाक, जीभ, कम्मर, पिंड़री,एड़ी
७. प्राणी समुदाय	- भीड, टोली, सरकार, सभा, समिति, सेना, संसद
८. कुछ उकारान्त शब्द	- वायु, धातु, ऋतु
९. कुछ इकारान्त शब्द	- अग्नि, शांति, रीति, जाति, हानि, बानि (जिद्द)
१०.अंत में 'आई' आनेपर	- मिठाई, चटाई, खटाई
'वट'	- सजावट, बनावट, मिलावट
'हट'	- घबराहट, कडवाहट
'इया'	- डिबिया, गुड़िया
'आस'	- भडास, संडास
'ता'	- पशुता, एकता
'नि'	- हानि, गहानि, चुरनि, मेरनि
'नी'	- करनी, कथनी, जननी
'आ'	- गरिमा, महिमा, दवा, सजा, हवा
'री'	- बकरी, परी, गठरी, गरीबी, अमिरी
'ई'	- आबादी, आई, गरमी, सरदी, बुराई
'श'	- मालिश, साजिश, नालिश, कोशिश
'त'	- ताकत, दौलत, हिम्मत, इज्जत, तबीअत

'अ' - मार, काट, डाट, अकड़, पकड़,
'ना' - भावना, रचना, कल्पना
'ख' - लाख, भूख, कोख

वर्णमाला के इ,ई,ए,ऐ, ऋ वर्ण स्त्रीलिंगी तथा अन्य वर्ण पुल्लिंगी होते है।

पुल्लिंग से स्त्रीलिंग में परिवर्तन -

पवारी बोली में निम्नाकित कुछ प्रत्यय पुल्लिंग संज्ञाओं के अंत में जोड़ने से या बदलने से स्त्रीलिंगी संज्ञाएँ बन जाती है ।

प्रत्यय **उदाहरण**

'इन' - सोनार-सोनारिन, कुंभार-कुंभारिन पवार-पवारिन मास्तर-मास्तरिन, डाक्टर-डाक्टरिन, भगत-भगतिन
'आनी' - देवर-देवनानी, जेठ-जिठानी
'न' - तेली-तेलीन, बरठी-बरठीन, भाली-भालीन, खाती-खातीन
'अ/आ' का 'ई' - बेटा-बेटी, घोड़ा-घोड़ी, लडका-लड़की, देव-देवी, चाचा-चाची, मामा-मामी, बकरा-बकरी, कुतरा-कुतरी
'अक' का 'इका' -नायक-नायिका, गायक-गायिका, सेवक-सेविका
'आन' का 'अती' -भगवान-भगवती, श्रीमान-श्रीमती
'वान' का 'वती'- गुणवान-गुणवती, रूपवान-रूपवती
'ओ' का 'इ' - कारो-कारि, गोरो-गोरि, उंचो-उचि, खालो-खालि
'या' का 'ई' - फुफ्या-फुफी, मौस्या-मौसी, भास्या-भासी, पुतन्या-पुतनी
पूर्ण बदल - बैल-गाय, मानुस-बायको, राजा-रानी, भाऊ-भोवजाई बाप-माय, सुसरो-सासू. बेटा-बहु, नंदोई-ननंद,
तृतीय पुरुष - उ - वा , यव-या
नित्य पुल्लिंग संज्ञा - चीता, बिच्छू, किड़ा, गेंड़ा, गरूड, खटमल, उल्लू, कावरा, कबतर, मिट्ठू, गीधड़ ।
नित्य स्त्रिलिंग संज्ञा- मक्खी, सवारी, मकड़ी, मैना, कोयल, सन्तान, तितली, सुहागिन, सती, मसरी, गिरहरी.

इन संज्ञाओंक़ो 'नर' या 'मादा' उपसर्ग जोडकर लिंग भेद किया जाता है ।

लिंग - वाक्यप्रयोग

एकवचन

पु. उ कबऽ आये । (वह कब आयेगा ।)
स्त्री वा कबऽ आये । (वह कब आयेगी ।)
पु. यंव मानुस ठीक नाहाय ।(यह(ए) आदमी ठीक नही)
स्त्री या बायको ठीक नाहाय । (यह महिला ठीक नही ।)
जो जसो करे उ तसो भरो ।(जो जैसा करेगा वो वैसा भरेगा ।)
मी सोताहा टिकट आनुन । (मै स्वतः टिकट ले आऊंगा)

बहुवचन

पु.- वय कबऽ आहेत । (वे कब आयेंगे ।)
स्त्री- वय कबऽ आहेति । (वे कब आयेंगी ।)
पु. ए दुय मानुस ठीक नाहात । (ए दो आदमी ठीक नही)
स्त्री ए दुय बायका ठीक नाहात । (ए दो महिलायें ठीक नही)
जे लोक इत् वुत् फिर सेती वय मांडो मां बस जायेत ।
(जो लोग इधर-उधर घुम रहे वे मंडप में बैठ जाय ।)

७. वचन (Number) : शब्दों के रूप से उनका एक या अनेक का बोध होता है तब उन्हे वचन कहा जाता है । एकवचन से एक व्यक्ति या वस्तु तथा बहुवचन से एक से अधिक (अनेक) वस्तुओं का बोध होता है । हिंदी में बहुवचन में (` ए) या (याँ) जुड़ जाते है किंतु पवारी में दोनो वचनों में संज्ञा एकसी रहती है । सर्वनाम एकवचन, बहुवचन में भिन्न रहते है । उदाहरण-

संज्ञा - घोड़ा - घोड़ा (घोड़ा-घोडे), बकरी -बकरी (बकरी-बकरियॉ)
पुस्तक-पुस्तक (पुस्तक-पुस्तके), पेन्सील-पेन्सील(पेन्सील-पेन्सीले),
नदी-नदी (नदी-नदियाँ), बांधी-बांधी(बंधी-बंधियाँ),
संतरा- संत्रा (संतरा-संतरे),
एक रुपया-सौ रुपया (एक रुपया-१०० रुपये)

सर्वनाम मि -आमि (मै-हम), तु-तुमि (तू-तुम) उ/वा-वय (वह-वे)

वाक्य में विशेषण प्रयोग कर एकवचन से बहुवचन बनाना -

ए.व. गाव जवर एक नदी से । (गाँव समीप एक नदी है)
ब.व. जिला मा चार नदी सेत । (जिले में चार नदियाँ हैं)
ए.व. मि बाच रही सेव । (मै पढ़ रहा हूँ ।)
ब.व. आमि बाच रह्या सेजन । (हम पढ़ रहे है ।)
ए.व. कारो जामुन चांगलो/अच्छो होसे। (काला जामुन अच्छा होता है।)
ब.व. कारा जामुन चांगला/अच्छा होसेत । (काले जामुन अच्छे होते है ।)
ए.व. उ अज खेलन नही आयव । (वह आज खेलने नही आया ।)
ब.व. वय अज खेलन नही आया । (वे आज खेलने नही आये ।)

हिंदी में संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, एकवचन से बहुवचन में प्रायः बदलते हैं । पवारी में अधिकांश संज्ञा एक वचन से बहुवचन में अपरिवर्तित रहती है किंतु कोई भेद नही जान पड़ता । क्रिया बदलती है । हिंदी की तरह सर्वनाम और विशेषण क्रिया के साथ पवारी में भी एकवचन से बहुवचन में बदलते हैं । सभी वाक्य प्रयोगों में वचन के साथ क्रिया बदलती हैं ।

हिंदी में अधिकांश संज्ञाएँ एकवचन से (ए लगाकर) बहुवचन में बदलती है किन्तु पवारी में कुछ ही संज्ञाएँ एक वचन से बहुवचन में (ई लगाकर) बदलती है । उदाहरण -

१ गाय-५ गाई (१गाय-५ गायें)	१ सरक-५ सरकऽ(१ सड़क-५ सड़के),
१बहिन -५ बहिनी (१ बहन-५ बहनें)	१ भाऊ- ५ भाऊ (१ भाई -५ भाई)
१ डोरा -दुय डोरा(१ आँख -२ आँखे)	१ रात -दुय रातऽ(१ रात- २ रातें)
१ बईल-दुय बइल(१ बैल-२ बैल)	१ भस-दुय भसी(१ भैस-२ भैसे)
१ कुतरा-सय कुतरा(१ कुत्ता-६ कुत्ते)	१ केरा -१० केरा(१ केला -१० केले)
१ बोहू- ३ बोहू (१ बहू-३ बहूएँ)	१ देवर-५ देवर (१ देवर-५ देवर)

हिंदी में शब्दों के अन्त में (याँ) बहुवचन में जोड़ दिया जाता है । पवारी में जबकी कुछ ही शब्दों के अंत में (ई) बहुवचन में जोंडा जाता है । उदाहरण

१ बटकी-३ बटकी (१ कटोरी-३ कटोरियाँ)	१ घडी-१० घडी (१ घड़ी -१० घड़ियाॅ)
१ बेटी-३ बेटी (१ बेटी-३ बेटियाँ)	१ बोली-३ बोली (१ बोली-३ बोलियाँ)
१ भानी -३ भानी (१ थाली-३ थालियाँ)	१ बोट-३बोट (१ उंगली-३ उंगलियाॅ)

हिंदी में. अंत में (या) बहुवचन में जूड जाता है किन्तु अक्शर पवारी में कोई बदलाव नही होता ।
पवारी में 'ओ' से 'आ' एकवचन से बहुवचन में बदल जाते है ।
चुल्हो - चुल्हा (चुल्हा-चुल्हे) पिढो-पिढा (पिढ़ा-पिढ़े)
हिंदी एवं पवारी में कुछ शब्द ऐसे है जो एकवचन से बहुवचन में *एकसे* रहते हैं । उदाहरण -

गुस्सा -गुस्सा	सेना-सेना	नेता-नेता
बैल-बैल	पिता-पिता	पानी-पानी
गुरु-गुरु	दूध-दूध	राजा-राजा
मित्र-मित्र	जल-जल	माती-माती
टेबल-टेबल	चाचा-चाचा	मामा-मामा

८. कारक (Case) : कारक का काम संज्ञा तथा सर्वनाम का कार्य निर्धारित करना हैं । इस काम में विभक्तियाॅ उनकी सहायता करती है । विभक्तियों को 'परसर्ग' भी कहा जाता हैं । दुसरे शब्दों में, संज्ञा या सर्वनाम को परसर्ग से जोड़कर उसका सीधा संम्बन्ध क्रिया या शब्दों से ज्ञात हो उसे कारक कहते हैं । उदाहरण -

अर्जुन न जयद्रथ ला बाण लक मारीस । (अर्जुन ने जयद्रथ को बाण से मारा ।)

दोनो भाषाओं में तीन संज्ञा शब्द है - अर्जुन, जयद्रथ और बाण ।

हिंदी में 'ने', 'को' और 'से' यह तीन विभक्तियाॅ या परसर्ग हैं ।उनके स्थान पर पवारी में 'न', 'ला','लक' ए तीन विभक्तियाॅ या परसर्ग हैं । दोनो भाषाओं में भिन्न भिन्न विभक्तियाॅ क्रिया से संज्ञा का सम्बन्ध बतला रही हैं ।

कारकों के भेद - पवारी में हिंदी की तरह आठ कारक होते हैं । कारकों के भिन्न भिन्न विभक्ति चिन्ह होते हैं -

	पवारी	**हिंदी**
१. कर्ता (Nominative)	न	ने
२. कर्म (Objective)	ला	को
३. करण (Instrumental)	लक	से,के,द्वारा, केसाथ

४. सम्प्रदान (Dative)	ला, साथी	को, के लिए
५. अपदान (Ablative)	लक	से (पृथक होने में)
६. सम्बन्ध (Relative/ Possessive)	को,की	का, के, की
७. अधिकरण (Locative)	मा, पर	में, पे, पर
८. सम्बोधन (Vocative)	अरे, हे	'हो', 'अरे', 'हरे'!

१. **कर्ताकारक** (कर्ता से सम्बन्ध जोड़ते है ।)

- अर्जुन न जयद्रथ ला मारीस । (अर्जुन ने जयद्रथ को मारा ।)
- मरार न सरप ला मारीस । (माली ने साप को मारा ।)

उपरोक्त वाक्यों में अर्जुन, माली कर्ता हैं तथा हिंदी में ''ने'' और पवारी में ''न'' विभक्तियाँ हैं ।

२. **कर्मकारक** (कर्म से सम्बन्ध जोड़ते है)

- बरठी न गधा ला पिटीस । (धोबी ने गधे को पीटा ।)
- सिपाई न चोर ला धरीस । (सिपाही ने चोर को पकड़ा ।)

उपरोक्त वाक्यों में कर्ता धोबी तथा सिपाही है, कर्म गधा और चोर है। कर्ता के साथ हिंदी में 'ने' और पवारी में 'न' विभक्तियॉ लगी है तथा कर्म के साथ हिंदी में और पवारी में 'ला' विभक्तियॉ जुड़ी हैं ।

३. **करणकारक** (करण से सम्बन्ध जोड़ते है ।)

- बढई न काड़ी लक टेबल बनाईस (बढ़ई ने लकड़ी से मेज बनाई ।)
- उ प्लेग लक मरेव । (वह प्लेग से मरा ।)

उपरोक्त वाक्यों में मेज बनने का साधन लकड़ी और मरने का कारण प्लेग हैं और इन करणों को क्रिया से हिंदी में 'से' और पवारी में 'लक' विभक्तियों ने जोड़ा हैं ।

४. **सम्प्रदानकारक -** (सम्प्रदान का अर्थ है - देना)

- मि नऽ आपलऽ संगी ला पुस्तक देय देयो ।(मैने अपने मित्र को पुस्तक दे दी ।
- गरीबहिन ला जेवन देय देव । (गरीबों को भोजन दे दो ।)
- संजीव न गीता साथी खेलुना लेयकन देईस । (संजीव ने गीता के लिये खिलौने खरीदकर दिये ।)

यहां हिंदी में 'को' 'के लिये' इन विभक्तियों का स्थान पवारी

में 'ला' तथा 'साथी' ने लिया हैं ।

५. अपदानकारक- (एक वस्तु का दुसरे वस्तु से अलग होना याने अपदान ।) हिंदी में 'से' तथा पवारी में 'लक' अपदान कारकों के चिन्ह हैं ।

- झाड़ लक पान पड़्योव । (वृक्ष से पत्ता गिरा ।)
- मदारी गाव लक चली गयोव । (मदारी गांव से चला गया ।)
- गंगा नदी हिमालय मा लक निंघऽ से ।(गंगा नदी हिमालय से निकलती है ।)

प्रायः करण कारक एवं अपदानकारक दोनो भाषाओं में समान होते हैं । हिंदी में 'से' तथा पवारी में 'लक' ।

६. सम्बन्धकारक (दो वस्तुओं का आपसी सम्बन्ध बतानेवाला शब्द) इस कारक का विभक्ति चिन्ह हिंदी में 'का', 'की' 'के' तथा पवारी में, 'को' 'की' प्रमुख है ।

- उ रामलाल को टुरा आय । (वह रामलाल का लड़का है ।)
- या गाय सुसरोघर की आय । (यह गाय ससराल की है ।)
- आमरो स्कूल को हेडमास्तर मोठो कवि से । (हमारे शाला के प्रधानाचार्य महान कवि है।)

७. अधिकरणकारक - (शब्द के जिस रूप से क्रिया के आधार का बोध होता हैं।) - जैसे ज्ञात हो कि कार्य का आधार, स्थान या समय क्या है, उसे अधिकरण कारक कहते हैं । इस कारक के विभक्ति चिन्ह हिंदी में - में, पे, पर तथा पवारी में 'मां' 'पर' 'लक' आदि होते हैं ।

- आलमारी मा साड़ी ठेई से । (अलमारी में साड़ी रखी है ।)
- किताब पान पर काही नोको लिखो । (किताब पृष्ठ पर कुछ नही लिखना ।)
- मि आबऽ थोड उसिर लक आऊन । (मैं अभी थोड़ी देर में आया ।)
- आमि नऽ महाराजबाग मा शेर देख्या । (हमने महाराजबाग में शेर देखे ।)

८. सम्बोधनकारक : बुलाना, पुकारना, सचेत करना हो तो विशेष शब्दों का प्रयोग करते हैं, उन्हें सम्बोधनकारक कहते हैं । हिंदी तथा पवारी में एक से सम्बोधनकारक होते हैं, जैसे 'अरे' 'हे' आदि.

- अरे बेटा ! कायला (काहे) रोवऽसेस ! (अरे बेटा! क्यु रो रहे हो!)
- हे भगवान ! मोला उठाय ले । (हे भगवान ! मुझे उठा ले ।)

९.सर्वनाम (PRONOUN) : हिंदी में सर्वनाम छः प्रकार के होते हैं।

१. पुरुषवाचक सर्वनाम (Personal Pronoun)
२. निश्चयवाचक सर्वनाम (Demonstrative Pronoun)
३. अनिश्चयवाचक सर्वनाम (Infenitive Pronoun)
४. सम्बन्धवाचक सर्वनाम (Relative Pronoun)
५. प्रश्नवाचक सर्वनाम (Interrogative Pronoun)
६. निजवाचक सर्वनाम (Reflexive Pronoun)

१. पुरुषवाचक सर्वनाम - तीन प्रकार के होते है ।

अ. उत्तम पुरुष (First person)	मि (मै) ,आमि (हम)
ब. मध्यम पुरुष (Second Person)	तु, (तू/आप) तुमि (तुम/आप)
क. अन्य पुरुष (Third Person)	उ (वह) वय (वे)

पवारी में अन्य पुरुष में उ (He) तथा वा (She) जैसा प्रयोग में लाया जाता हैं ।

२. निश्चयवाचक सर्वनाम -

अ. समीपवर्ती	यव (यह)	ए (ए)
ब. दूरवर्ती	उ/वा(वह)	वय (वे)

३. अनिश्चयवाचक सर्वनाम

अ. प्राणीवाचक	कोनी (कोई)	
ब. निर्जीववस्तु (अप्राणीवाचक)	काही (कुछ)	(वस्तुवाचक)

४. सम्बन्धवाचक सर्वनाम	जसो, (जैसा)	तसो (वैसा)
	जो (जो),	उ (वह)
	वोतो/वोतरो(उतना)	जेतरी (जितनी)

५. प्रश्नवाचक सर्वनाम

अ. प्राणीवाचक	कोन (कौन)
ब. वस्तुवाचक	का /कोन (क्या)
	कोनसा कोनती (कौनसी कोनती)

६. निजवाचक सर्वनाम	आपला (अपने)
	खुद (खुद)
	आपुन होयकन (अपने आप)
	सोताहा (स्वतः)

वाक्यप्रयोग :

१) पुरुषवाचक सर्वनाम

१. मि यहां बसी सेव।	(मै यहां बैठा हूँ।)
२. आमि यहां बस्या सेजन।	(हम यहां बैठे हैं।)
३. तु कहाँ सेस?	(तू कहाँ है?)
४. तुमि कहां सेव?	(तुम कहाँ हो?)
५. उ कहां से ?/ वा कहाँ से।	(वह कहां है?)
६. वय कहां सेत?	(वे कहां है?)

२) निश्चयवाचक सर्वनाम

१. यव घर मोरो आय ।	(यह घर मेरा है ।)
२. उ घर ओको आय ।	(वह घर उसका है ।)
३. या मोरि पुस्तक आय ।	(यह मेरी पुस्तक है ।)
४. वा मोहन की पेन आय ।	(वह मोहन की पेन है ।)

३) अनिश्चयवाचक

१. तुमला भेटन ला कोनी आयो होतो । (आपसे मिलने कोई आया था।)
२. अज त घरमा काही नाहाय । (आज तो घर में कुछ नही है ।)

४) सम्बन्धवाचक सर्वनाम

१. जसो करो तसो भरो ।	(जैसा करोगे वैसा भरोगे ।)
२. जो मेहनत कर से उ फल खासे ।	(जो मेहनत करता है वह फल खाता है ।)
३. ओतरा पाय पसारो जेतरी चद्दर से ।	(उतना पाँव पसारिए जितनी चादर है ।)

४. आपस मा बैर बेस नही होय । (आपस का बैर अच्छा नहीं होता ।)

५) प्रश्नवाचक सर्वनाम

१. तुमि का लिख रह्या सेव ?	(तुम क्या लिख रहे हो?)
२. खेत मा कोन बसी से ?	(खेत में कौन बैठा हैं ?)
३. या कोनती नदी आय ?	(यह कौन सी नदी है ?)
४. उ कोन को बईल आय ?	(वह किस का बैल है ?)
५. तुमरो बईल कोनतो आय ?	(तुम्हारा बैल कौनसा है ?)

६) निजवाचक सर्वनाम

१. उ आपलो घर गयो । (वह अपने घर गया।)

२. उ आपुन होयकन वहां गयो । (वह अपने आप ही वहां गया।)

३. उ खुदच जंगल मा गयो । (वह खुद ही जंगल में गया।)

४. आपली-आपली सम्हालो गा भाऊ। (अपनी अपनी सम्हालो रे भाई।)

५. वा आपलो घर गई । (वह अपने घर गई ।)

पवारी सर्वनामों का रूप-रूपांतर - शब्दों के विशेष प्रयोग पुरुष, वचन, लिंग तथा कारकों के अनुसार सर्वनामों में रुपांतर हो जाता है, उनकी रूप रचना बदल जाती है, जैसे -

१. पुरुषवाचक

१.१. उत्तम पुरुष

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	मि (मै)	आमि (हम)
	मिनऽ (मैने)	आमिनऽ (हमने)
	मोरोलक (मुझसे)	आमरोलक (हमसे)
कर्म	मोला (मुझे)	आमला (हमें)
	मोला (मुझको)	आमला (हमको)
करण	मोरोलक (मुझसे)	आमरोलक (हमसे)
	मोरोकनलक (मेरे द्वारा)	आमरोकनलक (हमारे द्वारा)
सम्प्रदान	मोला (मुझे)	आमला (हमें)
	मोला(मुझको)	आमला (हमको)
	मोरोसाथी (मेरे लिए)	आमरऽ साथी (हमारे लिए)
अपादान	मोरोसंग (मुझसे)	आमरऽ संगऽ (हमसे)
सम्बन्ध	मोरा (मेरा)	आमरो (हमारा)
	मोरी (मेरी)	आमरि (हमारी)
	मोरा (मेरे)	आमरा (हमारे)
अधिकरण	मोरोमा (मुझमें)	आमरोंमा (हममें)
	मोरोपर (मुझपर)	आमरोपर (हमपर)

१.२ मध्यमपुरुष

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	तु (तू)	तुमि (तुम)
	तुनऽ (तूने)	तुमिनऽ (तुमने)
कर्म	तोला (तुझे)	तुमला (तुम्हें)
	तोला (तुझको)	तुमला (तुमको)
करण	तोरो लक (तुझसे)	तुमरो लक (तुमसे)
	तोरोकन लक (तेरेद्वारा)	तुमरोकन लक (तुम्हारेद्वारा)
सम्प्रदान	तोला (तुझे)	तुमला (तुम्हे)
	तोला (तुझको)	तुमला (तुमको)
	तोरऽसाथी (तेरेलिए)	तुमरऽसाथी (तुम्हारेलिए)
अपादान	तोरो लक (तुझसे)	तुमरो लक (तुमसे)
	तोरोसिन	तुमरोसिन
सम्बन्ध	तोरो (तेरा)	तुमरो (तुम्हारा)
	तोरा (तेरे)	तुमरा (तुम्हारे)
	तोरि (तेरी)	तुमरि (तुम्हारी)
अधिकरण	तोरो मा (तुझ में)	तुमरो मा (तुम में)
	तोरो पर (तुझ पर)	तुमरो पर (तुम पर)

१.३ अन्यपुरुष

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	उ/वा (वह)	वय (वे)
	ओनऽ (उसने)	उननऽ (उन्होंने)
	वय लोक (वे लोग)	वनऽलोकहिननऽ (उन लोगोंने)

कर्म	ओला (उसे)	उनला (उन्हे)
	ओला (उसको)	उनको (उनको)
	उनऽलोकहिनला	(उन लोगोंको)
करण	ओको लक (उससे)	उनऽक लक (उनसे)
	ओकोकनलक (उसके द्वारा)	उनकोकन लक (उनके द्वारा)
सम्प्रदान	ओला (उसको)	उनला (उनको)
	ओको साथी (उसके लिए)	उनक साथी (उनके लिए)
अपादान	ओको संगऽ(उस,से)	उनको संगऽ (उनसे)
सम्बन्ध	ओको (उसका)	उनको (उनका)
	ओकि (उसकी)	उनकि (उनकी)
	ओका (उसके)	उनका (उनके)
अधिकरण	ओकोमा (उसमें)	उनमा (उनमें)
	ओकोपर (उसपर)	उनपर (उनपर)

पवारी सर्वनामो पर क्षेत्रीय प्रभाव

सर्वनाम	बैनगंगा क्षेत्रीय पवारी		वर्धा क्षेत्रीय पवारी		हिंदी	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
प्रथम	मि	आमि	म, मु.	आमि	मै	हम
पुरुष	मोरो	आमरो	मरो	आमार	मेरा	हमारा
	मोरी	आमरी	मरी	आमारी	मेरी	हमारी
	मोला	आमला	मला	आमाला	मेरे	हमारे
द्वितीय	तू	तूमि	तु	तुमि	तू/आप	तूम/आप
पुरुष	तोरो	तुमरो	तोरा	तुमारी	तोरो/आपको	तुम्हारो आपको
	तोरी	तुमरी	तोरी	तुमारी	तेरी/आपकी	तुम्हारी/आपकी
	तोला	तुमला	तोला	तुमाला	तेरे/आपके	तुम्हारे/आपके
अन्य	उ/वा	वय	ऊ/वा		वह	वे
पुरुष	ओको	उनको	ओको	उनकी	उसको	उनको
	ओकी	उनकी	ओकी	उनकी	उसकी	उनकी
	ओला	उनला	ओला	उनला	उसके	उनके

वाक्य प्रयोग

एकवचन	**बहुवचन**
एक हिवरो पान से ।	पांच हिवरा पान सेति ।
एक कुतरा भुकसे ।	बहूतसा कुतरा भुकसेति ।
येव एक घर आय ।	ये दुय घर आति ।
मि आपलो घर मा सेव ।	आमि आपल् घर मा सेजन ।
मोरो घर लहान से ।	आमरो घर लहान से
यह लहान टुरा आय ।	ये लहान टुरा आति ।
मोरो गाव जाय ।	आमरो गाव जाव ।
मोरि पुस्तक यहानि आन् ।	मोरि पुस्तक यहांनि आन् ।
यो मोरो टुरा आय ।	ये मोरो टुरा आति ।
मोला एक टुरी से ।	मोला दुय टुरी सेति ।
तोरो टुरा यहां से ।	तोरा टुरा यहां सेति ।
वा मोरी माय आय ।	वह मोरा माय बाप आति ।
वा तोरि बहिन आय का?	वय तोरि बहिनि आत का?
नहि, वा मोरि टुरि आय ।	नहि, वय मोरी टुरी आति ।
मोरो भाऊ घर मां से ।	मोरो भाऊ अनिक मोरि बहिन घर मा सेति ।
मोरो हात देख ।	मोरा हात देख ।
तोरो पाय देख ।	तोरा पाय देख ।
उनको नवकर आय ।	उनका नवकर आति ।
उनको घर आय ।	उनका घर आति ।
मि मंदिर देखसु ।	आमि मंदिर देखसेजन ।
तु मोला देखसेस् ।	तु आमला देखसेस ।
उ मोला देखसे ।	उ आमला देखसे ।
वा मोला देखसे ।	वय आमला देखसेति ।
वोको कान तुटेव ।	वोका कान तुट्या ।
वोको डोरा फुटेव ।	वोका डोरा फुट्या ।
वोको खेत आयो ।	उनका खेत आया ।
वो कि टोपलि दे ।	उनकि टोपली देव ।
या बाई अन्धरि से ।	वय बाई अन्धरि सेति ।
उ भाऊ लंगडा से ।	वय भाऊ लन्गडा सेति ।

१०. विशेषण (ADJECTIVE) : संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतानेवाले शब्द विशेषण कहलाते हैं । विशेषण के मुख्य चार भेद है :

१. गुणवाचक विशेषण (Adjective of quality)
२. परिमाणवाचक विशेषण (Adjective of quantity)
३. संख्यावाचक विशेषण (Numerical Adjective)
४. सार्वनामिक विशेषण (Demonstrative Adjective)

१. गुणवाचक विशेषण - किसी व्यक्ति या वस्तु के गुण, दोष, आकार, स्थान, रंग, काल, दशा आणि सूचक विशेषण ।

भेद	**लिंग**	**उदाहरण**
गुण	पु.	अच्छो/चांगलो, भलो, सीधो (अच्छा,भला,सीधा)
	स्त्री.	अच्छी,चांगली,भली,सीधी (अच्छी,भली,सीधी)
दोष	पु.	झूठो/खोटो, बुरो, पापी (झूठा, बुरा, पापी)
	स्त्री.	झूठी, बुरी, पापी (झूठी, बुरी, पापी)
आकार	पु.	गोल, नहान, मोठो, लम्बो (गोल, छोटा, बड़ा, लम्बा)
	स्त्री.	गोल, लहानी, मोठी,लम्बी (गोल, छोटी, बड़ी, लम्बी)
स्थान	-	देशी, विदेशी, बनारसी (देशी, विदेशी, बनारसी)
रंग	पु.	नीलो,हिवरो,कारो,पांढरो,पिवरो (नीला,हरा,काला,सफेद,पीला)
	स्त्री.	नीलि,हिवरि,कारि,पांढरि,पिवरि (नीली,हरी,काली,पीली)
काल	पु.	नवो, जुनो, पौराणिक (नया, पुराना, प्राचीन)
	स्त्री.	नवी, जुनी, पौराणिक (नई, पुरानी, प्राचीन)
दशा	पु.	मोटो, पतलो, सुखो, ओलो (मोटा, पतला, सूखा, गीला)
	स्त्री.	मोटि, पतलि, सुखि, ओलि (मोटी, पतली, सुखी, गीली)
स्वाद	पु.	मीठो, खट्टो, कड़वो, खारो (मीठा, खट्टा, कड़वा, नमकीन)
	स्त्री.	मीठि, खट्टि, कड़वि, खारि (मीठी, खट्टी, कड़वी, नमकीन)
दिशा	-	भीतर, बाहेर, उत्तरी, दक्षिणी (भीतरी, बाहरी, उत्तरी, दक्षिणी)
स्पर्श	-	कठोर, कोमल, चिकनो, चटरो (कठोर, कोमल,चिकना, खुरदरा)
गंध	-	चांगली, खराब, बास (सुगंध, दुर्गंध, गंध)

२. संख्यावाचक विशेषण - संज्ञा या सर्वनाम की संख्या गणना का विशेषण। ये निश्चित संख्यावाचक या अनिश्चित संख्या वाचक विशेषण होते हैं ।

- निश्चित संख्यावाचक विशेषणों के निम्नांकित भेद होते हैं-

अ) पुर्णांक बोधक	- एक, चार, हजार, लाख
आ) अपुर्णांक बोधक	- अर्धो (आधा), पाउन (पौन), सव्वा (सवा) दिढ़ (देढ़)
इ) क्रमवाचक	- पहलो (पहला), दुसरो (दुसरा), तिसरो (तिसरा)
ई) आवृत्तिवाचक	- दुगनो (दुगुना), चौगुनो (चौगुना), दसगुनो (दसगुना)
उ) समुहवाचक	- दुही (दोनों), च्यारही (चारो), डजन, खंडी
ऊ) बहुत्ववाचक	- सब, सप्पा, अनगिनत, थोडा ।

वाक्यप्रयोग -

(अ) अनिश्चियवाचक

१. टोपली मां काही आंबा सेती । (टोकनी में कुछ आम है ।)

(ब) निश्चयवाचक

२. चारिस्,ट्लि धान की फसल भई । (चालीस क्विंटल धान की फसल हुई ।)
३. कमला ला पहिलो इनाम भेटेव । (कमला को पहला इनाम मिला।)
४. पाचही बोट बराबर नही होत । (पाँचो उंगलियाँ बराबर नही होती।)
५. वोको घर चौगुना मोठो से । (उसका घर चौगुणा बड़ा है ।)
६. आमि चारही भाऊ पढ्यालिख्या सेजन । (हम चारो भाई पढ़े लिखे है ।)

(क) निश्चितसंख्यावाचक का अनिश्चित संख्यावाचक में रूपांतर

निश्चित संख्या पूर्णांक बोधक	**अनिश्चित संख्या बोधक**
१. सौ पाहुना आया होता । (सौ मेहमान आये थे ।)	अंदाजे सौ पाहुना आया होता । (करीब सौ मेहमान आये थे ।)
२. पन्नास रुपया लगेत । (पचास रुपये लगेंगे ।)	अंदाजन पन्नास रुपया लगेत । (अंदाजन पचास रुपये लगेंगे ।)
३. हजार लोक बेघर भया रहेत । (हजार लोग बेघर हुये होंगे ।)	हजारो लोक बेघर भया रहेत । (हजारों लोग बेघर हुये होंगे)
४. साठ रूपया लक काम चल जाहे । (साठ रूपयों से काम चल जायेंगा ।)	साठ-सत्तर रुपया लक काम चल जाहे । (साठ-सत्तर रुपयोंसे काम चल जायेंगा ।)

५. दुय दिवस को काम से।	दुय-तीन दिवस को काम से।
(दो दिन का काम है।)	(दो-तीन दिन का काम हैं।)

३. परिमाणवाचक विशेषण - परिमाण या मात्रा का बोध । उदाहरण -

१. मोरो चाहा मा दुय चमचा साखर टाको ।
(मेरी चाय में दो चम्मच शक्कर डालना ।)

२. एक लिटर दुध लेजो । (एक लिटर दुध लेना ।)

३. मोला पाच जोडी कपडा पाहिजेत । (मुझे पाच जोड़ी कपड़े चाहिए ।)

४. ओला सय कुडो धान देय देव । (उसे छः कुड़ो धान दे दो ।)

४. सार्वनामिक विशेषण (सर्वनाम के साथ जुड़े हुये विशेषण ।)
सार्वनामिक विशेषणों के भेद -

अ) निश्चयवाचक - या मूरती (यह मूर्ति), वा मूरती (वह मूर्ति)
ब) अनिश्चयवाचक- कोनी मानुस (कोई व्यक्ति), काही फायदा (कुछ लाभ)
क) प्रश्नवाचक - कोन मानुस? (कौन व्यक्ति?), का फायदा? (क्या लाभ?)

वाक्यप्रयोग -

१. वहां कोन लोक उभा सेती? । (वहां कौन लोग खड़े हैं ?)
२. या सपरी बिलकुल साफ से । (यह छप्पर बिलकूल साफ है ।)
३. माय जवर कोनी उभो से । (मां के पास कोई खड़ा है ।)

५.तुलनात्मक विशेषण -बहुतसी भाषाओं में विशेषण तुलनात्मक बोध देते है, जैसे मूलावस्था, उत्तरावस्था, उत्तमावस्था (Comparative degrees like Positve, Comparative, Superlative) । जैसे -

उचा,	उचातर,	उचातम	(हिंदी)
(High,	Higher,	Highest)	(अंग्रेजी)

किंतु पवारी में तुलनात्मक विशेषणों का अभाव है । तुलनात्मक श्रेणी विवरण के लिए *अधिक या सबमा* से दर्शाई जाती है -

पु.	उचो,	अधिक उचो,	सबमा उचो
स्त्री.	उची,	अधिक उची,	सबमा उची

इसका अर्थ है - पवारी में विशेषण स्वयम् तुलनात्मक श्रेणी का बोध

देने असमर्थ है । उन्हे तुलनात्मक शब्द जोडने पड़ते हैं । उदा. -
- गंगा जग की सबसे पवित्र नदी से। (गंगा विश्व की सबसे पवित्र नदी हैं।)
- भोज मालवा को सबसे प्रसिद्ध राजा भयो। (भोज मालवा के सबसे प्रसिद्ध राजा हुये।)

हिंदी में कुछ जोड़ शब्द अपवाद स्वरूप तुलनात्मक श्रेणी दर्शाने उपयोग में.लाये जाते है । किंतु पवारी में तुलनात्मक श्रेणी दर्शाने अधिकतर शब्दों का ही उपयोग किया जाता है ।

मुलावस्था	उत्तरावस्था	उत्तमावस्था
सुंदर (सुंदर)	अधिक सुंदर (सुंदरतर)	सबमा सुंदर (सुंदरतम्)
चालाक (चालाक)	अधिक चालाक (अधिक चालाक)	सबमा चालाक(सबसे चालाक)
अच्छा (अच्छा)	अधिक अच्छा(अधिक अच्छा)	सबमाँ अच्छा (सबसे अच्छा)

हिंदी में अच्छा विशेषण की तीन श्रेणियों ऐसी भी दर्शायी जा सकती है -

अच्छा	बेहतर	बेहतरीन

इस तरह का श्रेणी परिवर्तन पवारी में नही हैं ।

६. जोड़ विशेषण - प्रत्यय, उपसर्ग, संज्ञा और क्रिया से बने विशेषण हिंदी और पवारी में एकसे ही होते है । उदाहरण -

अ. प्रत्यय विशेषण -				
	अर्थ	आर्थिक	सेना	सैनिक
(इक)	समाज	सामाजिक	नगर	नागरिक
	इतिहास	ऐतिहासिक	परिवार	पारिवारिक
	मास	मासिक	धर्म	धार्मिक
	कल्पना	काल्पनिक	वर्ष	वार्षिक
(इत)	जीव	जीवित	अपमान	अपमानित
(ई)	शहर	शहरी	पंजाब	पंजाबी
	योग	योगी	नव	नवीन
	दुख	दुखी	कुल	कुलीन
(ऊ)	पेट	पेटू	अकड़	अकडू
	दया	दयालु	झगड़ा	झगड़ालू
(एरा)	चाचा	चचेरा	मौसा	मौसेरा
(इला)	भड़क	भड़किला	चमक	चमकिला

ब) उपसर्ग विशेषण

नि + डर = निडर   ना + समझ = नासमझ

	स + जीव = सजीव	स + फल = सफल	
	बद +नाम = बदनाम	बे + जान = बेजान	
	ना +लायक = नालायक	बे + अकल = बेअकल	

क) संज्ञावाला विशेषण

(वाला)	दूध -दूधवाला	गांव	गांववाला
(अरी)	भीतर भीतरी	बाहर	बाहरी
ड) क्रिया विशेषण	पीना -पीनेवाला	देखना	देखनेवाला
(ए वाला)	सोना- सोनेवाला	पढ़ना	पढ़नेवाला

इ) संख्या विशेषण -

१	एक्	२१	एकवीस
२	दुय	२५	पंचीस/पुाीस
३	तिन् /तीन	२९	उनतीस/एकोनतीस
४	चार् /च्यार	३०	तिस/तीस
५	पाच	४०	चारिस/चालीस
६	सय	५०	पन्नास/पुाास
७	सात्	६०	साठ्
८	आठ्	७०	सत्तर
९	नव्	८०	अस्सि/अंसी
१०	दस्	९०	नव्वद/नब्बद
११	अकरा	१००	सव
१२	बारा	१०००	हजार
१३	तेरा	१०००००	लाख
१४	चौदा	१००,००,०००	कोटी
१५	पन्दरा	०.२५	पाव
१६	सोड़ा/सोरा	०.५०	अर्धा, अर्धो, अर्धी,अर्दो
१७	सतरा	०.७५	पाऊन
१८	अठ्रा	१.२५	सव्वा, सवा
१९	उन्निस	१.५०	देड्
२०	बिस	२.५०	अडिच्

पहिलो (पहला) , दुसरो (दुसरा), तिसरो (तिसरा), चौथो (चौथा)
पहिली, दुसरी, तिसरी, चौथी

११. क्रिया (VERB) : वाक्य में कर्ता, कर्म क्रिया प्रमुख अंग है । हिंदी की भाँति पवारी में भी क्रिया वाक्य का अंतिम हिस्सा बनता है, जैसे निमांकित वाक्य में रेखांकित भाग क्रिया है ।

- रमेश दूध पिय रही से । (रमेश दूध पी रहा है ।)

क्रिया का मूल स्वरूप 'धातु' कहलाता है. अर्थात क्रिया के विभिन्न रूपों में जो अंश समान रूप से मिलता हैं, वह क्रिया की धातु कहलाता है । उदाहरण के तौर पर -

१. पानी धीरू धीरू पिये पायजे ।	(पानी धीरे धीरे पीना चाहिये ।)
२. उ पानी धीरू धीरू पिवसे ।	(वह पानी धीरे धीरे पीता है ।)
३. तूनऽ गट गट पानी पियेस ।	(तूने गट गट पानी पीया ।)
४. तहान बुझतवरी पानी पिओ ।	(प्यास बुझते तक पानी पिओ ।)
५. कुरपाकर धीरू धीरू पानी पीओ ।	(कृपया धीरे-धीरे पानी पीजिए ।)

दोनों भाषाओं के पाँचो वाक्यों में क्रिया का 'पी' अंश समान रुप से आया है अतः 'पी' क्रिया का मूल रूप अर्थात धातु है । 'पी' मे 'ना' जोड़ने से पीना बनता है, 'पी' धातु है और 'ना' प्रत्यय यह क्रिया का सामान्य रूप है । पवारी में ना का स्थान ता ने लिया है ।

धातु के भेद

१.सामान्य धातु

धातु प्रत्यय क्रिया	*धातु प्रत्यय क्रिया*
लिख + ता = लिखता	चल + ता = चलता
गा + ता = गाता	खा + ता = खाता
सो + ता = सोता	पी + ता = पीता

हिंदी में निम्नांकित उदाहरण सामान्य धातु का बदलाव बताते है -

२. व्युत्पन्न धातु ((धातु + प्रत्यय)

पीना - पिवावनो - (पिलाना)	रोना - रोवावनो (रूलाना)
देखना- देखावनो (दिखाना)	खाना - खिलावनो (खिलाना)

३. नाम धातु (संज्ञा + प्रत्यय)

लालच -ललचावनो (ललचाना) शर्म - शरमावनो (शर्माना)

नाच - नचावनो (नचाना) रंग - रंगावनो (रंगना)

४. मिश्र धातु (विशेषण + संज्ञा + धातु)

करना - प्यार करनो (करना) होना - घृणा होनो (होना)

आना - याद आवनो (आना) खाना - हवा खानो (खाना)

५. अनुकरण भेद -

इन धातुओं के रूपों के अलावा हिंदी जैसे ही पवारी में भी अनुकरणात्मक धातु ध्वनी के अनुकरण पर बनती है जैसे -

हिनहिन	-	हिनहिनानो (हिनहिनाना)
भिनभिन	-	भिनभिनानो (भिनभिनाना)
टनटन	-	टनटनानो (टनटनाना)
खटखट	-	खटखटानो (खटखटाना)

धातू से क्रिया बननेपर स्वरों में बदल

१. हिंदी और पवारी में दीर्घ - ऱ्हस्व स्वरों की अदला बदली - ई और ऊ क्रमशा इ और उ में बदल जाते हैं । जैसे -

धातू	**क्रिया**	
सीख	सिखावनो, सिखववावनो	(सिखाना, सिखवाना)
पीट	पिटावनो, पिटवावनो	(पिटाना, पिटवाना)
भूल	भुलावनो, भुलवावनो	(भुलाना, भुलवाना)
पी	पिवावनो, पिलवावनो	(पिलाना, पिलवाना)
लूट	लुटावनो, लुटवावनो	(लुटाना, लुटवाना)
जीत	जितावनो, जितवावनो	(जिताना, जितवाना)
डूब	डुबावनो, डुबवावनो	(डुबाना, डुबवाना)
धू	धुलावनो, धुवावावनो	(धुलाना, धुलवाना)
सी	सिलावनो, सिलवावनो	(सिलाना, सिलवाना)
खीज	खिजावनो,खिजवावनो	(खिजाना,खिजवाना

२. हिंदी में यदि धातू का आदि स्वर 'ए' है उसके अकर्मक तथा प्रेरणार्थक रूप बनते समय 'ए' स्वर 'इ' में बदल जाता है किंतु पवारी में हमेशा अपरिवर्तित रहता है । जैसे -

देख - देखनो, देखावनो, देखववावो (दिखाना, दिखाना, दिखवाना)

घेरना- घेरा, घेराव, घेरावनो (घिरना, घिराना, घिरवाना)

३. हिंदी में यदि धातू का आदि स्वर 'ओ' है तो अकर्मक प्रेरणार्थक रूप बनते समय 'ओ' स्वर 'उ' में बदल जाता है । पवारी में अपरिवर्तित रहता है ।

खोल - खोलनो, खोलना, खोलवावनो (खुलना, खुलाना, खुलवाना)

तोड - तोडनो, तोडवावनो, तोडावनो (तोड़ना, तुड़ाना, तुड़वाना)

४. हिंदी में. धातू का 'ए' भूतकाल एकवचन में 'इ' में बदल जाता है । किंतु पवारी में नही बदलता।

दे -	देयव	(दिया)
ले	लेयेव	(लिया)

२. धातुओं की रचना - विभिन्न प्रकार

छः प्रकार की धातुयें १) व्यंजन + स्वर, २) व्यंजन + स्वर + व्यंजन, (३) व्यंजन + स्वर + व्यंजन + स्वर + व्यंजन (४) व्यंजन + स्वर + व्यंजन + व्यंजन + स्वर + व्यंनजन (५) स्वर + व्यंजन तथा ६) स्वर + व्यंजन + स्वर + व्यंजन से बनी हैं । पहले तीन प्रकारों में पवारी व हिंदी की धातुएं बहुतांश समान है । उदा. -

१.व्यंजन + स्वर

ले (ले), दे (दे), रो (रो), धो (धो), हो (हॉ)

२. व्यंजन + स्वर + व्यंजन

खेल (खेल), नाच् (नाच), कर (कर), मार (मार), लिख् (लिख), काट् (काट)

३. व्यंजन + स्वर + व्यजन + स्वर + व्यजन

हकाल (हकाल), पसार् (पसार), बिघाड् (बिघाड), बदल् (बदल), पठाव् (पठाव), बुलावे् (बुलाव)

४. व्यंजन + स्वर + व्यंजन + व्यंजन + स्वर + व्यंजन

बिखराय् (बिखर) फयलाव् (फैलाव)
चिकटाय (चिकटा) देव् खाव (दिखाना)

५. स्वर + व्यंजन

आन् (लाना) ,आव् (आना),जाव् (जाना), पीव् (पीना)

६. स्वर + व्यंजन + स्वर + व्यंजन

उचल् (उचल) , आयक (सून), उघड (खोल), अटकाय् (अटका)

३. क्रिया के भेद

क्रिया भेद

- प्रयोग आधारित
  - १.अकर्मक
  - २.सकर्मक
- रचना आधारित
  - १.रुढ
  - २.योगिक
    - प्रेरणार्थक
    - संयुक्त
    - अनुकरणात्मक
    - नामधातु
- लिंग आधारित
  - १.पुल्लिंग
  - २.स्त्रीलिंग
- वचन आधारित
  - १.एकवचन
  - २.बहुवचन
- काल आधारित
  - १.वर्तमानकाल
  - २.भूतकाल
  - ३.भविष्यकाल

क्रिया के मुख्य दो भेद है -

१. अकर्मक क्रिया (Intransitive Verb) - क्रिया का सीधा संबंध कर्ता पर रहता है और इन क्रियाओं में कर्म नही होता । जैसे -

१.गौरव खेल रही से । (गौरव खेल रहा हैं ।)
२.कुतरा भूख रही से । (कुत्ता भूँख रहा है ।)

२) सकर्मक क्रिया (Transitive Verb) क्रिया का सीधा संबंध (कर्ता के साथ-साथ) कर्म पर पड़ता है । जैसे -

अ) एककर्मक

१. रमेश सायकल चलाय रही से । (रमेश सायकल चला रहा है ।)

२. मरार फूल तोड़ रही से । (माली फूल तोड़ रहा है ।)

आ) द्विकर्मक

३.माय न टुरा ला दूध पिवाईस । (मा ने ब्बो को दूध पिलाया ।)
४.किरसान बयलहिन ला खेत् लिजा रही से ।
(किसान बैलों.को खेत ले जा रहा है ।)

४. क्रिया - काल

क्रिया - काल

- **वर्तमानकाल**
  - -सामान्य
  - -अपूर्ण
  - - संदिग्ध
  - - संभाव्य
  - -प्रत्यक्ष
- **भूतकाल**
  - - सामान्य
  - - आसन्न
  - - अपूर्ण
  - - संभाव्य
  - -हेतु-हेतुमद
  - -अपूर्ण संकेतार्थ
  - -पूर्ण संकेतार्थ
- **भविष्यत्काल**
  - - सामान्य
  - - संभाव्य
  - - परोक्ष विधि

उदाहरण -

अ) वर्तमानकाल

१. सामान्य - राम पुस्तक बाचऽ से । (राम पुस्तक पढ़ता है।)
२. अपूर्ण - राम पुस्तक बाच रही से । (राम पुस्तक पढ़ रहा है।)
३. संदिग्ध - राम पुस्तक बाचत रहे । (राम पुस्तक पढ़ता होगा।)
४. संभाव्य - कदाचित, राम पुस्तक बाचत रहे।
(कदाचित, राम पुस्तक पढ़ता हो।)
५.प्रत्यक्षविधि - पुस्तक बाचो ! (पुस्तक पढ़ो !)

ब) भूतकाल

१. सामान्य - राम न पुस्तक बाचिस। (राम ने पुस्तक पढ़ी ।)
२. आसन्न - राम न पुस्तक बाची सेस। (राम ने पुस्तक पढ़ी है ।)

३. अपूर्ण - राम पुस्तक बाचत होतो। (राम पुस्तक पढ़ता था।)
४. पूर्ण - राम न पुस्तक बाची होतिस। (राम ने पुस्तक पढ़ी थी।)
५. संभाव्य - होय सिकसे, राम न पुस्तक बाची रहेस।
(संभवतः राम ने पुस्तक पढ़ी हो।)
६. संदिग्ध - राम न पुस्तक बाची रहेस। (राम ने पुस्तक पढ़ी होगी।)
७. हेतु-हेतुमद - राम न पुस्तक बाची रव्हतिस त पास भय गयो रव्हतो।
(राम पुस्तक पढ़ता तो उत्तीर्ण हो जाता।)
८.अपूर्ण संकेतार्थ - अगर राम सिकेव रव्हतो त अज उचो पद पर रहे रव्हतो।
(यदि राम पढ़ा होता तो आज उंचे पद पर होता।)
९.पूर्ण संकेतार्थ - राम न पुस्तक बाची रवतिस त ओला पुरी जानकारी मिली रव्हती।
(राम ने पुस्तक पढ़ी होती तो उसे सारी जानकारी मिल जाती।)

क) भविष्यत् काल

१. सामान्य - राम पुस्तक बाचे। (राम पुस्तक पढ़ेगा।)
२. सम्भाव्य - राम न पुस्तक बाचे पायजे। (राम पुस्तक पढ़े।)
३.परोक्ष विधिकाल - राम सकारी पुस्तक बाचजो। (राम कल पुस्तक पढना।)

५. क्रिया की लिंग तथा वचन पर आधारित रूप रचना

उदा. - 'आना'

काल लिंग	**पुरुष**	**एकवचन**	**बहुवचन**
भूतकाल			
पुल्लिंग	उत्तम	मि आयो (मै आया)	आमि आया (हम आये।)
	मध्यम	तु आयेस (तू आया)	तुमि आयात (तुम आये)
	अन्य	उ आयो (वह आया)	वय आया (वे आये)
स्त्रीलिंग	उत्तम	मि आयी (मै आयी)	आमि आया (हम आयी)
	मध्यम	तु आयीस (तू आयी)	तुमि आयात (तुम आयी)
	अन्य	वा आयी (वह आयी)	वय आयी (वे आयी)
वर्तमानकाल			
पुल्लिंग	उत्तम	मि आवसू (मै आता हूँ)	आमि आवसेजन (हम आते हैं)
	मध्यम	तु आवसेस (तू आता है)	तुमि आवोसेव (तूम आते हो)
	अन्य	उ आवसे (वह आता है)	वय आवसेत (वे आते हैं)
स्त्रीलिंग	उत्तम	मि आवसू (मै आती हूँ)	आमि आवसेजन (हम आती हैं)
	मध्यम	तु आवसेस (तू आती है)	तुमि आवोसेव (तुम आती हो)
	अन्य	वा आवसे (वह आती है)	वय आवसेत (वे आती हैं)
भविष्यकाल			
पुल्लिंग	उत्तम	मि आऊन (मै आऊंगा)	आमि आवबिन (हम आयें गे)
	मध्यम	तु आवजोका (तू आयेगा)	तूमि आवोका (तुम आओंगे)
	अन्य	उ आये (वह आयेगा)	वय आयेत (वे आयेंगे)
स्त्रीलिंग	उत्तम	मि आऊन (मै ऑऊगी)	आमि आवबिन (हम आयेंगे)
	मध्यम	तु आवजो (तू आएगी)	तुमि आवो (तुम आवों)
	अन्य	वा आये (वह आएगी)	वह आयेति (वे आयेंगी)

पवारी में क्रिया का रूप-रूपांतर

काल/पुरुष	**एकवचन**			**बहुवचन**		
	सर्वनाम	क्रिया	उदाहरण	सर्वनाम	क्रिया	उदाहरण
वर्तमानकाल						
उत्तम पुरुष	मि	सेव(सु)	बसुसु	आमि	सेजन	बससेजन्
मध्यम पुरुष	तु	सेस	बससेस्	तुमि	सेव्	बससेव्
अन्य पुरुष	उ/वा	से	बससे	वय	सेति	बससेति
भूतकाल						
उत्तम पुरुष	मि	-यो	बस्यो	आमि	-या	बस्या
मध्यम पुरुष	तु	यो,योस	बसेस	तुमि	या,यात	बस्यात
अन्य पुरुष	उ/वा	यो/इ	बस्यो/बसि	वय (पु.)	-या	बस्या/बसी
भविष्यकाळ						
उत्तम पुरुष	मि	-उ	बसु	आमि	बिन	बसबिन
मध्यम पुरुष	तु	जो	बस्जो	तुमि	ओ	बसो
अन्य पुरुष	उ/वा	ए	बसे	वय	एत	बसेत्

पवारी में क्रियापद

भेटसे - मिलता है। हिंडसे - घुमता है।
आयकसे - सुनता है पिवसे - पीता है
जेवसे - खाता है पठावसे - भेजता है।

आनसे - लाता है	लिजासे - ले जा रहा है
काहाडसे - निकालता है ।	हिसकसे - छिन रहा है
परासे - भाग रहा है	सिक् से - पढ़ रहा है ।
रव्हसे - रह रहा है	गावसे - गा रहा है
चलसे - चलता है	धावसे - दौड़ रहा है
चर् से - घास खा रहा है ।	बह्य रहीसे - बह रहा है ।
आवसे - आ रहा है ।	जासे - जा रहा है ।
खासे - खा रहा है ।	सोवसे - सो रहा है ।
जागसे - जाग रहा है ।	जागली कर से - रखवाली करता है।
पेटावसे - आग जलाना है ।	कापसे - काट रहा है ।
चल्से - चल रहा है ।	उभो से - ख़डा है ।
बसीसे - बैठा है ।	झगडसे - झगड़ा कर रहा है ।
मारसे - मार रहा है ।	दरसे - जाता चला रहा है ।
धोवसे - धो रहा है ।	फेकसे - फेक रहा है ।

पवारी में संयुक्त क्रियापद -

पवारी में धातू के प्रत्यय जोड़कर संयुक्त क्रियापद बोले जाते हैं । जैसे

एकवचन	**बहुवचन -**

वर्तमानकाल

(अ) 'उ' प्रत्यय अंत में जुड़ता है । -	'सेजन' प्रत्यय जुड़ता हैं ।
देखुसु (देखता हूँ)	देखसजन (देखते है)
आवुसु (आता हूँ)	आसेजन (जाते हैं)
जासु (जाना हूँ)	आवसेजन (आते है)
हेडुसु (निकालता हूँ)	हेडसेजन (निकालते है)
उठुसु (उठता हूँ)	उठसेजन (उठते हैं)
करूसु (करता हूँ)	करसेजन (करते हैं)
(ब) 'एस' प्रत्यय अंत में जुड़ता है)	'एव' प्रत्येय अंत में जुड़ता हैं ।
देखसेस (देखता है)	देखसेव (देखते हो)
खासेस (खाता है)	खासेव (खाते हो)
उठसेस (उठता है)	उठसेव (उठते हो)
बोलसेस (बोलता है)	बोलसेव (बोलते हो)
(क) 'ए' प्रत्यय अंत में जुड़ता है	'इति' प्रत्यय अंत में जुड़ता हैं ।
देखसे (देखता है)	देखसेति (देखते हैं)
भुकसे (भुकता है)	भुकसेति (भूकते हैं)
मारसे (मारता है)	मारसेति (मारते हैं)
पडसे (गिरता है)	पडसेति (गिरते हैं)
कुदसे (कुदता है)	कुदसेति (कुदते हैं)

भूतकाल

(ड) 'होतो ' प्रत्यय अंत में जुड़ता है ।	*'होता ' प्रत्यय अंत में जुड़ता है ।*
देखत होतो(देख रहा था)	देखत होता (देख रहे थे)
आवत होतो (आ रहा था)	आवत होता (आ रहे थे)
जात होतो (जा रहा था)	जात होता (जा रहे थे)
(इ) 'होतोस' प्रत्यय अंत में जुड़ता है ।	*'होतात' प्रत्यय अंत में जुड़ता है ।*
देखत होतोस (देख रहा था)	देखत होतात (देख रहे थे)
आवत होतोस (आ रहा था)	आवत होतात (आ रहे थे)
जात होतोस (जा रहा था)	जात होतात (जा रहे थे)
(ई) 'वा होतो ' प्रत्यय अंत में जुड़ता है ।	*'वय होता ' प्रत्यय अंत में जुड़ता है ।*
देखत होतो (देख रहा था)	देखत होता (देख रहे थे)
देखत होति (देख रही थी)	देखत होति (देख रही थी)
आवत होतो (आ रहा था)	आवत होता (आ रहे थे)
आवत होति (आ रही थी)	आवत होति (आ रही थी)
जात होतो (जा रहा था)	जात होता (जा रहे थे)
जात होति (जा रही थी)	जात होति (जा रही थी)

भविष्यकाल

(उ) *'उ' प्रत्यय अंत में जुड़ता है ।*	*'बिन' प्रत्यय अंत में जुड़ता है ।*
करु (करूंगा) देऊ (दुंगा)	करबिन (करेंगे) देबिन (देंगे)
देखु (देखुंगा) पिऊ (पीऊंगा) हासू (हसुंगा)	खाबिन (खाएंगे) पीवबिन (पीयेंगे)

(ऊ) 'जो ' प्रत्यय अंत में जुड़ता है ।	*'ओ ' प्रत्यय अंत में जुड़ता है ।*
करजो, (करना) देजो (देना)	करो (करोगे) देओ (दोगे),
खाजो (खाना) उठजो (उठेगा)	आऊ (आवोगे) जाऊ (जाओगे)
(ए) 'उ, वा ए 'प्रत्यय अंत में जुड़ता है ।	*'एत' प्रत्यय अंत में जुड़ता है ।*
करे (करेगा/करें गी) देये (देगा/देंगी)	करेत (करेंगे), देयत (देयेंगे)
मारे (मारेगा/मारेगी)	मारेत (मारेंगे)

सामान्य वर्तमानकाल के कुछ उदाहरण

एकवचन	**बहुवचन**
उत्तमपुरुष	
मि देखसु (मै देखता हूँ)	आमि देख्सेजन् (हम देखते हैं)
मि आवसु (मै आता हूँ)	आमि आव्सेजन् (हम आते हैं)
मि जासु (मै जाता हूँ)	आमि जा्सेजन् (हम जाते हैं)
मि हेडुसु (मै निकलता हूँ)	आमि काहाड्सेजन् (हम निकालते हैं)
मि उठसु (मै उठता हूँ)	आमि उठ्सेजन् (हम उठते हैं)
मि बससु (मै बैठता हूँ)	आमि बस्सेजन् (हम बैठते हैं)
मि उभो रहसु (मै खडा रहता हूँ)	आमि उभा रव्हसेजन् (हम खड़े रहते हैं)
मि सोवसु (मै सोता हूँ)	आमि सोवसेजन् (हम सोते हैं)
मि जागसु (मै जागता हूँ)	आमि जग्या्सेजन् (हम जगे हैं)
मि पीवसु (मै पीता हूँ)	आमि पीव्सेजन् (हम पीते हैं)
मि खासु (मै खाता हूँ)	आमि खासेजन् (हम खाते हैं)
मध्यम पुरुष	
तु देखसेस् (तू देखता है)	तुमि देखसेव् (तुम देखते हो)
तु आवसेस् (तू आता है)	तुमि आवसेव् (तुम आते हो)
तु जासेस् (तू जाता है)	तुमि जासेव् (तुम जाते हो)
तु कहाडसेस् (तू निकालता है)	तुमि निघसेव् (तुम निकलते हो)

तु उठसेस् (तू उठता है)	तुमि उठसेव् (तुम उठते हो)
तु बससेस् (तू बैठता है)	तुमि बससेव् (तुम बैठते हो)
तु उभो रव्हसेस् (तू खड़ा रहता है)	तुमि उभा रव्हसेव् (तुम खडे रहता हैं)
तु सोवसेस् (तू सोता है)	तुमि सोवसेव् (तुम सोते हो)
तु जागसेस् (तू जागता है)	तुमि जागसेव् (तुम जानते हो)
तु पिवसेस् (तू पीता है)	तुमि पीवसेव् (तुम पीते हो)
तु खासेस् (तू खाता है)	तुमि खासेव् (तुम खाते हो)

अन्य पुरुष

पु.	उ देखसे (वह देखता है)	वय देखसेत (वे देखते हैं)
स्त्री.	वा देखसे (वह देखती है)	वह देखसेति (वे देखती हैं)
पु.	उ आवसे (वह आता है)	वय आवसेत (वे आते हैं)
स्त्री.	वा आवसे (वह आती है)	वय आवसेति (वे आती हैं)
पु.	उ जासे (वह जाता है)	वय जासेत (वे जाते हैं)
स्त्री.	वा जासे (वह जाती है)	वय जासेति (वे जाती हैं)
पु.	उ काहडसे (वह निकालता है)	वय काहाडसेति (वे निकालते हैं)
स्त्री.	वा काहडसे (वह निकालती है)	वय काहाडसेति (वे निकालती हैं)
पु.	उ उठसे (वह उठता है)	वय उठसेत (वे उठते हैं)
स्त्री.	वा उठसे (वह उठती है)	वय उठसेति (वे उठती हैं)

टीप : हिंदी मुख्य और सहयोगी क्रियापद अलग-अलग होते है (आता है) किन्तु पवारी में संयुक्त क्रियापद होते है (आवसु) । उपरोक्त उदाहरणों से ज्ञात होता है कि सर्वनाम व वचन के साथ पवारी में कैसे क्रियापद बदलते है ।

६. क्रियाः वाच्य (VOICE) : वाक्य में क्रिया द्वारा सम्पादित विधान कभी कर्ता, कभी कर्म या कभी भाव से जुड़ा रहता हैं.। हर स्थिति में क्रिया का रूप बदलता है जिसे वाच्य कहते हैं । पवारी क्रियाःवाच्य हिंदी क्रियाःवाच्य के समान ही होते है ।

वाच्य के प्रकार -

१.कर्तृवाच्य (Active Voice) - क्रिया का सम्बन्ध कर्ता से होता है ।

२.कर्मवाच्य (Passive Voice) - क्रिया का सम्बन्ध कर्म से होता है ।
३.भाववाच्य (Impersonal Voice) - क्रिया का सम्बन्ध न ही कर्म या कर्ता से होता है ।

कर्तृवाच्य में कर्ता की प्रधानता और कर्मवाच्य में कर्म की प्रधानता होती है और उन के अनुसार क्रिया का लिंग, वचन तथा पुरुष होता है । भाववाच्य में क्रिया सदैव एकवचन, पुल्लिंग तथा अन्य पुरुष के रूप में रहती हैं । और सदा अकर्मक होती है । अंग्रेजी में केवल दो ही वाच्य होते हैं - कर्तृवाच्य तथा कर्मवाच्य भाववाच्य नही होता । उदाहरण -

१. कर्तृवाच्य (क्रिया कर्ता प्रधान)

रामा लिखसे । (रामा लिखता है।)
घोड़ा धाव रह्या सेति । (घोड़े भाग रहे हैं।)
कमला सैपाक रांधसे । (कमला खाना पका रही है ।)
आई-माई गाना गावसेति । (स्त्रियाँ गीत गा रही हैं ।)

२. कर्मवाच्य (क्रिया कर्मप्रधान)

बैललक नांगर ओढ्यो जासे । (बैल से हल खिंचा जा रहा है ।)
घोड़ाहिनलक रथ दौडायो जासे । (घोड़ों से रथ दौड़ाया जाता है ।)
टुराहिनलक गीत याद कराया जासेति । (लड़कों से गीत याद किय जाते है।)
कमलालक सैपाक रंधायो जासे । (कमला द्वारा खाना पकाया जा रहा है ।)
आई-माईसिन गाना गवाया जाय रह्यासेति । स्त्रियों द्वारा गीत गाए जा रहे हैं ।

३. भाववाच्य (स्वतंत्र, एकवचनी), पुल्लिंग, अन्य पुरुष व अकर्मक क्रिया)

आमरसिन आंग धोयखन नही भयोव । (हम से नहाया नही गया ।)
मोरी बहिन न जेवन नही करिस् । (मेरी बहन ने खाना नही खाया ।)
संदीप लक चलखन नही होय । (संदीप से चला नही जाता ।)
वामन लक बसेव नही जाय । (वामन से बैठा नही जाता ।)

(उपरोक्त वाक्यों में क्रिया का बल न कर्ता और न ही कर्मपर है, है तो क्रिया के भावपर)

विविध उदाहरण

कर्तृवाच्य

सकर्मक - शाम फुटबॉल खेल रही से ।(शाम फुटबॉल खेल रहा है ।)

अकर्मक - सीता हास रही से । (सीता हँस रही है)
कर्ताबिना - आम्हर् यहां फसल नही काटी जाय रही से ।
(हमारे यहाँ फसल नही काटी जा रही है ।)
हरिराम न रोटी खाईस । (हरिराम ने रोटी खाई)

कर्मवाच्य

कर्ता अज्ञात - चिठ्ठी पठाई गई । (चिठ्ठी भेजी गई ।)
कानूनी - यन् घटना की जाच भय गई । (इस घटना की जाँच की गई ।)
सूचना - लोकहिन ला खबर देई जासे कि (जनता को सूचित किया जाता है कि)
सुझाव - असो करनो ठिक नाहाय । (ऐसा करना उचित नही ।)

भाववाच्य -

कर्ता के साथ- रमा लक लिख्यो नही जाय । (रमा से लिखा नहीं जाता ।)
कर्ता के बिना- आता सह्यो नही जाय । (अब सहा नही जाता ।)

वाच्य प्रयोग

वाच्य प्रयोग तीन प्रकार के होते हैं ।

१) कर्तरि प्रयोग २) कर्मणि प्रयोग ३) भाव प्रयोग

१. कर्तरि प्रयोग

१) बालगोपाल पुस्तक बाचसे । (बालगोपाल पुस्तक पढ़ता है ।)
२) टुरि पुस्तक बाचसेति । (लड़कियाँ पुस्तक पढ़ती है ।)
३) कुतरा भुख्सेति । (कुत्ते भौंकते है ।)

२. कर्मणि प्रयोग

१.लड़ाई मा हजारो सैनिक मार्‍या गया । (युद्ध में हजारो सैनिक मारे गए।)
२.ग्रंथ आमरो लक बाच्यो गयो । (ग्रंथ हमारे द्वारा पढ़ा गया ।)
३.आई-माई हिन न गाना गाईन । (महिलाओं ने गाना गाया ।)

३. भावप्रयोग

१. सुनिल न घंटि बजाईस । (सुनिल ने घंटी बजाई ।)
२. किरसान हिनन बंदराहिनला देखीन । (किसानों ने बंदरों को देखा ।)
३. आता मोरसिन चलखन नही होय । (अब मुझसे चला नही जाता है ।)

वाच्य परिवर्तन

१.कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य बनाना -

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
१.रमेश नाटक खेलसे ।	रमेश लक नाटक खेली जासे ।
(रमेश नाटक खेलता है ।)	(रमेश द्वारा नाटक खेला जाता है ।)
२. दादामाय कहानी सुनावसे ।	दादी कनलक कहानी सुनाई जासे ।
(दादी कहानी सुनाती है ।)	(दादी द्वारा कहानी सुनाई जाती हैं ।)
३.उमेश खेल खेलसे ।	उमेश कनलक खेल खेलेव जासे ।
(उमेश खेल खेलता है ।)	(उमेश द्वारा खेल खेला जाता है ।)
४.टिकाराम केरा खास	टिकारामलक केरा खायेव जासे ।
(टिकाराम केला खाता है ।)	(टिकाराम से केला खाया जाता है ।)
५.सुशीला पुस्तक बाचसे ।	सुशीलालक पुस्तक बाची जासे ।
(सुशीला पुस्तक पढ़ती है ।)	(सुशीला द्वारा पुस्तक पढ़ी जाती है ।)
६. का वय गायेति ?	का उनकनलक गायो जाये ?
(क्या वे गायेंगे ?)	(क्या उनके द्वारा गाया जायेगा?)
७. का वय यव काम करेति ?	का उनलक यो काम कररवन होये ।
(क्या वे यह काम करेंगे ?)	(क्या उनकेद्वारा यह काम किया जायेगा।)
८ पुलिस न निर्दोष मानुसला धरिस।	पुलिस कनलक निर्दोष मानुस धऱ्यो गयो।
(पुलिस ने निर्दोष व्यक्ति को पकड़ा।)	(पुलिस केद्वारा निर्दोष व्यक्तिकोपकड़ा गया।)
९. परभू आमरी रक्सा करसे।	परभू क द्वारा आमरी रक्सा करी जासे।
(प्रभु हमारी रक्षा करते है।)	(प्रभु के द्वारा हमारी रक्षा की जाती है।)
१०.राजाभोज न चम्पु रामायण लिखिस।	राजाभोज द्वारा चम्पू रामायण लिखी गई से।
(राजाभोज ने चम्पु रामायण लिखी।)	(राजाभोज द्वारा चम्पू रामायण लिखी गई है।)

२. कर्तृवाच्य से भाववाच्य बनाना ।

कर्तृवाच्य	भाववाच्य
१.कपिल हाससे	कपिल लक हांसे जासे ।

(कपिल हँसता है ।)	(कपिल से हंसा जाता है ।)
२.वय नही सोवत ।	उनलक सोयकन नही होय ।
(वे नही सोते है ।)	(उनसे सोया नही जाता ।)
३. पक्सी नही उड़त ।	पक्सी हिनलक उडकन नही होय ।
(पक्षी नही उड़ते ।)	(पक्षियों. से उड़ां नही जाता ।)
४.का मीना पढ़े ?	का मीना लक पढयो जाये ?
(क्या मीना पढेगी ?)	(क्या मीना द्वारा पढ़ा जायेगा ?)
५.आमी लोक रोज आंग धोवसेजन ।	आमरो लोकहिनसिन रोज आंग धोयेव जासे ।
(हम लोग प्रतिदिन नहाते हैं।)	(हम लोगों द्वारा प्रतिदिन नहाया जाता है।)
६. उन्हारो मा लोक बहुत फिर सेति।	उन्हारो मा लोकहिनलक बहुत फिरनो होसे।
गर्मियों में लोग बहोत घूमते है।	गर्मियों में लोगोंद्वारा बहुत घूमा जाता है।

१२. अव्यय : क्रिया विशेषण (ADVERB) क्रिया विशेषण वे शब्द है जो क्रिया की विशेषता प्रकट करते हैं । हिंदी की तरह पवारी में भी क्रिया विशेषण के चार भेद किये जा सकते हैं ।

१. कालवाचक क्रिया - विशेषण (Adverb at time)
२. स्थानवाचक क्रिया विशेषण (Adverb at quantity)
३. रीतिवाचक क्रिया विशेषण (Adverb at manner)

१) कालवाचक क्रिया विशेषण

अ. आमी आबऽ आवसेजन् । (हम अभी आ रहे हैं ।)
ब. मोहन सकारी बैतुल जाहे । (मोहन कल बैतुल जायेगा ।)
क.नाली मा पानी एक सारखो बह्य रही से। (नाली में पानी निरंतर बह रहा है।) अन्य उदाहरण

आता (अब)	जब्, (जब)	तब् (तब)
अज (आज)	काल (बीता हूआ कल)	दिवस (दिन)
सकारी (आनेवाला कल)	परसो (परसों)	सकार (सुबह)
दुपारी (दोपहर)	दिवसबुरता ((संध्या)	रात (रात्री),
महिना/मास (महिना/माह)	झुंझुरका (पहाट)	बरस/बरसा (वर्ष)

२) स्थानवाचक क्रिया विशेषण

अ. तुमी यहां लक चली जाव । (आप यहाँ से चले जाइये ।)
ब. वय कितन जासेति । (वो किधर जा रहे हैं ।)
क. खोली को भीतर बसबिन । (कमरे के अन्दर बैठेंगे ।)

अन्य उदाहरण -

सामने (आगे),	मंघऽ (पीछे),	जवर(पास)
दूहूर (दूर),	याहान (यहां),	उचो (ऊंचा),
वाहान (वहां),	बाहेर (बाहर),	वन् कन (उस ओर)
इतन -उतन (इधर-उधर),	खाल्या (नीचा),	वऱ्ह्या (उपर),
डाओ (दायां),	उजवो (बायां),	एन् कन (इस ओर)

३) परिणामवाचक क्रिया विशेषण

अ. तुमि थोड़ो-थोड़ो अभ्यास हर रोज करो। (तुम थोड़ा थोड़ा अभ्यास प्रतिदिन करो।)
ब. उ जादा खासे। (वह अधिक खाता है।)
क. यतो खेलो जेतो जरूरी से। (इतना खेलो जितना आवश्यक है।)
अन्य उदा.

बोहु-बेरा (बहुदा),	उनो (न्यून),	जादा (अधिक),	पुरो (पर्याप्त),
अति (अत्यन्त),	कमी (कम),	थेंब-थेंब (बूंद बूंद),	एतरो (इतना),
ओतरो (उतना),	केतरो (कितना)	जेतरो (जितना)	अर्धी (आधा),

४) रीतिवाचक क्रिया विशेषण -

अ. उम्मीद से कि उ अज आये। (संभव है कि वह आज आये।)
ब. रमेश पाटन लक अचानक गिर पडयो। (रमेश जिनेसे अचानक गिर पड़ा।)
क. धीरू-धीरू चलो, रस्ता खराब से। (धीरे-धीरे चलें, रास्ता खराब है।)

अन्य उदाहरण

जरूर (अवश्य),	कसो (कैसे),	तसो (वैसे), असो (ऐसे),
अचानक (अकस्मात),	घाई घाई लक (शीघ्रतासे),	ध्यानलक (ध्यानपूर्वक),
नोको (मत),	मन लक (मनसे),	काहे कि (क्योंकि),
कायसाथी (किसलिए),	को कारण (के-कारण),	काहे (क्यों),
कसो (कैसे),	खरो (सच),	खोटो (झुठ),

५) सम्बन्धबोधक (Preposition) अव्यय

अ. मंसाराम को साथ (की संगत) सोड़ देव। (मंसाराम का साथ छोड़ दीजिए।)
ब.किताब को बिना मि कसो अभ्यास करू? (किताब के बिना मै कैसे अभ्यास करूं?)
क.ओक् मंघ् नोको परावो । (उसके पीछे मत भागो ।)
ड. नामाजी गिलास भर दूध पीवसे । (नामाजी गिलास भर दूध पीता है।)
ई. चोर सामायन सकट धऱ्यो गयो । (चोर सामानसहित पकड़ा गया ।)

६) सम्मुायबोधक (Conjunction) अव्यय - उदाहरण

अ. रामा अना रमा बगिचा मां फिरसेति ।
(रामा और रमा बगीचे में घुम रहे हैं ।)
ब. एक साथी मि तुमरो संग स्यो ।
(इसलिए मै तुम्हारे साथ हूँ ।)
क. गयो होतो पर खाली हाथ लौटेव। (गया था किंतु खाली हाथ लौटा।)
ड. न उ मोर संग बोलेव न मि ओक् संग बोलेय ।
(न वह मुझ से बोला न मै उससे बोला ।)
इ. चाहा पिवन की होती पर पानीच पिवनो पड्यो
(चाय पीनी थी मगर पानीही पीना पड़ा ।)
ई. रेडियो सुनो नही त टीवी देखो ।
(रेडियो सुन लो या टी वी देख लो ।)
उ. तुम्ही हल्ला बंद करो नही त मार खाओ ।
(तुम हल्ला बंद करो अन्यथा मार खाओंगे)
फ. रामचंद अज शाला नही जाय सक्यो काहे का उ बीमार होतो ।
(रामचंद आज शाला नही जा सका क्योंकि वह बीमार था ।)
प जोर की बरसाद भई मुहुन रस्ता बंद से ।
(जोरों से बरसात हुई इसलिए रास्ता बंद है ।)
ड. असी मेहनत करो का परीक्षा मां चांगला गुन भेटेत ।
(ऐसी मेहनत करो कि परीक्षा में अच्छे अंक मिले ।)
ढ. गनू एतो खासे मानो भीम आय ।
(गनू इतना खाता है मानो भीम है ।)

(७) विस्मयाबोधक अव्यय (Interjection)

मन के हर्ष, शोक, विस्मय, घृणा, लज्ञा आदि भाव व्यक्त करनेवाले अव्यय ।

१. अहा! केतरो मजेदार मोसम से ।(अहा! कितना सुहावना मौसम है ।)

२. ओहो! केवढ़ी दर्दनाक दुर्घटना होती । (ओह! कितनी दर्दनाक रेल दुर्घटना थी ।)

३. अरे! तुमि एत् लवकर आय गयात । (अरे! आप इतनी जल्दी आ गये ।)

४. छिः! तुमला खोटो बोलन लाज नही आव्। (छिः! तुम्हें झूठ बोलते लज्ञा नही आती ।)

५. अहा! गंगाराम की लाटरी आय गई । (हँ ! गंगाराम की लाटरी निकल आई ।)

६. शाबाश! तूमि नऽत कमाल कर देयात । (शाबाश! तुमने तो कमाल कर दिया ।)

७. हे भगवान! आता मोला उठाय ले । (हे भगवान ! अब मुझे उठा ले ।

८. हाय! मि त् बर्बाद भय गयो । (हाय ! मै तो बर्बाद हो गया।)

९. बाप रे बाप! येतो भीषण भूकम्प । (बाप रे बाप ! इतना भीषण भूकम्प।)

१०. वाह! आमला तुमरोसिन असी उम्मीद नोहोति । (वाह! हमें तुमसे यह उम्मीद नही थी।)

उपरोक्त उदाहरणों से हम समझ सकते है कि हिंदी तथा पवारी में प्रायः एकसे विस्मयाबोधक अव्यय होते हैं ।

हिंदी की तरह पवारी में भी विभिन्न प्रकार के विस्मयाबोधक अव्यय होते हैं । जैसे अधिकांश एकसे होते है तथा पवारी में कुछ ही अलग (कोष्टक में दिये गये) होते हैं ।

१. हर्षबोधक - अहा, वाह-वाह, शाबाश
२. शोकबोधक - आह, हाय-हाय, अरे, बापरे, हे राम
३. विस्मयादिबोधक - हँ, क्या, कैसे, ओहो, सच, (खरो)

४. तिरस्कारबोधक - धत्, धिक्कार, छिः, छिःछिः, थू,थू,थू
५. स्वीकृतिबोधक - हाँ हाँ (हो हो) जी हाँ (जी हो) ठीक, हाँ (होजी)
६. आशीर्वादबोधक - सुखी रहें (सुखी रहो), फलो फूलो, आगे बढ़ो
७. सम्बोधनबोधक - अरे! ओ, हे, अहो, अजी, अवो,(स्त्री),अगा,(पु.)
८. अभिवादनबोधक - राम-राम, नमस्ते, प्रणाम, जयराजीकी, जयश्रीराम
९. क्रोधसूचक - अबे, चुप, धत, एऽ, ओऽ, हट, भाग,
१०.प्रोत्साहनबोधक - शाबाश, अति सुंदर, (कमाल कर देईस) !
११.ग्लानिबोधक - थू, पापी, हलकट, निर्लज, बेसरम,
१२.सावधानतासूचक- सावधान, खबरदार, आदि.

१३. समास (Compounds) : समास याने संक्षिप्तीकरण । दो या अधिक पदों के मेल को समास कहते हैं ।

समास के भेद

१. तत्पुरुष समास (Determinative Compound)
२. बहुव्रीहि समास (Attributive Compound)
३. द्वंद्व समास (Copulative Compound)
४. अव्ययीभाव समास (Adverbial Compound)

१. तत्पुरुष समास - तत्पुरुष समास का दुसरा पद प्रधान और पहला पद गौण होता है ।

गंगाजल	- गंगा को पानी	(गंगा का जल)
राजकन्या	- राजा की टुरी	(राजा की कन्या)
आपबीती	- आपलो पर बीती	(आप पर बीती)
नीलकंठ	- नीलो+कंठ (संकर भगवान)	(नीला+ कंठ)(भगवान शंकर)
सज्ञन	- सज + जन	(सत् +जन)
नरसिंह	- नर + सिंह	(नर + सिंह)
विद्याधन	- विद्या + धन	(विद्या + धन)

नवरात्री	नव + राति	(नौ + रात्री)
चौमास	च्यार + महिना	(चार + मास)
त्रिलोक	तिन + लोक	(तीन + लोग)

२. **बहुव्रीहि समास -** बहुव्रीहि समास का कोई भी पद प्रधान न होकर, विशेषण बन जाता है ।

बारासिंगा- बारा सिंग वालो प्राणि	(बारा सिंग है जिसके)
महात्मा - महापुरुष	(महान है आत्मा जिसकी)
दशानन - दसतोंड्या	(दस है आनन जिसके (रावन)

विषधर - जहरिलो सरप (विष को धारण करनेवाला सांप)

चतुरानन - चार तोंड वालो देव - ब्रह्म (चार मुख है जिसके - ब्रह्म)

३. **द्वंद्व समास -** द्वंद्व समास के दोनों पद प्रधान रहते है और कोई भी गौण नही रहता ।

नर-नारी -	मानुस अना बाई	(नर और नारी)
जीवन-मरण-	जीवन का मरण	(जीवन या मरण)
पाप-पुण्य -	पाप का पूण्य	(पाप या पुण्य)
राधा-कृष्ण -	राधा-किसनऽ	(राधा और कृष्ण)
राजा-रंक -	राजा अना रंक	(राजा और रंक)
माँ-बाप -	माय बाप	(माँ और बाप)
दिन-रात -	दिवस अना रात	(दिन और रात)
उँच-नीच -	उच का नीच	(उँच या नीच)
गंगा-यमुना -	गंगा - जमूना	(गंगा और यमुना)

४. **अव्ययीभाव समास** - अव्ययीभाव समास का पहला पद प्रधान और दुसरा अव्यय होता है और वह वाक्य में क्रिया-विशेषण का काम करता हैं ।

भरपेट -	पेटभर	पेटभर
कानोंकान -	कानोकान	एक कान से दुसरे कान में
आजनम -	जनमभर	जन्म से लेकर
आमरण -	मरतवरी	मरण तक

अतः हिंदी जैसे ही पवारी में भी चार प्रकार के समास प्रचलित है ।

१४. वाक्य - कर्ता, कर्म, क्रिया के संयोग से वाक्य बनता है ।

वाक्य के भेद

(अ) अर्थ के आधारपर वाक्य के आठ प्रकार हैं ।

१. विधिवाचक -उ घरऽ गयव । (वह घर गया ।)

२. निषेधवाचक -उ घरऽ नही गयव (वह घर नही गया ।)

३. प्रश्नवाचक -तोरो नाव का से (तेरा नाम क्या है)

४. आज्ञावाचक -जाव, जेवन करलेव (जाव, भोजन करो)

५. संदेहवाचक -वनअ् जेय लेई रहेस (उसने खाना खा लिया होगा)

६. इच्छावाचक -तुमला धंदा मा भगवान बरकत दे ।
(आपको उद्योग में भगवान सफलता दे ।)

७. विस्मयवाचक -वाह ! या टुरी केतरि सुंदर से !
(वाह! यह लड़की कितनी सुंदर है !)

८. संकेतवाचक- नौकरी भेट गई रव्हती त मोरी चिंता मिट गई रव्हती।
(नौकरी मिल गई होती तो मेरी चिंता हट गई होती)

(ब) रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद (सरल, मिश्र, संयुक्त) किये जाते हैं ।

१. सरलवाक्य - वनऽ आपलो दोस्त की सायकल लेईस ।
(उसने अपने मित्रकी सायकल खरिदा)

मिश्रवाक्य - वनऽ वा सायकल लेईस जो वकऽ दोस्त की होती ।
(उसने वह सायकल खरिदा जो उसके मित्र की थी)

२. सरल वाक्य - बिमार रव्हन को कारण उ परिक्षा मा पास नही भय सकेव । (बिमार रहने के कारण वह परीक्षा में सफल न हो सका ।)

संयुक्तवाक्य- उ बिमार होतो मुहुन परीक्षा मा पास नही भय सकेव।
(वह बिमार था इस कारण परीक्षा में सफल न हो सका ।)

३. सरल वाक्य - चांगला टुरा मेहनती रव्हसेत ।
(अच्छे लड़के परिश्रमी होते है ।)

मिश्र वाक्य - जे टुरा चांगला रव्हसेत, वय मेहनती रव्हसेत ।
(जो लड़के अच्छे होते है, वे परिश्रमी होते है)

४. सरल वाक्य - बीमार होनो को कारण उ स्कूल नही आयेव ।
(बीमार होने को कारण वह स्कूल नही आया ।)

संयुक्त वाक्य - उ बीमार होतो मुहुन स्कूल नही आयेव ।
(वह बीमार था इसलिए स्कूल नही आया ।)

५. सरल वाक्य - विद्वान पुरुष को सम्मान सब लोक करसेति ।
(विद्वान पुरुष का सम्मान सभी लोग करते हैं)

मिश्र वाक्य - जो मानुस विद्वान रव्हसे, वो को सम्मान सब लोक करऽ सेती । (जो पुरुष बिद्वान रहता है, उसका सम्मान सभी लोग करते हैं।)

६. सरल वाक्य - खबर आएक कन मि खुश भयव ।
(खबर सुनकर मै खुश हुआ ।)

मिश्र वाक्य - मि खबर आएकेव ना खुश भयव ।
(मैने खबर सुनी और खुश हुआ ।)

१५. पवारी भाषा विज्ञान की समीक्षा पवारी बोलीपर गुजराती, राजस्थानी, बघेली तथा मराठी भाषा का काफी प्रभाव गिरा हुआ है । इसके अलावा छिंदवाडा बैतुल जिलों में पवारों द्वारा बोली जाने वाली बोली में बुंदेली, निमाडी तथा मालवी भाषा का प्रभाव है और यह भाषा नागपुर जिले में बसे कोष्टी, छिन्दवाडा जिले में बसे कतिया समाज, चन्द्रपुर जिले के पटवा और झाड़ी मराठी तथा बालाघाट जिले के मरार जाति आदि की बोलियों से काफी साम्यता रखती है । राजस्थान के कोटा तथा आसपास बसी हुई जाति धाकड़ (धारकर) द्वारा भी पवारी के समतुल्य भाषा 'धाकड़ी' बोली जाती है ।

इन सभी उदाहरणों के विश्लेषण से यह ज्ञात होता है, कि पवारी बोली का अस्सी प्रतिशत शब्द समूह हिन्दी और मध्य भारतीय भाषाओं का है । ध्वनि व्यवस्था भी हिन्दी से ही जुड़ी हुई है । पवारी की विशेषता -

(१) इस भाषा में. प्रयुक्त विभक्ति प्रत्यय में सप्तमी का 'मा' गुजराती का, षष्ठी का 'क' हिन्दी का, और चतुर्थी का 'ला' मराठी का है।

(२) 'दुन', 'लख', 'परा', 'आडपा' इत्यादि पर सर्ग राजस्थानी एवं गुजराती भाषा से साम्यता रखते है ।

(३) सर्वनाम में प्रथम एवं द्वितीय पुरुषवाचक सर्वनाम जैसे 'मि', 'आमि', 'तु', 'तुमि', 'कोन', 'कोनतो' इत्यादि सर्वनाम मराठी भाषा से लिये गये हैं ।

(४) उसी प्रकार तृतीय पुरुष वाचक सर्वनाम जैसे 'उ' (he), 'वा'(she), 'वय' (they) इत्यादी बुन्देली भाषा से मिलते हैं ।

(५) सर्वनाम विशेषण राजस्थानी है जैसे 'असो', 'केवढो', 'तसो','कसो', आदि।

(६) क्रियापद के अनेक प्रत्यय राजस्थानी हैं उदाहरण के लिए 'से' 'सेति' 'स' आदि।

(७) भूतकाल कर्म बघेली भाषा से लिये गये है । जैसे 'लग्यो', 'पड्यो' आदि।

(८) इस बोली में पूर्व हिन्दी के अनुरूप दो ही लिंग हैं । इसके अलावा कुछ शब्द उभयलिंगी उपयोग में लाये जाते हैं ।

(१०) इस विश्लेषण से यह विदित होता है कि हमारी बोली कालान्तर में मूल रूप मालवी से विभिन्न प्रान्तों के संसर्ग में आने से वहाँ की भाषा से घुल मिल गई, एवं आज का वर्तमान सर्व-सम्पन्न स्वरूप स्थाई हो चुका है ।

(११) पवारी में पुल्लिंगी विशेषण ओंकारांत होते है तथा स्त्रीलिंगी विशेषण इकारान्त होते हैं । जैसे -

कारो, पिवरो, थोडो, चांगलो,
कारि पिवरि, थोडि, चांगलि.

(१२) पवारी में केवल पुल्लिंग व स्त्रीलिंग होने से मराठी के कुछ नपुसंक लिंगी शब्द पवारी में पुल्लिग बन जाते हैं, जैसे - आंगन, कनिस, घुबड, चमड़ा, जंगल, जांभुर और कुछ नपुसंक लिंगी शब्द स्त्रीलिंगी हो जाते हैं, जैसे - नाक, परसाद, सरन, मालिस आदि ।

(१३) पवारी में षष्ठी का प्रत्यय 'को' और सप्तमी का प्रत्यय 'मा' होता है। जैसे - उनको नवकर, ओको भाई, हातमा कड़ा, बगिचामा फुल आदि.

१६. पवारी बोलीपर क्षेत्रीय प्रभाव

अ) बैनगंगा तथा वर्धा क्षेत्रीय पवारी व्याकरण भिन्नता -

बैनगंगा एवं वर्धा नदी के तट पर बसे पवारों द्वारा बोली जाने वाली भाषा में बहूतायत में साम्यता है एवं कुछ ही स्थानपर भिन्नता है। जैसे - क्रियापद में 'से' कि जगह 'स' आदि।

बैनगंगा तटीय पवारी	**वर्धा तटीय पवारी**
तु वोला देख्।	तू वोता देख्।
तु यहां आव्।	तू यहान आव।
तोरो पाय	तारो पाय।

उपरोक्त वाक्यों के अध्ययन से साम्यता का पता चलता है।

अब हम भिन्नता एवम् साम्यता विवरण नीचे दे रहे हैं।

व्याकरण	**बैनगंगा तटीय पवारी**	**वर्धा तटीय पवारी**
सर्वनाम प्र.पु.	मि, आमि	म, आमि
द्वि.पु.	तु, तुमि	तू, तू
क्रिया पद प्रत्यय	से	स्
	सेति्	स्
भूतकाल कर्म	पड़्यो	पडयो
विभक्ति प्रत्यय	'ला'	'ला'
	'मा'	'म्'
परसर्ग	'दुन्'	'सीन्'
	'खाल्या'	'खलत्'
गुणविशेषण्	'हिवरो'	'हिरवो'
	'चांगलो'	'चांगल्यो'

ब) बैनगंगा तथा वर्धा क्षेत्रीय पवारी शब्द भिन्नता

बैनगंगा पवारी	वर्धा पवारी	हिंदी	बैनगंगा पवारी	वर्धा पवारी	हिंदी
आवजो	आजो	आना	आवू	आनू	आना
अनखी	आऊर	और	आपलोच	आपनोच	अपनाही
ओकोमा	ओमअ्	उसमें	अर्धो	आधो	आधा
ओला	ओखअ्	उसको	आबऽ	आभी	अभी
छप्परी	ओसारी	छप्पर	आवअ्	आनअ्	आ
उघडो	उघाडो	खुला हुआ	आवसे	आवय	आता है
अंधारो	इन्धारा	अंधेरा	आवअ् सेजन	आवअ् ह्य	आते हैं
इन्नन्	इन्नअ्	इन्होंने	माय	मा	मा
उंदिर	उन्दरा	चूहा	मि	म	मै
उठना	उठनू	उठिये	मोरो	मरो	मेरा
एक्साथी	एकसाठी	इसलिए	तोरो	तोरो	तेरा
कोनला	कोरवअ्	किसको	आपलो	आपलअ्	अपना
कोन्हीसीन	कुई सी	किसीसे	खान-पीन	खानपेन	खानपान
खन्यान	खिल्ल्यान	खलिहान	उनका	उनको	उनका
चुटी	चुन्धी	चोटी	येत्रोच	येतोच	इतनाही
जासू	जाउ, हय	जाता हूँ	तु	त	तू/आप
पायरी	पायर	सीढीयाँ	तुमि	तू	तूम/आप
नवरा	लोग	पति	से	स्	है (is)
बायको	लोगनी	पत्नि	सेति	स्	हैं (are)
भात	नान्ज	पका चावल	मा	म	में (in)
आपलो	अपनो	अपना	दुन	सीन	से (then)
जरन	अग्गिन	जलन	खाल्या	खलत्	नीचे(under)
पुढअ्	आद्यअ्	आगे	हिवरो	हिरवो	हरा
आपलोको	आपुनखऽ	अपनेको			

(क) बैनगंगा तथा वर्धा क्षेत्रीय पवारी वाक्य भिन्नता -

नीचे दिये गये कुछ वाक्यों के अध्ययन से हमें इन दोनों स्थानों पर बोली जानेवाली पवारी बोली की साम्यता तथा भिन्नता के बारे में स्पष्ट रूप से ज्ञात हो जावेगा।

बैनगंगा तटीय पवारी	वर्धा तटीय पवारी	हिन्दी
१. वाहाँ तीन कुत्रा सेति।	वहान् तीन कुत्रा स्।	वहाँ तीन कुत्ते हैं।
२. मोरो घर नाहान् सो से।	मरो घर नानु सो स्।	मेरा घर छोटासा है।
३. मोरो टुरा आयि से।	मरो पोरग्यो आयो स्।	मेरा लड़का आया है।
४. मोला तीन टुरि सेति।	मला तीन पोटीनुन स्।	मेरी तीन लड़कियाँ हैं।
५. तु आमला देखसेस्।	तु आम्हाला देखस्।	तू हमें देख रहा हैं।
६. मि वहाँ जासु।	म वहान जाऊस्।	मैं वहाँ जाता हूँ।
७. उ झाड़खाल्या सोव्से।	वु झाड खलत सोस्।	वह झाड़ के नीचे सोता है।
८. ढ़ोर खेतमा सेति।	ढोरनुन खेत म स्।	ढ़ोर खेत में हैं।
९. उ वहाँ उभो रव्हसे।	उ वहान उभो रव्हस्।	वह वहाँ खड़ा रहता है।
१०. तोला केत्तरा टुरा सेति।	तोला केत्ता पोरग्या स्।	तेरे कितने लड़के हैं।
११.मोला तीन टुरा सेति।	मोला तीन पोरग्या स्।	मेरे तीन लड़के हैं।
१२. खाल्या बस्।	खलत् बस्।	नीचे बैठ।
१३.तोरो भाई ला बुलाव्।	तोर भाई ला बलाव्।	तेरे भाई को बुला।
१४. मि झाड क दूर सेव।	म झाडसिन दूर स।	मै झाड़से दूर हूँ।
१५. वोनं मराठी सिकिस।	वु मराठी सिक्यो।	उसने मराठी सिखा।
१६. ओनं बाईनं पानी पियिस्।	ओनं बाईनं पानी प्यो।	उस स्त्री ने पानी पीया।
१७.पाखरइनला दुय पंख रव्ह सेति।	पक्षीनुनलाल दुय पंख रव्हस्।	तोता को दो पंख रहते हैं।
१८. मि वहां गयो।	म वहान गयो।	मै वहाँ गया।
१९. मि आब्ब सोंऊसु।	म आब सोऊस।	मैं अभी सोता हूँ।
२०. खोटो नोको बोलू।	खोटो बोलू नको।	झूठ मत बोल।
२१. वोको तोरो नातो का से।	ओको तोरो नातो का स्।	उसका तेरा रिश्ता क्या है।
२२. कवाड उघड	दरवाजो उघड।	दरवाजा खोल।
२३. ओन अभ्यास करि रहेस त पास होये	ओन अभ्यास कऱ्यो रहेन त् पास होयेन्।	उसने अभ्यास किया होगा तो पास होगा।
२४.पवार धारलक इतं आया।	पवार धारसिन आयो स।	पवार धार से यहां आए।
२५. पवार टुरी का पाय लगसेत।	पवार पोटीनुन पाय लग्यो स	पवार लड़की के पांव पड़ते है।

(ड) बैनगंगा तथा वर्धा क्षेत्रीय पवारी गद्यांश भिन्नता -

निम्नांकित परिच्छेदों से भिन्नता स्पष्ट होती है -

अ) बैनगंगा क्षेत्रीय पवारी बोली

कोनी एक मानुसला दूय टुरा होता। वोमाको नहानो टुरा आपलऽ बापला कव्हन लग्यो, दादाजी मोला मोरो हिस्सा को धन जो आहे ऊ देय देव। तबऽ ओनऽ धन ओला बाट देईस। मंग काही रोजमा नाहनो टुरा अवघो धन जमा करकन दूर मुलुख मा गयो। मोठो अकाल पड्यो। ओला दिक्कत होन लगी। तबऽ उ ओनऽ मुलुख मा एक भलो मानुस क जव्हर रहयो।

ब) वर्धा क्षेत्रीय पवारी बोली

कोनी एक मानुस ला दुई बेटा होता। ते-म-को नानो बापला कव्हन लग्यो, बाबा म-ला मरा हिस्सा को धन सो त्यू म ला देवं। तबं उन नं धन ओला बाट दियो। तब थोडा दिन मं नानो बेटा समधो धन जमा करकन दूर मुलुख-म गयो। वहां मोठो अकाल पड्यो। ओ-ना बिपत पडन लगी तब वो वोनऽ मुलुख-म एक भला मानुस-क जवर रहयो।

क) हिंदी में अनुवाद

किसी एक आदमी को दो बेटे थे। उन में का छोटा बेटा अपने पिता से कहने लगा, पिताजी मुझे मेरे हिस्से का धन जो भी आय वह दे दो। तब उन्हों ने धन उसे बाट दिया। फिर कुछ दिनों में छोटा बेटा सब धन जमाकर दूर मुलूक में गया। वहां बड़ा अकाल गिरा। उसे दिक्कत होने लगी तब वह उस मुल्क में एक अच्छे आदमी के पास रहा।

इस तरह हम कह सकते हैं कि दोनो क्षेत्रों में प्रचलित पवारी बोली में साम्य अधिक है, विभेद कम।

❖ ❖ ❖

४ पवारी लोक साहित्य

१. लोकगीत : पीढी-दर-पीढ़ी प्रचलित पवारी विवाह गीत हमारे संस्कृति की अनमोल धरोहर है । ए गीत नाते-रिस्तों में मिठास तथा विवाह समारोह में खुशियां भर देते हैं ।

१.१ विवाह गीत

अ) बैनगंगा तटीय पवारी विवाह गीत

१. मंडप सुताई दस्तुर पर गीत

बारा डेरी को मान्डो गड़ी से, ।।धृ.।।

मांडो पर मंडाईन ओला बेरू
बेरुइन पर बिछाईन जांभूर की डारी
जांभूर की डारी खाल्या शोभसे आंबा की तोरन ।।१।।

जवाई रामलाल मान्डो सूत से ।
सूत गोईता जवाई बापु तुमरो सेला घोरऽ से ।।
तोरन गोईता जवाई बापू तुमरो कास्टोऽ सुटसे ।।२।।

कुकू मा डोइता, सुषमा ओ बाई
तुमरी अंगोरी लाल भई से ।
मांडो मा तोरन लगी से ।।३।।

दामाद जब मंड़प सूतना प्रारम्भ करता है तब महिलायें यह गाना गाती हैं । पवारों में १२ डेरी (खंबों) का मंडप शादी में उभारा जाता है । उसपर बांस बिछाकर जामून की टिहनियों से आच्छादित किया जाता है । बाद में दामाद (रामलाल) मंडप के चौफेर धागा गुंथता है और आम की तोरन बांधता है । इस दौरान दामाद का दुप्पटा जमीनपर घोर रहा है और आम की तोरण बांधते बांधते धोती का कास्टा छूट जाता है । इसी कड़ी में

दामाद की पत्नी (सुषमाबाई) कुंकू का रंग लगाते लगाते उसकी उंगलियां लाल हो जाती है । इस तरह महिलाऐं हास्य व्यंग गाने में व्यक्त करती हैं।

२. काकन बंधाई दस्तुर पर गीत

चलवो-चलवो फुफाबाई, काकन बेरा भई ।।धृ.।।

आमरी फुफाबाई, दिवस भर उपासी रही ।
दिवस भर उपासी रही, काकन बांधन आई
चलवो-चलवो फुफाबाई, काकन बेरा भई ।।१।।

कोष्टी घर को सूत बाई, कुंभार घर की कोरी मथनी ।
बारई घर का पान बाई, सोनार घर की सरी ।
कामथ मा का धान बाई, बाप की आय बहनाई ।
चलवो-चलवो फुफाबाई, काकन बेरा भई ।।२।।

वर तथा वधू को उनके पैतृक घर पर विवाह समारंभ के प्रारम्भिक घटा में काकन बांधा जाता है । बुवा यह रस्म निभाती है । इस अवसर पर बुवा की काकन बांधने हेतु आवभगत की जाती है । इस संदर्भ में महिलाएँ उपरोक्त गीत गाती है।

३. कुम्हारीन दस्तुर पर गीत

कुम्हारीन बाई, कुम्हार कहां गयो ओ ।
खांद पर पावडा धर, माती खंदन गयो ओ ।।१।।

कुंम्हार माती खंद से गा बाई खंदसे
कुम्हारीन माती, टोपलामा भरसे ।।२।।

आननला माती, आता भय गई राती
अइग घड़ बारा, दिवो जोती ।।३।।

आमरऽ अईगला, काहे भयो उसीर ।
कुम्हारीन बाईला, गळसे कुशीर ।।४।।

आमरऽ गावकी, कारी माती ।
कुम्हारीन बाईला, लिजासे खाती ।।५।।

आमरऽ गांवकी, गोटा की चट्टान
कुम्हारीन बाईला, लिजासे पठान ।।६।।

आमरऽ गावको, ओंड- बोंड

कुम्हारीन बाईला, लिजासे गोंड ।।७।।

(अईग = १२ जोडी मिट्टी के ढकने और झाकनी)

विवाह में बुआ कुम्हारिन बनती है, तब उस पर कटाक्ष करते हुये यह गीत गाया जाता है। हमारे गांव की मिट्टी काली है, कुम्हारिन यहां मौज उडाने भर आयी है। हमारे गांव में पथरीली चट्टान है, कुम्हारिन को पठान उठाकर ले जायेगा । हमारे गांव में ओंडा-बोंडा है, कुम्हारिन को गोंड भगाकर ले जायेगा ।

उपर्युक्त गीत में हर प्रथम पंक्ति मात्र तुकबंदी के लिए है व हर दूसरी पंक्ति में उस पर आक्षेप लगाये जाते हैं। इस प्रकार आक्षेपयुक्त गाने को ''भडना'' कहते है। भडने का यह क्रम विवाह की रस्मों को मनोरंजन बना देता है, जिससे लगातार चलनेवाले कार्यक्रमों के बावजूद थकान महसूस नही होती ।

४. तेलचढ़ाई दस्तुर पर गीत

तेलसाई ओ तेलसाई, तेलमा पड़ी काई
हुकुमजी की डंगो बाई, तेल चढ़ायकन गई ।।
तेली घर को तेल बाई, कोष्टी घर को सूत ।
कामत का धान बाई, दुकान पर को जीरो ।।

अर्थात् तेल चढ़ाने आने वाली ने तेल चढाया या नहीं, क्योंकि तेल में तो काई पड़ी दिख रही है। अमुक के यहां की डंगो बाई (ऊँचे कद की स्त्री) तेल चढ़ाकर जा रही है। तेल पर कभी काई नहीं जमती, किन्तु गीत में तेल में काई पड़ना दर्शाकर हंसी का माहौल बना दिया जाता है ।

५. माहे दसाई दस्तुर पर गीत

डव्वा गाव को आखर पर, बड़ को झाड़
झोड़पा मारकन आनिन पाच पान ....
वनच का पान का जवाई रामलाल
सीवऽ सेती दोणा सात-सात ।।१।।

गंगावन वसरी अमृतधारा पानी
अजी यादोरावजी तुमरी रानी
सोडसे बीसापूर को पानी ।।२।।

अवो रेखाबाई तोरो नवरा ।
उजरसे दीवो की जोती ।।३।।

(बड के पत्तों के ७ जोडी द्रोण बनाकर नांदड़ के पास पूजा की जाती है) यह गीत नांदड़ घट जलाते समय गाया जाता है ।

अर्थात - डव्वा गांव के आखर पर बड़ के पेड़ से पाच पत्ते लाये और उन्हीं. पत्तों से दामाद (रामलाल) द्रोण तयार कर रहा है । छप्पर को गंगा जैसी शुद्ध करने दसाई दस्तुऱ्या (यादवरावजी) की पत्नी (बीसापूर) की जलधारा छोड़ रही है तथा उसका पती दीपकों की ज्योत प्रज्वलित कर रहा है ।

६. डेरी-पूजन दस्तुर पर गीत

तुमरो नाती को बिह्या होय रही से
आवो बाबाजी सरगलकऽ, मांडो सजी से ।।धृ.।।

कसो कसो आवबीन बाई, चारी दरवाजा बंद सेती ।
उघडो-उघडो ओ दरवाजा, आमरा पूर्वज आवऽ सेती ।।१।।

आवो बाबाजी तुमरो नाती को बिह्या होय रही से ।
आवो आवो बाबाजी सरगलकऽ, मांडो सजी से ।।२।।

आंबा क अंबराईऽमा, उतर जाओ,
गंगार क पानीलक, पाय धोय लेओ,
पान क पेवलीमाको, पान खाय लेओ,
सपरी क पलंगपर, आराम कर लेओ ।।३।।

देवी देवताओं को हलदी चढाने के बाद, महिलायें मंडप की डेरीओ का पूजन करती है और अपने पुरखों को आने की प्रार्थना करती हैं -

आपके पौत्र का ब्याह हो रहा है। आप स्वर्ग से कृपया मंडप में पधारें। पुर्वज कहते है - हम कैसे आयें, चारो दरवाजे बंद है। परिजन कहते हैं, हे! द्वारपालों दरवाजे खोलों, हमारे पूर्वज ब्याह समारोह में आ रहे हैं। बाद में परिजन अपने पूवजों से कहते हैं - आमराई में उतर जाना, गंगार के पानी से पाव धो लेना, पान-पेवली से पान खा लेना और पलंग पर आराम कर लेना ।

७. अहेर अवसर पर गीत

तरा क पार पर, बारी ओ मोहरली
ओका कोवरा ओ कोवरा पानऽ ।।१।।

भाई की बहीना, ओ तुरजा बाई
आओ गा आओ, चांदन्या राती ।।२।।

नही आऊ, नही आऊ, मि चांदन्या राती
आऊन गा आऊन, दिवो को जोती ।।३।।

अज मोरो माय घरऽ अहेर सेती
हाथ मा धरूओ, पंच्या की घड़ी
भाई को मांडो मा, शोभा दिसेऽ भारी ।।४।।

मालुटोला को आखरपरा, से बड़ को झाड़
बड़ को झाड़ खाल्या, से कोष्टी की दुकान ।।५।।

बहीन पारबताबाईला, चिंता पड़ी भारी
बाई पारबता, पंच्या लेनला गई ।।६।।

वोनच का पंच्याकी, करीस १६ घड़ी
अहेर बस्या सेती, भाई मोराऽ मोती ।।७।।

धावत-धावत मांड़ो मा आई ।
अहेर करसे, बहिना पारबता बाई ।।८।।

अहेर भयेव गवराबाई, घर मा नोको जावो ।
बस्या सेत पाहुना मांडो मा, उनको मानपान करो ।।९।।

आमरो गोत आई से मांडो मा दूर लं
जवाईला समजाओ, पंच्या सेलु लं ।।१०।।

गोत ला समजाओ, हरदी कुकू लं
बिहाईन ला समजाओ, पान बिडा लं ।।११।।

बेटी ला समजाओ चिन्या - चोरी लं
बामन ला समजाओ गाय-गोरी लं ।।१२।।

इन गीतों में शादी समारोह के अवसर पर दुल्हा / दुल्हन की बुवा

पर हास्यपूर्ण कटाक्ष किया गया है । बुवा को मायके से लेने आनेवाला भाई रात में चलने कहता है, किंतु बहन रात का सफर नापसंद कर सुबह जाने का मनोदय व्यक्त करती है । सफर के दौरान वह मन ही मन कहती है कि आज मेरे मायके में अहेर है और मै अपने हाथों में धोती पकडुंगी जिससे मेरे भाई के मंडप की शोभा बढ़ेगी।

बाद में उसे मालुटोला के आखर पर बड़ के पेड़ के नीचे कोष्टी की दुकान दिखती है और वह धोती खरीदने जाती है । उस धोती की वह सोला घड़ी कर दौडते हुये मंडप में प्रवेश करती है और अपने भाई को अहेर चढाती है ।

अंत में परिवार की बुजुर्ग महिला कहती है कि मंडप मे उपस्थित मेहमानों का सम्मान कीजिये । दामाद को धोती या दुपट्टा, अन्य रिश्तेदारों को हल्दी कुंकू का टीका, समधन को पान का बीड़ा, लडकी को साडी चोली तथा ब्राह्मण को गाय-बछ़डा देकर सम्मान करों ।

८. बारात प्रस्थान के अवसर पर गीत -

अ) परनू जासे परायो देश !

बारात प्रस्थान पूर्व घर में दुल्हे के मन में अनेक प्रश्न उभरते है, जिनका समाधान माँ आगे प्रस्तुत गीत के माध्यम से करती है । पुत्र का मनोबल सुदृढ़ करती है । सही माने में दिशा निर्देशक की भूमिका निभाती है । साथो-साथ यह गीत अनजान दूल्हे को विभिन्न रीति-रिवाजों से अवगत कराता है, ताकि किसी भी भावी कार्यक्रम में वह सफलतापूर्वक रश्म-रिवाज निभा सके । यह गीत इस प्रकार है -

अलसी फूल, चना फूल, चईत मास,
अगा बार् परनू जासे परायो देश ।धृ.।

परायो देश मोरी माय, कसो जाऊ ओ ?
परदेश दाम देजो बार्, परदेश जाई जो ।।१।।

परायी सीव मोरी माय, कसो खुंदू ओ ?
सीव दाम देजो बार्, सीव खुंदी जो ।।२।।

परायो आखर मोरी माय, कसो चापु ओ?
आखर दाम देजो बार्, मान्डो चापि जो ।।३।।

परायो जानुसा मोरी माय, कसो जाऊं ओ ।
जानुसा दाम देजो बार्, जानुसा जाई जो ।।४।।

परायो हल्दी मोरी, माय कसो लगाऊं ओ ।
हल्दी दाम देजो बार्, हल्दी लगाहे जो ।।५।।

परायो पानी मोरी माय, आंग कसो धोऊ ओ ?
पानी दाम देजो बार्, आंग धोई जो ।।६।।

परायो ओसरी मोरी माय, कसो खुंदू ओ ।
ओसरी दाम देजो बार्, ओसरी खुंदी जो ।।७।।

परायो बनवत मोरी माय, कसो खाऊं ओ ।
बनवत दाम देजो बार्, बनवत खाई जो ।।८।।

परायो कनगुली मोरी माय, कसो धरूं ओ ।
कनगुली दाम देजो बार्, कनगुली धरी जो ।।९।।

परायी नार मोरी माय, कसो आनू ओ ।
नार दाम देजो बार्, नार आनि जो ।।१०।।

परायो देश बार्, बड़ो कुबल ।
नोको गा करजो, हासी की धन ।।११।।

नहाव ना नहाव माय, मि येड़ा गंवार
सिर को बासिंग पर, होसू सवार ।।१२

ब) देगा बार्, मोरो दुध को दाम !

बारात घर से प्रस्थान होकर मंदिर में पूजापाठ के पश्चात दूल्हा रेहके में बैठता है, माँ उसे दूध पिलाने का दस्तुर निभाती है । उस वक्त माँ-बेटे के बीच जो वार्तालाप होता है वह इस गीत में संजोया गया है.....

तरा क पार पर, गुडूर भयो उभो ।
वहाँ गई नवरदेव की माय, वार्तालाप भयो ।।धृ.।।

देगा बार्, देगा बार्, मोरो दूध को दाम ।
आनू का आनू मोरी माय, तोरी जेवन वाढ़नार ।।१।।

देगा बार्, देगा बार्, मोरो दूध को दाम ।
आनू का आनू मोरी माय, तोरी पानी सारनार ।।२।।

देगा बार्, देगा बार्, मोरो दूध को दाम ।
आनू का आनू मोरी माय, तोरी आंग धोवनार ।।३।।

अज का जासू मोरी माय, धीर धर बिह्या लका ।
पाच गावला देहूं येड़ा, आपलो आनू जनम् जोड़ा ।।४।।

तोरी का होये माय, हांडी रांधनार ।
अजी की होये माय, पानी सारनार ।।५।।

बाई की होये माय, डोसकी धोवनार ।
फुफाबाई की होये माय, पाय धोवनार ।।६।।

(बार् = बाळ अथवा बेटा)

माँ द्वारा अपने बेटे (पुत्र) के शादी के पश्चात उससे उसकी क्या अपेक्षाएं होती है, उसकी झलक यह गीत उजागर करता है । इस गीत में पुत्र भी अपनी पत्नी द्वारा परिवार के प्रति उत्तरदायित्त्व निभाने की हामी भरता है।

९. पांव परवारने के दस्तुर पर गीत

लग्न लगने के बाद तथा दहेज प्रारम्भ होने के पूर्व दुल्हन के पिता और माता द्वारा दुल्हा-दुल्हन के पांव परवारने (दूध से धोने/पूजने) की प्रथा है । इस अवसर पर यह गाना गाया जाता है -

कारी कपिला गाय बन मा चरन जाय ओऽ
परत घर आयी, रामू खुटला बांध ओऽ ।
लछमन दूध दोह ओ, सीता दूध अटाय ओऽ
पिता को हात मा आंबी की डार, माय सोड़ दूध की धार ओ ।।१।।

धरतरी माता की दाब-दुभारी, कपिला गाय को ओ दूध ऽऽ ।
पाय का धोईता रामचन्द्रजी बाप, हाथ थुलथुला कापऽऽ ।
दूध का सोडिता सीता की माय, नवसूत्री पहनाव डाटऽऽ ।
डाटत जासे माय को थनऽ, हरकाप गयो बाप को मनऽ ।।२।।

१०. दहेज के अवसर पर गीत

अ) दहेज खरीदने की आतुरता -

दहेज बर्तन की कसार की गाडी वधु के पिता के गांव आती है और दहेज खरीदने की आतुरता दर्शाता यह गीत -

पाथरगाव को आखर पर, सूटी कसार की गाडी
पिता मोरो चन्दन ला, उसीर भई भारी ।

नही देखू, नही देखू पिता की बाट,
पड़ गई रेशम की गाठ ।।

ब) **सूम की गोत ड़ालने के समय पर गीत**

दादाजी को आंगन मा, चंदन की डेरऽ
चंदन की डेरीला, बंधी रेशम की दोरऽऽ
रेशम की दोरीला, लगी से सोनो की खुरी
खुरीला बंधीसे, गाय की दोरी
रामू-सीताको गरो मा, पड़ीसे सूम दी दोरी ।।१।।

क) **दहेज दौरान गाये जाने वाला गीत**

नवरी पुसऽ आपलो दादाजीला,
दादाजी कायको दायजो मोला देयातऽ?
चऊक चांदनऽ, गुंड आंदनऽ
आमि बेटी देया, कन्या दानऽ ।
जवाई हरिश्चंद्र मा यवढो ज्ञानऽ,
सासू सुसरो को पड़े पायऽ ।।१।।

रामू पुसऽ सीताला,

तोरो दादाजी नऽ कायको दायजो देईसऽ,
मोरच का दादाजी नऽ गुंड दायजो देईसऽ ।
गुंड सरिसो दायजो पायो,
जवाई पिरमलाल संतोषी भयो ।।
हीरा सरीखी बेटी देयेव,

सोयरो संतोषी भयो ।।२।।
रामू पूसऽ सीताला -
तोरो जिजानऽ कायको दायजो देईसऽ,
मोरच का जिजानऽ नानो दायजो देईसऽ ।।३।।

ड) दहेज समापन पर गीत

बटका की चरत ला घसराओ नोको,
नवरदेव को बाप ला घबराओ नोको ।

इ) सूम की गोत छोड़ते समय पर गीत

सोनो की घागर, मोति की चुम्भर ।
बाई पुष्पा पानी भर ।।
सोड़ भाऊ, सोड़ भाऊ, फांसी की गोत ।
मि चली गा आपलो देश ।।१।।
सोड़ता सोड़ता लग्यो बाई भारी ।
पिता निवड़ से करप मा की गोन्ही ।।
अज चली खेलुन्या मोरी ।
बाप सोपे आपली बेटी ।।२।।

हास्यरस भरे ए गीत इस वैवाहिक वातावरण को मीठी हंसी में भर देते हैं । इस प्रकार मीठी-मीठी बातों के मध्य हास्य का पुट पड़ते ही हंसी की फुलझड़ियों की खनक गूंजने लगती है । विवाह के अवसर पर वधू पक्ष के लोग जब हल्की फुल्की हंसी, ठिठोली भरी मुहावरों की बौछार करते है, तो कोई बिरला ही होगा जो अपने अधरों को हास्य की रेखा से मुक्त रख पाता हो ।

११. बाल के खेल के अवसर पर गीत

काकन छुडाने के बाद बाल (सेमी के दाने) खिलाने की मनोरंजक रस्म होती है । इस दौरान वधू की सहेलियाँ वधू से ठिठोली करती है -

बजावो बजाओ बाजा रे होल्या, बाज्या नाना परीऽ ।
तोला देबिन रे होल्या, शोभाबाई सरीसी घोडीऽ ।।१।।

नही मिले रे होल्या, पोवारिन बायको तोलाऽ ।
बजाव गा बजाव होल्या, तोरो बाजा ।
तोला देबीन रे होल्या, या छमछम घोड़ी ॥२॥
नवरी सरीखी नही भेटे बायको तोला ।
येनऽ जनम मा गा, येनऽ जनम मा ।
तोला देबीन रे होल्या, या पोवारिन टुरी ॥३॥

अर्थात् - हे बाजा बजाने वाले ! तू कई तालों में बाजा बजा । हम तुझे खुश होकर घोडी जैसी तेज यह वधू दे देंगे । वधू के बाद उसकी छोटी बहनों का नाम भी जोड दिया जाता है । यदि तुझे जाति की लडकी नही मिल रही हो तो इस पँवार लडकी से ही तेरा विवाह लगा देंगे ।

१२. काकन छुडाई दस्तुर पर गीत

वर-वधू को मंडप में बिठाकर जब काकन छुडाने का अनुष्ठान होता है तो वर द्वारा वधू का काकन छोड़ते समय यह गीत गाया जाता है -

आठ गाँठको, नौ फुंडको काकनऽ
छोडगा छोड नवरदेव, बाईको काकनऽ
नही छूटतऽ, पूछ फूफाबाई ला ऽ
घडी भर बुलाय ले गा, होल्या बापलाऽ ।

अर्थात् - आठ गाँठों और नौ फूंडकों वाला यह काकन है । हे वर, तुम वधू के काकन की गाँठ खोलो । यदि तुमसे गाँठ न खुलती हो तो अपनी बुआ से इसे खोलने का तरीका पूछ लो । यदि फिर भी सफलता न मिले तो होल्या (बाजा बजाने वाला) को बाप बनाकर उसे गाँठ खोलने बुला लो

गीत में समाहित यह कटाक्ष वर को चुनौति देता है और उस में काकन छोड़ने के प्रति जोश और उत्साह उत्पन्न कर देता है । ऐसे ही कटाक्ष वधू द्वारा वर का काकन छोड़ते समय किये जाते है ।

१३. पान खिचाई दस्तुर पर गीत

ए गीत फलदान, बिजौरा, कुसुम्बा आदि अवसरों पर गाये जाते हैं । इन गीतों में समदी तथा समदन की मज़ाक उड़ाई गई है ।

अ) समदी की खिचाई

जामुरी को पान, राखड़ को चूना ।
माटी की काथ ओ, गोटा की सुपारी ।
नवरी को बाप भिकारी
पान नही पुन्या, पान मांग से उधारी ॥१॥
से नवरदेव को बाप ओध्यार बाई
पान भरभर देसे उधारी ।
पडेव नवरी को बापदून,
नवरदेव को बाप भारी ॥२॥

अर्थात - हमने तो जामुन के पत्ते में राख का चूना, माटी की कत्था और कंकडो की सुपारी डालकर पान बनाया था । वधू का बाप इतना कंगाल है कि ऐसे पान को भी उधार मांगता है । वर का बाप तो उदार है, वह उसे पान दे रहा है ।

ब) समदन की खिचाई -

डोंगर पर की डोंगरोली, वहाँ सोनोली को झाड़ऽऽ ।
वहाँ देयो मिनु बाईला, पर वहां पड्यो सोनो को अकालऽऽ ॥१॥
यन दारिन समधिन बाईला, देय देव सोनो उधारऽऽ ।
देय देव सोनो उधार, सोनार बनाये पचरंगी हारऽ ॥२॥

अर्थात् - हमने जहाँ वधू का संबंध किया है, सुना था कि वहाँ के पहाड पर सोने के पेड़ होते है । फिर भी बिजौरा में इतने कम गहने आये है । शायद वहाँ सोने का अकाल पड़ गया है । समदन को दे दो सोना उधार ताकि इस सोने से सोनार बनाये पचरंगी हार ।

१४. सुहासिनियों पर गीत

दुल्हन के साथ बहन, भाभी, बुआ, मौसी, आदि सुहासिनी (करोलीन) बनकर जाती है। इस खुशी में वे अपनी तयारी करने हेतू कितनी उतावली होती है यह इस गीत में बताया गया है -

टवरी की बात बुझऽ से तऽ बुझन देवऽ।
नवरा भूकोऽ से तऽ रव्हन देवऽ ।।१।।
टूरु रोवऽ सेती तऽ रोवन देवऽ।
पर मोरो सिनगार, होवन देवऽ ।।२।।
बाई, मि करोलीन जासू।
ये आरसा फनी ठेय देव ।।३।।

१५. बिदाई गीत

बेटी की बिदाई माँ-बाप एवम् वधू पक्षवालों के लिए करुणाजनक (दुःखद) घड़ी रहती है। इस अवसर पर गाया जाने वाला यह गीत जहाँ एक ओर हतोबल माँ-बाप का मनोबल बढ़ाने का प्रयास करता है, वहीं पिता माता, भाई, आदि द्वारा इस अवसर पर निभायी जानेवाली अनेक रस्म रिवाजों से अवगत कराता है। बिदाई गीत इस प्रकार है ...

अ) प्रारम्भिक गीत

दादाजी को आंगन मा, निम्बोनी को झाड़।
एकच खांदा हलायो, पड़ी रद् - बद् ।।
भाई मोरो भोजराज, खाट पर रुप्या मोज्।
उठो उठो भोवजाई, घुसरन बेरा भई ।।१।।

चलओ बेटी जेवनला दूध भात।
राजा को कुँवर आयो बेटी सोप देव ।।
बटकी को दूध भात, बटकी मा रह्यो।
परायो देश को राजा आयो, बेटी सोप देओ ।।२।।

अज वरी होती ओ तुमरी सत्ता।
आता भई रामू की सीता ।।
बाप घर की खेलती, मालती।
परायो घर की धन भई ।।३।।

तरा को पार पर, भारी ओ अमराई।
वहां उतरी से, राजा की सवारी ।।
राजा खेलऽसे, सोनो की गोटी।
बाप सोपेऽ आपली बेटी ।।४।।

ब) लडकी सोपने के समय पर गीत

अज ओरी होती तुमरो कोरा
आता जासू परायो कोरा ऽऽ
नोको रोउस माय मोरी
जासू आपलो घरा ऽऽ।

१६. बारात वर-पक्ष के घर आगमन पर गीत।

वर-वधू परिणयबद्ध होकर घर आने पर वर की बहन एवम् बुआ दरवाजा प्रवेश रोकती है तब का यह गीत -

बहीना बहीना दरवाजा नोको धरोनाऽ,
सोड़ो-सोड़ो दरवाजा तुमरोऽ।
घडावबिन बाई गरो की साकरीऽ,
देबीन बाई तुमरा रुपया, सोनोऽ।
देबीन बाई तुमरा रुपया सोनोऽ,
आता दरवाजा सोड़ो गा सोड़ो नाऽ ।।१।।
आमला बाई जान देवओऽ,
मंदिर महाल, मंदिर महालऽ,
मंदिर महाल जायकन फोडबीन भंडारऽ,
घडाय देबीन सोनो को हारऽ ।।२।।

ब) वर्धा तटीय पवारी विवाह गीत

वर्धा-कारंजा, बैतुल - छिंदवाडा क्षेत्र में विवाह के अवसर पर बहूत ही मधूर तथा हृदयस्पर्शी गीत, वर तथा वधू पक्षों द्वारा गाये जाते हैं । समय के परिवर्तनानुसार पुरानी परम्पराएं लुप्त होती जा रही हैं । अतः उन सांस्कृतिक लहरों को प्रवाहित कर पुरानी यादों को ताजा करने का यह प्रयास हैं ।

१) पूर्वजों का स्मरण

विवाह समारोह की प्रारम्भिक घटिका में हल्दी के पूर्व, अपने पुरखों को स्मरण कर, निम्नांकित गीत गाकर महिलांए उनसे आशिर्वाद मांगती हैं...

काम कन्या काज कन्या 'धर्माजी' ।
तुमि सरग का लोग काज म् आओजी ॥
उतरो उतरो ओ स्वर्ग का देव ।
हमारो आवनु नही होत ॥
काम करो क् काज करो,।
हमारो आवनु नही होत ॥
हमार घर तुम्हार नाती को काज,।
तुम्ही जरूर आवनु, हमारो आवनु नही होत ॥

२. दुल्हन नहलाते समय का गीत

(काकन बांधने के पहले का गीत)

किन बड़े की नांदन बेटी, सवा घडी दूध नाहवे ओ ॥धृ॥

अंगना म चिरव्खल किनने किया ओ
फागू बडे का नांदन बेटो सवा घड़ी दूध नाहवे ओ ॥१॥

अंगना म चिरव्खल किनने किया ओ
कोन बडे की नांदन बहिन सवा घड़ी दूध नाहवे ओ ॥२॥

अंगना म चिरव्खल किनने किया ओ
घुड्य बडे की नांदन बहिना सवा घड़ी दूध नाहवे ओ ॥३॥

३. गौरी पूजन पर गीत -

निकलो न सीया जानकी, गौरी पूजन जाय ॥धृ.॥

बेटा पड़छय राजा दशरथ को, गौरी पूजन जाय ।
बेटी पड़छय लायी जनक की, गौरी पूजन जाय ॥
सूपड़ा बन्यो मैय्या बास को, गौरी पूजन जाय ।
निकलो न सीया-जानकी, गौरी पूजन जाय ॥१॥

दीया बन्यो मैय्या कनीक को, गौरी पूजन जाय ।
बाती बनी मैय्या रेशम की, गौरी पूजन जाय ॥
मूसर बन्यो मैय्या खैर को, गोरी पूजन जाय ।
निकलो न सीया-जानकी, गौरी पूजन जाय ॥२॥

कापटा बन्यो मैय्या रेशम को, गौरी पूजन जाय ।
रई बनी मैय्या बांस की, गौरी पूजन जाय ॥
नांदड़ बन्यो मैय्या कनीक को, गौरी पूजन जाय ।
निकलो न सीया-जानकी, गौरी पूजन जाय ॥३॥

४. बारात प्रस्थान पर गीत

'दुल्हा' बारात लेकर जब घर से निकलता है उस समय महिलाएं यह गीत गाती है -

पुनिया चांद जनम तोरो, लाडन् का तू ।
लाडन् का तू लाडो रे, पुनिया चांद ॥

५. बारात आगमन पर गीत

जैसे ही बारात वधू के गाँव के पास पहुँचती हैं, तब बाराती महिलाएं मनोरंजक भाव से, दुल्हे को सम्बोधित करते हुए गा उठती हैं -

समूह-१ :- कोन गाँव झंडो रोप्यो रे लाड़ा ।
मंजल्-मंजल् चल्यो आयो ॥
समूह-२ :- 'सिवनी' गांव झंडो रोप्यो ग बाई ।
मंजल-मंजल चल्यो आयो ।
समूह-१ :- कोक् स ऽ दम स् चल्यो रे लाडा ।
मंजल-मंजल चल्यो आयो ॥

समूह-२ :- आपल् बाप क् दम स् चल्यो हय दुल्हा ।
मंजल-मंजल चल्यो आयो ।।
समूह-१ :- कोक् स ऽ दम स् चल्यो रे दुल्हा ।
मंजल-मंजल चल्यो आयो ।।
समूह-२ :- आपल् मामा क् दम स् चल्यो हय दुल्हा ।
मंजल-मंजल चल्यो आयो ।।

६. बारात स्वागत पर गीत

वधू पक्ष के कुछ लोग बारात आगमन की भनक पाते ही छप्पर-मुंडेर पर चढ़ अपने उत्साह को प्रदर्शित करते। भाट, ऊँची आवाज में गाकर वधू पक्ष को सचेत करता -

थड़कत घोड़ा, फड़कत निशान,
दुल्हा क आंग पर, चमकत दुशाल ।
सुनो-सुनो सब हो जाव होशियार,
बरात झेलन, हो जाव होशियार ।।

७. वधू बिदाई पर गीत

लग्न सम्पन्न होता है। वधू की बिदाई की बेला आ पहुँचती है। वधू पक्ष में एक दुःख की लहर सी छा जाती है । वातावरण भारी हो उठता है । इस पर भी वर पक्ष की महिलाएं, वधू पक्ष की महिलाओं से नोक-झोक करने से नहीं चुकती -

धांगड सरीकी बेटी चली तब आयो रोज वो ।
कोठी क् आड ऽ देज लियो तब न आयो रोज वो ।

८. बारात वापसी पर गीत

विवाह-समारोह का अंतिम दृष्य, अर्थात जब बेटा, बहु को लेकर बारात सहीत घर वापस लौटता है तो दुल्हे की माँ की ओर से यह गीत गाया जाता है-

काजर कुकू बासिंग ला जाई
माय पुसे बेटाला, काहि की बंज ऽ लाई ?
बारा बरीस भयो दादा ।
नांदन बहू लाईस ।।

१.२ चक्की / चट्टी लोकगीत

अ) वर्धा तटीय चट्टी गीत

(संकलन एवम् समीक्षा - मुन्नालाल देवासे, आर्वी, जि. वर्धा)

मनुष्य ने जब से आँखे खोली है, आटा पीसने की चक्की उसके जीवन का अभिन्न अंग बन गयी । सभ्यता और चक्की का गहरा संबंध है। संत कबीर ने तो अध्यात्म दर्शन से भी चक्की का संबंध जोड़ दिया :-

चलती चक्की देखकर, दिया कबीरा रोय ।
दो पाटन के बीच में, साबुत बचा न कोय ।।

चक्की के आकार-प्रकार में समय समय पर नये नये प्रयोग होते रहे किंतु आज लाखों वर्षो बाद भी चक्की का महत्व कम नहीं हुआ है । चक्की के जरिये आटा का महत्व कम नहीं हुआ है। चक्की के जरिये आटा का मुख्य भार घर की महिला पर होता है, विशेषकर बहू पर, जबकि पुरुष की जिम्मेदारी रही है जीविका - उपार्जन । चक्की पीसना घरेलू काम का ही अंग माना जाता है । महिलाएँ श्रम को हलका बनाने के लिए आटा पीसते समय गीत गाती रहती है । चक्की की घर्र-घर्र में गीतों की धुन मिलकर श्रम के बोझ को काफी मात्रा में हलका कर देती है । मध्यप्रदेश में चक्की पर गाये जानेवाले इन लोक गीतों को 'चट्टी-गीत' कहा जाता है । मध्यप्रदेश के बैतूल, छिंदवाड़ा तथा वर्धा जिले की कारंजा आर्वी तहसील में पवारी भाषा के ये लोक गीत भारतीय संस्कृति का ही एक अंग है । इन लोक गीतों को पवारी भाषा की धरोहर माना जाय तो अनुचित नही होगा । बैतूल जिले की बैतूल तथा मुलताई तहसील के कई गाँवों में घूम-घूम कर ये 'चट्टी गीत' संकलित किये गये जो आज भी अपनी गरिमा को बनाए हुए है। कुछ चुनिंदे गीतों का रसास्वादन बड़ा आल्हाद दायक है। इन गीतों को सुनते समय एक निराला ही आनंद मिलता है । जब कोई महिला चक्की चलाते हुए गाती है :- 'सावन-फागुन का महिना म
दोरी को ओ सिंघाड़ा
नाड़ा टिक्की को गुंडारा
धरै बंधु सालू का पेच म
जाहे बहिन का देश म '।।१।।

सावन तथा फागुन मास में विवाहिता पुत्री को मायके से सौगात आती है किंतु प्रायः भाभी अपनी ननद को भेट देने के पक्ष में नहीं है, इसीलिए भाई अपनी पत्नी की नजर बचाकर चुपचाप बालों में गूँथने के लिए सिंगाड़ा और नाड़ा का बंडल तथा टिकलियाँ पगड़ी के बंध में छिपाकर बाँध लेता है । और बहन के गांव में उसके मायके की सौगात देने आता है ।

'फागुन का महिना म
सोन्ना की पिचकारी
राजा इंदल झोकै पानी
भीजी सीता की कुसुमानी
राही रुखमाई भरे गाही
इंदल मोरो ओ ऐसो नाही ।' ॥२॥

फाल्गुन मास में नायक (इन्द्र) स्वर्ण पिचकारी में रंग मिश्रित पानी भरकर झोंकता है, जिससे कुसुम के समान कोमल नायिका भींग गयी और जब उसने नायक की शिकायत की तो राह चलती रूखमा ने सफाई दी कि मेरा भाई ऐसा शरारती नही है ।

'बंधू मरा ओ आया लेन
बारीक सेवाई, मूठ भर ओ ठसाठस
बारीक सेवाई, मूठ भर ओ ठसाठस
रांधू म ओ कसी कसी
म है ओ सासु का बसी
मरो जीव ओ पराया का बसी
गयो बंधु मरो ओ गल्ली मसी ।' ॥३॥

मेरा भाई मुझे लेने आया है, मैं सेवई मूठ में ठसाठस भर कर कैसे पकाऊ? मै तो सास के वश में हूँ, मेरे प्राण तो दूसरों के वशीभूत है । मेरा भाई जैसा आया, गली से ही लोट गया । एक अन्य प्रसंग -

'बंधू करै मरी बोरवन
पहिरै बहिन पीताम्बर
घड़ी पहिरै रेशम की

जाय बहिन रे हाकिम की ।' ॥४॥

भाई नई साड़ी देकर मेरा स्वागत करता है, मै रेशमी पीताम्बर पहनकर जब अपने भाई के साथ जाने लगती हूँ तो ऐसा लगता है कि कोई हाकिम की बहन जा रही है ।)

'चोरी बहिन चिंदी भई ओ
मोरी चोरी जर जर फाटी ओ
मरव चोरी की न्हाय चिंता
नांदे मरो माहेर भागीवंता ।' ॥५॥

हे बहन मेरी चोली फटकर चिंदी हो गयी, मेरी चोली जर्जर हो गयी, फिर भी मुझे चोली फटने की चिंता नहीं है । मेरे लिए यही संतोष की बात है कि मेरा मायका भाग्यवान बना रहे ।

'छीता पर सासरवास
मत करे ओ माय-माता
अपनी राम रव ओ
लायी या पर की छीता ।' ॥६॥

'भाभी पर माता के अत्याचार देखकर सहृदय ननंद कहती है - ओ मेरी दयालु माता बहू को मत सता । अपने भाई (राम) के लिए यह पराये की बेटी (सीता) लायी है । अर्थात सीता के दुःखी होने से राम दुःखी होंगे, राम और सीता का आदर्श जन जीवन में घुलमील गया है ।

परंतु इस नवी-नवेली बहू के सुख से जलने वाली बहू की समवयस्क पड़ोसन सास के कान भरती है कि - अजी सासुबाई, बहु पर खूब अत्याचार करना, उसे इतना सताना कि उसके साथ मौत के समान निभाव हो :-

'छीता पर सासरवास
खूब करजो सासुबाई
खूब करजो सासुबाई
ओरव निभाजो सवत साई ।' ॥७॥

ननंद (कन्या) जब देख लेती है कि पड़ोसन उसकी माँ के कान भर गयी तो वह अपनी भाभी के पक्ष में पुनः माता से विनय करती है -

‘छीता पर सासरवास
मत कर ओ माय-माई
अपनो है ओ भाई
लायी पराया की जाई
ओख निभाओ बेटी साई ।’ ।।८।।

‘हे माताजी, बहू पर अत्याचार मत करना क्योंकि वह जिसकी लक्ष्मी है वह हमारा भाई है, उसी के लिए पराया की जायी लायी है, अतएव उस को तुम बेटी समान निभाना !’

पारिवारिक जीवन में देखा जाता है कि नई बहू और सास के संबंध प्रायः मधुर नही होते । बहु पर अत्याचार करना बहुधा सास अपना हकसा मानती है । यह विरोधाभास खान-पान तथा रहन-सहन में भी प्रदर्शित होता है । इसी वजह बहू चक्की पीसते समय व्यंग गीत द्वारा अपने मन की व्यथा को दूर करने का प्रयास करती है -

‘कारी ओ खुरवड़ी
तोन्ह ओसरी ओ उरवड़ी
कारी ओ कोयल
देय जहर का बोल ।’ ।।९।।

‘ओ काली मुर्गी, तुने ओसरी उखाड़ डाली । अब मुझे लीपना पोतना पड़ेगा । ओ काली कोयल तु जहरीले बोल क्यों सुनाती है जबकि मीठा बोलना तेरा गूण हैं ।

जब सास ने अच्छी साड़ी ली और बहु के लिए मोटी साड़ी खरीदी तो बहू के मन का असंतोष इस शब्दों से फूट पड़ा -’

‘सासु पहिरै मोरी तपसेला
बहू ख देय वा बांड
बहू ख लेय वा बांड
उरफाटू है वा रांड ।’ ।।१०।।

निम्न और मध्यम वर्ग में वर पक्ष की और से नववधू को विवाह के अवसर पर अक्सर जेवर भेट कियें जाते हैं किन्तु अधिकांश परिवार

में विवाह के बाद हल्दी छूटने के पूर्व ही बहू के तन पर से सारे गहने उतरवा लिए जाते हैं । ऐसी ही एक सास बहू की नथ पहनकर फिरकती है तो बहू की भावना इन शब्दों में व्यक्त होती है -

‘नाक की है ओ नथ
ओसाड्या मत मारय्,
टूग जाहे ओ किरकी लाडू
नथ को है ओ आखूड़ डांड,
नथ शोभे ओ गोरा मुखड़ा
नाही शोभत ओ कारा मुखड़ा’ ।।११।।

‘नाक की यह नथ है, मुख मत मरोड़ वरना नथ की फिरकी एवं मणके टूट जायेगें क्योंकि नथ का स्वर्ण तार बहुत छोटा (कम लंबा) है । सच बात तो यह है कि नथ गोरे मुख पर ही शोभा देती है, काले मुखड़े पर नथ फबती नही है ।’

घर की भली बहू तो वह है जो सभी दुःखों.को झेलते हुए सब की भलाई चाहे -

‘पहलो गाना गाऊँ ओ
गाऊँ देव ओ धरम ख
मरा जनम देतारा ख
मरा माता पिता ख
दूसरो गाना गाऊँ ओ
सासु मरा ससरा ख
तीसरो गाना गाऊँ ओ
मरा कुटूंब ख
गाली देतारा ख ।’ ।।१२।।

‘मै पहला गीत देव तथा धर्म के लिए गाती हुँ, मुझे जन्म देनेवाले माता पिता के लिए मेरा पहला गीत है । मेरा दूसरा गीत सास और ससुर के लिए है। मेरा तीसरा गीत मेरे कुटुम्ब ....(विशेष कर मायका को) गाली देनेवालों को समर्पित है।’

भारतीय लोक जीवन, साहस एवम् शौर्य के लिए विख्यात है किंतु अध्यात्म में भी वह कम नही है । आध्यात्मिक दर्शन की भारतीय जन जीवन पर गहरी एवं अमिट छाप है । एक महान विद्वान से लेकर गाँव के ग्वाले तक की अध्यात्म में गहरी पैठ है । गांव की अनपढ़ गँवारन भोली भाली महिला के जीवन पर भी अध्यात्म की गहरी छाप है, इसी कारण गाँव की अभाव तथा कष्टमय जिंदगी उसके लिए साहस की प्रेरक तथा सुखदायिनी है । मनुष्य ने जब से आखें खोली है, वह शायद मृत्यु से सर्वाधिक भयभीत हुआ है और आज भी वह इस भय से मुक्त नही हो सका है । परंतु भारतीय अध्यात्म ने मनुष्य का मृत्यु से साक्षात्कार कराया, इसलिए भारतीय नर नारी के लिए मृत्यु सहज है, भारत की महिलाएँ सघन अरण्य में हिंसक पशुओं का खौफ खाये बिना, और खेतों-खलिहानों में भूत-प्रेतों से भय मुक्त होकर अपने रोजमर्रा के काम सहज ढंग से करती हैं, वह मृत्यु से दहशत नहीं खाती वरन उनका सहर्ष स्वागत करने के लिए सहज तत्पर रहती है। वह भोर के परवेरू चहकने के पूर्व ही विधाता से मृत्युकी याचना करते हुए आटा पीसती है । धड़धड़ाती हुई चक्की से आटा बनाती रहती है और उसके कंठ से चक्की गीतों की मधूर ध्वनि मुखरित होती रहती है -

‘मख मरन देजो देवा
मऱ्या पिता का आँगन म
बुलाया सारंगपुरी को गोंदरी ओ
बाजा बजाया सुंदरी ओ ।’ ॥१३॥

‘हे भगवन ! मुझे पिता के आँगन में मरण देना । तब सारंगपुरी गोंदरी (यश गायक) बुलाया जायेगा जो सुंदरी नामक वाद्य बजायेगा ।’

‘मख मरन देजो देवा
नदी की कगार म
एनी बहिन की सरवन जलै
मरो बंधु को हिरदा भरै
नेत्तर सी पानी गरै ।’ ॥१४॥

‘हे देव! मुझे नदी के तट पर मरण दो । इस बहिन की चिता धू धू कर चल उठेगी, वियोग से मेरे बाई का हृदय भर आयेगा और उसकी आँखों से आँसुओं की झड़ी लग जायेगी ।’

‘मख मरन देजो देवा
धीरू चलो ना मीठीबाई
धीरू चल ओ मीठीबाई
मरो फिर ख आवनो नी होय ।’ ॥१५॥

‘हे देव ! मुझे मरण दो । ओ मीठी बाई (मृत्यु) धीरे चलो, मृत्यु बहुत धीरे से आना, एक दम आहिस्ता आहिस्ता । अब मेरा लौट कर आना नही होगा । ’

‘मख मरन देजो देवा
जन करै ई लेकी
आहेऽ मरा माहेर पालकी
जाहे जनक हलकी ।’ ॥१६॥

‘हे देव! मुझे मरण देना, लोग शीघ्रता कर रहे है । मेरे मायके की पालकी आयेगी, यह पालकी मुझे बड़ी सुगमता से ले जायेगी अर्थात मैं.इस पालकी पर चढ़ कर सहज ही परमपिता के निकट पहुँच जाऊँगी ।’

‘मख मरन देजो देवा
एना ‘देवास्या’ की ओसारी म
निरो सोन्ना भरी गरसोली म
सोन्ना भरी गरसोरी म ।’ ॥१७॥

‘हे देव, मुझे इस ‘देवासे’ की ओसारी में मरण देना । शुद्ध सोने से बने मंगल-सूत्र (गरसोरी) में मुझे पति की ओसरी में मरण देना अर्थात मै पति के पूर्व सुहागन जाना चाहती हूँ, देव तुम तो यह जानते ही हो कि यदि मेरे पति मुझसे पहले ही चल बसे तो मेरे गले में सुहाग का प्रतीक मंगल सूत्र कैसे रह सकता है?’

जब नायिका भोर में चक्की पर इन मरण गीतो को गाती है तो वातावरण में करूणा साकार हो उठती है किंतु इन गीतों को सुनकर सास के पैरों तले की जमीन खिसकने लगती है और वह बुरी तरह भड़क उठती है - ‘इस घर में.तुझ पर ऐसा कौनसा पहाड़ टूट पड़ा जो तू मरण माँग रही है । सास के चीखते ही गीत का समा टूट जाता है, हमेशा का खटराग फिर से आरंभ हो जाता है, बेचारी बहू का मन खिन्नता से भर उठता है, उसके मन का आक्रोश इन शब्दों में फूट पड़ता है -

'सासु करै मरी ओ सासरवास
नंद करै मरी ओ बनवास
कसी गाँजू म ओ परदेस
कसी गाँजू म ओ परदेश ।' ।।१८।।

'मेरी सास मुझे बहुत सताती है और मेरी ननंद मुझे वनवास देने पर तुल गयी है, मैं मायका तजकर इस परदेस मे कैसे दिन काँटू?'

'दंदी रे दुसमान ई
दुसमान की परै डाही
मरी इसवर भरे गाही
मरी इसवर भरे गाही ।' ।।१९।।

'मेरे द्वेषी और दुश्मन जलन से घुटते रहेंगे । मेरा एकमात्र साक्षी ईश्वर है । दुश्मन कितना भी जाल रचे, मेरी ओर से ईश्वर गवाही भरेगें ।'

'बंधु मरो रे आयो लेन
बैतुल गाव की गल्ली म
बाई मरी ओ तुरसी न
चिन्ह्यो भोयराई बोली म ।' ।।२०।।

'मेरा भाई मुझे लेने के लिए बैतूल गाँव (नगर) की गली में आया। उसकी भोयरायी (पँवारी) बोली में उसे मेरी बहन तुलसी ने पहचान लिया।' और वह विदा होकर सास के घर निकल कर भाई के साथ मायके के लिए चल पड़ी। घुटन भरी जिंदगी से निकलकर वह मुक्त वातावरण में जा पहुँची । मुद्दत के बाद उसने राहत की साँस ली । और एक दिन ऐसा भी आ जाता है कि सास को अपने अंतिम समय का आभास होने लगता है, उसने बहु पर जो अत्याचार किये थे, वे साकार होने लगते हैं । फिर भी वह साहस बटोरकर बड़ी दीन वाणी में. बहुत आशा भरी नजरों से बहू से कहती -

'लाल ओ लाल कुंकू
हाथ पै तू कलावजो
एनी नंद की माय होजो
नाडा डोही रव पुरावजो ।' ।।२१।।

'बहू, अब तू ही इस ननद की माता बनना, इसे मातृवत स्नेह करना । हमेशा इसकी बिदाई के समय अपनी हथेली पर लाल कुंकू गीला करना और इसके पैर लिखना, भाल पर कुंकूम लगाना तथा इसे हरदम नाड़ा और टिकली की पूर्ति करना ।' इसीलिए तो कहा जाता है, 'सौ दिन सास के तो एक दिन बहू का' ।

इन चक्की गीतों को सुनाकर जब वह चुप हो गई तो कुछ क्षण उपरांत मैने सहज ही पूछ लिया - 'सजीबाई, सचमुच तुम्हारे गीत बेजोड़ हैं, किस से सीखी तुम ये गीत? '

वह मेरी बात को सुनकर पहले तो मुसकाई फिर धीरे से बोली - 'ना कागद लिखै, ना श्याही लागै । हिरदा म उगें, मुख सी बोलें । कान म सुनै, गीत बनै हजार' । (कुछ गीत दूसरों से सुन सुनकर याद हो गये और कुछ हृदय में ऊग आये । अभी तो मेरे पास कई गीत है, तेरी पोथी में नही समायेंगे ।)

'बस बस, अभी तो इतने ही काफी है, मै कभी आऊंगा तो सब लिख ले जाऊँगा किन्तु तुमने गीत भूल मत जाना ।' मै जल्दी से बोला।

सजीबाई भी कब पीछे रहनेवाली थी, चट से बोली -

'ना नागर, ना बख्खर
बंधु ना लागै रे लुहार
बिन पानी बिना खेती
फसल भयी रे अंबार ।' ।।२२।।

सचमुच लोकगीत एक ऐसी फसल है, जिसका बगैर पानी और बिना खेती के अंबार लग जाता है । परंतु रसग्राही के अभाव में यह फसल उजड़ रही है । विद्युत चक्की के कारण अब धीरे धीरे चक्की गीतों का लोप हो रहा है । वस्तुतः इन लोकगीतों में हमारी संस्कृति एवम् जीवन दर्शन की झलक मिलती है । लोकगीत भारतीय जीवन की अनमोल निधी है । यदि इनको यहाँ लिपिबद्ध नहीं कर पाता तो ये चक्की गीत अजन्मे ही रह जाते ।

(प्रस्तुती - मुन्नालाल देवासे, आर्वी जि. वर्धा)

ब) बैनगंगा क्षेत्रीय चक्की गीत

१. दरन मि दरूसू

दरन मि दरूसू गा बाई, दरूसू पाच दाना ।
मोरो माहेर को कारखाना ।।

दरन मि दरूसू गा बाई, जानू पहले माता पिता ।
मंग जानू मि रामू सीता ।।

दरन मि दरूसू गा बाई, दरसू चार गहू ।
राज करजो मोरो भाऊ ।।
दरन मि दरूसू गा बाई, दरूसू कनकी पीठ ।
मोरो माहेर को मुंग्या जोट ।।

पंढरपूर की विठ्ठल रूखमाई ।
रूखमाई से आंगन मा ।
पानी भरी से रांजन मा ।।

दूर ल् ओरखू मि मोरो भाई की चाल ।
डाओ हाथ मा दिससे, झोरा लाल लाल ।।

(संकलन - सतनबाई चौधरी, तोतलाडोह, जि.नागपूर.)

२. .....ना बाई जातो हलको भयोव

ना बाई जातो हलको भयोव ।।धृ।।

पायली भर गहू दरन ला बसी
मोरो अजी याद आयो, जातो हलको भयोव ।।१।।

पायली भर चाऊर दरन ला बसी
मोरी माय याद आई, जातो हलको भयोव ।।२।।

पायली भर चना दार दरन ला बसी
मोरो भाई याद आयो, जातो हलको भयोव ।।३।।

पायली भर जोंधरा दरन ला बसी
मोरी बहिना याद आयी, जातो हलको भयोव ।।४।।

बारा मोरो से सोयव, बाई नही मोला घाई
मोरी जिंदगी रानीवानी, जातो हलको भयोव ।।५।।

सासु-सुसरो की दया-माया, घर से राजधानी
नवरा मोरो इठ्ठल बाई, मी ओकी रूकमायी ।।६।।

१.३ अन्य लोकगीत

(ए लोकगीत पवारी में पीढी दर पीढी से प्रचलित हैं)

१. पऱ्हा गड़से गा बाई गडसे

झर-झर पानी, पडसे गा बाई पडसे ।
मोहन पटिल को पऱ्हा, गड़से गा बाई गड़से ।।१।।

भर-भर हवा, चलसे गा बाई चलसे ।
मोहन पटिल को पऱ्हा, गड़से गा बाई गड़से ।।२।।

डोईपर की घोंगडी सर-सर, उड़से गा बाई उडसे ।
मोहन पटिल को पऱ्हा, गड़से गा बाई गड़से ।।३।।

जग्या नौकर नांगर, धरसे गा बाई धरसे ।
मोहन पटिल को पऱ्हा, गड़से गा बाई गड़से ।।४।।

मन्या नौकर दतार, धरसे गा बाई धरसे ।
मोहन पटिल को पऱ्हा, गड़से गा बाई गड़से ।।५।।

डोई को सेव खांदा पर, पड़से गा बाई पडसे ।
मोहन पटिल को पऱ्हा, गड़से गा बाई गड़से ।।६।।

सिदोरी देख पटिल ला गुस्सा, आवसे गा बाई आवसे ।
मोहन पटिल को पऱ्हा, गड़से गा बाई गड़से ।।७।।

धुरोपरलक पटिल चिखलमा, पडसे गा बाई पडसे ।
मोहन पटिल को पऱ्हा, गड़से गा बाई गड़से ।।८।।

दिवस बुड़से अना पटिल धाय-धाय, रोवसे गा बाई रोवसे ।
मोहन पटिल को पऱ्हा, गड़से गा बाई गड़से ।।९।।

२. माहेर को लुगड़ा

लाल लुगड़ा, लाल लुगड़ा ।
मोरो माहेर को लाल लुगड़ा ॥धृ.॥

भवजी मोरी मोठी सयानी
घड़ देईस बाई, सरदा की नथनी
सासूजी आता, घड़ायदेव तोड़ा ॥१॥

अखाड़ी सण, माता पूंजन जाबीन
चलो चलो ननंदबाई, बान बाटन जाबीन
जिठानीजी बनायलेव, कुसुम - बड़ा ॥२ ॥

माहेर मा मोरो औंदा, बहिन को बिह्या
असी कसी जाऊन बाई, कँगन मोरा जुना ।
घड़ायदेवना तुमि तरी, नवो कँगन जोड़ा ॥३॥

दुय सुपली रेहकाला, पड़दा सिवाओ
रेहका की जोड़ीला, झलम बँधाओ
संगमा ननंद चले अना देवर जोगड़ा ॥४॥

३. वाच उनकी काशी प्रयाग

माय - बाप, टुरी-पोटी का
मामा-मामी, भास्या-भासी का
आवता जाता लगसेत पाय
वाच उनकी काशी प्रयाग आय ॥१॥

भाई, बहीन - भाटो का
भौजाई, ननंद - आक्सू का
आवता जाता लगसेत पाय
वाच उनकी काशी प्रयाग आया ॥२॥

बेटा, माय - बाप का
बहु, सासु-सुसरो का
आवता जाता लगसेत पाय

वाच उनकी काशी, प्रयाग आय ॥३॥

भञ्जो, फुफा - फुफी का
पुतन्या, काका - काकी का
आवता जाता लगसेत पाय
वाच उनकी काशी प्रयाग आय ॥४॥

नाती-पोती, आजा - आजी का
जवाई - बोवा, सासु - सुसरो का
आवता-जाता लगसेत पाय
वाच उनकी काशी प्रयाग आय ॥५॥

बहीन - बेटा, मावसी-मोवस्या का
मावस्या - मावसी, बहीन - बेटी का
आवता जाता लगसेत पाय
वाच उन की काशी प्रयाग आय ॥६॥

४. पोवारहिन ला मोठो अभिमान

पुढS मोठांग, मंघS नाहनांग
मोठांगS कोठा, नाहानांगS जेवन-खान ।
पुढS बैठक मरदाना, मंघS आईमाई को ठिकान
आपल घर को, पोवारहिन ला मोठो अभिमान ॥१॥

खेत रव्हसेत सवान, बांधी भर लहरासे धान ।
धूरो ला रव्हसे खांड, पानी की नही कमतान ॥
इरा लक काटो धान, भारा लेजाव खऱ्यान
आपलS खेती को, पोवारहिनला मोठो अभिमान ॥२॥

कोठाहिन मा गाई - भसी, कुटारलक भरी रव्हसे गव्हान ।
बैल-खाट्या डोंगा-डोंगी पर, बुझाव सेति आपली ताहान ॥
सकारी मेरवन, दिवसS तनिस, रात साथी गवत को
इंतजाम ।
आपलS गाय-ढोर को पोवारहिनला मोठो अभिमान ॥३॥

नांगर-बखर साथी फास पजायरवन ठेवबिन ।
गाडो-खासर की भोवरीहिनला बेठ चढाबिन ।
मिरूग की बेरा भई, खात बिजाई को करो इंतजाम
आपलऽ किरसानी को पोवारहिनला मोठो अभिमान ।।४।।

५. देखो बाड़ी की शान

भेंडी, मिर्ची, संबार, सारनी की शान ।
लसुन कांदा भाजी, वाफा की शान ।।
गाव मा देखो, बाड़ी की शान ।।१।।

बाल, झुनकी दोरका, खाखर की शान ।
कोहोरो, लवकी ककडी, मांड़ो की शान ।।
गाव मा देखो, बाड़ी की शान ।।२।।

मकई का कनिश, आंगन की शान ।
घुया- कोचई, आंगधोनी की शान ।।
गाव मा देखो, बाड़ी की शान ।।३।।

केरा को खांब, बिहिर की शान ।
मोठी मोठी फनी, खांब की शान ।।
गाव मा देखो, बाड़ी की शान ।।४।।

६. फू बाई फू, फुगडी फू

फू बाई फू, फुगडी फू ।।धृ.।।

एक दूय तीन चार पाच सय सात
खेलता खेलता दम भऱ्यो, सोड़ मोरो हात ।।१।।

दूय तीन चार पाच सय सात आठ
खेलता खेलता दीवा लग्या, दुखन लगी पाठ ।।२।।

तीन चार पाच सय सात आठ नव
खेलता खेलता रात भई, भूल गई घर की बाट ।।३।।

चार पाच सय सात आठ नव दस
खेलता खेलता थक गई, तू बी खाल्या बस ।।४।।

पाच सय सात आठ नव दस ग्यारा
भूला बाई चल ओ आता, बज गया बारा ।।५।।

सय सात आठ नव दस ग्यारा बारा
ओरखो मोरी खिरापत, नाव सांगो खरा ।।६।।

चिवडा नही, घेंघरी नही, नही भेली पोहा
दूध नही, साखर नही, नही आता चाहा ।।७।।

आसपास आमी, मंज्यार बसो तुमी
ओवार सेजन आता सिव पारबती ।।८।।

७. पवारी पकवान

नवई की नव रोटी, खाबिन दुही माय-बेटी ।
अखाड़ी को पाठा, खाबिन दुही बाप-बेटा ।।धृ.।।

अखाड़ी ला बुल्ल्या-बुड्डा, जिवती ला अठई-सुकुरा ।
पांड ला लेपसी-गुंज्या, कान्हुबाला मठली-ठेठरा ।।१।।

पोरा ला करंजी-पापडी, दसरा ला महिरी-बड़ी ।
नवई ला नव-रोटी, दिवारी ला खीर-पुरी ।।२।।

संकरात ला तीर-लाडु, सिवरातरी ला काजु-किसमिस ।
सिमगा ला करंजी-पापडी, तीज ला पन्हा-सेवई ।।३।।

बारसो मा चाकोली-अनरसा, बिह्या मा सुवारी-मालपोहा ।
जेवन मा आटेल-भज्या, सराद मा खीर-बड़ा ।।४।।

नवतरि मा अकश्या-लेपसी, उन्हारो मा रस-धिवारी ।
बरसात मा झिंगा-मसरी, हिवारो मा बकरा-कोंबडी ।।५।।

१.४ आधुनिक गीत

अ) बैनगंगा क्षेत्रीय आधुनिक गीत

१. आमरी पवारी संस्कृति न्यारी से

आमरी पवारी संस्कृति न्यारी से,
आमला सबला प्यारी से ।।धृ.।।

आबू आमरो, धारा आमरो
मढ़ी देवास की, आमरी से ।। आमला.....।।

धार सुट्यो, विंध्य ओरांड्यो
भारत भूमि, आमरी से ।। आमला.....।।

धरतीपूत आमी, खेती बाड़ी सोनो
रेहका की जोड़ी, आमरी से ।। आमला....।।

क्षत्रीय आमरो बाना, ख़ड्ग आमरो मान
दसरा की महीरी, आमरी से ।। आमला...।।

कोन्ही कसे पवार, कोन्ही कसे पोवार
कालिका माई, आमरी से ।। आमला.....।।

बालाघाट देख्यो, भंडारा देख्यो
सोनो की सरी, आमरी से ।। आमला.....।।

सिवनी फिर्‍यो, नागपुर फिर्‍यो
नगरधन की मढ़ी, आमरी से ।। आमला....।।

खीर करंजी, बुल्या बड़ा, अनारसा
पातर रोटी, आमरी से ।। आमला....।।

मालव महाकौशल, विदर्भ देखलेव
राजाभोज विक्रम, आमरो से ।। आमला....।।

माटी तिलक कर, एकता बढ़ाओ
नवयुग की या बानी से ।। आमला.....।।

रचियता - भय्यालाल कटरे, अध्यापक, तुमसर.

२. तुनऽ का पुंज्यो

धरती पुंज्यो, आकाश पुंज्यो
धरम पुंज्यो, देवता पुंज्यो
यध्न पुंज्यो, अग्नि पुंज्यो
मानुस पर से जहां क वहां, तुनऽ का पुंज्यो? ।।१।।

माता पुंज्यो, मारोती पुंज्यो
राधा पुंज्यो, कन्हैय्या पुंज्यो
सीता पुंज्यो, राम पुंज्यो
मानुस पर से जहां क वहां, तुनऽ का पुंज्यो? ।।२।।

गणपति पुंज्यो, गौरी पुंज्यो
देव पुंज्यो, देवी पुंज्यो
घट पुंज्यो, लिंग पुंज्यो
मानुस पर से जहां क वहां, तुनऽ का पुंज्यो? ।।३।।

काली पुंज्यो, विद्या पुंज्यो
गोटा पुंज्यो, माटी पुंज्यो
पुनवा पुंज्यो, अवस पुंज्यो
मानुस पर से जहां क वहां, तुनऽ का पुंज्यो? ।।४।।

रचियता - बीरादेवी हनवत, भिलाई.

३. येनऽ साल परगयो सुका

औंदा काही पानी पऱ्यो नही, वार गयो सब धान,
भारी अकाल पर गयो, आता का खाये किरसान? ।।१।।

धानारी गई, तऽउन्हारी की धरीन सबनं आस,
पर येनऽ हिवारो को, पानीनऽ कर देईस सत्यानास ।।२।।

आता तीन डाव खानो ना आखर पर महाजनी कसी होये?
जाहां आपलं पोट की चिंता,वाहां बैल-ढोर को का होये? ।।३।।

आता टुरीहिनला कोन कस-कसो करे सार ?
न खाजो, न कपरा, अना नही से पैसा-अधला ।।४।।

सेत बिह्या बोहुत नातो-गोती मा, पर मानुस कसो जाये?
येनऽ साल मा पर गयो सुका, आता देवच बचाये ।।५।।

रचियता : श्रीमती उषा पवार, बालाघाट.

४. पोवारी बोली को परहेज नोको करो ।

असो-कसो गा तू पोवार भाऊ ।
नोको आपली मायबोली की निंदा गाऊ ।।धृ.।।

गुजराती, सिंधी, मारवाडी देखो
बजार रव्ह का दुकान, आपली बोली बोलसेती ।
अगा पर तुमला त मोठी शरम लगसे,
पोवारी मा बोलन की लाज लगसे ।।१।।

मुसलमानहिन नऽ आमला उर्दू सिखाईन,
अंग्रेजहिन नऽ आमला अंग्रेजी सिखाईन,
तुमि भी त धारा नगरी लका आयात,
मंग कोनला सांगो पोवारी सिखायात? ।।२।।

अरे बाबाजी गाडी परा पोवारी मा बोलसेती ।
अना, नाती उनला, जोर-जोर लऽ हाससेती
मोरा पोवार भाऊ, आता तरी समझो-सुधरो
पोवारी बोली को परहेज नोको करो ।।३।।

रचियता - हिरालाल बिसेन, नागपुर.

५. ये सब किरसान का आत संगी भाई

नौकर, चाकर, मानुस ना बाई
ये सब किरसान का आत संगी भाई ।।धृ।।
खेत मा रव्ह से तन, माती ना गोटा ।
वोको साथी होना नांगर, बखर ना पट्टा ।।१।।
गाडो, छाटी, खासर ना रेहका
चक्का, आस्कुड, जुआडी, सिवर ना जोता ।।२।।
दोर, दावा, बेसन, मुसका ना कासरा
उभारी, चऱ्हाट ना बारती देसेत आसरा ।।३।।
कुदर, पावडा, टिकास, इरा ना टंग्या
खुरसुनी, सुरई, गिलास, गडवा ना चोंग्या ।।४।।

वोडगा, सेनोडी, टोपली ना टोपला
किकरा, बिन्नो, चाप ना बसला ।।५।।
चालनी, गारनी, सुपडो ना सुपली ।
कुडो, बुदली, अधली ना पायली ।।६।।
घन, साबर, कुदरी ना हातोड़ी
सिलपाटा, खलबत्ता, उखरी ना कांडी ।।७।।
गुंड, घगरा, घमेला ना हांडी ।
गंगार, चरू, मथनी ना डोंगी ।।८।।
गोना, जाजम, पोता ना ढोला
कोथरी, बुदुरकी, कोठी मा गल्ला ।।९।।
आकोडी, तुतारी, खुट ना खुटी
अना रव्ह से खाट खऱ्यान मा टुटी ।।१०।।

रचियता - जय पटले, पवारी गीतगंगा (२०११) ।

ब) वर्धा क्षेत्रीय आधुनिक गीत

१. बिदाई गीत

डोरा भरऽ भरऽ जाय, बेटी सासू घरऽ जाय ।
माय किसनी को मन, आज कोसी बिलभाहे ।।१।।

दादा एक टक देखय, मोती टप-टप फेकय
जसी नद्दी कुई कूल, अपना नी देखय ।।२।।

भैय्या मनऽ-मनऽ सोचय, बहिन अंगना ह्य छोड़य
राखी कौनऽ कलाई, बांधेनी अब आय ।।३।।

काका सोच रह्या है, मन खेऽ कोसऽ रह्या ह्य
कोनऽ किलकारी मार्हे, सूना बाबुल का गाव ।।४।।

रचियता : गोपीनाथ कालभोर, रोढ़ा, जि.बैतुल

२. देवर भाभी संवाद

भाभी - सावन बरसय भादो गरजय,
मन मरो उडनो चाव्हय
ओ देवरजी तुम बन पाखी,
साजन खऽ ढुंढ लाओ
कोन देशऽ म गया तुमरा भाई,
कोन बाट गया भूल
जाओ उन खऽ लेयऽख आओ,
तन मऽ उठय् हय् शूल ॥१॥

देवर - म काहे का पंख लगाऊ
उड़ खऽ जाऊ दूर
दूर रव्हय मराऽ भैया, ओ भाभी
देऽ कोई मन्तर पूर ॥

भाभी आता सावन मेहंदी वाली,
गोरी हथेली लाहूँ ।
पेरा करनूं हाथ तुमारा,
असोऽ मंतर देहूँ
अब देवरजी उड़ जाओ तुम
भैया को लाओ तुम ढूंढ ॥ ॥३॥

रचियता : गोपीनाथ कालभोर, रोढ़ा, जि.बैतुल.

३. तुलसी को रच्यो हय् बिहाव

तुलसी को रच्यो हय् बिहाव
मरीऽ बारा बरस की तुलसी ॥
बाई का बाबुलजी को मन हरष्यो जाय
मरीऽ बारा बरस की तुलसी ओ ॥

बाई की मैय्याजी को मन हय उदास
मरीऽ बारा बरस की तुलसी ओ ॥

बाई का भैय्याजी को मन हरसो जाय
मरीऽ बारा बरस की तुलसी ओ ॥

रचियता : गोपीनाथ कालभोर, रोढ़ा, जि.बैतुल.

४. चौका बसो बारी दुलहन ओ

चौका बसो बारी दुलहन ओ
बाबुल जी से अरज करे
बाबुल अच्छा घर ब्हाहजो महाराज
जनम बेटी राज करहे ।
लिल्लोड़ो घोड़ी पलानो रे
चाँदी रे सोना लेन चले,
बाट म मिल गया राहगिर रे
साजन तुम कहाँ रे चले
हमरा घरऽ कन्या कुँवारी रे
चाँदी रे सोना लेन चले
फिर जाओ, साजन, फिर जाओ रे -
चाँदी रे सोना हमरे पहरे ॥ चौका

रचियता : गोपीनाथ कालभोर, रोढ़ा, जि.बैतुल.

५. मेंहदी का गीत

कहाँ सी मेंहदी उपजो, बीर सावन रे,
कहाँ रे लियो अवतार, गुलाबी रंग सावन रे ॥१॥
सरग सी मेंहदी उपजी, बीर सावन रे,
धरती लियो रे अवतार गुलाबी रंग सावन रे ॥२॥
मेंहदी जो आई बागों में बोर सावन रे,
चिड़ियाँ चुन-चुन खाय गुलाबी रंग सावन रे ॥३॥
छोटो सो देवरया लाड़िलो बीर सावन रे,
मेंहदी राखन जाय गुलाबी रंग सावन रे ॥४॥
तोड़ी तुड़ाई टोपला भरी बीर सावन रे,
ले गई लश्कर बजार गुलाबी रंग सावन रे ॥५॥
कैसे टका तोरी मेंहदी बीर सावन रे,
काहो रे सेर बिकाय गुलाबी रंग सावन रे ॥६॥
रुपया टका मरीऽ मेंहदी बीर सावन रे,
खोटो रे सेर वि काय गुलाबी रंग सावन रे ॥७॥
कहाँ से लाऊ सिलं, सिलौटा बीर सावन रे,
कहाँ रे लाऊ गुजरात गुलाबी रंग सावन रे ॥८॥

६. दारऽ म डालै पानी रे

गाड़ी सी गाड़ी ठिल गयी, मोरे रंजन भँवरा ।
पैदल की न्हाय गिनती, मोरे रंजन भँवरा ।
वा मंढा पै चईढ़ चईढ़ देखय मोरे रंजन भँवरा ।
वा कोदय म डालै रेती रे, मोरे रंजन भँवरा ।
वां दार म डालै पानी रे, मोरे रंजन भँवरा ।

रचियता - मुन्नालाल देवासे, आर्वी, जि.वर्धी.

२. पवारी गद्य रचनाएँ

अ. बैनगंगा क्षेत्रीय पवारी

१. 'मि चुल्हो फुकतच रही'

बाबूजीगी की सेकंड ड्युटी होती । पील-पील दिवस करत होतो । माय अना मि आमरऽ सपरीकऽ बाहेर आंगन मा बस्या होता । मि अभ्यास करनसाठी हाथ मा पुस्तक धरेव होती । माय की मोरऽ हाथमाकऽ इंग्रजी पुस्तक पर नजर पड़ी तऽ माय एकदम कवन लगी, ''आमला त नही समजऽ. बाई तुमरऽ येनऽ पुस्तक मा को एकही अक्षर'' । मि कहेव, ''काहे तऽ माय! का सांगु बेटी, अरम नही त करम, अना देव नही त धरम''। अओ अजीगी गांव का मुकुड़दम, तीस एकर खेती, मोला पाच भाई अना उनकी मि एकच बहिन *बारुला बाई* । मोठी लाड़की होती बाई । अजीगी इत उतल का आया अना मि दिसी नही त ''मोरी बेटी कहां गई का बापा'' कव्हत. मोला घर को पाय बाहेर टाकन की उजागरी नोहती । मि उनला दिसी म्हणजे शांत होती । भाऊगितऽ मोरो चुंमा लेये बिगर खेत मा जात नोहता। आमरऽ गाव मा चवथी वरी इस्कुल । मोला सिकन की मोठी हाव । चौथी वरी मोरो पह्यलो नंबर ठेयवच रवऽ । गाव मा जो कोनी मास्तर आयव ऊ अजीगीन को संगोच । अजीगीन ला कंदरातई होता । बीस साल वरी मुकुडदमगिरी करीन त फुकटच करी रहेन का! अओ, दरोगा जमादार त अजीगीन क कहेव बिगर कोनीहि रपट लेत नोहता। कोतवाल त उनको लका थरथरा कापती । मोरऽ आजा की पाच गाव की मालगुजारी तब

पासूनच दरारा होतो । गाव कमिटी रव्ह का कोनी को लहानसो झंगड़ा-तंटा, अजीगी कऽ न्याय सिवाई न्याय होत नोहोतो । मोला तरास आय गयव माय को माहेर - पुरान आयकता-आयकता अना जोर लका कहेव 'अओ तोर स्कुल की त सांग'! अरे हो मि इस्कुल की सांगत होती नही.... ।

त बेटी आमरऽ गाव मा चवथी वरीच इस्कुल होतो. एक दिवस मि मायला कहेव, 'माय अमदा चवथी क बाद सिकाओ का नही त ओ?' त माय कसे, 'काहे नही सिकायती त ओ । तोरा अजीगी काही भलताच पुरातन बिचार का नाहती बाबा । अना तोरो त उनला अती लोभ से ।'

चवथी को साल मनजे बोरडऽ की परीक्ष्या. मि परीक्ष्या पहिलऽ नंबर लका पास भई । जिला मा चांगलो पह्यलो नंबरही आयव । अज पासून बीस बरसा पह्यले असा पेपर-गीपर गाव खेडाईन मा कोंज्या जात होता ओ। गावकऽ लोकईन ला मालुम होनला पायजे मुहून गावभर मुनादी भई । कोतवाल गाव भर फिरेव, 'ऐका भायलो, आमच्या मुकुड़दमाची पोरगी बारूला बाई चवथ्या वर्गात भंडारा जिल्ह्यात पहिली आली हो ऽ ऽ ऽ'' ।

जितन-उतन मोरोच नाव की बात । मंग बरसाद लगी । आमरो बेटार की बामन की टुरी इंदिरा साकोली कऽ इस्कुल मा जान बसी । मि अजीगीन ला कहेव - ''अजी, मोरो नाव भरती भयो?'' त अजीगी कवशेत कसा, 'येक सामने सिकनो आमरो काम नोहे बेटी ।' मोला त मजाकच लगी । मनमा बिचार करेव अजीगितऽ मोरो संगऽ असीच मज्याक कर सेती। पर एक महिना बीत गयो, मोला इस्कुल जानला कोनी सांगतच नोहतो । मोरा भाईबंद भी चवथी पास होयकर खेती-बाड़ी को काम करती। इस्कुल मनजे उनला का महत्त्व? मोरो नाराज मन कोनला सांगे, तरी एक दिवस मायला कहेव,''माय मोला सिकाओ काहे नही त ओ?''

त माय मोठी चांगली कसे, ''बेटी तू त बटरा की सेंग सेस ।'' इस्कुल सिककना कोनको भलो भईसे अना सुंदर टुरिकन देखनेवाला कुतरा हजार, बेटी । अना येव इस्कुल बिस्कुल आमरो जात को काम नोहे। केतोकही सिकजो तरी नसीब को चुलो सुटे थोडीकच'' । इंदिरा कर देखकर मोरो कलेजा अंदर को अंदर करपत होतो बेटी । पर सांगू त कोनला....?

तेरा साल की होती त चुल्हाड का पटिलगी उन को नहान टूरासाठी मोला देखनला आया, पायपानी भयो । भाऊ न चाहा, अना मि पान-सुपारी लिजायव । मि साडी पेहरेव त राजा की रानी दून कमी सुंदर दिसत नोहती, असी मोरी माय कवत होती । मोला देखता बरोबर पटिलगीननं पसंद करीन, ‘‘ठीक से मुकुडदम साहेब, तुमरी टुरी आमला पसंद से ।’’ अजीनऽ बिचारीस ‘‘टुरा कहांवरी सिकीसे तजी’’। ‘दसवी नापास भयो, खेती मा धान धनसी त होत नही, अना आज-काल क टुराईनला चिखलमा फसन को तरास ही आवसे, पाच साल भया नागपुर क एम.आय.डी.सी. मा एक कंपनी मा बाबु कातऽ से खरा.’’ मि दरवाजो कऽ आड़कलका देखत होती, मन क मनमा हासत होती । नागपुर को नाव आयकेव अना असो लगन लग्यो, मोरा त आता तगदीरच सुधर गया । मि बाई तांदूरच बेचूं । सिकी नही तरी चांगलो घर त मिलेव मुहुन मोठी खूश !

आठ दिवस बाद तोरा बाबूजीगी मोला देखनला आया । जीन को प्यांट, हिप्पी कट बाल । देखनला तऽ राजा को राजकुंवर । एक महिन्या बाद बिह्या भयो । दूय साल बाद बोरोनोकी आयी । तोरो बाबूजीगीनऽ मोला नागपुरऽ आनीन ।

देखसूतऽ झोपड़पट्टी.....एक महिना काम, त दूय महिना सुट्टी....

पर बाई ‘‘आपली मांडी आपुनच झाकनो लगसे ।’’ आबही तोरंऽ मामाईनला इनक नौकरी क बारो मा मालुम नाहाय... ।

मि कहेव, ‘‘माय बामनकी टुरी इंदिरा कहांवरी सिकी तऽ ओ ।’’

माय को चेहरा परा पानी नोहतो । खोली मा जाता-जाता माय आसू पोसत होती अना कवन बसी ‘‘कहांवरी कसेस बेटी, अओ आमरऽ बेटार की इंदिरा कॉलेज की प्रोफेसर भई, अना मि चुलो फुकत ऽ ऽ च रही.’’

रचियता - हिरालाल बिसेन, जयताळा, नागपुर.

२. ‘बेगरचार’

झुंझुरका पासूनच आई-माई, मरद-माना बोलन को टुबुर-टुबुर आवाज शामराव काका को घरल का आवत होतो । बर्तन-भांडा बजत होता। अवो नत्थु भी कालच नागपुर लका आयेव, संपतको मन्यासाठी तीन-चाकी सायकल अना हाथ की घडी आन्या मुहुन भागरता सांगत होती । मोरी भी जप उचाटी । थंडी का दिवस, दुय कथळी आंग परा ओढकर पुरो ध्यान शामराव काकाको घरकन लगायकर मन मा बिचार आयेव - बटा नत्थु सकारीच नागपुर ला नही जाय का बापा? पर काल काही तसी बातच भई नोहती बस्स! एक ढूरूक लगी ना आंबा परका कावरा कांवऽऽ कावऽऽ चिल्लान बस्स्या । मि कहेव भई सकार । अना धरेव रस्ता शामराव काका को घरकी । देखसु तं माधव पटील बिना हात को कुर्सी पर बसेव होतो । शामराव काका कसे ‘‘जाय रे संपत, गंगाराम भाऊ ला भी बुलायकर आन। अज ईनको फैसला, होयच पायजे । संपत भी उठेव, चौबीस इंची सायकल परा टांग टाकीस, अना निकलेव गंगाराम भाऊला बुलावण । घडीभर मा गंगाराम, भिमराव, गजानन भाऊ भया जमा!

लहानांग लका कॉटली मा बिना दूध की चाहा आयी । काहे का दूध चंदी पर लिजान साठी कमी होये मुहुन । संग मा दुय रिकामा कप । आता चाहा पानी भयोव । मोरो मन को गुंता काही करेव सुटत नोहतो । येतरा लोक जमा काहे भया । देखता-देखता बर्तन भांडा, भानी-बटका, गिलास-गड्डू, धान-धनसी, आंगन मा आवन बस्स्या । धीरू-धीरू मोरो भी टयूब लाईट पेटन लगेव । मन मा लगन लगेव का जरूर ईनको घरं बेगरचारच रहे ।

काकळमीसी वालो भिमराव कसे, ‘‘भागरता, चलो लवकर-लवकर सामान आवनदेव.’’ भागरता मोठी खुश होती । ओटा-पोटा खोसकर इतन-उतन होत होती । धुरपता भी काही कम खुश नोहती । वाही आपलो काम बरोबर करत होती । खानलेन को सपा सामान बाहेर काहाडकन भयोव । आता पारी आयी सोनो-नाणो की । भागरता अना धुरपता को आंगपरा तसो काही भरेव घरको सोनो नोहतो । पर साठ को घर मा पोहची जानका काकी सोनोलका पुरी पिवरी गप्प होती, एक कोनटोमा बसकर बुट-बुट रोवत होती। वोका आँसु पोसनला कोनीच नोहतो । काहे का, बेटी रही तं माय को

दुख समझ से । पर येनऽ मामलो मा जानका काकी तसी अभागीनच....।

देखता-देखता आंगन माको सामान दुय हिस्सा मा बाटकर भयोव। गंगाराम भाऊ कसे 'चल ओ मावसीबाई सोनो काहाडनला । जानका काकी घरमालका बाहेर आयी । मुरली सोनार भी वंज्या तैयारच होतो, सोनो काहाड़ कर बजन करनसाठी । काही दुखमाच पर जरा आरामलकाच जानका काकीनं फिरकी टोलाकी बारी, नथ, पाटली, काहाड़कन देईस । अना जसो मुरली सोनारन साकरी-तरफईनला हात लगाईस त, काकी कोनी मरेव वानी रोवन लगी । सोनरन भी साकरी तरफई को हात सोड देईस । सब जन आपस मा धीरू-धीरू घुसुरपुसुर करन बस्स्या ।' का भयोव बुडगीला, एकाएक काहे रोवन बसी । जानका काकी को जबाब होतो - ''का सांगु दादा जे को दुख ओलाच रव्हसे ।''

पंचायत एकाएक गप्प भई । तोंडपर की मासी उळत नोहती । बुडगी माय ला अक्कल का दुय शब्द सांगे कोण? वत्तमा माधव पटील न हिम्मत करीस, 'सांग'! तं काकी कसो दुख । जानका काकी को चेहरा लाल-लाल भयोव, काकी आग का गोला उगलन बस्सी, दुपार को दिवस वानी ।' अरे तुमला येनऽ साकरी तरफईन को महत्त्व का समजे, ये साकरी तरफईन नोहती, या आय मोरो खानदान की निशानी । ये दुय तोरा की साकरी तरफईन मोरो आजऽ - सासू को आंगपरा होती । ओको मरे को बाद मा मोरो सासू को आंग परा आयी । अना आता मोरो आंगपरा, येन नत्थ्या को जनम पासून सेती, येव बिसरो मरन को बादमाच उतरायकन होये, अज तुमी येनऽ दुनिया का हुशार लोकका जानो, येनऽ पुरानो विसरो को मोल । या आमरो खानदान की निशानीच नोहे त या आय आमरो जातकी रीती-रिवाज की कहानी । येला कसेत परंपरा, बूग्गी, मि तुमरो येतरी पढ़ी लिखी नाहव, पर मोला समजसे बेगरचार अना बटवारा का होसे तं, अगा येन बेगरचारकऽ पायी, चांगलो-चांगलो घर को, गाव को अना आमरो सब को सत्यानास भयोव । अरे भिक ला लग्या चांगला-चांगला पटिल । या बेगरचार की परंपरा चांगली नोहोय । कायेला कसेत सम, वहां संपती । ये सप्पा बातं त मोरो घर को शहानोनच कव्हनला पायजे । पर मोला कवनो पड़से । येव नत्थ्या दुय दिवस को नागपुर ला का गयोव चिठ्ठी पर चिठ्ठी

पठाव से, बेगरचार पायजे मुहुन, अना लोक दिखावासाठी लहान भाई को बेटासाठी तीन चाकी सायकल अना घडी आनसे । वारे नत्थु !, ''डोई परा हाथ अना पाठ परा लाथ'' धन धन्य रे तोरी जिन्दगी, कायला सिक्यात रे. दुय वरग.... बुड़गीमाय येतरो पराच रूकी नही । आनिस ओय चिठ्ठी अना फेकीस पंचायत परा ।

येव संपत्या भी का सांगे गा, भरी नवतरी मा भाई साठी पायली भर पोहा का कुळो भर चाऊर नही पठाव । उ हजारही कमावत रहे पर आस रव्ह से बाप दादा को इस्टेट की । कायला कसेत, 'बेटी बटकी भर पेज की अना बाहेर गांव को भाई कुळो भर चाऊर की आस ठेवसे मुहुन'......

येव बेगरचार तबऽ होये, जबऽ तुमी पंचायत का लोक मोरो आंग का दुयं तुकडा करो, तलवार लका! नही तं उंदीरमार जहर की पुड़ी पीवायकर मोला मार टाको । मग करो हासत-खुशत बेगरचार.....''

शामराव काका मंघलका आयेव । जानका काकी ला कसे, ''अओ तू कोनला सांगसेस, पंचायत कबकीच उठ गयी, अना देख, आंगन को सामान भी जहां को वहां चली गयी से । ये देख, तोरा दूही बेटा गरोमा हात टाककर कसा हासऽ सेती । अना बहू भी बहिनी-बहिनी वानी कामधंदा करनसाठी रांधन खोली मा गयी सेती । सब घर मा आय गया सेती ।''

तुनऽ आमला बचाईस ओ माय, असो दुई टूरा कव्हन लग्या अना पाय पडन लग्या ।

रचियता - हिरालाल बिसेन, जयताळा, नागपुर.

३. 'का सांगू बाबा - अस्सी भई मज्या'

उन्हारो का दिवस होता । पाय मनमाने लासत होता । आंग मालक खूब घाम निंघत होतो का बनयान पीरन लायक भई होती । असो कडक उन्हारो मा मोला आमर रिस्तेदार को घरं बिह्याला जान को होतो । नई नवेली रिस्तेदारी होती । मोरं बायकोनं एक झोऱ्या अना एक सुटकेस धरीस। आमि होन्डा गाडीलका बिह्याला जानला बस्या । मोरो बायकोनं बिह्या की पत्रीकाच नोव्हती धरीस। बडूमामाजी को घरं बिह्या से यतरो मालूम होतो । वा भी बऊत दिवस पासून, बडूमामाजी को गावं गई नोहती । मी वला कहेव,

तोला त घर भी मालूम नाहाय, बडूमामाजी को नाव भी मालुम नाहाय अना बिहया की पत्रीका भी गावच बिसरीस तबं वा (वा मनजे मोरी घरवाली) कव्हन बसी, तुमि जादा बिचार नोको करो, जेको आगण मा मांडो दिसे, वोको घरं जानको । मोला या बात पटी । बात बात मा एक घंटा मा बिह्यावालो गाव आयेव । गांव मोठो डगर होतो । मोरो साठी नवोच होतो । पहले पहले त मांडोको पत्ताच नोहोतो । आमि यनं गल्लीमालक वनं गल्लीमा अना वनं गल्लीमालक यन गल्लीमा फिरत होता । असो फिरत फिरत एक घर को आंगण मा जांबुर को डार को मांडो दिसेव । मि गाडीला बीरीक मारेव । गाडी मांडो जवरच ठेयेव । मोरी नवरी गाडीपरलका उतरी। मांडो मा पाहुणा बस्या होता । घरवालो बडूमामाजी कोणतो रहे येनं बिचारमा मि अना मोरी बायको भालभुल देखत होता । आमरोकन सप्पा पावणा देखत होता । वोतरो मा एक बाई मोरो जवर आयी । मोला कबं आयात भाऊ मुहुन बिचारन लगी । पोवारी बोली मा कहिस त मोला चांगलो लगेव। आमरा कपडा शहरी बनावट का होता मुहुन आमरो मान पान चालू भयोव। आमला पाय धोवन ला पानी, पीवनला थंडो पानी, अना नास्ता भी भेटेव । तरी मोरो मन मा शंका होतीच? यवं घर बडूमामाजीको आय का नोहेव । कोणीच ओरकी का दिसत नोहता । मि मोरी गाडी सावोली मा ठेवन को बहानो लका गाडी जवर गयोव । गाडी जवर एक टुरा आरसा देखत होतो। वोला आस्तीलका बिचारेव, ''नवरी टुरी को बाबुजी तोरो कोन होसे?'' टुरा कव्हनला बसेव ''नवरी को बाबुजी अना मोरो बाबुजी एकच आय । मोरोचं बडीबाईं को तं बिया से ।'' वोको बाबुजी को नाव बिचारन की मोरी हिम्मतच नही भयी । मोरी तं 'सात गया ना पाच रह्या' असी हालत भयी होती. मि मोरो बायकोला मान हलायकन इसारा करेव का यव घर आपलो बडूमामाजी को नोहो । जल्दी चल । वनं भी मंघो पुढो को बिचार नही देखीस ना गाडी पर आयखन बसी । मि पटकन गाडी ला कीक मारेव । जानला बसेव तसोच एक पाहूणा को आवाज आयोव - ''कहान जासेव भाऊ, कहान जासेव भाऊ. पयले जेवण करो मंग जावो ''. मोला त आयकन की फुरसत नोहोती । ''जल्दी आऊसु'' येतरोच कहेव. मोला जेलमालकां सुटका भयी असो लगत होतो ।

मोरं बायको को बडूमामाजी को घर कहान भेटे, मि बिचार मा पडेव. वोत्रो मा लाऊडसपीकर मा गाना आयकु आयेव. ''तेल सायी वो तेल सायी, तेलमा पडी कायी'' मोरो मन मा आयोव का यव घर आमरो बडूमामाजी को रहेच. आमि पोंगा को आवाज को नेमलक गया, पहले मांडो दिसेव । मि आहिस्तालका गाडी चलावत होतो । मोठी हिम्मत करकन गाडी मांडो जवर रोकेव । जितन उतन ओरखीकाच लोक दिसत होता । ''कबं आयात भाऊ'' असो येकी फुफाबाई कव्हत होती। पहेलो घर को ''कब आयात भाऊ,'' अनां आब को ''कब आयात भाऊ'' येको मा बहुत फरक होतो । पहलो आवाज पहीचान को नोहोतो । पर आबको पहीचान को होतो। सप्पा ओरखीका पाहुना राम राम लेत होता । नवरी टुरी को बाबुजी बडूमामाजी चोवता बरोबर मि राम राम लेयेव ।

आमि दुई झन सकारी नव बजेच आवन का होता । अना आबं अकरा बज्या होता. कायला उशीर भयोव मुहुन मोरो बायको की फुफा बाई बिचारत होती । मि आपलं मन मा कहेव, ''का सांगू फूफा बाई तुमला आपली करम कहानी ।'' गाडी खराब भयी होती असो सांगंकन चुपच रहेव। मोरी बायको मन को मन मा हासत होती । घडी भरमाचं मोला मालुम भयोव का एकच गांव मा चार बिह्या सेती। तरी मोला लगेवच का नसीब बाबा घर लवकरच भेटेव ।

बिह्या का नेंग चालू होता । पाहुना आवतच होता । बिह्यामा जवाई (नवरीको सगो जीजाजी) हीरोच बनेव होतो । ओको ताल मावतच नोहोतो। घडी घडी लाउडसपीकर मा जवाई इतन आवो तुमरो बिना बहुत काम अड़ी से, असो दस दस मीनीटलक पुकारत होतो । जवाई को मान, पान, अना, शान देखकर मोलाई कसोतं लगत होतो । असो दिवस मोला भी देखनला भेटे, असो मोला लगत होतो । ''बया दिल मे खुश'' अशी मोरी हालत भई होती ।

बिह्या मोठो ठाट-माट लका भयोव । सप्पा काम चकाचक होतो । जवाई की खुबच चलती होती । कोणती चीज की कमी नोहती । यकोपर लका लगत होतो का जवाई सोराना से । बिह्या सरेपर जवाई लोक मांडोझाडाई साठी वसुली (बरगण) करनला बस्या । बरगणी करनसाठी

सग्गो जवाई, पुतनजवाई, भासो जवाई (भजो जवाई), जवाई को भाई म्हणजे साईड जवाई असा पाच सय जन होता । देड हजार को आसपास बरगणी भयी होती । खान ला मटन, पीवन ला उनको पसंत की देशी दारू होती । मटन नही खाणेवालोसाठी आलुगोबी की भाजी अना जीलेबी होती। मांडोझाडायी की पंगत लहानांग बसी होती । सप्पा काम चांगलोच होतो । पण कहानतरी माशी सिकी । जवाई जवाई मा बाचाबाची भयी । कोंबडा की भाजी बनावता बनावता कोणतो तरी जवाईनं रसा कमी होय मुहून`एक गडू पानी टाकीस । यको परलक झगडा भयोव । बात बात पर झगडा बढतच होतो । लहान लहान बातपर एक जवाई दुसरो जवाई की धोवत होतो । दुसरो पहेलो की धोवत होतो । यतरो मा सग्गो जवाई को पारा सनकेव । (मी वोको जवरच जेवनला बसेव होतो). उ ठावपर लका तसोच उठेव । आपली सायकल धरीस अना गारी देत देत परायेव । जवाई, जवाई कवत पाहुना उनको मंघ धावत होता । जवाई पेलन ला खाली नोहोतो । वोला जवाई का चीज से यव सप्पाईन ला देखावन को होतो ।

जवाई त गयेव पर इतन जवाई की घरवाली हिरोहीन बनी होती । जो भेटे वोला, काही भी बोलनो चालू होतो । मन मा जेकी जेकी कुरकुरी होती वोकी ''पानीदुन पातर'' हालत करत होती । वा दुय दुय मानसहीन ला संभालत नोहोती । जीनकी जीनकी पानीदुन पातर भयी उन न आप आपलों गावको रस्ता धरीन । मांडोझडायी को जेवन भयोवच नही । मोरी मटन खान की इच्छा होती पर जवाई को तमाशा भयोव मुहुन सप्पा बुजरूग उपाशीच उठ्या मुहुन मि भी उपाशीच उठेव । सप्पा ताल मा बेताल, चव मा बेचव भयी होती । मोला भी नाराजीच आयी । मि आपलो घरवालीला कहेव, ''तोला आवनको रहेतं आव नहीत रव ।'' वा काहीच कव्हत नोहोती । चुपचाप आपलो झोऱ्या अना सुटकेस धरकन गाडीपर आयकन बसी । मांडो झाडाई को जेवन की आस, आसच रय गयी । लहानसो तोंड करकन मि गाडीलका आपलो गांव जात होतो । मनमा बहुत बिचार आवत होता । मोला लगत होतो - घडीभर झगडा नही भयोव रवतो त बेस नही का भयव रव्हतो ।

रचयिता प्रा. डॉ. शेखराम येळेकर, रा.तु.म.नागपुर विद्यापीठ, नागपुर.

ब) वर्धा क्षेत्रीय पवारी

१. मरो गाव को पटिल

मरो गाव को पटिल को नाव राजाराम पटिल हैय (स) । पटलिन बाई को नाव मंजुला बाई हैय । पटिल को बहुत बडो घर हैय । हमी पटिल को घर ला ब्याड्या कवहय । ब्याड्या को दरवाजा इत्तो बडो हैय कि, ओमसी हत्ती चली जाय । दरवाजा को दोही बाजुला पार (धडी) हैय । पार (धडी) प बठ कन पटिल औउर गाववाला बात करय । दरवाजा सी अन्दर जाकऽ बडोजात आंगन आवय । आँगन को दोही बाजुला बडा-बडा कोठा हैय । वी कोठा म अलग अलग बइल, गाय, भैयसी, बोदा बकरी बांधय हैय । ढोर को सामनऽ गव्हान म कड़बा-कुटार, ढेप, सरकी खानला देय । ढोर हुन ला दोर (दावा) सी असा बांधय की वी खड़ा अऊर बठ भी सकय । कोठाला रोज सफा करय, गव्हानला भी रोज सफा करय, अऊर गोबर ला डुली म भर क घुड़ा म डालय हैय । आँगन ला दिन रोज सोड़-साड करय अऊर गोबडली सी छड़ा डालेय । उ आगन ला बड़ो आगन कवहय । कोठा को ढाबा प घास, पलार, कडबा, कुटार भरक रखय । ढाबा पर जान आवन लगुत पायरी नीते निशानी (सीढ़ी) रवहय हैय । एक कोन्यॉ म पानी पेन साठी दो-तीन सीमीठ का टाका हुन रखया हैय ।

बलकी गायकी भैयस्की, बइल, गाय, भैयसी अरू बकरी हुन ला सरकी सरकी दिन भर चरान ला लिजाय हैय । घोडकी घोडा-की जोडी की खोउ - दौउ म रवहय हैय । किरसानी को सीजन म नांगऱ्या, बखऱ्या दताऱ्या, बइल हुनला नागर बखर, दतारी म जुपय हैय । मिरग लगन को पहिले बइल गाड़ी सी घुडा को गोबर खात खेत म ली जाक डालय बाद म नागर बखर सी खेत की बही करय हैय । बरसात आई का गारा ऊर चिखल करय । अन सार खीचकन धान लगाय हैय ।

हवेली तीन - चार तसमा की रहवय । ऑगन को सामनऽ अन्दर की ऊची अऊर बहार की नीची रवहय हैय । उपर की ओसरी म टेबिल खुर्चि अरू पलंग पेटी मानविक लोग अऊ पावनाहुन साठी बठन ला रखय हैय । खलुस की ओसारी म तडु नीते, चादर बिछाकन रखय हैय । खलुस की

छपरी म गाव का लोग अरू वरसाल्या हुन बठय हैय । उप्पर की ओसारी को दरवाजा सी अघाड घर म जाय । या अघाड घर अदमी हुन को बठन लगुन रवहय हैय । अघाड घर को आजु-बाजु म बड़ी बड़ी खोली सोन लगुत (साठी) रवहय हैय । बठन की खोली सी पासअ् जान साठी दरवाजा रवहय। उ दरवाजा सी पासअ् की उप्पर खलुस की ओसरी, देवघर, राह्नी, आंग धोना अरू सामनऽ को छोटो सो आंगन म आनु-जानु करय हैय । ओसरी को एक कोन्या म मोगरी (कांडी) सी धान, तोर कुटय हैय । ओको बाजु म घट्टी (दरन जाता) हैय, ओमअ् गहु को पीठ, दार को चुन, अरू चऊर दरय हैय । वहाच बाजु म एक ओखरी अरू मुस्सर हेय, ओसी मसाला कुटय हैय। राह्नी म मट्टी को हन्डा अरू घघरा रखन का बेट हैय । उनमा पेन को पानी पतलो पाला सी गार कन अरू झाक कन रखय । जगहच सिल लोडा रवहय , ओपर हिरवो समार बाट्य हैय । माती, कलय, पीतर अरू स्टील का बर्तन म रांधा राधय हैय । पंगत म जेवन व्हाडन को पहिले थोडो थोडो चुल्हा म अग्नि देवला चढ़ाय हैय । पासअ् को आँगन को बाद बाडी (बाड़ा) रवहय । एक कोन्या म भीर (कुऑ/बिहिर), टाका, अरू मोट चलान साठी धाव रवह्य हैय ।

पटिल का चार पोऱ्या अरू तीन पोरी हैय । बडो पोऱ्या किरसनी देख-राख करय, दुसरो वकील, तिसरो मास्तर अरू चौथो नेतागिरी करय। पोरी हुन अपनो अपनो घरअ् सुखी हैय ।

पटिल जगअ् बड़ी गाँवखारी जमीन, कारोट की जमीन, उन्हारी की जमीन फसल साठी अच्छी हैय । पटिल ला धान, गहु, तोर, तिल्ली, उडिद, सोला, लाखोरी, जवस, जोन्धरा (जवारी) की खोब फसल होय हैय। पटिल को खेत म साल भर सालन भाजी को निकलय हैय । पटिल ला दुध, दहि, ताक, घीव की कई कमी नहाय हैय । पटिल की बड़ी अमराई म महु को मोहरान अन परसा को जंगल हैय । पटिल ला आम्बा, महु, परसा लक, लाख की फसल अरू जंगल सी मयाल, फाटा, जलाऊ लकडी सी खुब आमदनी होय हैय । पटिल खुब (खोब) धनी हैय । ओको जगअ् तिजोरी हैय, अरू साहुकारी करय हैय ।

डॉ. (कु.) मंगला कड़वे, (पीएच.डी.) प्रो. हिस्लाप कॉलेज, नागपुर.

२. ले जाओ ना एक गाड़ी कुटार

मरो गाव मा तुकोबा नाव को एक मानुस हतो । तुकोबा माय-बाप को एकच पोऱ्या हतो । ओका माय-बाप नान्हापन माच मर गया हता । तबऽ ओको पालन-पोषन ओका काका-काकी ना करयो । ओकी एक आऊत की खेती हतो । खेती-बाड़ी काका-काकी नच सम्हाली । तुकोबा नादान हतो तबच एनऽ पोऱ्या को बिह्या काका-काकी न गावच की पोरी मांगखऽ कर दियो । तबऽ एनऽ पोऱ्या ख कईच नी कड़त रहे । तुकोबा हुशियार भयो तबऽ ओकी लोगनी ख बोरोनो सो लाई । ओकी लोगनी को नाव सोनाबाई हतो। सोनाबाई ख एक पोरी भई । सोना बाई ख बारतपन म खूब अड़चन भई अनऽ एका-एक वा मर गई ।

तबऽ तुकोबा पर लय भारी संकट आ पड्यो । ओनऽ खुबच कड़काई का दिन काट्या । अनऽ आपनी पोरी जयवन्ती को पालन-पोषन कऱ्यो। जयवन्ती सय बरीस की भई तबऽ गावमच शाला मा लिखन ख जान लगी । येना गावमाच पाचवी होरी पढ़ी । तबऽ गावकाच कगार मा दुसरो गांव मा हाईसकूल हतो वहान जयवन्ती ना ग्यारवी होरी पढखन पास हो गई। अब तुकोबा ख जयवन्ती को बिह्या की फिकर लगी । पोरी पढ़ी-लिखी अनऽ चालाक आऊर सुंदर हती । इतऽ उतऽ उ सी पोरी ख देखन ख लय पोऱ्या आयो ओनऽ बी हुंडामरूपया, घड़ी, टीवी अनऽ स्कूटर मांग्या । तुकोबा बी लय चालाक हतो । ओनऽ सब कबूल कर लियो, तबऽ बात पक्की भई, अनऽ बिह्या की तैय्यारी पूरी कर ली तबऽ बिह्या की बरात आई । बिह्या मा पोरी ला बरतन-भांडा दायजा मा दिया । पोऱ्या का हाथ मा घड़ी बांध दी तबऽ पोऱ्या कव्हन लग्यो - 'बुआजी अनऽ आरू सामान कहां स?' तबऽ तुकोबा न कह्यो कि 'म बिहा का जोड़ताड़ मा लग्यो रह्यो तेंक़ा मारे मन आबऽ गंहू की दावन नि करी, अबऽ यू बिहा सो मोकलो हो ख गंहू की दावन कर हूं तबऽ ज्यादा ती नी ले जानू एक गाड़ी' ।

तबऽ बरात की बिदा भई । दुसरा दिन तुकोबा जवाई बेटी ख आपना घरा ले खऽ आयो । दूई दिन का बाद जवाई ना आपना घर जान की तैयारी लगाई । तबऽ तुकोबा ना एक बगाड़ी जुप दो, अनऽ एक गाडी मा कुटार भरखन तैयार कर दी, तबऽ जवाई ना टीवी अन एक स्कुटर मांगी ।

तबऽ तुकोबा कव्हन लग्यो, 'तुम्ही कुटार कुटार करत रहेता, ले जाओ एक गाडी कुटार भरख्वन तैयार स ।' तबऽ जवाई कव्हन लग्यो 'कुटार नि मरवा फटफटी अनऽ टीवी होनू ।' तबऽ तुकोबा कव्हन लग्यो 'हम अनपढ़ मानुस, हमरवा नि कड़त पहलेच कहेनि सांग्यो कि मरवा फटफटी होनू । अबऽ मरा पास पैसा नाहाय, म गरीब मानुस । टिफिन डब्बा, बरतन-भांडा दायजा म दे दियो, अनऽ कुटार लघेते ले जाओ ।'

रचयिता सी. एल. पठारे, गुलाबरा, छिंदवाडा (म.प्र.)

३. मुहावरे, कहावते, पहेलिया

३.१ पवारी मुहावरे (idioms)

अ) बैनगंगा तटीय पवारी मुहावरें

१. अकलपर गोटा पडनो	- बुद्धि नष्ट होना ।
२. आपरो पाय पर उभो रव्हनो	- किसी का सहारा न लेना ।
३. उनिस-बीसी होनो	- थोड़ा अंतर होना ।
४. कुतरा की मौत मरनो	- बुरी मौत मरना ।
५. गड्या मुरदा खोदनो	- पुरानी बाते दोहराना ।
६. जऱ्यो पर नोन टाकनो	- जले पर नमक डालना ।
७. दुय कवडी को मानुस	- तुच्छ आदमी
८. नारद बननो	- इधर की बात उधर फैलाना ।
९. टुकड़ा टोड़नो	- आश्रित (गुलाम) होना ।
१०. दात खट्टा करनो	- हराना ।
११.आपलो उल्लू सीधो करनो	- स्वार्थ सिद्ध करना ।
१२. कमर सीधी करनो	- थकान मिटाना
१३. कान भरनो	- चुगली करना ।
१४. कान मा तेल डाकनो	- बहरा होना ।
१५. खिचड़ी पकावनो	- चुपके से सलाह करना ।
१६. गुलछर्रा उडावनो	- मजा करना ।
१७. जहर उगलनो	- ईर्ष्या करना
१८.जमीन पर पाय नही ठेवनो	- बहुत अभिमान करना

१९.टांग अडावनो	- रुकावटे डालना
२०. टस को मस नही होनो	- थोडा भी नही हिलना/सुनना/करना ।
२१. ठोकर खानो	- नुकसान उठाना
२२. डींग मारनो	- अपनी शेखचिल्ली
२३. तलवा चाटनो	- चापलूसी करना ।
२४. नोन मिर्चो लगावनो	- बात बढाकर करना ।
२५. नाक मा दम आननो	- परेशान /तंग करना
२६. हजामत करनो	- ठगाना
२७. गाल फुलावनो	- रूसना
२८. तोंड लाल होनो	- गुस्सा आना
२९. डोरा पानी लक डबडबानो	- रोना आना
३०, बाप घर की हाकनो	- मयके की बढाई करना ।
३१. हवामा उड़ानो	- उँची चाल चलना
३२. जीभ टारूला लगावनो	- लम्बी बातें. हाकना ।
३३. चवन्या करनो	- नखरे करना ।
३४. पोट दुखनो	- ढोंग करना ।
३५. डोरा काढनो	- गुस्सा होना ।
३६. हारोडी करनो	- झगडा करना ।
३७. कुम्भकरण होनो	- खुब सोना ।
३८.हरदी मा पिवरो होनो	- इतराना ।
३९. दंढ्यार करनो	- ढोंगी बर्ताव करना
४०. सबक घर सारखा चुल्हा	- घर घर में एकसा व्यवहार ।
४१. पाय आपटनो	- गुस्सा आना ।
४२. लाड़ीगोड़ी लगावनो	- रिझाना, फुसलाना ।
४३. मस्तक आपटनो	- संताप आना, बेबस होना ।
४४. हात पर हात धरेव रव्हनऽ	- कोई प्रयास या हलचल नही करना।
४५. मुंगी की चाल चलनो	- धिरे धिरे चलना ।
४६. मुंडा सुटनो	- जोर से भागना
४७. चुटी ला गाठ बांधनो	- प्रतिज्ञा करना ।

४८. नांद्या बननो - जिसने जैसा कहा वैसा करना ।
५०. नंगा बननो - अभद्र / मर्यादाहिन बनना ।
५१. अंगुठा देखावनो - समयपर धोका देना
५२. अकल को दुश्मन - बेवकूफ
५३. कलेजा ठंडो होनअ् - संतोष होना
५४. खुन-पसीना एक करनो - कठिन परिश्रम
५५. गुस्सा पीवनो - क्रोध दबाना
५६. गांठ मां बांधनो - प्रतिज्ञा करना
५७. घोड़ा बिककन सोवनो - बेफिक्र रहना
५८. दीवो खाल्या अंधारो - उपर से भला, अंदर से बुरा
५९. कल पड़नो - चैन मिलना
६०. झक मारसु - व्यर्थ का काम करना
६१. हाथ पाय मारनो - मेहनत करना
६२. हाथ मलनो - पच्छाताप करना
६३. बीडा उठावनो - प्रतिज्ञा करना
६४. टांग अडावनो - बाधा डालना
६५. मैदान मारनो - विजय पाना
६९. पड़दा टाकनो - धुपाना
७०. नाक कटनो - बेइज्जती होना
७१.आपल पोट्या ढोमका चाट्या- अपने स्वार्थ के लिए हद पार करना

ब) वर्धा तटीय पवारी मुहावरें -

१. आयता प रायता ।
२. आई-माई म भूरा जवाई ।
३. जमड़ी जाय पन दमड़ी नी जाय ।
४. जब लघे आकरी, तब मांघे भाकरी ।
५. आन फसी बटेर, ते डोरा दिया नटेर ।
६. काम को न काज को, ढाई सेर अनाज को ।
७. हात म नी कौड़ी, नाकछेदावन दौड़ी ।
८. आ रे बड़ा, मूँह पर पड़ा ।
९. अक्कल को कोती, बईल लायो मोती ।
१०. आलर - झूलर बाई को, कान टूट्यो बिलाई को ।
११. एरझार चौदा, एक पैसा को सौदा

संकलन - गोपीनाथ कालभोर, रोंढ़ा, जि.बैतुल (खंडवा) म.प्र.

३.२ पवारी कहावतें - लोकोक्तियाँ (Phrases)

अ) बैनगंगा तटीय पवारी कहावतें -

१.आंधरोहिन मा कानो राजा।	अंधन में कनवा राजा।
२.च्यार दिवस की चांदनी मंग अंधेरी रात	चार दिनकी चांदनी फिर अंधेरी रात
३.जसो राजा तसी परजा	जैसा राजा तैसी प्रजा
४.जसी करनी तसी भरनी	जैसी करनी वैसी भरनी
५.जो गरज सेत वय बरसत नही	जो गरजते है सो बरसते नही
६.चोर चोर मावस भाऊ	चोर-चोर मौसेरे भाई
७.जसो आयो तसो गयो	जैसे आया वैसे गया
८.आप भलोत् जग भलो	आप भला तो जग भला
९.जसो बाप तसो बेटा	जस बाप तस पुत
१०.जसो ला तसो	जैसे को तैसा
११.एक पानी लक तोर नही पीकऽ	एक फूल से माला नही बनती
१२.लछमी चंचल से	लक्ष्मी चंचल है।
१३.एक पंथ दूय काज	एक पंथ दो काज
१४.बरठी को कुतरा न घर को न घाट को।	धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का
१५.घर घर मा माति का चुल्ला	घर घर में मिट्टी के चुल्हे
१६.आयतो पर रायतो	आयते पर रायता
१७.परसा ला पान तिनच	पलस को पत्ते तीन
१८.ओको कारो तोंड भयव	उस का काला मुह हुआ।
१९.चलती को नाव संगाती	चलती का नाम गाड़ी
२०.नाहानो तोंडऽ मोठो घास	छोटे मुँह बड़ी बात

२१.एक ठन सेरी गावभर फेरी	थोथा चना बाजे घना
२२.नाहानसी ओसरी, तन्नाय खन पसरी	चादर देख पांव पसार
२३.एक ठन ठुसा अना हांडी भर रसा	उँट के मुँह में जिरा
२४.नांद्या वामी मान हलावसे	नंदी सी गर्दन हिला।
२५.एक हाथ कुकडी नवे हाथ बीचा	एक हाथ ककडी नवहाथ बीजा
२६.हाथ मा नही कवडी,नाक छिदावन दौड़ी	हाथ में नही नाना,चले लेने चंदामामा
२७.सुसरो ना भासरो घर को कासरो	राजा बोले दाढ़ी हाले।
२८.कुतरा की पुस्टी वाकड़ी की वाकड़ी	कुत्ते की पूंछ तेढो की तेढी.
२९.गाव गयो गवठ्या भयो।	सावन में.हरा हरा।
३०.खंडी मा अठरा कुड़ो फोल	लम्पट हाकना/सफेद झूठ
३१.आयतो पर रायतो	बहती गंगा में हाथ धोना
३२.अर गाव खेती परगाव माऱ्या	दिल्ली में रहना आगरा में खाना
३३.गर्रा की पोपट सर्राला	अफवा फैलाना,इसकी उसके पास निंदा करना
३४.नसीबहिन खेती करऽ, बईल मरऽवा सुखा पड़।	नशीबहिन पर संकटो का पहाड़
३५.ना दादुको लेनो ना नानु ला देनोऽ	हेरा फेरी से दूर
३६.खम्बुरा की भस आय, बुचई को भात खाय	रहिश का कुत्ता गद्दे पर मुता।
३७.चमरी जाय पर दमरी न जाय।	चमड़ी जाय पर दमड़ी न जाय।
३८.बाडों मां शंभर गाई, यहां दूधसाथी जीब ललचाई।	आसमान में तारों की भीड, घर में नही दीप।
३९. हवेली भारी, ढोला खाली	नाम बड़े दर्शन खोटे
४०. करनी ना धरनी टेकरा पर पुंजना	काम चोर सिर जोर
४१. गाव गयव, गवार भयव	जैसे में गये तैसा
४२. हल्ल्या न खाईस बुल्ल्या	अंधा खाय रबड़ी
४३. गाव मा गोरी गावसे।	गांव में लोरी गाना
४४. पैसा न अधला चलेव जतरा।	जेब में नही नाना चले पुना

४५. चालनी मा दूध दूहे ना किस्मत ला दोष देये	मुर्खता करना और किस्मत को दोष देना।
४६.अर्धो चितरा, अर्धो बाहारा।	दो चिजों का कोई मेल न होना।
४७.उलटो चोर कोतवाल ला दाटे।	अपराधी ही शिनाजोरी करे।
४८.एक म्यान मा दूय तलवार।	एक जगह समान अहंकारी नही रह सकते।
४९.एक पंथ दूय काज।	एक प्रयास में दो लाभ पाना।
५०.उखर मा सर तर मुसर का डर।	विपत्ति में धैर्य से काम लेना।
५१.कहान राजाभोज ना कहान गंगू तेली	छोटे बडे की कैसी बराबरी
५२.कारो अवसर भस बराबर	अनपढ़ मूढ के लक्षण।
५३.खेत गधा चरे, मार नौकर खाये	कसूर एक का, मार दुसरे को।
५४.छठी को दूध याद आहे तब अकल आये।	बुरा हाल होनेपर अकल आना।
५५.लहान तों डअ् मोठी बात।	बढ़ बढ़ कर बाते करना।
५६.जेकी लाठी ओकी भस।	बलवान का अधिकार हर चिज पर।
५७.दूर का ढोल सुहावना।	दूर से दिखता है सभी अच्छा
५८.जान से त जहान से।	जीवन है तो दुनिया है।
५९.घीव मा मासी पड़नो।	विघ्न आना।
६०.नक्कारखाना मा तूती की आवाज।	सुनवाई न होना।
६१.सांग मोर टोंघरा ला।	वारदात नजरअंदाज करना।
६२.नौ नगद बेस, नही कामका तेरा उधार -	कम नगद अच्छा है, जादा उधारी से
६३.नीम हकीम खतरा मा ज्यान	अनधिकृत पर भरोसा माने खतरे की घंटी
६४.नाव मोठो दर्शन खोटो	प्रशंसा के मुताबिक योग्यता न होना।
६५.बंदर का जाने अदरक को सवाद	मूर्ख क्या परखे विद्वान को।
६६.मान न मान मि तोरो महिमान	जबरदस्ती का बोझ
६७.नाव सोनाबाई हाथ मा चांदी को कड़ा	- नाम बड़े दर्शन खोटे

ब) वर्धा तटीय पवारी कहावतें

१. गरीब आयो आंगन, तो का आयो मांगन ।
२. तू चल म आऊ, पाछल्या की खबर लाऊ ।
३. एक दिन को पाव्हना, दुसरा दिन को पहि ।
तीसरा दिन रह्यो, की अक्कल गई ।।
४. चोरी करनु नी, राजा सी डरनु नो ।
५. म अन मरी माय, मन म नी समाय ।
६. नाक कट्या भला पर, बात कट्या नो भला ।
७. जहां जाय भाग, वहां लगे आग ।
८. समुंदर मा डुबकी मारी, शंख लग्यो हात ।
९. रन बन भैसा, उल्टै तो होय कैसा ।
१०. माय नी बाप, जीव जाये आपोआप ।
११. बैद को पोऱ्या जुकाम सी मऱ्या ।
१२. घर म नी दाना, मुरगी करय धींगाना ।
१३. लावय टक्का, मारय फक्का ।
१४. गधा ख बतावय ज्ञान, गधा हलावय कान ।
१५. अलाल को डेरा बजार मा ।
१६. हात - पाय आलसी, मुंम जाय कारसी ।
१७. हाती नी पाई नाव सोनाबाई ।
१८. काम नी कौडी को, रिकाम पन नी घडी को ।
१९. तू भी रानी म भी रानी, कोन भरय पानी ।
२०. जेका किस्मत करऽ जोर, ओको कोदो नींदे चोर ।
२१. घर की खीर कुत्ता काय, चापड्या साती घर घर जाय ।
२२. मांगता का घर मंगता जाय अन् हागत तक को मार खाय ।
२३. सतसंग गुन होय मान-दान, नीते संतसंग गुण जाय नाक-कान ।
२४. खेत बिगाड्य नाला, घर बिगाड्य आला (साला) ।
२५. करय नो खेती पड्य नी फन्द घर भर फीरय् सुस्सरचंद ।
संकलन - श्रीमती गिरिजाबाई परिहार, बैतुलगंज, बैतुल (म.प्र.)

३.३ पहेलियाँ (Poetic Puzzles)

अ) बैनगंगा तटीय पवारी पहेलियाँ -

१. राजा को राज मा नही, माली को बाग मा नही ।
फोडो त गुठली नही, खावो त सवाद नही ।।
२. बाप झोलर, बेटा पोलर, नाती गण्ठासुर
३. पाहाडपरल उतरेव भाट, वोन बिंधिस चौरंग खाट ।
बिंधन ला बिंधिस, पर उकलन नही पायेव ।।
४. जेवन भयव, खानो भयव । नाहनी बाई ला आनन गयव ।।
५. नाहान सी खोपडी, ओको भर लकडी । -
६. एक सिंगी गाय, पोगत-पोगत जाय । ओको धनी सकलत जाय ।।
७. पांढरो घोडा, हिवरी पूछ । नही जिनसत आपरो संगी ला पूछ
८. एक हल्ल्या की बारा बेसन । जसो जसो पिटत, तसो तसो बोम्बलऽ
९. चार पाय, ढोर नही । गरो मा हार, मोर नही ।।
१०. ओरह्या बासिंग सुखड़ा नही । लम्बी पुस्टी बन्दरा नही ।।
११. यन राजा की अजब काहानी । पाय लक पीये पानी ।।
१२. चांदी जसो चमकसे, पुढऽ गोरो, मंघऽ लाल ।
सकार भई देखे रानी, आपलो सुंदर गाल ।।
१३. तीन भाई घरमा सेत, एक से अलाल ।
दुसरो फिरसे गर-गर तरी सब कंगाल ।।
१४. कान धर बिचारे मामा, मोरो दिल को हाल ।
दिल्ली लक वा लन्दन लक, खबर बादमी दिन रात ।।
१५. बईल पुढऽ धाया त पोट तनऽ से ।
मंघऽ मंघ चल्या त कसो चिमऽ से ।।

उत्तर १.गारगोटी (ओला) २.मोहू (महुआ) ३.गोधना (गोधन) ४.बाहरी (झाडू) ५.डब्बी (माचिस) ६.(दरन जाता) ७.(कांदा, प्याज) ८.(ढोलक) ९.गिरगिट १०.मुर्गा ११. दिवो (दीया) १२.आरसा (दर्पण) १३.घड़ी १४. रेडियो १५.मोट (पानीकी)

ब) वर्धा तटीय पवारी पहेलियाँ -

१. हाट गई बजार गई, लाल मुंगी दाब गई ।
२. उन्नाऊर बिन्नाऊर, बि फोतला का चाऊर ।
३. आओ जी सावजी, बजार ख जाओ जी, बिन डेठ का लिम्बू लाओजी ।
४. लचलच लकड़ी टेग्या नी जाय, नाऱ्या डरवैर ररहो ज्योत्या नी जाय ।
५. एक सिंगी गाय, सब मुलुक को मार खाय ।
६. कारी गाय काटा खाय, पानी देख खऽ चमकत जाय ।
७. उपर सी गई उगी दूगी, नीचऽसी आई गाल फुगी ।
८. नान्ही सी फंडकुल फंडकट जाय, नौ सौ अंडा देत जाय ।
९. ओंढो कुआ, भोंडो पानी, ओमा नाचय छम छम रानी ।
१०. बाटी भर राई, घर भर फैलाई ।
११. या आई वा गई ।
१२. घन पर घन बत्तीस घन, कभी नी कट्यो बाबुर बन ।
१३. काफी का ते कान हय । काका का कान नी ।
१४. सर सराटा उप्पर काटा, ज्यू नी जील्हे ओको बाप मराठा ।
१५. बाप बेटा दो, रोटी बनाई तीन, बराबर बराबर खाई ।
१६. तीन बड़ा, छ झनी न खाया, आऊर एक एक खाया ।
१७. भूरी भूरी मूंछी को डोकरा, उते हाट रे हाट बिकाय ।
१८. बाट प की कारोली वा ते चलता सजन बिलबिलाय ।
१९. जब बारी हती तब हरी हती । भर जवानी मलाल गुलाल ।
२०. मेढा प जनी है बकरी, ओको दूध अकारथ जाय ।
२१. चार ज इट को झोपड़ा, ओम नवलाख गैरा समाय ।
२२. जब बारी हती तब मारी हती, जब म्याही तब माऱ्या नी जाय ।
२३. तोरो बीरा बड़ो सैतान, नाकऽ प बठ्य् आऊट पकड्य् कान ।
२४. चल चल भई, ना पसर गई ।
२५. चार घडा अमृत भऱ्या, बिन ढकनी का उघडा पड्या ।
२६. एक भाऊ असो, घर-भर ठस्यो ।

२७. लोटा म लोटा, बाप सो गोरा बेटा ।
२८. एक बाई अशी, घम्मर-घम्मर घुसी ।
२९. गोरो बेटा कारो कोट ।
३०. बिना बीज का दर्जनभर बेटा ।

उत्तर : १. आगी, २. गार, ३. अंडा, ४. शेर,सांप, ५.घट्टी, ६. चप्पन, ७. पुडी/मोट ८. फनी, ९. रई, १०. तारा, ११. नजर, १२. छाय, १३. कढई, तवा १४. गल १५. २ बेटा १ बाप, १६. सास-बहू, माय-बेटी, नंद भाऊज, १७. प्याज, १८. जामुन, १९. मिर्च, २०. मेंढ़क, २१. मधुमख्ख, २२.मटका २३. चश्मा, २४. झाडू बोहरी, २५. गाय के स्तन, २६. धुआ धुंगा, २७. नारियल (नारेन) २८. रई, २९. सिंगाड़ा, ३०. केरा, केला.

संकलन - *श्रीमती गिरिजाबाई परिहार, बैतुलगंज, बैतुल (म.प्र.)*
श्रीमती जया कालभोर, रोंढ़ा, जि.बैतुल (म.प्र.)

५ पवारी शब्दकोश

अ

अमको - कोई एक
अरदकपारि - आधा सरदर्द
अलुनो - अलुना
असुन - ठसका
अस्सो - ऐसा
अस्सी - ऐसी
अर्थावनो - पक्का करना
अम्बावनो -खट्टा करना/
विरजण
अंधरा - अंधा
अवंदा - इस साल

आ

आकुसा - घटसर्प
आकोडी - पैरा निकासी अडी
आखर - गांव मैदान
आखुड - अखडा
आंग - शरीर
आंग धोवनी - स्नानगृह
आरनि - लोखंडी तिपाई
आतडि - अतड़ी
आनजन - अंजन (पेड़)
आनजिर - अंजीर (पेड़,फल)
आनजुर - ओंज़ल
आनधन -आंधन(पानी उबालना)
आपुन - अपन
आंबट - खट्टा
आयक - सुन
आयतो - तयार
आरन - उबला हुआ
आरू -बैल छडीका खिल्ला
आव - आइए
आवरा - आंवला
आसवल - अस्वल
आसरो - सहारा
आयतो - तयार
आखुड - अखड़ा
आंग धोवो - नहाईए

इ

इठोबा - विठोबा
इरा - हसिया
इरोली - कोयती
इसकुल - स्कूल
इतरावनो - इतराना
इसटुल - स्टूल
इतऽ - ईधर
इसतरि - इस्त्री
इसतो-अंगारे/आगी

उ

उपासि - उपाशी,
उभो - खडा
उबोख - ठहर
उबडो - चित

उसिर - देरी
उस्टो - झुठा ख़ाना)
उन्हारि - रब्बीकी जमीन
उतऽ - उधर
उनको - उनके
उननऽ - उन्होंने

ओ

ओतरो - उतना
ओनऽ - उसने
ओकाई - ओकारी
ओका - उसका

औ

औंगन - कुवत
औंदा - इस साल

क

करंगी - उंगली
कज्या - कलह
कथडी - गोधडी
कनिक - कणीक
कनुला - आटे का पकवान
कनदिल - कंदील
कपार - कपाल
कयचि - कैची
करप - झुंड (जनावर)
करजा - कर्ज
कलइ - कल्हई
कलाय - निवाला बनाना
कवसकरी - खाजखुजली
कहान - कहां / किधर
कवाडि - फाटक
कवरि - चिघलना (मुंह में चारा)
कसो - कैसा
काजक - क्या
काजर - काजल
काट - काटना चिरना
काटि - काटेदार झाड़-झडुले
काडि - लकड़ी, काठी
काति - कतरि (रापी,चंभार शस्त्र)
कानटोपरा - कानटोपी
कान्ह्या - चकणा
कापऽसे - थरथराना
काई - सेवाड
कारो - काला
कावरा - कौआ
कासटो - कछौटा
कास्तकार - किसान
कांडनो - कांडना
कामला भिड्या - काम से लगे
किरतन - कीर्तन
किसबिन -नालायक स्त्री
कुद - उडी
कुन्या - कुरी
कुरा - कुल्ला
कुदरि - कुदाली
कुंबार - कुंभार
कुलुप - ताला
कुंजी - चाबी
कुरुच - एडी,टाच
कुसिर - काटेरी घास
कोड़डा - चाबूक
कोतरि - कोठडी (अनाज भंडार)
कोनटो - कोना

कोंढ़ा - धान की रास
कोरसा - कोयला
कोम्ब - अंकूर
कोमेव - मुरझाना
कोल्हा - लोमडी
कोवाड - अकाली बरसात
कोहोंगा - कोहनी
कोरा - गोद
केतरिक - कितन
केंधावर - कब,किस समय

ख

खतम - समाप्त
खन - चोली का कपडा
खन - खोदना
खन - कमरा
खंडा - तुकडा
खपरा - आगितस्त
खरूटा - खराटा
खलु - खडू (चुने की कलम)
खसु - खुजली
खाकस - खसखस
खात - खत
खाति - लोहार
खांद -कंधा
खांदा - डघाल फांदी
खाय - खाईए
खाजो - मिठाई
खारि - आंबट
खारो - नमकिन, खारट
खार - रोपन बंधी
खासि - खोकला
खिसा - जेब
खिसडी - खिचडी
खुरि - खूट
खुटा - खुंट
खुटि - खुंटी
खुडि - बैलों के गलेकी दोर,झेला
खेदाडो - भगावो
खोदरा - गड्ढे
खेडा - देहात
ख्याल - याद
खिजानो - लज्जित होना

ग

गउ - गाय, साधापना
गंगाऊ - उत्तर दिशा
गंगार - नाहने के पानीका कटोरा
गजकरन - गजकर्ण
गड़वा - लोटा
गनजा - गांज्या
गंदवल - गांधील मख्खी
गमोरी - घामोरी
गरजन - गडगडाहट
गवत - घास
गाठबांध - गांठ बांधना
गारदान - बैल गाडी रास्ता
गाढो - गाढा
गायमुख - गोमुख
गायखुरी - गाय की पाव खूर
गार - तल में जमी गाळण

गारा - मिट्टी का लेप इटों की जुडाई हेतु
गारपिटी - ओले
गारी - गाली
गिन्यान - ग्रहण
गुंड - हंडा
गुंडी - हंडी
गुल्याल - गुलाल
गोपन - गोफण
गोटारी - पथरिली
गोरा - शुभ्र
गोरि - शुभ्र
गोवरि - गोवर (शरीर पर लाल दाने की बिमारी)
गेंगरानो - एकदम चिल्लाना

घ

घडि -घडि - बारबार
घरवालि - पत्नी
घरवालो - पति
घास - निवाला
घास - घिसना
घेट्रा - ब्ला
घेट्री - ब्ली
घाटो - नुकसान
घाम - पसिना

च

चमक - रांगोली
चउथरा - ओटा
चक्कि - चक्की
चक्कु - चाकु
चक्कु - मतलबी खर्च बचाऊ
चखन्या - तिरपा
चट्रो - मोटा
चंघनो - चढ़ना
चटावनो - चखाना
चत्राई - हुशारी
चद्दर - चादर
चपक नाक्या - नकटा
चलि जाय - चले जाव
चांगलो - अच्छा
चाचु - चोंच
चाटा - चिटा
चांदा - चंद्रमा
चाप - गाडीपर बासकी छत
चाबनो - चबाना
चाखो - स्वाद ला
चिचुरा - चिंचोने
चिनदी - चिंधी
चिराटा - नागरणी
चंघनो - चढना
चाखनो - स्वाद लेना
चोरवार - रास्ता ले
चोभरा - बैलो के लिये महुआ रस
चोवनो - दिखबा
चुरघडी - चिरमटी
चाकरि - नौकरी
चाकर - नौकर
चुना - चुना
चुरनो - गहानी
चेंगरा-चेंगरी - धक्काबुक्की

छ

छाटि - खुली खाचर

ज

जप - निंद

जरासो - थोडासा

जरासी - थोडीसी

जलम - जन्म

जवर - नजदिक

जवाऱ्या - जुड़वा

जादावादा - बहोतसा

जान - प्राण

जाबिन - जायेंगे

जाम्भरो - जांभाडा

जादुखोऱ्या - जादुगर

जोग्नी - साध्वी

जार - जाला

जार - जलाना

जास्त - बहोत

जिकन - खिच

जिन्को - जिनका

जुप - जोतना

जेव - भोजन कर

जेवन - भोजन

जेंधावर- उस समय

जहेर - विष

जोखर - जोकर

जोत - ज्योति

झ

झकार - उष्णता, तपिस

झलम - झूल

झालझुल - संध्या

झोरा - थैला

झिक - खिचना

झोटिंग - बेताल

ट

टमान - परात

टान्ग - टांगना/पैर

टिलन्गि - घंटी

टुकमुक - टकमक

टुरा - लड़का

टुरी - लड़की

टुरुपोटु - बाल-ब्रो

टेकर - चढाई

टोंगरा - घुटना

टोपला - टोकना

टोपली - टोकनी

टिपल डान्डु - गिल्ली दंडा

ठ

ठोकर - मोटा

ठेव - रखना

ठेस - ठेंच

ठोमाभर - आंजुरभर

ड

डब्बि - आगपेटी

डंड्यार - दंढ्यार लोकनाट्य

डाटन - गर्दी/अडचन

डाटनो - फटकारना

डाक्तर - डॉक्टर

डिकॉय दे - चिपका दे

डिंडी - दिंडी

डेढ - देड (१.५)

डेर - खांब

डोंगा - लकडी की पानीकुंडी

डोंडी - बोंडी

डोबरा - डबका

डोरा - आंखे

डोल - झोका / खोबरा डोल

डोसकि - सिर

डोहो - डोह

डटकार - डाटना

डोस्का-दुखसे - सर दर्द करना

ढ

ढगल - ढकेल

ढिलो - ढिला

ढिवर - ढिमर/मच्छीमार

ढोडि - छोटा नाला

ढोंड - दवंडी

ढोपटि - धोपटी

ढोमका - गंदा पानी रखनेकी हंडी

ढोर - पालतु जनावर

त

तनिस - धान का पैरा

तपनो - तापना

तपन मंडाय दे -गरम करने रख

तपाय देव - गरम करो

तरा - तलाव

तरपाय - तलपांव

तसो - वैसा

तहान - प्यास

ताजो - ताजा

ताड्पतरि - ताडपत्री

तानो - शिशू

तान - खिचना

ताप - बुखार

ताम्बो - ताम्बा

तिखो - तिखा, मिर्ची

तिज - अक्षय तृतीया

तिन - तीन

तिर - तिल्ली

तिर्पाई - तिपाई

तिवडि - सेवंती

तिस - तीस

तु - तू

तुमि - आप

तुरसि - तुलसी

तोतडा - तोतरा

तोर - तुवल

तोरन - तोरण

तोरा - तोला (बजन), तुझे,तेरे

थ

थन - स्तन

थान - कपडेकी गांठ

थेंब - बुंद

द

दकसिना - दक्षिणा

दरनो - पिसना

दरन - आटा

दरजन - डझन

दरजि - दर्जी

दव - थंडी

दसवि - दशमी
दाआजी - पिताजी
दातकुडि - हनुवटी
दाना - कण
दाबन - दाभन
दाब दुबारि - दुर्वा
दार - दाल
दावा - जानवर बांधने का दोर
दिवस उंगति - पूर्व
दिवस बुडति - पश्चिम
दिवस बुड्यो - दिन डुबा
दिवारि - दिवाली
दिवो - दिया
दुज - द्वितीया
दुहि - दोनो
दुहिले - दूध निचोड़
दुबति - दूध देनेवाली (गाय/भैस)
दुफार - दोपहर
दुय - दो,
देखाव - दिखाईये
दंदराऩ्यो - झेपना

ध

धगाडि - आगी
धडि -कपडे की घडी, किनार, बैठक
धर - पकड़
धाव - दौड़ना
धानारि - धान की खेती
धुर - बैलों के गर्दनपर की पाटी
धुरा - बैलगाडी का तिपाया टेकु
धुरो - खेत बंधी की पाल
धुंगा - धुंवा
धुंधरो - अस्पष्ट
धुंदाड - तुफान
धोंड्या - अधिक मास
धोवनो - धोना
धुंदरो - अस्पष्ट
धुनकन - मारन
धानारी - धान की खेती
धुंदाड - तूफान

न

नख - नाखुन
नंगरा - नगारा
नवो - नया
नवमि - नवमी
नहेर - नहर
नांग - नाग
नांगर - हल
नांग पंचमि - नाग पंचमी
नांद्या - नंदी
नारेल - नरियल
निंगरा - अंगारे
नोन - नमक

प

पठाव - भेजना
पड - पड्याव जमीन पट्टा
पडार - सफेद फुली घास
परजिब - पड़जीब
पतरालि - पत्री
पतलो - पतला
पंच्या - धोती

पंधरवाडा - पाक्षिक
परवा - परसो
परसा - पलस
परसाद - प्रसाद
पकसि - पंछी
पऱ्हा - धान रोपनी
पेहरनो - पहनना
पसरनो - सोना
पाटन - धाबा
पाटलि - कंगन
पाठरू - बछड़ा
पारवा - पाड़वा, दुसरा दिन
पानगा - डबल रोटी
पांढरो - सफेद
पानसट - पानचट
पाय - पांव
पाया - बुनियाद
पायति - ओलती/पायथी
पायरि - जिना
पायलि - पायली (माप)
पारिस - रोटी पाटा
पारो - तवा/झाकनी
पार - धडी
पालो - सफाई का कपड़ा
पिढो - पाट
पिला - बच्चा
पिव - पीजिए
पिवसि - थैली
पुंजना - धान की पुंजी
पुसटि - पूंछ
पेज - कांजी /आंबील
पेटाव - जलाव
पेडा - पेढा
पेंडि - पेंढी
पोकर - खोल,खाली
पोरा - पोला (त्योहार)
पोवन - तैरना
पोंगरि - फुंकनी
पुस ले - पुछ लें

फ

फराउर - फरार, नास्ता
फराक - झबला
फरकन्डा - खा
फिफोलि - तितली
फिक्कट - फिका
फुपाबाई - बुआ
फुप्याजी - फुपा
फोक दे - बुआई कर दे
फुलि - नाक - खड़ा
फुट - तुट
फुटनो - तुटना
फुस्यारकी - हुशारी

ब

बक्खल - जाडा, मोटा
बगड - मोटा चावल
बगन - भट्टे
बगार - भैस का ब्ग्गा
बगाव - मोडना/बगाना
बंगडि - चुडियॉ
बगरावनो - फैलाना

बटकि - कटोरी
बटईदार - हिस्सेदार
बटरा - बटाना
बरडा - सफेद सुखी जमीन
बध्या - नर सुवर
बऱ्या - रान सुवर
बंजर - गावठाण
बंदरा - बंदर
बरात - बारात
बराति - बाराती
बरठि - धोबी
बांधि - बंधी
बाबुर - बाबुल
बादर - बादल
बेंबरानो - घबराकर चिल्लाना
बारस - द्वादशी
बार - बालक
बारि - वाड़ी
बारू - रेती
बाल - सेमी (फल्ली)
बालि - साडी
बावस्या - आमंत्रण
बास - गंध, श्वास
बासरू - बछड़ा (गाय का)
बाहारि - बोहरी (सफाई की)
बाक्का - अच्छा
बिकन दे - बेचने दे
बेचन दे - चुनने दे
बेस - ठिक
बेरा - समय

बिजाउर - हेल्या, रेडा
बिजना - हाथ पंखा
बिझाय दे - बुझा दे
बिंदराबन - वृंदावन
बिरि - कर्णफूल
बिलाई - बिल्ली
बिसरो - जेवर
बिह्या - शादी
बिह्याई - ब्याही/समधी
बिह्याईन - समधीन
बुडावनो - डुबाना
बेय - कुंपन
बिटार - अशुद्ध/बिटाल/सुतक
बिचकावनो - बिघाड़ना
बिदुर - बदमाश
बुकनि - कूट
बेत - बेत की लकड़ी
बेठ - धान के रसे
बेट - गाडी चक्के की धाव (रिंग)
बेमचि - इसब
बेरू - बांस
बेला - वेरी
बेहेर - कुँवा
बोट - उंगली
बोर - बेर
बोवनो - बोना
बोवला - चौथरा
बोहरटाक - झाड़ ल
बिऱ्यानी - दही जमाना
बिचकाइस - बिघाड़ना

बिदुर - बदमास
बुजड़ना - चमकना
बुगी -- ब्रा/ब्रा
बेंडवा - मुर्गीयों का पिंजरा
बोड़खी - खुला सिर

भ

भउजी - भाभी
भदाड - रांजण, मटका
भयव - हुआ
भपकनो - भभकना
भस - भैस
भसकी - भैसकी
भाऊजि/भासरो - जेठ
भानि - थाली
भांडोली घिव - पुराना घी
भारा - बोझा
भालि - नाई
भास्या - भांजा
भासी - भांजी
भिक मांग्या - भिकारी
भुबुत - अंगारा
भेद - गुपित (रहस्य)
भेद गयो - घूल जाना
भेदनो - घुलना
भेदरा - टोमॅटो
भेली - गुड़
भोवरी - चक्का

म

मंगरवार - मंगलवार
मंघऽ - पीछे

मंझ्या-मंझ्या - बीच-बीच
मयदि - मेहंदी
मयना - मैना
मरार - माली
मसानघाट - स्मशान
मसाल - मशाल
मसरि - मच्छी
महि - छाछ
माय - मा
मातर - मात्रा
माता - (मातामाय/देवी)
माती - मिट्टी
मातिको तेल - केरोसिन
मांडो - मंडप
माया - माघ महिना
मावसी - मौसी
मावस्याजी - मौसा
मास - मांस
मासी - मक्खी
मि - मी
मिरुग - मृग
मिसी - मुंछ
मुकत्यार - देखरेखवाला
मुंगी - चिटी
मोंगसा - मच्छर
मुत - मूच
मुंदी - अंगुठी
मुंडा - खम्बा
मुसर - मुसल
मेटि - आसन

मेड - मेढ
मोंगरा - चावल परोसने का चम्मच
मोंगरा - मोगरा (पूल)
मोमबत्ती - मेनबत्ती
मोन्या - घोंगडी (पर्ण घोंगडी)
मान्या - मचान
मेरवन - भैसों का मिक्स खाद्य
मंडावन - रखना

य

यव - यह (पु.)
या - यह (स्त्री)
ये - ए (बहुवचन)
येक - एक
येको - इसका
येकटो - अकेला
येकादसी - एकादशी
येतुसो - इतनासा
येतरा - इतना
येनS - इसने
येकांगS - एक बाजू में
येरा/बेरा - समय
येरोनी - करवंद
येंदावर - इस समय
यको - इसका

र

रकत - रक्त
रजई - रजाई
रसता - रास्ता
रव्हनो - रहना
राकसाउ - दक्षिण
रात - रात्री
रांडि - विधवा
रांड्या - विधुर
रांदनखोली - पाकघर
रांधनो - पकाना
रामफर - रामफल
रायतो - अचार
रिचाव - नीचे डालना
रुनदो - चौडा

ल

लघोरि - लगोरी (खेल)
लंगडो - लंगडा
लम्बर - नम्बर
लम्बो - लम्बा
लसुन - लसन
लात - पांव/लाथ
लुगडा - पातल (९वारी साडी)
लेपसी - बासुंदी
लेहेंगा - लहंगा

व

वकनो - उलटी करना
वकS - उसके
वकSजवर - उसके पास
वडगा - टोकना
वडगी - टोकनी
वय - वे (खासकर पति)
वरत्या - उपर
वरसालिन - नौकरानी
वा - वह (स्त्री)

वारवाड - बांझ
वाढ - परोसना
वाढ्या - परोसनेवाला
वापिस - वापस
वारा - हवा
वारवनो - सुखाना
वान्योव - सुख गया
वोंगन्या - बैलबंडीकी बासकी तेल नली
वोलो - गिला
वोघर - नाला

स

सकार - सुबह
सकारि - कल (आगामी)
सकोकी - मृतदेह तट्टा
सकनारू - सकरकंद
सगडी - शेकडी
संगिन - सौत/सवत
संतरा - संत्रा
सनवार - शनिवार
सपन - स्वप्न
सफा - साफ
समदि - ब्याही
समदिन - ब्याहीन
सम्भार - साम्भार
सय - छे
सहेद - शहद
सयपाक - स्वयंपाक/भोजन
सयपाक्या - आचारी
सरन - चिता
सरप - साप
सरम - शर्म
सरावन - सारवण, पुताई
सव - सौ (१००)
सरेव - समाप्त
सहेर - शहर
साकर - शक्कर
साकरगोटि - सागरगोटी
साकरी - संकली
सातर दे -बघार दे (सब्जी)
सातरनी - फोड़नी
साति - छाती
सातु - सत्तु (लाडू)
सारी - साली
सारो - साला
साल - वर्ष
सावरो - सांवला
सावा - साय
सावली - छाव
सिकनो - पढ़ना
सिकारी - शिकारी
सिकावनो - पढाना
सिडि - शिडी
सिताफर - सिताफल
सितकार - थंडकाल
सिदोरी - शिदोरी
सिंगार - श्रृंगार
सिमनी - छोटा दिया
सिरवा - बरसात
सिल - पाटा

सिव - सिलना
सिव - शीव, सीमा
सिसोली - शिटी
सुकरवार - शुक्रवार
सूत - धागा
सुतुक - सुतक
सुरा - छूरा
सुरि - छुरी
सुसुंदरी - चिचुंदर
सुसरो - ससरा
सासु - सास
सेंग - फल्ली
सेन - गोबर
सेना - गोवरी
सेंडा - टोंक
सेर - शेर
सेरि - बकरी
सेव - पदर,घुघंट
सोड - छोड
सोनार - सुनार
सोव - सो जायिए
स्लोक - श्लोक
सोदिन - महिला तांत्रिक (जादुटोना)

ह

हकालनो - हाँकना
हत्ति - हस्त नक्षत्र/हाथी
हरद - हल्दी
हरन - हिरण
हलाव - हिला
हल्ल्या - बोदा/रेडा
हात - हाथ
हतराव - बिछाव
हांडिसंध्या - आचारी
हार गयेव - दुबला हुआ
हार खाईस - हार मान ली
हलाय दे - झुला दे/ हिला दे
हासी - हंसी
हासनो - हंसना
हिड्डा - हिरडा
हुचकी - उचकी
हुट - उंट
हुडकि - छोटा पहाड़
हुदाडा - ठोसा
हेंदरा - गंधा
होय जाहे - हो जायेगा
होये - होगा
हिजरावनो-गुस्से से बोलना,
हिजरानो - गुस्सा होना
हांडि - हंडी (मिट्टी बर्तन)
हांडि हटका - - स्वयंपाक निषेध
हन्या-गन्या - हलका पतला
हाकल - बुलाता है
हिंडसे - घुमता है
हिंडो - घुमो
हिसकसे - छिनता है
हेकन्या - कनवा
हालोहाल - बेहाल
हेम - प्रेम
हगडसे - शौच करता है ।
हन्या-गन्या - आलतु फालतु

वर्गीकृत शब्दकोश

शरीर के अंग -

अंगठा - अंगुठा
आतड़ी - आंत
आंग - शरीर
कपार - ललाट
कना - रीढ़
कवटि - खोपड़ी
कमर-कम्बर
काठी - कद
कोरा - गोद
केस - बाल
कुला - चुतड़
कुरूच - एडी
कोहंगा - कोहनी
खांदा - कंधा
गरो - गला
गांड - गुदा
घसा/घाटी/गरो - कंठ
चुटि - चोटी
छाति - वक्ष
टोंघरा - घुटना
डोई - सिर
डोरा - आँखे
तरपाय - तलवा
तोंड - मुख
तिर - तिल
थन - स्तन
दातकोरि - ठुड्डी
नख - नाखून
पापनि - पलक
पिंड़रि - पिंढरी
पोट - पेट
पीठ-पाठ
पाय - पांव
बखोटि - बगल
बोंबलि - नाभी
बेनि - चोटी (लड़की की)
बोट - उंगली
बोई - चुचुक
भेजा - दिमाग
भौ - भौंह
मनगट - कलाई
मान - गर्दन
मुठ - मुट्ठी
मांडि - जांघ
मिसी - मुंछ
योनि - स्त्री गुप्तांग
रकत - खुन
लिंग - पु.गुप्तांग
हनोटि - दातकड़ी
हथोलि - हथेली
हरदय - हृदय
हात - हाथ

पवारी-हिंदी में एकसे शब्द

नाक, कान, ओठ, गाल, जबड़ा, दाढ़, दात, दाढ़ी, भेजा,मसुड़ा, छाती,हाथ, हड्डी, पसली, अस्तिपंजर, नस, नाड़ी, जीभ, चेहरा,चमड़ी, तालू, फेफडा,

शारिरिक स्वास्थ्य संबंधी

अजिरन - अजीर्ण,अपचन
ओकारी/कय - उल्टी
अंधरा/अंधरी - अंधा,अंधी
केस्तोर - केस्तोड
कैय - दस्त - अतिसार
खसू -खुजली
गचकरन - दाद
घाम - पसीना
घाव - चोट
चाटी - गंजा
चिकटो - बलगम
ठोकर - मोटा
तहान - प्यास
ताप - बुखार/ज्वर
दूःख - दर्द
पतलो/पतली - दुबला/ दुबली
पगला/बह्या -पागल
पांगड़ा - अपंग
पोटदुखी - पेचिश
पीप - पस
पिकनो - पकना
बइद - बैद्य
बह्यरा, बयरी - बहरा,बहरी
बुरगा/बुरगी - बुड्ढा/बुढ्ढी
बेमची - उक्वत
मरीज - बिमार
मातिझरा - विषमज्वर
सीक - छींक़
हेकन्या-चकन्या - कनवा

गणगोत (रिश्तेनाते)

अकड़ सासू - पत्नीकी बडी बहन
आज् सुसरो - आजे ससुर
आज् सासू - आजे सास
औलाद - संतान
काका - चाचा
काकी - चाची
काक्भाई - चचेराभाई
काक्बहिन - चचेरीबहन
काक्-सुसरो - चचेरा ससरा
काक् सासू - चचेरी सास
गणगोत - सगे, सम्बन्धी
गोदी - दत्तक
जवाई बोवा - दामाद
जिठानी - जेठानी
टुरा/बेटा - पुत्र
टुरी/बेटी - पुत्री
टुरूपोटू - बालब्चो
दादा/बाप - पिता
दादामाय - दादी
दुबसर/पाट - पूनर्विवाह
नवरा - पति

नाती - पोता
नातीन - पोती
नान्या/तान्या - छोटापुत्र
नानुबाई - छोटीबहन
नानभाऊ - छोटाभाई
नानीबोहू - छोटी बहू
पाहुना - मेहमान
पाहुनिन - मेहमानीन
पुर्वज - पुरखा
पुतन्या - भतीजा
पुतन बोहू - भतिजे की पत्नी
पुतनी - भतीजी
फूपि/फुपाबाई - बुवा
फुफ्या - फुफा
फुफभाऊ - फुफेराभाई
फुफ बहिन - फुफेरीबहन
फुफ-सुसरो - फुफेरा ससरा
फुफ् सासू - बुवा सास
बहिन - बहन
बड्या/बडू - बड़ा पुत्र
बहिन जवाई - नंदोई
बड़ोजी/माहाल्पा - ताऊ
बड़ीमाय/माहाल्पी - ताई
बड़ीबाई - बड़ीबहन
बहिन बेटा - बहन का बेटा (महिला पक्ष)
बडभाऊ - बड़ाभाई
बहिन बेटी - बहन की बेटी- (महिला पक्ष)
बायको/नवरी - पत्नी
बाबाजी - दादा
बिह्या - ब्याह
बिह्याई - समदी
बिह्याईन - समदन
बोहू - बहू
बोहूबैदी - बहूबैदी
भाटो - जिजा
भाऊजी/भासरो - जेठ
भौजी/वयनी - भाभी
भास्या - भांजा
भासेबोहू - भांजे बहू
भाऊ - भाई
भासी - भांजी
मामा-माय - नानी
माय - मा/माता
मायघर - मयका
मामभाऊ - ममेराभाई
मामबहिन - ममेरीबहन
मावसभाऊ - मौसेराभाई
मावसबहिन - मौसेरीबहन
माहाल्पभाऊ - ताऊका लड़का
माहल्प बहिन - ताऊकी लडकी
मावस् सासू - मौसेरी सास
माहल्पसासू - माहल्पे सास
माम् सासू - मामे सास
मावस्या - मौसा
मंझोली बोहू - मंझलीबहू
मोठी बोहू - बड़ी बहू
मावसी - मौसी
मावस सुसरो - मौसेरा ससरा

माहाल्प सुसरो - ताऊ ससुर
माम् सुसरो - मामे ससुर
रांडी - विधवा
रांडो - विधूर
लेकरू - ब्ब्ा
वारसान - वारिस
संगीन - सौतन
सारो - साला
सारी - साली
सागिल - साडू
सारज बहिन - सालेकी पत्नी
सुसरो - ससुर
सासू - सास

पवारी-हिंदी में एकसे नाम

देवर, देवरानि, मामा, मामी, कुंवारि, कुटुंब, घराति, बराति, पनआजा, पनआजी, नाती-पनति.

पोषाख

आंगी - चोली
आंगपोस - तौलिया / टॉवेल
उलन - उल
कपरा - कपड़ा
कापटा - खण, ब्लाऊज पिस
करदुरा - कमरदोर
कमरपट्टा - कमरबंद
कसा - नाडा
कापुस - कपास
कुरता - कुड़ता
खिसा - जेब
गलबंद - मफलर
जाकीट - जाकेट
दोरा - धागा
दुपटा - दुपट्टा
पंच्या - धोती
फेटा - साफा
फतई - फतुही
बंडी - बनयान
मोचा - मोजा
रूमाल - दस्ती
लैंगा - लहंगा
लुगडा - पातल
स्याल - दुशाला
सारी, गोलसारी - साड़ी

पवारी हिंदी में एक से नाम -

टोपी, कमीज, कोट, पायजामा, पतलुन, चड्डी, लंगोटी, बटन, लुंगी, मखमल, मलमल, कोशा, रेशम, पोलका, झबला, टोपरा, जांग्या, सेरवानी, टी शर्ट, सरारा, घाघरा, अंगोछा, अंगोछी, टाय, टोप, परकर, टॉप, आदि.

श्रृंगार -

अंगठी/मुंदी/छल्ला - अंगुठी
एकदानी,चिताईत - पोत
करनफूल - कर्णफूल -
कम्बरपट्टा - कमरपट्टा,करधनी
कड़ी - गोप
खुरो - चांदी
गरसोली - मंगलसूत्र
जोड़वा/पायमुंदी - बिछियॉ

टिकली - बिंदियॉ
डोरला - लोलक
तरप्साकरी - तरपन
नथनी - नथुनी
पायतोड़ा - पावतोड़ा
पाटलि - कंगन
पैरी/पैरपट्टी - पायजम
पैजनी - पैंजणी
फुली - नाककील
बंगड़ी/बंगरी - चुडियाँ
माला - हार
सरी - हसुली
सोनो - सोना
सिंगार पेटी - श्रृंगारपेटी

पवारी हिंदी में एक से नाम

बारी-बिरी, लिपस्टिक, काजल, मेहंदी, नखपालिस, चंदन, कुंकु, सेंदुर, गंध, हाथकड़ा, लसनी, लूट, मीना,मानिक, पावडर, क्रीम, मोती, खड़ा, नग.

अनाज

उरीद - उड़द
कनिस - भुट्टा
चावुर - चावल
जोंधरा - जवारी
गहू - गेंहू
तोर की दार - तुवल दाल
दार- दाल
एकसे नाम : बाजरा, मका, धान, कनकी, सरसो, मूंग, चना, चनोली, चोकर, पोपट, बड़ी खुल, कुकसा, येरंडी, जवस, सरसो.

किराणा के पवारी हिंदी में समान शब्द : इलायची, कलमी, तेजपान, छडीला, जायपत्री, जायफल, हिंग, खोबरा, सोड़ा, खसखस, केसर, रवा, मैदा, सौंप, सुपारी, दालचीनी, अजवाईन, सोंठ, हिंग,

रसोई, खान-पान सामग्री

अरसीको - जौ,जवस
अदरक - आला
अकस्या - चिल्हे
कनीक/पीठ - आटा
कटेर - कटहल
कांदा - प्याज
कोंबडी - मुर्गी
कोहरो - कुम्भड़ा करूला - करेला
खिचरी - खिचड़ी
जीरो - जीरा
गवार सेंगऽ - गंवार फल्ली
गाकर - भाकरी/भाकर
गोस - मांस
गोभी - गोबी
घीव - घी
घुघरी - चटपटी
चहापानी - चायपान
चीच - इमली
चून -बेसन
जेवन - भोजन
टूंडरी/टोंढरी - कुंद्रु

तीर - तिल्ली
तिखो - मिरची पावडर/स्वाद
तुंब्या - तुंबा
तुरसी - तुलसी
दार - दाल
दोरका - दोड़का
धन्या - धनिया
नोन - नमक
नोनी/लोणी - मख्खन
पापड़ी - पपड़ी
पेज - आंबिल
बरबटी - चौलाई
बगन - बैगन/भट्टा
बाल की सेंगS - सेमी फल्ली
बटरा की सेंगS - मटरफल्ली
भात - चावल
भाजीपालो - सब्जीभाजी
भेदरा - टमाटर
भोंभोडी - कुकुरमुत्ता
भेंड़ी - भिंडी
भेली - गुड़
भूईसेंगदाना - फल्लीदाना
मिरचा - मिर्च, मिरची
मिरी - कालीमिर्च
मठली - मीठे बिस्कीट
मसरी - मच्छी
मही -छाछ
मोहिरी - राई
मुर्रा - मुरमुरा
रायतो - अचार

रोटी - चपाती
लसुन - लहसन
लवुंग - लवंग
लाखोरी - लखोरी
साय - दुधकी मलाई
साखर - चीनी/सक्कर
सम्बार - हरा धनिया
सकनारू - सकरकंद
स्याक - सब्जी
सहेद - शहद
साहजीरो - शाहजीरा
हरद - हल्दी
हरदी गाठ - हल्दी गाठ
हिरोती - हल्दी पावडर
हिंदी-पवारी समान नाम :- झुनकी, लवकी, मुंगना, गलगली, मकई, सुरन, घुया, आलु, मोमनारू, मटारू, ककडी, पालक, मेथी, चना, लालभाजी, टोरूटा भाजी, नोन्या भाजी, ढेकरा भाजी, कोचई, परवल, कद्दू, मुली, गाजर, खोवा, दुध, दही, मलाई, मिठाई, जलेबी, मुरब्बा, पोहा, मुर्रा, आमटी, चटनी, शरबत, काढ़ा, चहा, पानी, लस्सी, कढ़ी, रस.

पकवान-व्यंजन (तेलरांधा)

कुसुम बुल्ल्या - मिठे बुंदेया
चाकोली - चकली
घिवारी - मिठीपुरी
ठेठरा - गांठिया
भञ्ज्या,भजिया - भजिए

लारू - लड्डु
सुवारी - पुरी
सेव - घेंघरी
पवारी-हिंदी समान नाम - करंजी, गुंजा, आटेल, मालपुवा, पापड, बुंदी, अनरसा, चिवड़ा, उपमा, सेवई, खीर, बासुंदी, कलाकंद, लेप्सी, पन्हा, भरीत, फुटाना/चना, लाई, मुरब्बा, राब, भगर

फल-फलावर

अन्यार - अनार
आंबा - आम
आवरा - आवला
ऊस - गन्ना
एरण पोपई - पपिता
केरा - केला
कटेर - कटहल
जांब - अमरुद
जांभूर - जामून
बोर - बेर
लिंबू - निंबू
संतरा - संत्रा
पवारी - हिंदी में एक जैसे नाम : अनानस, सेब, अंगुर, चिकु, अंजीर, तरबूज, खरबूजा, खीरा, मोसंबी, सीताफल, रामफल, मुनक्का, किसमिस, बदाम, खारक, पेनखजूर, लिची, काजू, किसमिस, अकरोट,

पवारी हिंदी एकसे शब्द :

पूजा सामग्री

कापूर, सेंदूर, कुंकु, गुल्ल्याल, अबीर, बुक्का, होमपुड़ा, उद, राल, चंदन, धूप, हवनपुड़ा, कैची, नेलकटर.

प्रसाधन

तेल, नस, मंजन, पावडर, पेस्ट, ब्रश, सिकाकाई, शेम्पु, क्रीम, मुलतानी माती, कस्तुरी,

अन्य घरगुती सामग्री

अगरबत्ती - उदबत्ती
आरसा - आईना
काथ - कत्था
कंघी/फणी - कंगा/फनी
कुलुप - ताला
कुंजी - चावी
खरूटा - खराटा
खोपरा - खोबरा
चुनो - चुना
टोपली - टोकनी
टोपला-टोकना
तंबाखु - जर्दा
नारेल/नारेन - नरियल
परसात - प्रसाद
बोहरी - झाड़ू
बिड़ा - पान
साबन - साबुन
सामायन - सामान

ग्रामीण जीवन से जुडी चिजें

मकान

आंगधुनी/नहानी घर - स्नानगृह
उखरी - महिला पूर्वज निवास
उरकुड़ा - गोबर टाका
कनघर - मेहमान-नवाजी घर
कोथरी - अनाज कोठी
कोठा - पशुधन निवास
गव्हान - चारा डोंगी
चवरी - पूर्वज निवास
चिखल - किचड़
चौबारा - बैठक
चुनो - चुना
जनावनो - नैवेद्य अर्पण करना
ढोला - धानभंडार
दरवाजो - चौखट
दिओ - दीया
देवघर - देवालय
देवीजोत - घट (काली)
धड़ी - फाटक की बैठक
नहानांग - पीछे का आंगन (जनाना)
पल्लो - पल्ला, किवाड
पाटन - धाबा
पाट - देव आसन
पायरी - सीढ़ी
पारना - झुला
बारू - रेती
बाड़ी/बेड़ो - सब्जबाग
बिंद्राबन - वृंदावन
बेहर/बिहीर - कुँवा
बोवला - महादेव चौरंग
बेय - कुप
बेसकड - फाटक
मुंढेली - पानीपट
मुंडा - खम्बा
मीनार - गुंबजदार
मोठांग - सामने का आंगन (मर्दाना)
माचघर - मुख्य घर
सरई - सराय
सावनी - छप्पर
सपरी/ओसरी - छपरी
सयपाक/सांधन खोली -रसोईघर/चौक
सिरमिट - सिमेंट
सुड - जलाऊ लकडी साठा

रसोई सामान

चमचा - चम्मच
चाटू - दाल परोसने का चम्मच
चौकी - थालीआसन
चूल्हो - चूल्हा
तावा - मिट्टीका तवा
तेलुता - कढई
दार घेटी - दाल घेरनी
परी - पली
पारो - मिट्टी की झांकनी
पीढ़ा - पाट
बटका - कटोरा
बटकी - कटोरी
बेलना पारीस - बेलना पाट
भानी - थाली
मल्या - मिट्टीकी मटकी

मथनी/भदाड - मिट्टीकी बड़ा हंडा
मोंग़रा - चावल परोसने का चम्मच
सील लोरा - सील पाटा
हांडी - मिट्टी हंडी

अन्य घरगुती चिजें

अड़कित्ता - सुपारी फोडनेका सरौता
आलमारी - अलमारी
उखर मुसर - उखरी मुसल
कोरसा - कोयला
कारी - लकड़ी
कांडी - अनाज कांडना
खरूटा - खराटा
खासर - खाचर
खुरसी - खुर्ची
चक्कू - चाकू
चालनी - चलनी
छकड़ा/छाटी - बोड़की खाचर
जगरा - बड़ी सेगडी
जातो - पिसाई का जाता
डब्बा - डिब्बा
तेलघानी- कोल्हू
दाभन - सुजा
पोंगरी - फुंकनी
पिवसी - बटुवा
बिजना - पंखा (कपडे का)
मांडो - मंडप
रई - घुसरनी
रेहेका - छत युक्त खाचर
सत्ता - छाता
सरूता - सरोता (रसोई)
सुपरा/सुपरी - सुपड़ा/सुपडी
सूई - सुजी
सेगरी - सिकड़ी
सुरई - सुराही

खेती का सामान

आस्कुड - अस्कुड़
ईरा/ईरोली - हसिया
ओड़गा - टोकना
ओंगन्या - तेल रखनेकी बांस नली
उभारी - बैलबंडी खडे दंडे
कासरा - बैल जुताई का दोर
कोंढा - जानवरोंक़े लिए मंडप
कुटयार - कुटार
कुकुस - कुकस, धान का भूसा
खन्यान - खलिहान
गाड़ो - बैल गाड़ा
चन्हाट - रस्सा
चाप - खाचरछत
चुरनी - धान गहानी
जुवाडी/धूर - बैल जोतने की पाटी
डफरी - डफली
तनिस - धान की पैरा
तुतारी - बैलोंको हाकने की छड़ी
धुरा - बैलगाडी के दांड
धुरो - बैलगाड़ी तिपाया स्टँड
नांगर - हल/नागर
पन्हा - धान रोपाई
पावडा - फावड़ा
पेपारी - शहनाई
पुंजन्या - धान की गंजी

बरव्खर - बखर
बसला - बसूला
बांधी - धान की बंधी
बांधी धुरो - बंधी की पाल
बोझा - धान का गठ्ठा
बेठ - चक्के की बेट
भोवरी - बैलबंडी चक्का
माच - बैलबंडी पर की चटई
रनदा - रन्दा
सिवर - सिव्हर
सिंग - तुतारी (वाद्य)
सेनोडी - गोबर ढोनेकी टोकनी
हातोरी - हथौड़ी

गांव के लोग

ईसकूल - पाठशाला
कसार -धातुके बर्तन बेचनेवाला
काहार -मच्छीजाली बुननेवाले
किरसान - किसान
कुमभार - कुम्भार
कोतवार - कोतवाल
खाती - लोहार
गायकी - गुराखी
घोरकी - घोडे सम्हालनेवाला
चम्भार - मोची
ढिवर - ढिमर/मच्छीमार
पटील - पटेल
पानीभऱ्या - पानी भरनेवाला
बेपारी - व्यापारी
बढई - लकडी के कारीगर
बन्ह्यार - नौकरानी
बरठी - धोबी
बलकी - बैल चरवाहा
भाली - नाई
मानुस/नवकर- नौकर
मास्तर/गुरुजी - अध्यापक
मरार - माली
मजूर - मजदुर
मुनिम - रोकडिया
माहारा - महार
मुकुरदम - मुकर्दम
भगत - पुजारी
भसकी - भैंस चरवाहा
सोनार - सुवर्णकार
सुईन - दायी
सिपि - दर्जी
सेरकी - बकरी चरवाहा
हवालदार - कामदार
हकीम/वैद - वैद्य
हांडी रांध्या - रसोईया

घरगुती पशु / जीवजंतू

अनाज किटक - गाडरी सोंड्या
उट - उँट
उधई - दीमक
उंदिर/घुस - चुहा
कावरा - कव्वा
कासो - कछुआ
किरा/किड़ा - कीट
कुतरा - कुत्ता
कोंबड़ी - मुर्गियाँ
गाई - गायें

गोऱ्हा,गोऱ्ही - गाय बछडा
गेंडूर - केचुवा
गिधाड - घार/बाज
गिराडी - गिलहरी
घोरा - घोडे
चाटा - चीटा
जूवऽ - जू
झुलीर - काक्रोच
डोकुला - डोंकिला
पाठ/पाठरू - बछडा
पाल/इजगुर - छिपकली
फूलपाखरू - तितली
बईल - बैल
बगला/बाड्डा - बगुला
बगारू - भैसी का ब्बाा
बिलाई - बिल्ली
ब्बिाु - बिच्छु
भसी - भैंसे
मसरी - मच्छी
मिठ्ठू - तोता
मधुमासी - मधुमक्खी
मोहतेल - मधुमक्खी छत्ता
मुंगी - चींटी
मोंगसा - मच्छर
मासी - मक्खी
लावा - लवा
सिमनी - चिडिया
ससा - खरगोश
सेरी - बकरी
साप सिरोली - छछूंदर
सरप - सर्प
हत्ति - हाथी
हल्ल्या - भैसा

शादी ब्याह

गांठ बांधनो - गांठ बंधाई
गुडूर - दुल्हे की बैलगाडी
चावुर अक्षता - चावल अक्षदा
चौक चांदन - रांगोली
डेरी पूंजन - डेरी पूजन
ढेंढो - स्वागत समारोह
दायजो - दहेज
धुरकोरी - रेहका (बैलगाडी)चालक
नवरदेव - वर
नवरी - वधु
नेंग दस्तुर - विवाह विधि
पांव लगनी - फलदान
फेरा - भंवर
पाट - आसन
बरात - बारात
बासिंग - लग्न मुकुट
बावस्या - लग्न निमंत्रण
बिह्या मांडो - लग्नमंडप
बिह्या - विवाह
मांडो गोवनो/गुथनो - मंडप सुतना
माहाती - मध्यस्थी
लगुन डेर - विवाहखांब
समदुरा - बधुवापसी बारात
हरद - हलदी

देवी-देवता तथा सन त्योहार
अखारी - गुरुपौर्णिमा
अठई - अष्टमी
इठ्ठल-रुकमाई - विठ्ठल रुखमाई
काजरतीज - काजलतीज
कान्हुबा - कृष्ण जन्माष्टमी
किरिस्न भगवान - कृष्णभगवान

गणपति पूंजा - गणेश पूजा
गणपति - गणेश
झाड़फुक- जंतर-मंतर
तुरसी बिंद्राबन - तुलसी वृंदावन
तुरसी बिह्या - तुलसी विवाह
देऊर - मंदिर/देवस्थान
देवी को ठानो - देवी मंदिर
देवघर - कुलदेव-देवी मंदिर
दिवारी - दीपावली
नवई - नवमी
नांग देव - नाग देवता
नांद्या - नंदी
नांग पंचमी - नाग पंचमी
पाट - चौरंग
पोहा - महादेव यात्रा
पोरा - पोला
बळूराजा - बलीराजा
बोवला - देव बैठक
भसासुर - म्हैसासूर
भोवानी - भवानी
मारबद - पोला पाड़वा
मारोती - हनुमान
मातामाय - गौरी
राखी - रक्षाबंधन
सराद - श्राद्ध
संकरांति - मकरसंक्रांत
सतनारायण - सत्यनारायण
सिव - शिव
सीमगा/दसरा - दशहरा
लकस्मी पूंजा - लक्ष्मीपूजा
होरी - होली

भारतीय पंचाग

(अ) साप्ताहिक दिन
इतवार - रविवार
सोम्मार - सोमवार
मंगरवार - मंगलवार
बुदवार - बुधवार
बस्तरवार - गुरुवार
सुक्करवार - शुक्रवार
सनवार - शनिवार

(ब) माह
चैत - चैत्र
बैसाख - वैशाख
जेठ - ज्येष्ठ
अखाड - आषाढ
सावन - श्रावण
भादवा - भाद्रपद
आसिन - आश्विन
कारतिक - कार्तिक
मार्गशीष - मार्गशीष
पुस - पौष
माह्या - माघ

फाक - फाल्गुन
०१. पुनवा - पौर्णिमा
०२. अवश - अमावशा
०३.अंधारी - कृष्णपक्ष
०४.उजारी- शुक्लपक्ष

(क) नक्षत्र
१. असिन - अश्विन
२. भरनी - भरणी
३. कुरतिका - कृत्तिका
४. रोहनी - रोहिणी
५. मिरूग - मृग
६. अरदरा- आद्रा
७. पुनरवसू - पुनर्वसु
८. पुस - पुष्य
९. आसरका - आश्लेषा
१०.मघा- मघा
११.पूरवाफागुनी - पूर्वाफाल्गुनी
१२. उतराफागुनी - उत्तराफाल्गुनी
१३. हत्ती - हस्त
१४. चितरा - चित्रा
१५. सवाती - स्वाती
१६. विसाखा - विशाखा
१७. अनुराधा - अनुराधा
१८. जेसठा - ज्येष्ठा
१९. मूल - मूळ
२०. पुरवअखाड - पूर्वाषाढा
२१. उतरअखाड - उत्तराषाढा
२२. सरवन - श्रवण
२३. घनिस्ठा - घनिष्ठा
२४. सततारा - शततारका
२५. पुरव भादो - पूर्वाभाद्रपदा
२६. उतरा भादो - उत्तरा भाद्रपदा
२७. रेवति - रेवती

शब्द-पद : अनेक शब्दों का एक शब्दप्रयोग से अर्थ बोध होता है, तब उसे शब्द पद कहते हैं। गागर में सागर भरना, कहावत यहां चरितार्थ होती हैं।

शब्दपद वाक्यखंड
चतुर्भुज - जेला चार हाथ सेति
दशानन - जेला दस तोंड सेति
निर्दयी- जेकअ् दिलमा दया नाहाय
अनाथ - जेको कोनी रखवालो नाहाय
विधवा - जेको नवरा मर गई से
कुलीन - जो उत्तम कुल मा जन्मेव
धनी - धन वान मानुस
दयालु - दयावान मानुस
दानी - दान करनेवालो मानुस
विश्वासू -जेको पर विश्वास करे जासे
मुका - जो खुपच कम बोलसे
बडबड्या - जो बोहुत बोलसे
नवाडो - जो नवो आई से
धूरकोरी -गाडो-गाडी को चालक
दतार्‍या - दतार चलावने वालो
नांगर्‍या - नांगर को चालक
बखर्‍या - बख्खर को चालक
पेंडक्या - धान की पेंडी बांधी मा आननेवालो

घोड़की - घोडागाडी को चालक
हांडीरांध्या - सयपाक करनेवालो
भसकी - भसी राखनेवालो
गायकी - गाई राखनेवालो
सेरकी - सेरी राखनेवालो
बलकी - बईल राखनेवालो
सीपी - कपड़ा सिवनेवालो
बरठी/बरठीन - कपडा धोवनेवाला
भाली/भालिन - हजामत ना
आंगपाय धोवावनोवाला
पटिल - गाव के मुखिया
पटलिन - मुखिया की नवरी
बढ़ई, - लकड़ी फर्निचर कारागिर
बढ़ईन - लकड़ी कारागिर की नवरी
खाती - लोहार औजार कारागिर
खातिन - लोहार की नवरी
हकीम - दवाई रोगीला देनेवालो
भगत - झाड, फूक करनेवालो
मान्या - खेत मा मच्यान
खन्यान - गहानी/चुरनी को ठिकान
ढोला - धान भरखन ठेवन का टाका
अम्बराई- आम्बा को बाग
मोहन्यान - मोहू को बाग
बाबुरबन - बाबुर को जंगल
परसाड़ी - पलस को जंगल
गावरान - गवत वाली जागा

सुड़ - जलाऊ काड़ी को साठा
बेलदार-इट् सिरमिट,को कारागिर
कोतवाल - गाव की रखवाली वालो
आखर - गाव की चौक / नुक्कड
गावखारी - खगारी जागा
चापड्या -बंजर गाजा
घरकोड्या -घर मा रहनेवालो
फिरस्ती - सदा फिरनेवालो
मुलुक फिऱ्या -गाव गाव घुमनेवालो
अमर - कभी न मरनेवालो
दवाखाना- जहा इलाज होसे
अमूल्य - जे की कीमत अतोनात से
अनपढ -जो निरक्षर से
आपबीती -आपलो पर गुजरी से तसी
उपकारी - उपकार करनेवालो
कामचोर - जो काम लक आपलो
आंग काढसे
गोधुली - दिवस बुडता की बेरा
घोडेसवार - घोडा पर बसनारो
चिंतित - जो चिंता मा डुबीसे
ठेकेदार -ठेका पर काम करनेवालो
दत्ताक - गोद लेयेव टूरा
निष्पक्ष- जो कोनी की बाजू नही ले
मासाहारी- जो मास गोस खासे
शाकाहारी-जो सागभाजी खासे
सामाजिक - समाज को हितचिंतक
शरणागत - जो शरण मा आई से

पवारी विरोधी शब्द (Antonyms)

आपलो X परायो
कडू X गोड़
उगावनो X बुड़नो
गंभीर X उथल्या
अमृत X जहेर
गन्दगी X सफाई
बाढ़/पूर X सूखा
घृणा X प्रेम
चांगलो X बेकार
घातक X पोषक
अमीर X गरीब
हुशार X मठ्ठ
अधिक X कम
जीवन X मरण
गर्विष्ठ X नम्र
जेठ X नानो
पुढअ् X मंघअ्
ताजो X बासी
इतअ् X उतअ्
थोडो X जादा
यहां X वाहां
लहानो X मोठो
वरत्या X खाल्या
बडबड्या X घूम्मन
मान X अपमान
कपटी X निष्कपट
आमदानी X खरचा

खिलनो X मुरझानो
फायदा X नुकसान
गुरु X चेला
इमानदार X बेईमान
गुण X अवगुण
इच्छा X अनिच्छा
पाप X पूण्य
पास X फेल
गाव X शहर
उठेव X पडेव
घात X इमान
अंधारो X उजारो
छल X साफ
गरमी X थंडी
जय X पराजय
अपमान X सम्मान
जागरण X सोवनो
आलसी X मेहनती
तेज X मंद
आशा X निराशा
अकल X बेअकल
उदार X कंजुस
ठोक X चिल्लर
उन्नति X अवनति
दिवस X रात
उतार X चढाव
दुर्गंध X सुगंध

उत्तर X दक्षिण
दुखी X सुखी
पुरब X पश्चिम
देव X दानव
कीर्ति X अपकीर्ति
भिक X दान
न्याय X अन्याय
महीन X चटरो
राजा X रंक
दुर्भाग्य X सौभाग्य
दूर X जवर
रोगी X निरोगी
नविन X जुनो
लोक X परलोक
पवित्र,शुद्ध X अपवित्र,
बिटार लाभ X हानी
निंदा X तारिफ
हिरवो X वारेव
यश X अपयश
नवरा X नवरी
राग X प्यार
सुंदर X कुरुप
बिमार X तन्दुरुस्त
सजीव X निर्जीव
सदुपयोग X दुरुपयोग
हल्को X भारी

पवारी पर्यायवाची शब्द (Synonyms)

अवगुण = दोष, बुराई
अचानक = एकाएक
अंधार = कारो
अंहकार = घमंड
अभिमान = गर्व
अग्नि = आग
आनंद = खुशी
आंग = शरीर
आदमी = मानुस
आत्मा = जीव
आकाश = बादर
आपत्ति = संकट, विपत्ति,मुसीबत
इच्छा = लालसा
इश्वर = देव,भगवान,
देवता,परमात्मा
उन्नति = तरक्की
उजारो = प्रकाश
उदार = दानी
उत्तर = जवाब
कला = हुनर
कपटी = धोकेबाज
किनारो = तट, तीर
कीमत = दाम, मोल
कुबेर = धनवान
खुब = पर्याप्त, बहुत
गणेश = गणपति
गर्मी = उष्णता
गुस्सा = क्रोध

गोपाल = किसन,कान्हुबा, गोबिंद
गोटा = पत्थर
घर = मकान, आवास
चतरो = हुशार, पटाईत
चंद्र = चांद
जमीन = धरती, भूमि
जंगल = बन
जनम = पैदा
ज्योति = जोत
झुंझुरका = भोर, पाहाट
झूठ = खोटो
झुंड = टोली, जत्था, दल
टुरी = बेटी
टुरा = बेटा, पुत
टुरूपोटू = बाल-गोपाल
तुरन्त = जल्द, झटपट
तारा = चांदनी
तीर = बाण
तिरस्कार = दुराव, परहेज
तरा = तलाव
थोडो/थोडी = कमी, सीमित
दुश्मन = बैरी
दया = कृपा, माया
दारू = शराब, सराप
दिवस = वार
दीन = गरीब,हीन,दरिद्र,निर्धन
दुर्गा देवी = देवी, माय, गौरी
दुःख = सन्ताप, पीड़ा

दुष्ट = नीच, धूर्त, कुटिल
धन = दौलत, सम्पत्ति, पैसा
धन = लक्ष्मी
धनुष = कमान
धुप = तपन
नवरा = मानुस, वय, मालिक
नाश = विध्वंश, विनाश
नाव = डोंगा, डोंगी, नवका
नमस्कार = नमस्ते, राम-राम
नौकर = चाकर
पर्वत = पहाड़, परबत
पंडित = विद्वान, ब्राह्मण
पानी = जल
पान = पत्ता
प्रेम = प्यार, लाड
प्रश्न = सवाल
बायको = नवरी, घरवाली
बाग = बगीचा
बरसात = बारिश, पानी
बादल = ढग
बिह्या = शादी
बुद्धी = अक्ल
मसरी = मच्छी, मछली
मोक्ष = सद्‌गति, सरगवासी
मित्र = संगी,दोस्त,भाई
मैला = गंदा, मलीन
मरण = मौत, फौत, काल, मृत्यु
मान = इज्जत
यात्री = मुसाफिर
राक्षस = दैत

रात = रात्री
राजा = माहाराजा
विष्णु = नारायण
विरोध = बाधा
शक्ति = ताकत, बल
शिक्षक = गुरु,अध्यापक,
प्राध्यापक
शाला = विद्यालय
शुद्ध = साफ
शिव = महादेव, शंकर, भोलानाथ
सकार = दिवस उग्यो
संगत = सम्पर्क, मिलन
स्फूर्ति = तेजी, फटाफट
समान = बराबरी
सावधान = होशियार
सर्दी = थंडी
सरग/स्वर्ग = देवलोक,
समुद्र = सागर, समुंदर
सरप = नांग, भुजंग, साप
सूर्य = सूरज
सिंह = शेर
सुंदर = देखनो, देखनी, रूपवान
सेना = फौज, दल
संसार = जग, लोक, दुनिया
समय = बेरा
हनुमान = मारोती
हवा = वायु
हरि = कृष्ण, विष्णु, इंद्रसूर्य
हिम = बरफ

पवारी अनेकार्थक शब्द (one word, variable meaning)

उत्तर - जवाब, उत्तर दिशा
पूर्व - पहिले, पूर्व दिशा
कर - टॅक्स, क्रिया
काल - पिछला दिन, मृत्यु, अभाव
काम - कार्य, धंदा
कुल - वंश, सम्पूर्ण
काच - कॉच, बटन, गुंडी
कला - हुनर, गुण
कोटि - करोड, श्रेणी
अर्थ - मतलब, धन/व्यारव्या
अज - आज, पिता
अंक - संरव्या, नाटक को एक भाग, धडा क्रमांक
अंग - शरीर, अवयव, भाग
अंतर - मध्य, अवधि, दूरी
अधर - धरती, आकाश को बीच मा, बिना साहारे
आम - आम फल, सामान्य
और - अथवा, तथा, जादा, अधिक
गति - अवस्था, रफतार, चाल
घर - मकान, निवास
घराना - कुल, वंश
घन - हातोडी, भारी, दाट, घना
घट - कम, दीया
चीर - कपड़ा, चीरना, चिंधी, रेरवा
जीवन - जिंदगी, प्राण
जेष्ठ - जेठ का महिना, बड़ा
ठाकुर - क्षत्रिय, भाली, नाई,
तन - देह, घास
तीर - बाण को तीर, नदी को तीर
ताप - ज्वर, बुरवार, आंच, उष्णता
दल - पक्ष, सेना, तुकडी
दण्ड - हाथ के दण्ड, भूभाग, सजा, डण्डा.
नव - नौ (अंक), नया
पत्र - चिठ्ठी, कागज, अरववार
पद - काव्यपद, पैर, पदवी, ओहदा
पानी - जल, दुश्मनी, प्रतिष्ठा
पोत - कपडा, नाव, अंतरंग
फल - लाभ, वृक्ष फल, नतीजा
बल - दम, सेना
भाग - भाग्य, हिस्सा, बटवारा
भूत - प्रेत, बीतेव समय
मांग - चाह, सिर की मांग, चमडा कारीगर, नगारची.
योग - जोड़, उपय्र, ध्यान
रस - काव्य रस, फल रस
राशि - नक्षत्र-राशि, रक्कम, धन
लक्ष्मी - देवी, पैसा, धन, पत्नी
वर्ण - रंग, जाति, मुळाक्षर
विधि - रीति, नियम, ब्रह्मा
शिव - महादेव, शंकर.
स्वर्ग - देवलोक, मृत्युलोक
हवा - वायु, पवन, निराधार
सोना - धातू, निंद लेना.

पवारी ध्वनिबोधक शब्द (words denoting sound)

बलबलानो (उंट की आवाज)
रंभानो (गाय की आवाज)
गुर्रानो (चीता की आवाज)
मिमियांनो (बकरी/सेरि की आवाज)
किलकिलानो (बंदर की आवाज)
घुरघुरानो (भालू की आवाज)
चीरवनो (भेडिया की आवाज)
दहाडनो (शेर की आवाज)
हुरडनो (सुअर की आवाज)
भुकनो (कुतरा की आवाज)
रेंगनो (गधा की आवाज)
हिनहिनानो (घोडो की आवाज)
म्यांऊ,म्यांऊ (बिलाई की आवाज)
डकरनो (बैल की आवाज)
टर्रानो (मेंढक की आवाज)
फुफ्कारनो (सरप की आवाज)
चूँचूँ करनो (उंदीर की आवाज)
हूँ - हूँ करनो (घुबड की आवाज)
काव-काव करनो(कावरा की आवाज)
टैं-टैं करनो (मिठ्ठू की आवाज)
गुटरगू करनो (कबुतर की आवाज)
कूय कूय करनो (कोयल की आवाज)
कै कै करनो (बदरव की आवाज)
कुकडूँ कूँ करनो (कोंबडा की आवाज)
कुहकनो (मोर की आवाज)
भिनभिनानो (मक्खि की आवाज)
झनझनानो (झींगुर की आवाज)
सून सून करनो (मोंगसा की आवाज)
पड़-पड़ करनो (ओले की आवाज)
भक-भक करनो (ईंज़न की आवाज)
छुक-छुक करनो (गाडी की आवाज)
टन-टन करनो (घंटी/घंटा की आवाज)
टिक-टिक करनो (घड़ी की आवाज)
रवनरवनाओनो (बंगड़ी की आवाज)
चरमरानो (जूता की आवाज)
झर झर होनो (झरना की आवाज)
ढम ढम करनो (ढोल की आवाज)
टिम-टिम करनो (तारा की आवाज)
किटकिटानो (दांत की आवाज)
टिमटिमानो (दीवो की ध्वनी)
फडफडानो (पक्षी पंरव की आवाज)
टपटपानो (पानी बूंद पडन की आवाज)
गरजनो (बादर/ढग की आवाज)
डगमगानो (नांव की अवस्था)
रवनरवनानो(रुपया पैसा की आवाज)
धडकनो - (हिरदय की आवाज
धू धू करनो - (आग की आवाज)
सूं-सूंकरनो(आंधी तूफान की आवाज)
रवों - रवों (रवासी की आवाज)
रुन-झुन करनो (घुंघरू की आवाज)
दनदनावनो (तोफ की आवाज)
रवटरवटावनो (दरवाजा की आवाज)
पटकनो (पाय की आवाज)
कडकडानो (बिजली की आवाज)
धमाका (बम की आवाज)
फटफट (बेरू की आवाज)
सर सर (हवा की आवाज)
टप टप (पानी की आवाज))

पवारी युग्मशब्द (word pairs)

(क) एक ही शब्द पुनरूच्चार से जोड़ी

आपलो	-	आपलो	आपली	-	आपली
कसो	-	कसो	कहां	-	कहां
करता	-	करता	कूद	-	कूद
फूंक	-	फूंक	कोन	-	कोन
का	-	का	खुशी	-	खुशी
दरता	-	दरता	हरे	-	हरे
खाली	-	खाली	गांव	-	गांव
गली	-	गली	खेत	-	खेत
पार	-	पार	धुरो	-	धुरो
गात	-	गात	खात	-	खात
भित	-	भित	हासत	-	हासत
रोवत	-	रोवत	खाता	-	खाता
राम	-	राम	तू	-	तू
मि	-	मि	घर	-	घर
पानी	-	पानी	देखत	-	देखत
धीरू	-	धीरू	साल	-	साल
संग	-	संग	मंघ	-	मंघ
साफ	-	साफ	सहता	-	सहता
पीता	-	पीता	माय	-	माय

(ख) समानार्थक शब्द जोडी

अनाज	-	पानी	कपडा	-	लत्ता
इष्ट	-	मित्र	आदर	-	सत्कार
उद्योग	-	धंदा	तोड़	-	फोड़
फल	-	फूल	रीति	-	रिवाज
देव	-	देवता	हेर	-	फेर
काट	-	छाट	कहनो	-	सुननो
बोल	-	भाषा	कंद	-	मूल
काम	-	काज	दाव	-	पेंच
भाग	-	दौड	रहन	-	सहन
सोच	-	बिचार	हिलनो	-	डुलनो
खेल	-	तमाशा	खाता	-	पीता
चमक	-	दमक	जीव	-	जंतु
जादू	-	टोना	झाड	-	पोछ

धरम	-	करम	मारनो	-	पीटनो
साधु	-	संत	हासी	-	खुशी
हिंडनो	-	फिरनो			

(ग) विपरीतार्थक शब्द जोडी

पूढं	-	मंघ	लेनो	-	देनो
आवनो	-	जानो	इतन	-	उतन
बरो	-	वाईट	कुतरा	-	बिलाई
गुण	-	दोष	सोवता	-	जागता
रोवनो	-	हासनो	लहान	-	मोठो
जीत	-	हार	कम	-	जादा
दिवस	-	रात	गर्मी	-	सर्दी
खुन	-	पसिना	ज्ञान	-	अज्ञान
धरम	-	अधरम	न्याय	-	अन्याय
मान	-	अपमान	लम्बी	-	चौडी
शुभ	-	अशुभ	खारो	-	मिठो
सवाल	-	जवाब	दूध	-	दही
माती	-	गोटा	सुख	-	दुख

(घ) सार्थक निरर्थक शब्द जोडी

अलग	-	थलग	उलटा	-	पुलटा
आस	-	पास	कागज	-	वागज
चाहा	-	वाहा	चिट्ठी	-	विट्ठी
आमने	-	सामने	चटक	-	मटक
लिखाई	-	पढाई	चाकू	-	वाकू
चुप	-	चाप	छेड़	-	छाड़
गुम	-	सुम	घर	-	फर
जात	-	पात	ठाठ	-	बाट
ढीला	-	ढाला	टाल	-	मटोल
देख	-	भाल	नोक	-	झोक
मज्या	-	मस्करी	बोल	-	बाला
बचेव	-	कुचेव	भीड़	-	भाड़
मार	-	धाड़	मेल	-	जोल
बोल	-	चाल	रोवनो	-	धोवनो
लोट	-	पोट	सज	-	धज
हिसाब	-	किताब	अनाप	-	शनाप
ऐरा	-	गैरा	साठ	-	गाठ

६ पवार कुलादित्य राजा भोज

मालव चक्रवर्ती सम्राट भोज मध्ययुगीन भारत के इतिहास में सम्राट अशोक तथा विक्रमादित्य के समान महाप्रतापी, शूरवीर, कुशल शासक, विद्वान, कवि, दानी, ज्ञानी, न्यायी, धार्मिक, सदाचारी, विद्वानों का आश्रयदाता, ज्ञान-विज्ञान, कला, साहित्य, संस्कृति का पुरस्कर्ता, एवम् लोक सुख-समृद्धि हेतु सदैव कार्यरत, सुरक्षा दक्ष तथा प्रजा में अगाध लोकप्रिय अद्वितीय आदर्श चक्रवर्ती राजा हुआ ।

भोज इतना महान व्यक्तित्व का बलाढ्य धनी था कि उसे अनेक उपाधियों से अलंकृत किया गया था जैसे - महाधिराज परमेश्वर, परम भट्टारक महाधिराज परमेश्वर, मालवमण्डन, सार्वभौम, मालवचक्रवर्ती, अवन्तिनायक, धारेश्वर, निर्वाणनारायण, त्रिभुवननारायण, लोकनारायण, विदर्भराज, अहिराज, अहिंद्र, अभिनवार्जुन, कृष्ण, रणरंगमल्ल, आदित्यप्रताप, चाणक्यमाणिक्य, कविराज आदि करीबन ८४ उपाधियाँ डॉ. श्री. वी. वेंकटाचलम् ने धार स्टेट गजेटियर पृ.१०७ पर उल्लेखित की हैं । भारत के प्रथम प्रधानमंत्री स्व.श्री.पं.जवाहरलाल नेहरु ने भी अपनी जग-विख्यात रचना 'डिस्कवरी ऑफ इंडिया' में धाराधिश राजा भोज को मध्ययुगीन भारत का महान राजा निरुपित किया है ।

१. भोज का वंश : भोज ने प्राचीन अग्निकुल राजपूत क्षत्रिय पंवार / परमार वंश में जन्म लेकर वह मालवा का सार्वभौम राजा बना । इसकी पुष्टि तत्कालीन ताम्रपत्र, अभिलेख तथा ग्रंथों से होती है -

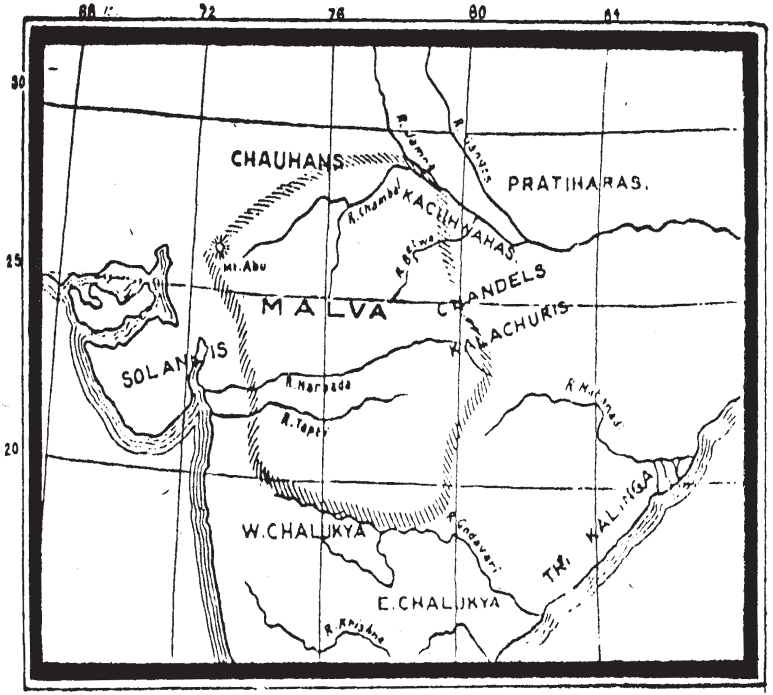
उदयादित्यकालीन नीलकंठेश्वर मंदिर, उदयपुर (जि. विदिशा, म.प्र.) के अभिलेख से स्पष्टतया ज्ञात होता है कि राजाभोज का वंश पंवार था-

श्रीमान पंवार वंस्यो नृपतिंच विवुध मालवंराज्य ।
किंत्वा विदात शुरवीर भवंतिजल मिदैत पापिनां भूषरहा ।।२।।





पँवार राजा भोज की राजमुद्रा



पँवार राजा भोज का राज्य-क्षेत्र

अर्थात - श्रीमान पंवार वंश में विविध विद्वान और शुरवीर राजा हुए जिन्होंने मालव राज्य से पापियों का संहार किया । जयवर्मनकालीन मांधाता (जि.खंडवा, म.प्र.) अभिलेख में वर्णन किया गया है कि -

पंवार वंस्यो परमारकुलोत्तंसः कंसाजिन्महिमा नृपः ।
श्री भोजदेव इत्यासीन्नासीरकान्त - भूतलः ।।५।।

अर्थात - पंवार वंश के परमार कुल में सर्वोत्तम कंस को जीतनेवाली महिमावाला राजा श्री भोजदेव हुआ जिसने पृथ्वी की चारो दिशाओं में विजय प्राप्त की ।

२. भोज का जन्म एवं राजवैभव : भोज को भोज, भोजदेव, भोजराज, भोजपति, नरेंद्र, आदि नामों से संबोंधित किया गया है । पं.राजवल्लभ कृत 'भोजचरित' में भोज का जन्म माघ शुल्क ५ (बसंत पंचमी) को संवत् १०३७ (ई.९८०) में अंकित है । वह पिता मालवाधिश सिंधुलराजदेव तथा माता महारानी सावित्री देवी का ज्येष्ठ पुत्र था तथा वाक्पति मुंजदेव का भतिजा था। भोज की विमाता रत्नावली, शशिप्रभा आदि थी । भोज के लघु भ्राता का नाम दुशल या उत्पलदेव था जो किराड राज्य का स्वतंत्र राजा बना। भोज की पत्नी महारानी लीलावती तथा अन्य पत्नियॉ सत्यवती, मदनमंजरी, भानुमती, पिंगला,सुभद्रा आदि थी । भोज के तीन पुत्र थे जयसिंह, देवराज तथा वत्सराज तथा दो पुत्रियॉ - राजमति एवं भानुमति थी। भोज की पत्नी, महारानी लीलावती महान कवियत्री तथा गणितज्ञ थी एवं राजदरबार में महाकवी कालीदास को कई बार शास्त्रार्थ वाद-विवाद में हरा चुकी थी ।

भोज सभीप्रकार के शस्त्र तथा शास्त्रों में निपुन था । उसने राजा मुंजदेव (ताऊ) तथा राजा सिंधुलराजदेव (पिता) के काल में शुरवीर सेनानी तथा विद्वान कवि के रुप में ख्याति पाई थी । किसी समय महाराजा मुंज के दरबार में एक ज्योतिषी आया तथा उसने भोज की जन्म कुंडली देखकर बतलाया कि हे राजन, सुनोः-

पंच्चाशत्पंचवर्षाणि सप्त मास दिनत्रयम् ।
भोजराजेन भोक्तव्या सगौडो दक्षिणपथः ।।

अर्थात् ५५ वर्ष, ७ माह ३ दिन गौड़ बंगाल सहित दक्षिण दिशा का राज्य भोजराज भोगेगा ।

राजा मुंज अपने मन में विचार करने लगा कि यदि भोज के अधिकार में राज्य चला गया तो मै जीता ही मृतक समान हो जाऊंगा सबब उसने भोज को मरवाने की चेष्टा की तथा मुंज ने एक दूत द्वारा बंग देश के राजा वत्सराज को बुलाकर उसे कहा कि भोज को रात्रि में भुवनेश्वरी बन में ले जाकर मार डालना और शिर काटकर राज मंदिर में हमारे पास ले आवो । बंगराज ने पहले तो इसका प्रतिकार किया परंतु मुंज के आग्रह करने पर उसने भोज को सूर्यास्त के उपरांत महामाया के मंदिर में ले गया तथा उनसे कहा कि किसी ज्योतिषी के बतलाने पर मुंज ने तुम्हारा वध करने की मुझे आज्ञा दी है । यह सुनते ही भोज ने कहाः-

रामे प्रवजनं बलेर्नियमनं पाण्डोः सुतानां वनम्
वृष्णीनां निधनं नलस्य नृपते राज्यात्परिभ्रंशनम् ।
पाकागारनिषेवणं च मरणं संचिन्त्य लंकेश्वरम्,
सर्वःकालवशेन नश्यति नरः कोवा परित्रायते ? ।।

अर्थात श्रीरामचंद्रजी का बनवास, राजा बली का बंधन, पांडवों का रहना, यादवों का मरण, राजा नल का राज्य से पृथक होना तथा दूसरे के घर जाकर रसोई बनाना, लंकापति रावन का मारा जाना इस प्रकार होनहार दशा का विचार करो । सब ही प्राणी काल के वश हो नष्ट हो जाते हैं । कौन रक्षा करता है? ।

उदयति यदि भानुः पश्चिमे दिग्विभागे,
प्रचलति यदि मेरूश्शीततां याति वन्हिः ।
विकसति यदि पद्मं पर्वताग्रे शिलायां,
न हि चलति नराणां भाविनी कर्म रेखा ।।

अर्थात सूर्य पूर्व में उदय होता है वह चाहे पश्चिम में उदय हो, पर्वत अचल होता है वह चाहे चलने लगे, अग्नि तत्व अपना असली रूप त्यागकर चाहे शीतल हो जावे, कमल पर्वत के चोटी पर चाहे फूलने लगे परन्तु विधाता ने मनुष्यों के ललाट पर जो हौनहार कर्मरेखा लिख दी है वह नहीं मिट सकती । तदन्तर भोज ने बरगद के दो पत्ते लेकर एक पत्ते का दोना बनाया

और अपनी जांघ चीरकर उसमें रूधिर टपकाया । फिर एक तृण लेकर उससे एक पत्ते पर एक श्लोक लिखा और वत्सराज से कहा कि यह पत्र हमारे चचा मुंज को दे देना । फिर कहा कि अब तुम राजा के आज्ञा का पालन कर सकते हो अर्थात तब मुंज की आज्ञा का पालन कर मेरा सिर काट सकते हो तथा ऐसा कह सिर नवा दिया । इसी समय वत्सराज का भाई वहां खड़ा ही था । उसने कहा कि धर्म ही ऐसा उत्तम मित्र है जो प्राणी के साथ जाता है तथा कोई किसी के साथ नहीं जाता । इसका इतना प्रभाव वत्सराज पर पड़ा कि उसके मन में वैराग्य उत्पन्न हो गया । वत्सराज ने क्षमा मांगी तथा भोज को रथ में बिठालकर अपने घर गुप्त स्थान पर छिपा दिया व चित्रकारों द्वारा नकली सिर भोज का बनाकर मुंज के समक्ष पेश कर दिया तथा जो पत्र भोज ने उन्हें लिखा था उसे दे दिया। पत्र में निम्नलिखित श्लोक लिखा था :-

> माब्धाता व महीपतिः कृतयुगे लंकारभूतो गतः ।
> सेतुर्येन महोदधौविरचितः क्वासौ दशास्यान्तकः ।।
> अन्ये चापि युधिष्टिरप्रभतयो याता दिवं भूपते ?
> नैकेनापि समङ्गता वसुमति मुंज, त्वया यास्यति ? ।।

अर्थात ''सतयुग में राजा मान्धाता जो आभूषण रूप था अर्थात पृथ्वी में सबका शिरोमणि था वह भी नहीं रहा और जिन्होंने समुद्र में पुल बांधकर महाबली रावण को मारा ऐसे श्रीरामचंद्रजी भी कहां है? और भी बड़े राजा युधिष्ठिर आदि इस पृथ्वी पर हो गये वे भी स्वर्ग लोक को चले गये। इनमें से एक के भी साथ यह पृथ्वी नहीं गई । हे राजा मुंज, अब ये तुम्हारे साथ जायगी?'' इन शब्दों को सुनकर मुंज शय्या पर से निचे गिर गया तथा अग्नि में प्रवेश करनें की सोची । इतने में वत्सराज ने सारा वृत्तांत बुद्धिसागर को कह सुनाया तथा उन्होंने युक्ति से एक योगी को राज दरबार में लाये तथा मुंज को बतलाये कि ये मरे हुये व्यक्ति का सिर धड़ से जोड़ देता है क्योंकि मुंज को उपरोक्त पत्र भोज द्वारा लिखित पढ़कर पश्चाताप व राज्य से वैराग्य हो चुका था तथा वह यही कामना कर रहा था कि भोज फिर से जीवित हो जावे । उस योगी ने वत्सराज की सहायता से असली भोज को जिसे वत्सराज नें छिपाकर रखा था उसे लाकर मुंज के समक्ष प्रस्तुत किया

लेकिन उन्हें बतलाया कि उसने काटे हुये सिर को जोड़कर भोज को जिवित किया है । बाद में मुंज के वध पश्चात राजा सिंधुलराज मालवा नृपति बने । राजा सिंधुलराजदेव ने अपनी वृद्धावस्था के कारण अपना राजसिंहासन अपने मेधावी ज्येष्ठ पुत्र भोजदेव को सौपकर स्वयं तपस्या करने वन में चला गया । इस वक्त भोज केवल २० वर्ष आयु का किशोर था । इतिहासकारों के अनुसार भोज मालवा राजसिंहासन पर मार्गशीर्ष वदी १०, संवत १०५६ (१000ई.) दिन आरुढ़ हुआ ।

प्रारम्भ में भोज को अपने परिजन दुश्मनों से संघर्ष करना पड़ा । मुंजदेव के दोनो पुत्र आबु तथा जालौर के स्वतंत्र राजा होने के पश्चात भोज ने चेदीश्वर, इन्द्ररथ, भीम,तोग्गल, चालुक्य, कर्णाट, लाट, तुरुक, गांगेयदेव आदि अनेक राजाओं को युद्ध में हराकर मालवा राज्य की सीमाएं चारो दिशाओं में विस्तृत की । अपनी राजधानी उज्जैन से धारा नगरी स्थलांतर की ।

३. भोज का विजय अभियान : राजा भोज सिंहासनारूढ होते ही कल्याणी के चालुक्यों से प्रतिशोध लेने के लिये सज्ज हो गये । राजा भोज ने कल्याणी पर आक्रमण किया, इस युद्ध में कलचुरी शासक गांगैय देव और दक्षिण के चोल राजा राजेन्द्र ने भोज का साथ दिया । कल्याणी के चालुक्य पर विजय, भोज की पहली विजय और पहला सैनिक अभियान था।

कोंकण और लाट प्रदेश पर चालुक्यों के ही सामन्तों का आधिपत्य था । इसलिये भोज का द्वितीय सैनिक अभियान कोंकण और लाट प्रदेश के लिये हुआ । यहाँ भी राजा भोज को विजयश्री मिली । लाट प्रदेश में राजा भोज ने अपने सामन्त यशोवर्मा को पदस्थ कर दिया । राजा भोज ने आदिनगर (उड़ीसा) के सोमवंशी राजा इन्द्ररथ को पराजित कर उसे अपना अधीनस्थ बना लिया ।

राजनीति के रिश्ते स्थायी नहीं होते । मित्रता एवं शत्रुता व्यक्तिगत लाभ-हानि एवं स्वार्थ से बदलती रहती है । दक्षिण की विजय यात्रा में कलचुरि शासक गांगेयदेव ने भोज का साथ दिया था किन्तु भोज ने कलचुरि शासक गांगेय देव के चेदि प्रदेश पर भी आक्रमण कर दिया । ऐसा लगता है कि भोज गांगेय देव की बढ़ती हुई शक्ति से सशंकित था । गांगेय देव ने

प्रतिहारों के पतन से लाभ उठाते हुये उनके बनारस के क्षेत्र पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया था । अब वह प्रतिहारों के प्रमुख केन्द्र कन्नौज के क्षेत्रों पर अपना आधिपत्य स्थापित करने की योजना बना रहा था । राजा भोज की भी दृष्टि प्रतिहारों के उसी क्षेत्र पर लगी हुई थी । इसलिये प्रारम्भ में ही भोज ने कलचुरी नरेश पर आक्रमण कर उसकी शक्ति क्षीण कर दी जिससे वह कन्नौज की ओर न जा सके । विजयश्री ने भोज का साथ दिया। इस लडाई के बाद *कहां राजा भोज और कहां गांगेय तैलप* यह कहावत मशहूर हुई ।

कन्नौज से संलग्न क्षेत्रों पर आधिपत्य स्थापित करने के लिए भोज अत्याधिक लालायित था । रास्ते में जेजाकभुक्ति के सशक्त विद्याधर चन्देल का राज्य था । ग्वालियर के कछवाहे विद्याधर के करढ़ सामन्त थे। भोज विद्याधर चन्देल से नहीं टकराना चाहता था क्योंकि उसकी शक्ति से वह परिचित था । इसलिये भोज ने ग्वालियर और दूबकुंड को अपना शिकार बनाना चाहा, क्योंकि इस राह से भी कन्नौज पहुंचा जा सकता था । ग्वालियर पर आक्रमण हो गया । भोज पराजित हो गये । यह उनके जीवन की पहली असफलता थी । संभव है विद्याधर ने अपने सामन्तों की सहायता की हो जो उसका धर्म था । विद्याधर के एक अभिलेख में भोज का श्रीहीन होना अंकित है, जिससे लगता है कि विद्याधर ने अपने सामन्तों की सहायता की थी । इसी बिच विद्याधर का निधन हो गया । जेजाकभुक्ति की चन्देल सत्ता चरमराने लगी । चन्देल सत्ता के पराभव के साथ ही ग्वालियर के कछवाहा सामन्त ने चन्देल सत्ता की सामन्ती छोड़कर भोज की सामन्ती ग्रहण कर ली । भोज के लिये कन्नौज की राह साफ हो गई । उचित अवसर देखकर भोज ने कन्नौज पर आक्रमण कर दिया और वह कान्यकुब्ज के कुछ क्षेत्रों पर अपना आधिपत्य स्थापित करने में सफल भी हो गया । इसी के साथ उत्तर प्रदेश के कुछ अन्य क्षेत्रों पर भी भोज ने अपनी सत्ता स्थापित कर ली ।

भोज का अन्तिम सैन्य अभियान अनहिलवाड़ा के चालुक्य भीम के विरूद्ध हुआ । यद्यपि भीम और भोज में मित्रता थी, किन्तु भोज ने मित्रता की अनदेखी करते हुये अनहिलवाड़ा पर उस समय आक्रमण किया जब

भीम किसी सैन्य अभियान में अपनी राजधानी से बाहर था । इस सैन्य अभियान का नेतृत्व भोज ने नहीं किया था, वरन् उनके सेनापति कुलचंद्र ने किया था । भीम की अनुपस्थिति में उसकी राजधानी असुरक्षित हो गई थी और बड़ी सरलता से मालवा की सेना ने उसे खूब लूटा और ध्वस्त किया और *कुलचंद्र की लूट* यह किवदन्ति बन गई । भीम ने सक्षम होते हुये भी प्रतिशोध में भोज के विरूद्ध अप्रिय कार्य नहीं किया।

अंततया, भोज का विक्रम संवत १०७८ (१०२१ ई.) में मात्र २०वर्षों बाद, ४०-४१ वर्ष की आयु में ''मालवसम्राट परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर त्रिभुवन चक्रवर्ती'' के सर्वोच्च सर्वभौम पद पर राजतिलक हुआ (शुभशील - भोजप्रबंध). भोज ने अपने सेनापति कुलचंद्र तथा सुरादित्य के साथ अपने राज्य की सीमा उत्तर में हिमालय (कश्मिर) दक्षिण में मलय (केरल), पश्चिम में द्वारका तथा पूर्व में बंगाल तक विस्तारित की थी (अवंतिका शिलालेख). पी.टी. श्रीनिवास अयंगार, भोज का राज्य गोदावरी तथा यमुना तक तथा डी.सी. गांगुली, भोज का राज्य उत्तर में बांसवाडा, डुंगुरपुर तक, दक्षिण में गोदावरी तक तथा पश्चिम में कैरा जिलेतक विस्तुत मानते हैं । डॉ. दशरथ शर्मा अनुसार गुजरात का अहमदाबाद तक का भाग, मालवा, बहुतांश राजस्थान, मध्यभारत का अधिकांश भाग, बस्तर भाग तथा महाराष्ट्र के कोंकण, खानदेश और विदर्भ उसके साम्राज्य में सम्मिलित था । अतः भोज सार्वभौम राजा था । मालवचक्रवर्ती बन चुका था । उसने अनेक छोटे-बड़े राजाओंको पराजित कर अपने राज्यक्षेत्र की सीमाओं में वृद्धि की थी । परिणाम स्वरुप भोज ने अपने पैतृक राज्य के रुप में केवल मालवा प्राप्त किया था जिसे उसने विशाल साम्राज्य में परिवर्तित कर दिया ।वह ८४ सामंतों (मांडलिक राजाओं) का स्वामी था । उसने ८४ उपाधियाँ ग्रहन की थी । ८४ ग्रंथ लिखे । धार में ८४ प्रासाद, देवालय तथा चौराहे बनाए (श्रृंगारमंजरी कथा) ।

४. भोज बनाम गजनबी - इतिहासकारों के अनुसार राजा भोज भारत का पहला हिन्दु राजा था जिसने विदेशी मुस्लिम आक्रमणकारियों को इस देश में पांव जमाने नही दिये । अफगानिस्तान के गजनबी ने जब-जब आक्रमण किया, भोज ने उसे देश की सीमाओं के बाहंर खदेड़ा ।

सर्वप्रथम भोज ने वर्ष १००८ ई. में.लाहौर के नृपति शाही आनंदपाल को सुल्तान महमूद गजनवी के आक्रमण का मुकाबला करने अपनी सेना भेजी । इसी तरह उसके पुत्र त्रिलोकपाल जो वर्ष १०१९-२० ई. में लाहौर का शासक था उसे भी अपनी सेना भेजी एवम् भोज ने गजनवी के आक्रमणों को नाकामयाब किया (धार गजेटियर).

गर्दीजी कृत ''जैनुल अखबार'' के विवरण अनुसार वर्ष १०२४-१०२६ ई. में महमूद गजनवी ने भारत पर दोबारा आक्रमण किया । वह जैलसमेर, मारवाड, गुजरात मार्ग से आगे बढ़ा । गुजरात के चालुक्य नरेश भीम प्रथम की सेना गजनवी के सैन्यबल के सामने टिक न सकी और उसने सोमनाथ मंदिर की तोड़फोड़ कर खुब लूट-पाट मचायी । किन्तु राजा भोज की विशाल सेना की खबर सुनते ही वह सिंध के रास्ते रेगिस्थान होते हुए वापस अफगानिस्थान लौट गया । उसे वापसी में अपनी सेना एवम् पशुओं की भारी प्राणहानि झेलनी पड़ी । राजा भोज ने सोमनाथ मंदिर की मरम्मत करवाई ।

लूअर्ड तथा लेले कृत - ''दी परमाराज ऑफ धार एन्ड मांडू'' में जानकारी दृष्टिगत होती हैं कि राजा भोज ने मूहमद गजनवी के आक्रमणों का मुकाबला करने के उद्देश्य से हिंदू राजाओं का एक सशक्त संघ बनाया था जिस में कलचुरी नरेश लक्ष्मीकर्मा तथा चौहान आदि राजपूत वंशी नृपतिगन सम्मिलित थे । ''फरिश्ता'' में इस संघ की संयुक्त सेना में अजमेर, कनौज, कालिंजर, लाहौर आदि राज्यों की सेनाओं के सम्मिलित होने की पूष्टि की है ताकि लाहौर नरेश जयपाल आक्रमणकारी गजनबी को लोहा दे सके ।

ए. इं. खंड ३, पृष्ठ ४६ पर उल्लेख मिलता है कि जब महमूद गजनबी के पुत्र मलिक सलाल मसूद ने सन १०४३ ई. में लाहौर पर आक्रमण किया तब राजा भोज के नेतृत्व में हिंदू राजाओं की संयुक्त सेना ने बहराइच के मैदानपर एक माह तक घनघोर युद्ध किया और उसे वापस भगाया । तद्पश्चात संयुक्त सेना ने हांसी, थानेश्वर, नागरकोट आदि के किलों को मुसलमानों से आजाद किया । गजनबी के सेनापति तोग्गल से लाहौर का किला मुक्त कराने के लिये भोज ने लगातार सात माह तक युद्ध कर अंत में जीत हासिल की ।

५. भोज का व्यक्तित्व : श्रृंगारमंजरीकथा में भोज ने अपने व्यक्तित्व का परिचय दिया है - भोज सुवर्णमय कांतीवाला, उँचा, भीमभूजाधारी, अतिसुंदर चेहरा, उँचा माथा, विशाल वक्षवाला महापराक्रमी आकर्षक व्यक्तित्व का धनी था -

कनककांतिच्छुरितमरकतप्रभाभिरामदेह : ।
निजभुजोघालितदुर्मदरिपु ।
सतताविष्कृत सुदर्शनोपि दुर्दशनः लावण्यपीयुसलिलाः ।
हराट्टहास इव विशादकांतिसम्पदः अभूत प्रसवभूमि ।

अर्थात - मरकत की सुवर्णप्रभा मिश्रित गेहुँए वर्ण का शरीर, अपरिमित शक्तिवाली भुजाएँ जो दुष्मनोंको भयभीत करें, तथा उसकी आकर्षक शरीर आकृति पर हरदम विलासीनियॉ मुग्ध रहती थी । भोज ऋतु अनुरुप विविध पुष्पों का लेपन करता था ।

उसकी धर्म में अटुट श्रद्धा थी । वह महिला एवं बच्चोंपर कभी भी शस्त्र नही चलाता था । शरणागती आये हुए दुश्मनोंको आश्रय प्रदान करता था । वह परस्त्रियों का सम्मान करता था तथा कामिनियों से सदा दूर रहता था । वह शिव, जगनारायण, सरस्वती तथा काली माँ का उपासक था ।

वह धनुर्विद्या, असिधेनु (लम्बा चाकू या छुरी) कृपाण तथा तलवार चलाने में निपुन था । उसने 'खड्गशतम्' लिखा था । भोज उन्मत्त हाथी को वस में करने की विद्या जानता था । वह हस्तिलक्षणों, अश्वगुणों तथा उनकी चिकित्सा का ज्ञाता था (युक्तिकल्पतरु, शालिहोत्र, कोदण्ड काव्य)। भोजदेवकृत युक्तिकल्पतरू ग्रंथ अनुसार उसके तीन प्रकार के सेनादल थे, पैदल सेना, अश्वसेना तथा हस्ती सेना ।

यश्च प्रभवो धर्मस्य, आश्रयः सत्यस्य, कुलगृहं कलानाम् ,
क्षेतं क्षत्राचारस्य, प्रमोदोद्यानं, विद्यालतानाम्,निधानं
नीतेः, जीवितं शौर्यस्य,वसतिर्विलासानाम्, आकरः
करुणायाः, बान्धवो वैदग्ध्यस्य.......रसस्य, धौरेयो
धनुर्धराणाम, अग्रणी गुणवताम् । श्रृ.मं.क.पृ.९

स्वयं भोज में धर्म, सत्य, कला, क्षत्राचार, विविध विद्या, नीति, शौर्य, विलास, करुणा, विद्ग्धता, रसिकता, धनुर्धरता, इ. विविध गुणोंका समाहार था । भोज उदार, शालीन एवं परिष्कृत मनोवृत्तिका आदर्श नरेश था । भारतीय आदर्शो का वह प्रतीक था । उसने इन्ही गुणोंसे लोकमानस में विपुल रुप से प्रतिष्ठा पाई ।

भोज सम्राट अशोक जैसा सदाचारी तथा सम्राट समुद्रगुप्त जैसा साहित्यिक एवम् सम्राट विक्रमादित्य जैसा शूरवीर एवम् न्यायी राजा था जो सदा अपनी प्रजा के सुरव-समृद्धि के लिए समर्पित था । इस प्रकार भोज में विविध गुणों का समाहार था । वह गुणवानों में अग्रणी था ।

६. पण्डिता मण्डितः सर्वे भोजराज भुवंगते : राजा भोज के शासन काल में मालवा अति श्री संपन्न था । वह कविराज 'मालवा चक्रवर्तिन्' कहलाता था तथा इन्हें हम हिंदू भारत के महानतम् नरेशों के पंक्तियों में रख सकते हैं। मालवमणि भोज के स्वर्गवास पर श्री. बल्लाल पंडित ने लिखा है :-

अद्य धारा निराधारा, निरालम्बा सरस्वती,
पंडिताः खंडिताः सर्वे, भोजराजे दिवंगते ।

एक किंवदंति के अनुसार कवि कालीदास (भोज के दरबार का महाकवि पं.छित्रप) नाराज होकर धार से कहीं चले गये तथा जब उनका पता न चला तब भोज ने अपने को मृतक घोषित कर दिया जिससे कालीदास वापिस आ जावे । इस मृत्यु का समाचार सुनते ही कालीदास ने उक्त श्लोक कहा था तथा जब धार में आये तब उनने पाया कि राजा भोज जीवित हैं तथा उन्होंने भोज की प्रशंसा करते हुए यह श्लोक कहा किः-

अद्य धारा, सदा धारा, सदा लम्बा सरस्वती ।
पंडिताः मंडिताः सर्वे, भोजराजे भुवंगते ॥

भोज सारे राज्यशास्त्र, ३६ आयुधविज्ञान, ७२ कलाओं में पारंगत था (प्रबंध चिंतामणी, रासमाला) । भोज की विभिन्न कला तथा वैज्ञानिक ज्ञान का पांडित्य युक्तिकल्पतरु, समरांगणसूत्रधार, सरस्वती कंठाभरण, श्रृंगारप्रकाश तथा श्रृंगारमंजरीकथा से विशद होता है । वह श्रृंगाररस में पारंगत था । उस के ग्रंथ विविध क्षेत्रों में जैसे, ज्योतिष्य, अलंकार, दर्शन, राजनीति, धर्मशास्त्र, शिल्प, व्याकरण, वैद्यक, कोष, काव्य, सुभाषित पर

पाये जाते हैं । प्रभावकचरित अनुसार भोजकृत शास्त्रों में - भोजव्याकरण, शब्दालंकार शास्त्र, तर्कशास्त्र, चिकित्साशास्त्र, राजसिद्धांत, रसशास्त्र, वास्तुशास्त्र, उदयशास्त्र, अंकशास्त्र, शाकुनकशास्त्र, अध्यात्मशास्त्र, स्वप्नशास्त्र, सामुदिकशास्त्र, व्यारव्यानशास्त्र, प्रश्नचुडामङण, पूर्वजन्म सु/कुकृत्य अयःशास्त्र, अर्थशास्त्र, अर्थकाण्ड, मेघमाला, ई थी । कोदण्डकाव्य, भोजप्रबन्ध, श्रृंगारमंजरी कथा के अलावा नाट्यशास्त्र, संगीतशास्त्र पर भोज के ग्रंथो का विवरण हैं ।

७. भोज का वायुयान शास्त्र : राजा भोज ने अपनी जगविरव्यात रचना ''समरांगण सूत्र'' में अनेक विज्ञानशास्त्रों का सटीक संकलन किया है । इस ग्रंथ में 'वायुयानशास्त्र' नामक ३१ क्रमांक का अध्याय है । इस अध्याय का मुल आधार महर्षि भारद्वाज कृत ''बृहद वायुयान विज्ञान'' ग्रंथ है । राजा भोज ने इस अध्याय की रचना हेतु तत्कालीन ९७ संदर्भ ग्रंथों की सूची दी है । उन्होंने ऋग्वेद, रामायण, महाभारत आदि में वर्णित (क्रमशः) आकाशगामी रथ, पुष्पक, शाल्व नामक विमानों का विवरण भी दिया है । राजा भोज ने ''पांच-मिश्र लौह'' धातु का वायुयान निर्माण के लिये उपयोग बताया है ताकि आसमान में वायुयान को लेसर किरणे क्षति न पहुंचा सके। इसी तरह इंधन के रूप में पारा (मरकूरी) इस्तेमाल करने का जिक्र किया गया है ।

राजा भोज द्वारा दी गई वायुयान शास्त्र की जानकारी के आधारपर मुम्बई निवासी कै. शिवशंकर बापूजी तळपदे ने वर्ष १८९५ में एक वायुयान का निर्माण किया और उसे ''मरूत्सरवा'' नाम दिया । इस वायुयान (हवाई जहाज) को स्वयम् वैमानिक बनकर करीब १५०० फीट ऊँचाई तक उड़ाया। तत्कालिन मुम्बईवासीयों ऩे उनकी इस असाधारण उपलब्धि की सराहना की और बड़ोदा नरेश ने उन्हे पुरस्कृत कर सम्मानित किया था ऐसा विवरण बड़ोदा राजघराने के तत्कालिन रेकॉर्ड में मिलता है । किन्तु ब्रिटिश शासनकर्ताओं ऩे कै. शिवशंकर तळपदे के इस अलौकिक उपलब्धि की अनदेरवी की एवम् मात्र ८ वर्षो बाद इ.स. १९०३ मं पहला वायुयान उड़ाने का सेहरा राईट बन्धुओं के सिर मढ़ दिया ।

भोज करीबन १४०० विद्वानों का आश्रयदाता था । कोदण्डकाव्य

तथा अज्ञातनामा काव्य में भोज की विद्वत परिषद की जानकारी है जिस में विविध विषयों के ५०० विद्वान थे । विभिन्न प्रश्न / समस्याओंपर अभिमत, न्यायसंगत, तर्कसंगत निष्कर्ष पाने हेतु इन विद्वानों का मत लिया जाता था। कोई भी नागरिक निर्भिक होकर न्याय का हकदार था । भोज स्वयं भेष बदलकर राज्य में घुमता था । वर्षभर गोष्ठियाँ, परिसंवाद, संगीत, नाटक राज्याश्रय से चलते थे ।

भोज ने धार में ''भोजशाला'' या ''सरस्वती सदन'' नामक विश्वविद्यालय तथा उज्जैन और मांडु में विद्यालय खोले थे । यहांपर देश-विदेश के छात्र शिक्षा ग्रहन करते थे । भोज का प्रधानमंत्री रोहक तथा मंत्री-बुद्धिसागर दोनों विद्वान थे । उसका राजपुरोहित - चंद्रशेखर दीक्षित था । भोज के राजदरबार में महाकवि चक्रवर्तीन पंडित छित्तप इतना विद्वान था कि उसे 'कालिदास' उपाधि से अलंकृत किया गया था । भोज के अन्य राजकवियों में नयनंदि, दशवल आदि थे । संक्षिप्त में भोज ब्रह्मक्षत्रि राजा था जो वीर एवं पंडित भी था ।

८. भोज के जीवन के आदर्श (चारुचर्या) : भोज ने अपने ग्रंथ ''चारुचर्या'' में जीवन के आदर्श उजागर किये है-

सुनीतिशास्त्रसद्वैद्यधर्मशास्त्रानुसारतः ।
विरच्यते चारुचर्या भोजभूपेन धीमता ।। चारुचर्या - श्लोक१

भोज की दृष्टि में आदर्श जीवन वही है जो नीति, आयुर्वेद तथा धर्मशास्त्र का प्रतिदिन अनुसरण करता हो । चारुचर्या में ऐसे जीवन जीने की ही अनुशंसा की गई है । इन तीनों घटकों का प्रतिदिन सम्यक् आचरण करने से जीवन में चारुचर्या सम्भव है ।

हिताय राजपुत्राणां सज्जनानां तथैव च ।
चालचर्या इयं श्रेष्टारचिता भोजभूबुजा ।। चारुचर्या अंतिम श्लोक

भोज के अनुसार सज्जनों तथा राजपुत्रों को दैनिक जीवन इस प्रकार व्यतीत करना चाहिये ।

मलिनं परवस्त्रं च स्त्रीवस्त्रं च विशेषतः
खण्डं च मूषकैर्विद्धं अग्निदग्धं च वर्जयत् ।। श्लोक २४

सौचविधि के अंतरार के बाद दन्तधावन के पश्चात स्नान करना चाहिये । मलिन, परवस्त्र, स्त्री-वस्त्र, खंडवस्त्र, जलाहुआ वस्त्र तथा चुहे ने कतराहुआ वस्त्र नही पहनना चाहिये ।

भूषणैर्भूषयेदंगं यथाविभवसारतः ।
शुचिसौभाग्यवृदध्यर्थं आयुर्लक्ष्म्याभिवृद्धये ।। श्लोक - २९

अपनी वैभवशक्ति के अनुसार आभूषण धारण करना चाहिए । आभूषणों से पवित्रता, सौभाग्य, आयु तथा लक्ष्मी में परिवृद्धि होती है ।

ततो भोजनवेलाया सदाचारः सदात्मवान् ।
देवान् पितृन् समभ्यर्च्य कुर्यान्मंगलवीक्षणम् ।। श्लोक - १२६

ताम्बूलं चर्वयेद्भुक्त्वा प्रागेवत्रिचतुःसदा । श्लोक - १५७

मानव को सदाचार से पूर्ण होना चाहिये । देव, पितृ आदि की अर्चना के पश्चात् मंगल-दर्शन के अनन्तर ही भोजन करना चाहिए । भोजन के पश्चात ताम्बूल सेवन करना चाहिए ।

कुरुपिणीं कुशीलां च विधवां च परस्त्रियम् ।
जात्युत्कृष्टां च हीनां च पुत्रमित्रनृपस्त्रियः ।।
त्यजेद्दासकुलोद्भूतां कृशां स्त्रीं कन्यकां तथा ।
वयोऽधिकां स्त्रियं गत्वा तरुणः स्थविरायते ।
तारुण्यरमणीं गत्वा वृद्घोपि तरुणायते ।। श्लोक- ९०-९२

कुरूपिणी, कुशीला, विधवा, परदार, हीन, पुत्र, मित्र, अनुज, गुरु आदि की स्त्री, दासकन्या, दुबली, कन्या, पौढ स्त्री का सेवन नही करना चाहिए ।

परद्रव्यं परस्त्रीं च परनिन्दां तथैव च ।
अमित्रभाषणं कार्य स्त्रियालापं च वर्णयेत् ।।
असत्यवर्जनं कार्य परद्रोहस्य वर्जनम् ।
वर्जन चाप्यगम्भाया भक्तस्य च विवर्जनम् ।
असूयावर्जनं चैव पतितैः संगवर्जनम् ।
क्रोधस्य वर्जन चैव आत्मस्तुतिविवर्जनेम् ।।
अतृतं न वदेद् धीमान् प्राणैः कण्ठगतैरपि ।
धर्मनाशो भवेत्तस्य प्रयाति नरकं ध्रुवम् ।।
अमृतं सत्यमित्याहुरसत्यं विष उज्यते ।

धर्मशास्त्राणि सततं पुराणश्रवणं तथा ।
कारयेद्विधिना सम्यगात्माभ्यासं तु नित्यशः ।।
चारुचर्या ,श्लोक १२-१७

भोज के अनुसार परद्रव्य, परस्त्री, परनिंदा, अमित्र-भाषण, स्त्रीयोंसे वार्तालाप असत्य, परद्रोह,असूया, पतितों का साथ, क्रोध, आत्मस्तुति आदि का त्याग करना चाहिए । भोज के अनुसार प्राणों पर संकट आनेपर भी असत्य नहीं बोलना चाहिए । सत्य ही अमृत है, असत्य विष है । धर्मशास्त्र तथा पुराणों का सतत श्रवण तथा आत्माभ्यास करना चाहिए ।

कुलाचारं ततः कुर्यात् सन्ध्योपासनमादितः ।
सूर्योपासनतः कुर्यात् सर्वरोगोपशान्तये ।।
धर्मसंग्रहणं कुर्यात् दानतीर्थोपवासकैः ।
स्वपित्रोर्बन्धुदेवानां भ्रातृणां चैव तोषणम् ।।
स्वर्ग्यं यशस्यमायुष्यं सर्वरोगहरं परम् ।
देवब्राह्मणबन्धूनां तर्पणेन प्रजायते ।।
दानं मनोहरं शौर्य मिष्टपूर्तिविवर्धनम् ।
अरोषदेवताभक्तिर्गोषु विप्रेषु तर्पणम् ।।
शुश्रूषणं गुरुस्त्रीनां तपस्तीर्थेषु मज्जनम् ।
विद्याभ्यासेन सततं सततं साधु संगमः ।।
दीनान्धकृपणेभ्यश्च तपस्वीनां च तोषणम् ।
कुर्याच्च सततं शक्त्या कीर्तिक्षम्यभिवृद्वये।।चारुचर्या श्लोक - ४६-७१

मानव को सन्ध्या-उपासना आदि से कुलाचार करना चाहिए । सूर्योपासना से सारे रोग नष्ट हो जाते है । दान, तीर्थ तथा उपासना से धर्मसंग्रह करना चाहिए । अपने माता-पिता, बंधु, देवता, भाई, तथा गो ब्राह्मण को संतुष्ट करना चाहिए । गुरु तथा उनकी पत्नी की सेवा करनी चाहिए । विद्याभ्यास व सज्जनों का साथ करना चाहिए । दीन, अंध, कृपण (असहाय) तपस्वी आदि को संतुष्ट करना चाहिए । इन कर्तव्यों को यथाशक्ति साधने का प्रयास करना चाहिए ।

९. भोज की मृत्यू - गांगेयदेव के पुत्र कर्णदेव ने चालुक्य राजा भीम के साथ मिलकर ई.स. १०५५ में मालवा पर आक्रमण किया । धारानगरी शत्रुओं ने लुट ली। भोज वृद्ध हो चुका था और घातक बिमारी से रुग्ण था।



कुछ इतिहासकारों एवं महानुभावी ग्रंथों के अनुसार उसने भगवान दत्तात्रय की आराधना अपना ली थी एवं महानुभाव पंथ की दीक्षा ली थी । उसने शस्त्रों का हात में लेना त्याग दिया था । इस काल में उसकी मृत्यु आषाढ़ वदी १३, संवत ११११२ (१०५५ ई.) को हुई । मालवा उजड़ गया । इस तरह महान सम्राट भोज का जीवनकाल आयुकी ७५-७६ वर्ष में समाप्त हुआ । भोज के राजकवि दशवल कृत ''चिंतामणी सार्णिका'' अनुसार भोज ने मालवापर १००० से १०५५ ई.तक लगातार ५५ वर्ष, ७ मास, ३ दिन तक गौरव-गरिमा के साथ राज्य किया । कुछ इतिहासकार भोज का राज्यकाल १०१० से १०५० ई. मानते है। अतः पंवार वंश की पताका लहराकर राजा भोज दैदीप्यमान आदर्श हिंदु राजा के रुप में भारतीय इतिहास में अजरामर हुआ।

❖ ❖ ❖

७ पवार कुलदेवी महामाया कालिका

प्राचीन ग्रंथ - अग्निपुराण, पदमगुप्त रचित नवसाहसांक एवम् परमार कालीन शिलालेख (Annals and antiquities of Rajasthan - Tod) के अनुसार त्रेतायुग में महर्षि वशिष्ठ तथा अन्य ऋषिमुनियों ने अर्बुदगिरि पर यज्ञ पर भगवान इंद्र से आग्रह कर अग्निकुंड से 'पवार' (परमार / धूमराज) वीर पुरुष की उत्पत्ति की । उसने प्रकट होते ही दैत्यों से युद्ध किया । दैत्यों का रक्त पृथ्वीपर न गिरे और असुर पैदा न हो इसलिये देवी महामाया कालिका वहां अवतरित हुई और उसने दैत्यों के हर रक्तबुंद का प्राशन किया तथा पवार वीर को दैत्यों का वध करने में परम भूमिका निभाई । अतएव ऋषि-मुनियों ने उसे 'महामाया कालिका' की कुलदेवी के रूप में नित्य पूजा-अर्चना करने का आदेश दिया । पवार वीर को शस्त्र के रूप में 'गदा' दिया गया । 'यदुर्वेद' दिया गया । आबु - उज्जैनी का प्रदेश राज करने मिला । रसेल तथा हीरालाल कृत 'Castes and Tribes at C.P. and Berar' से पवारों के कुलदेवता १) दुल्हादेव तथा २) जगनारायण की जानकारी मिलती हैं ।

मार्कण्डेय पुराण की एक कथा के अनुसार श्रीहरि विष्णु नागशैया पर निद्रा ले रहे थे । उस समय दो दैत्य-मधु एवम् कैटभ उनके कानों में प्रवेश कर पिड़ा देने लगे । अर्ध निद्रा में भगवान विष्णु ने ''ब्रह्म, ब्रह्म'' कहा और उनकी नाभी से कमल पुष्प के आसन पर बैठे भगवान ब्रह्मा अवतरित हुये । ब्रह्माजी ने देवी महामाया का स्मरण किया और वह प्रकट हुई । सर्वप्रथम महामाया देवी ने मधु एवम् कैटभ दोनो दानवों का वध किया । तद्पश्चात भगवान विष्णु एवम् ब्रह्मा के आग्रह पर उस ने संसार की रचना की । स्वर्ग एवम् मृत्यु लोक में सभी जीवों को माया से भर दिया और इस तरह वह जगत की जननी, शक्ति और पालनहार ममतामयी ''माँ'' के रुप में वैदिक काल में अवतारित हुई ।

महामाया हरे श्चषा तया सम्मोह्यते जगत् ।
ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा ।।

बलदायकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति ।
तया विसृज्यते विश्वं जगदेतच्चराचरम ।।
(दुर्गा सप्तशती १/५५-५६)

देवी महामाया जीव - जंतु, मानव, देव, दानव सभी के चित्त में माया डाल कर मोह में जकड़ लेती है । वह सम्पुर्ण ब्रह्मांड की स्वामिनी हैं । वही महामाया, महाविद्या, महाशक्ति, महामेधा, माहरात्रि और मोहरात्रि है । माया मोहिनी, तो महामाया निर्मोहिनी अंतःर्मन में निवास करती है ।ऋग्वेदोक्त देवी सूक्त अनुसार वही ब्रह्ममाया, विष्णुमाया और शिवमाया की त्रिवेणी हैं

ओम् महालक्ष्मि च विद्महे ।
महासरस्वती च धिमहि ।
तन्नो महामाया देवी प्रचोदयात् ।।

अग्निपुराण की कथा अनुसार आदि काल में देवता और दैत्यों के बीच लम्बे अर्सेतक युद्ध चलता रहा । देवों के राजा इंद्र और दैत्यों के राजा महिषासुर अपनी - अपनी सेना लेकर लड़ते रहे । महिषासुर को मायावी तथा दैवी विद्याएँ प्राप्त थी । असुरों के गुरू महर्षि शुक्राचार्य ने उन्हे संजीवनी मंत्र भी दिया था । उसका वध कोई वीर-पुरुष नही कर सकता ऐसा उसे वर प्राप्त था । अतएव वह अत्यंत बलशाली था । अंत में देवगण युद्धभूमि से भगवान विष्णु की ओर भागे । वहां ब्रह्मा और शिवजी भी पहुंचे । अतः सभी देवताओंकी प्रार्थना सुन कर भगवान विष्णु ने देवी महामाया की आराधना की ताकि वीर-स्त्री से महिषासुरका वध किया जा सके । तत्काल महामाया देवी प्रकट हुई । भगवान ब्रह्मा, विष्णु, महेश तथा सभी देवताओं ने उसे अपनी शक्ति, शस्त्र एवम् श्रृंगार दिये । वह हिमालय की ओंट में स्वच्छंद विचरने लगी और शैलपुत्री बन कर रहने लगी । तद्पश्चात वह ब्रह्मचारिणी बनी एवम् भगवान शिव के प्राप्ति हेतु घोर तपस्या करने लगी और अंत में उसने भगवान शिव को प्रसन्न किया । देवी भगवती फिर त्रिनयनी चंद्रघंटा सर्वशक्तिमान माँ भवानी ने दैत्य महिषासुर एवम् उसके सेनापतियों का वध किया एवम् देवताओं को मुक्ति दिलायी । महिषमर्दिनी को ही शास्त्रों में दुर्गा कहा गया हैं ।

इसी तरह पूर्व काल में शुभ - निशुम्भ नामक असुरों ने इंद्र का

त्रिलोकी का राज्य छिन लिया था । सूर्य, चंद्र, वरूण, अग्नि, वायु शक्तियों पर भी उसने अपना अधिकार जमा लिया था । तब विवश देवता 'देवी महामाया' का स्मरण करने लगे । हिमालय पुत्री महामाया गंगा में स्नान करने आयी थी कि उनके शरीर में शिव शक्ति ने प्रवेश किया और अचानक शरीर का रंग काला होने से वह ('अम्बिका' 'कौशिकी') महाकाली देवी के नाम से प्रसिद्ध हुई । प्रथम उसने दैत्यराज शुम्भ और निशुम्भ के दूत असुर धूम्रलोचन तथा शूरवीर चण्ड-मुण्ड और उनकी भव्य सेना का संहार किया और 'चामुण्डा देवी' कहलायी । बाद में शुम्भ-निशुम्भ ने उदायुध, कम्बू, कोटिवीर्य और अंत में रक्तबीज जैसे अपने महाप्रतापि शूरवीरों को भारी सेना के साथ युद्ध करने भेजा । भवानी चण्डिका ने ब्रह्म कमण्डलु, माहेश्वरी त्रिशूल तथा वैष्णवी चक्र द्वारा असुरों को मार डाला । किन्तु असुर रक्तबीज को असुरों के गुरू महर्षि शुक्राचार्य ने ऐसा संजीवनी वर दिया था कि उस के शरीर से धरती पर टपके हर रक्त की बुंद से वैसाही दैत्य उत्पन्न हो जाता था । तब चण्डिका देवी का उग्र रूप धारण कर उसने अपनी जिव्हा लम्बी की और हर रक्त बुंद को असुरों के शरीर से जमीन पर गिरने के पहले ही पीने लगी । उनका मांस, हड्डियां खाने लगी और अपने शस्त्रोंसे महादैत्य रक्तबीज को मार डाला । रक्तबीज की मृत्यु पश्चात महाकाली ने शुम्भ तथा निशुम्भ को भी मार डाला और चारो दिशाओं में शांति फैल गई।

महामाया देवी ने बाद में कुष्मांडा, स्कन्दमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धिदात्री का रूप धारण कर मानव की आयु, यश, बल, बुद्धि, धन, वैभव, मोक्ष देनेवाली कल्याणकारी शक्ति की अधिछात्री, दानवी प्रवृत्ति का नाश करनेवाली, शुभंकरी, धन-वैभव, सुख-शांती की अधिष्ठात्री देवी का रूप धारण किया । वह मनोकामनाए पूर्ण करनेवाली सिद्धिदात्री देवी सरस्वती का रुप हैं ।

सर्वशक्ति महामाया दिव्यज्ञान स्वरूपिणि ।
नौ दुर्गे जगतमाता प्रणमामि मुहुर्मुहु ः ।।

दुर्गा सप्तशती, चंडी पाठ, देवी महात्म्य, कालिका पुराण आदि सभी पौराणिक ग्रंथ तथा विद्वान धर्मशास्त्री देवी महामाया को सरस्वती के रूप में ब्रह्मशक्ति, लक्ष्मी के रूप में विष्णुशक्ति और पार्वती के रूप में शिवशक्ति

का समन्वय मानते हैं । इसे ही देवी महात्म्य में ''महामाया कालिका'' सम्बोधित किया गया है ।

अश्विनी तथा चैत्र माह में शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से आरम्भ होकर नवमी तक दो नवरात्री पर्व मनायें जाते हैं । दुर्गा के ९ रुपों की क्रमशः ९ दिन पूजा होने के कारण उन्हे नवदुर्गा एवम् नवरात्र कहा गया हैं । चैत्र मास की नवरात्र को 'वार्षिक नवरात्र' तथा आश्विनी नवरात्र को 'शारदीय नवरात्र' कहते हैं । दुर्गादेवी (सही अर्थ में महामायादेवी) के ९ रुप - १) शैलपुत्री २) ब्रह्मचारिणी ३) चंद्रघंटा ४) कुष्मांडा ५) स्कंदमाता ६) कात्यायनी ७) कालरात्री ८) महागौरी और ९) सिद्धिदात्री है । उसी तरह उसके १०८ नाम ग्रंथों में दिये गये हैं । कहते है, नवरात्र में हर तीन दिन वह क्रमशः महाकाली, महालक्ष्मी तथा महासरस्वती का रुप धारण करती हैं । वेदमाता गायत्री को २४ नामों से सम्बोधित किया गया है तथा उस में एक नाम महामाया भी है ।

देवी चंद्रघंटा ही सही अर्थो में भवानी, दुर्गा, काली, चण्डी, चामुंडा आदि उग्र रुपी महामाया है । इस परिपेक्ष्य में जो दुर्गा देवी के नव रुप अग्निपुराण में बताये हैं वे इस प्रकार है - १) रुद्रचण्डा २) प्रचण्डा ३) चांडोग्रा ४) चण्डनायिका ५) चण्डा ६) चण्डवती ७) पूज्या ८) चण्डरूपा तथा ९) अतिचण्डिका । अष्टादश भुजा - उग्रचण्डा दुर्गा देवी को कहा गया है ।

महामाया देवी के महत्वपूर्ण पीठों (धामों) में जम्मू, कटरा (वैष्णवी देवी पीठ समीप), काग्रोस - कामाक्षी, सुंदरनगर (हिमाचल), रतनपुर, रायपुर (छत्तीसगढ़) आबु (राजस्थान) उज्जैनी, खजुराहो, धार, देवास (मध्यप्रदेश) हीरापुर, भुवनेश्वर (ओरिसा) मँगलोर (कर्नाटक) कन्नुर (केरला) तथा कसरपाल (उत्तर गोवा) है जहां महामाया कालिका देवी के पौराणिक मंदिर हैं । महाराष्ट्र में नगरधन (रामटेक, नागपुर), माहुरगढ़ (जि. यवतमाल) में महामाया शक्तिपीठ है । माहुरगढ़ में देवी रेणुका (भगवान परशुराम की माता) तथा देवी अनुसया एवम् उसका पुत्र भगवान दत्तात्रय के भी मंदिर हैं ।

पवारों की मूल राजधानी उज्जैनी थी । वहां का महामाया कालिका देवी मंदिर मशहुर है । यह मंदिर बाबा गोरखनाथ मंदिर समीप है । यहां

आद्यकवि कालीदास ने अपनी जिव्हा काटकर देवी को रक्त चढ़ाया था और देवी ने प्रसन्न होकर वरदान दिया था। कहते है उन्होने 'मेघदुत' की रचना यहां से प्रेरणा लेकरही की थी । परमार वंशीय राजा उज्जैनी की 'महामाया कालिका' देवी को अपनी आद्यशक्ति कुलदेवी मानते थे। परमार कालीन ग्रंथ इस के साक्षी हैं। बाद में १२-१३ वी सदी में परमार राज सिमटकर धार - मांडु तक रह गया था। तब धार में पवार राजाओं ने 'महामाया कालिका' मंदिर बनवाया और वहां नवरात्र में राजकीय समारोह हुआ करता था। ऐसा वहां के पुजारी बताते हैं। यह मंदिर धार शहर के बीचोबीच है।

धार में दुसरा कालिका गढ़ मंदिर है। श्री रघुनाथ शास्त्री द्वारा रचित 'धार के पंवार राजवंश' नामक किताब में पृष्ठ २२ पर लिखा गया है कि वर्तमान 'कालिका गढ़ मंदिर' मराठा पवारोंको धार राज्य राजे शाहू छत्रपति से २२ जुलाई १७३२ को प्राप्त होने के बाद राजे यशवंतराव पवार (इ.स. १७३६-१७६१) के राज्यकाल दरम्यान उनकी पत्नि सकवारबाई ने बनवाया था। तात्पर्य यह कि धार का कालिकागढ़ मंदिर आधुनिक है तथा उज्जैनी का 'महामाया कालिका देवी' मंदिर पवारों का पौराणिक पुरातन मंदिर है। उसी तरह कालिका गढ़ मंदिर देवास में भी मराठा पवारों ने १८वी सदी में बनवाया है। पवारों की कुलदेवी को 'कालिका देवी' सम्बोधित करने की बजाय 'महामाया कालिका देवी' या (मूलस्वरूप) केवल 'महामाया देवी' कहना शास्त्रोक्त यथार्थपूर्ण होगा।

एक पौराणिक कथा अनुसार जब भगवान राम सीता के हरण से व्याकुल हुये तब उन्होने नव दिन देवी महामाया कालिका का उपवास रखकर अनवरत उपासना की थी और देवी भागवत के सम्पूर्ण ७०० श्लोकों का पठन किया था।

सिंहारपाठ (सिंहद्वार) बैहर पर भगवान राम मंदिर और माँ महामाया मंदिर एक स्थल पर होना इस स्थल को शक्तिपीठ का पूर्ण रुप प्रदान करता है जो हर पवार के लिये गर्व की बात है।

महामाया जगतमाता महामाया जगतपिता।
महामाया जगदद्धात्री महामाया नमोस्तुते ॥

॥ शुभम् भवतू ॥

लेखक द्वारा प्रकाशित रचनायें

१. पवार समाज - एक सिंहावलोकन, *पवार संदेश* १ : १३-२१ (१९८४).
२. युवा वर्ग तथा सामाजिक परिवर्तन, *पवार संदेश* २ : ४१-४३ (१९८५).
३. पवारी शादी ब्याह, दहेजकी चपेट में - *भोज पर्णिका* - ७ : १७-१९, (१९८६)
४. पवार महासभा बीसवीं शताब्दि में - *भोजपत्र* (पवार महासभा स्मरण ग्रंथ आमगांव-गोंदिया अधिवेशन) १-६, (१९८६).
५. आदत से लाचार (गीत), *पवार संदेश,* ४ : ०५ (१९८७).
६. श्री हेमेंद्रसिंह पँवार (व्यक्तित्व दर्पण), *पवार संदेश* ४ : ०७-०९ (१९८७).
७. जब जब स्वजाति प्रेम जनमानस में उमड़ पड़ेगा (गीत) *पवार संदेश* ५ : ०४ (१९८८).
८. प्रश्न ही प्रश्न *पवार संदेश* ६ : ०१-०२ (१९८९)
९. नागपुर में भवन का निर्माण - हमारा दृढ संकल्प, *पवार संदेश* ७ : ०१-०३ (१९९०).
१०. कौन कहता है कि संगठन निरर्थक हैं ? - *पवार ज्योति*, २: १-३,(१९९०).
११. युवा वर्ग की उपेक्षा क्यों ? *पवार संदेश* ८ : ०१-०३ (१९९१).
१२. वैनगंगा घाटी के पवार, *पवार संदेश* ९ : ०१-०६ (१९९२).
१३. यही वक्त है, सही वक्त (गीत), *पवार संदेश* ९ : १९ (१९९२).
१४. पवारों का सही कुलः ब्रम्हक्षत्र - *पवार वाणी* २ : १-३, (१९९२).
१५. पवारों का मालवा से बैनगंगा घाटी में पदार्पण - *पवार महासभा स्मारिका* १५-१७,१९९२.
१६. बस सांस लेंगे तभी जब भवन पूर्ण बन जाय (गीत), *पवार संदेश,* १० : अग्रपृष्ठ (१९९३)
१७. परमार : पवारों का राजवंश, *पवार संदेश* १० : ०१-०६ (१९९३).
१८. पवार महायोगी 'भर्तृहरि' - *पवार भारती* - १ : ४०-४३, (१९९३).
१९. परमारों की अमर स्थापत्य कलाकृतियॉ, *पवार संदेश,*११ : ११-१४ (१९९४).
२०. पवारों के कुलदेवता - एक सर्वेक्षण, *पवार संदेश* ११ : १७-२० (१९९४).

२१. सामाजिक एकता सर्वोपरि, *पवार संदेश* १२ : ०१-०३ (१९९५)
२२. पिरथी बड़ा पुवार, *पवार संदेश* १३ : ०३-०५ (१९९६)
२३. सामाजिक उत्तरदायित्व, *पवार संदेश* १५ : १३-१४ (१९९८)
२४. पवार जाति के ऐतिहासिक तथ्य, *पवार संदेश* (शताब्दि विशेषांक) १-५, (१९९९).
२५. पवार महासभा का संघर्षरत सौ वर्षोंका सफर, *पवार संदेश* १६: ११-१३ (१९९९).
२६. सामाजिक कार्य करने के पूर्व अपने बीमार मन का इलाज करायें? *पवार संदेश* -१७/१८, ०५-०६ (२००१)
२७. पवार समाज का आत्मपरिचय - *पवार वाणी,* १२: १-२, २००२
२८. पवार (परमार) शासकों का विदर्भपर शासन, *पवार संदेश,* १९ : १७-१९ (२००३)
२९. पवार विदर्भ के राजा, *पवार ज्योति,* ७ : १-३, २००३
३०. राजा भोज - *पवार दर्पण,* १: ५१, (२००५)
३१. क्षत्रिय पवारों की शौर्य गाथा (गीत), *पवार संदेश* २२ : २७-२८ (२००६)
३२. महाराजा भोज की कहानी अभिलेखों की जुबानी - *पवार दर्पण* २: १७-२१, (२००६).
३३. अखिल भारतीय पँवार क्षत्रिय महासभा ''हमारे सामाजिक विकास की अखंड ज्योति'', *पवार समाज दर्शन* (अधिवेशन विशेषांक) १३-१८, (२००६).
३४. पवार कुल श्रेष्ठ : राजा भोज - *पवार समाज दर्शन* (शताब्दि समारोह विशेषांक) ६३-६९, (२००७).
३५. भगवान राम : हमारे चिरस्थायी प्रेरणा श्रोत - *पवार दर्पण* - ५: १९-२२ (२००९).
३६. पवारों की कुलदेवी-महामाया - *पवार दर्पण,* ६: २३-२५,(२०१०).
३७. सामाजिक आयोजनों के लिये बसंत पंचमी सर्वोत्तम तिथि - *पवार वाणी* २० : १-२, (२०१०).
३८. पवारों का मालवा से स्थानातरण, *पवार संदेश* २६:२३-२८ (२०११). (कुछ अनछूये ऐतिहासिक पहलू)
३९. पवारी बोली - *पोवार जागृति,* स्मरणिका ४ : ३२-३९, २०११.
४०. राजाभोज प्रतिमा अनावरण समारोह भोपाल, *पवार दर्पण* ७, (२०११).

संदर्भ ग्रंथ

१. **अग्निपुराण,** सम्पादक - एम.एन.दत्त,कलकत्ता, १९०३
२. **नवसाहसांक चरित,** मुललेखक- पद्मगुप्त, सम्पादक - पं.वामनशास्त्री, बम्बई, १९९५
३. **प्रभावकचरित्** मुललेखक- प्रभाचंद्र, सम्पादक मुनिजिनविजय, अहमदाबाद,१९४०
४. **भोजप्रबन्ध,** मुललेखक- बल्लाल, सम्पादक जगदीशशास्त्री, पटना, १९६२
५. **युक्तिकल्पतरु,** मुललेखक - भोज, सम्पादक ईश्वरचंद्रशास्त्री, कलकत्ता, १९१७
६. **श्रृंगारप्रकाश,** मुललेखक- भोज सम्पादक जी.आर.जोसेफर, मैसूर, १९५५
७. **श्रृंगारमंजिरीकथा,** मुललेखक- भोज सम्पादक डॉ. के.के.मुन्शी, बम्बई, १९५८
८. **सरस्वती कण्ठाभरण,** मुललेखक- भोज, सम्पादक जीवानंद विद्यासागर, कलकत्ता, १८९४
९. **आईने अकबरी** मुललेखक- अबुल फजल, सम्पादक यदुनाथ सरकार, कलकत्ता, १९४८
१०. **पवार वंश दर्पण** मुललेखक- दयालदास सिंढ्या, सम्पादक दशरथ शर्मा, बीकानेर, १९६०
११. **गजेटियर ऑफ धार स्टेट**, संपादक- सी.ई. लुअर्ड,एण्ड के.के.लेले, बम्बई,१९०८
१२. **भोजराजा** - लेखक - पी.टी. एस.आयंगार, मद्रास, १९३१
१३. **राजपुताने का इतिहास,** लेखक - गौरीशंकर ओझा, अजमेर, १९३३
१४. **दी हिस्ट्री ऑफ दी परमार डायनेस्टी,** लेखक - डी.सी.गांगुली, ढाका १९३३
१५. **एनल्स एण्ड एण्टिक्वीटीस ऑफ राजस्थान,** सम्पादक- कर्नल जे.टाड, लंडन, १९२०
१६. **दी परमारास,** लेखक -प्रतिपाल भाटिया, देहली, १९७०
१७. **रासमाला,** संपादक - ए.के.कोर्पेस, लंदन, १९२४
१८. **धार एण्ड मांडू** - लेखक - इ. बर्नेश, बम्बई, १९०२
१९. **स्टडीज इन इंडोलाजी,** लेखक - वी.वी.मिराशी, नागपुर १९६०
२०. **राजा भोज,** लेखक - वी.एन. रेऊ, इलाहाबाद, १९३२
२१. **परमारस् ऑफ धार एण्ड मालवा** लेखक - कॅप्टन सी.ई. लुअड एण्ड के.के.लेले, बम्बई, १९०८

२२. **भोजचरित्र,** मुललेखक-राजवल्लभ, संम्पादक-बी.सी.एच.छाबड़ा तथा एस.शंकरनारायणन, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, १९६४.
२३. **परमार अभिलेख,** संपादक, अमरचंद मित्तल, अहमदाबाद, १९७९
२४. **राजा भोज का रचनाविश्व,** लेखक - भगवतीलाल राजपुरोहित, जयपुर,१९९०.
२५. **महाप्रतापी भोज** - लेखक - हीरालाल शर्मा
२७. **राजा भोज,** लेखक -विश्वनाथ
२८. **धार के पँवार राजवंश का संक्षिप्त इतिहास,** लेखक - रघुनाथ मुकुंद शास्त्री, इंदौर, १९४७.
२९. **भंडारा जिला गजेटियर,** महाराष्ट्र शासन, मुंबई, १९७९
३०. **भोज परमार एन्ड हीज टाइम,** लेखक - महेश सिंह
३१. **द आर्ट ऑफ द परमाराज ऑफ मालवा,** लेखक- आर.के.शर्मा
३२. **युग-युगिन धार** - बी. एन. लुणिया
३३. **मालवा थ्रु एजेस -** लेखक - के. सी. जैन
३४. **परमार अभिलेख,** संपादक- एच. बी. त्रिवेदी
३५. **मध्यप्रदेश का इतिहास,** लेखक - हीरालाल
३६. **हिंदू रिलीजन, कस्टम ॲण्ड मॅनर्स,** लेखक - पी. थॉमस्, १९५६
३७. **राजा भोज, कालिदास -** द्वारा पं. ब्रजवल्लभ
३८. **डाउःन फाल आफ इंडिया** - द्वारा सी. व्ही. वैद्य
३९. **प्रबंध चिंतामणि** द्वारा मेरूतुंग
४०. **मध्यकालीन भारत का इतिहास** - द्वारा ईश्वरी प्रसाद
४१. **हिस्ट्री आफ मेडयाव्हियल हिंदू इंडिया** - भाग ३ - द्वारा श्री. सी.व्ही. वैद्य
४२. **डिस्कव्हरी ऑफ इंडिया** - द्वारा पं. जवाहरलाल नेहरू.
४३. **हिस्ट्री ऑफ कल्चर ऑफ इंडियन पीपल** द्वारा आर.सी. मुजमदार, व्हाल्यूम ३
४४. **दी ट्राइब्स एन्ड कास्ट्स ऑफ दी नार्थवेस्टर्न प्राव्हिंसेस ऑफ इंडिया एन्ड औंध** - विलियम कुक (१८९०), नया संस्करण, आक्सफोर्ड, (१९९५)
४५. **दी कास्ट्स एन्ड ट्राइब्स ऑफ दी सेंट्रल प्राव्हिंसेस ऑफ इंडिया-** आर.व्हि.रसेल (१९१६), नया संस्करण, मेकमिलन (१९९५).
४६. **पोवारी बोली** - डॉ. सु. बा. कुलकर्णी, नागपुर विद्यापीठ प्रकाशन (१९७४).

* * *